साहित्य अमृत
मासिक

वर्ष-२३ अंक-८ ❖ पृष्ठ ८४ | फाल्गुन-चैत्र, संवत्-२०७४-७५ | मार्च २०१८

संस्थापक संपादक
स्व. पं. विद्यानिवास मिश्र

पूर्व संपादक
स्व. डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी

संपादक
त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

प्रबंध संपादक
श्यामसुंदर

संयुक्त संपादक
डॉ. हेमंत कुकरेती

कार्यालय
४/१९, आसफ अली रोड,
नई दिल्ली-११०००२
फोन : २३२८९७७७ • फैक्स : २३२५३२३३
इ-मेल : sahityaamrit@gmail.com

शुल्क
एक अंक —₹ ३०
वार्षिक (व्यक्तियों के लिए)—₹ ३००
वार्षिक (संस्थाओं/पुस्तकालयों के लिए)—₹ ४००
विदेश में
एक अंक—चार यू.एस. डॉलर *(US$4)*
वार्षिक—पैंतालीस यू.एस. डॉलर *(US$45)*

प्रकाशक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी श्यामसुंदर द्वारा
४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२
से प्रकाशित एवं ग्राफिक वर्ल्ड, १६८६,
कूचा दखनीराय, दरियागंज, नई दिल्ली-२ द्वारा मुद्रित।

साहित्य अमृत में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय
राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय… ४

प्रतिस्मृति
ब्रज में मनुष्य ईश्वर नहीं, ईश्वर मनुष्य है/ *विद्यानिवास मिश्र* १०

कहानी
दान-पुन्न/ *सुशील कुमार फुल्ल* १२
अप्रैंटिस/ *धर्मेंद्र कुशवाहा* १८
सैनिक/ *गोपाल नारायण आवटे* ३२
धूल से भरे शब्द/ *मनोज सिंह* ३८
श्रद्धांजलि/ *राम कुमार तिवारी* ४८
जिंदगी/ *रागति रमा* ६७

आलेख
भारतीय लोक-संस्कृति का महापर्व होली/ *कुलभूषण सोनी* १६
गाय एक पशु ही नहीं…/ *सुरेंद्र वर्मा* २२
साहित्य का समाजशास्त्र/ *प्रणव शास्त्री* ३६

कविता
बीता जाए बसंत/ नीरज नीर १५
रूहें कुपोषण की शिकार…/ *मीनाक्षी भसीन* २१
अमंगल में मंगल/ *प्रमिला मजेजी* २९
रजाई में दुबकने…/ *देवेंद्र कुमार चौधरी* २९
गालन मलै गुलाल/ *विश्वंभर पांडेय 'व्यग्र'* ३१
मीठे लगते हैं ताने भी/ *रामदरश मिश्र* ३५
प्यारभरी फिर होली आई/ *राजेंद्र निशेश* ४२
खुलकर रोए बाबूजी/ *अशोक 'गुलशन'* ५०
होली के हुड़दंग में/ *सुरेंद्र अग्निहोत्री* ५०
यह असार संसार/ *बालकवि बैरागी* ५१
नृत्य करती हवाएँ/ *संजय पंकज* ५५
कोयल की मीठी बोली/ *आभा सिंह* ६६
साँसों ने कसमों से…/ *आर.सी. शुक्ल* ७१
वन-उपवन बौरा गए/ *राजनारायण चौधरी* ७५

पुस्तक-अंश
नवदुर्गा/ *पं. के.के. त्रिपाठी* २४

ललित-निबंध
फगुनवा में होली है/ *पूरन सरमा* २८
होलिकोत्सव/ *दादूराम शर्मा* ५६

व्यंग्य
जब शिवशंकर ने होली खेली/ *रमेशचंद्र* ३०
विज्ञापनबाजी एक कला/ *विनोदशंकर गुप्त* ४०

उपन्यास-अंश
स्वप्नदर्शी/ *अश्विनीकुमार दुबे* ४३

राम झरोखे बैठ के
बुद्धिजीवी का बदलाव/ *गोपाल चतुर्वेदी* ५२

साहित्य का भारतीय परिपार्श्व
ध्वनि/ *वी.वी.एन. मूर्ति* ५८

साहित्य का विश्व परिपार्श्व
प्रेम तलाशता है प्रेम/ *कार्लोस द्रुमोंद दि अंद्रादे* ६८

लोकपर्व
भँवरजी म्हाने खेलण द्यौ गणगौर/ *स्नेहलता* ७०

यात्रा-वृत्तांत
मनोहारी केरलम्/ *रेणुका बड़थ्वाल* ७२

बाल-संसार
पिचकारियाँ/ *फहीम अहमद* ७३
कहाँ गई चेतना/ *पवन चौहान* ७४

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ ७६
वर्ग-पहेली ७७
साहित्यिक गतिविधियाँ ७८

संपादकीय

राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के कुछ पक्ष

गणतंत्र दिवस का आयोजन इस वर्ष अभूतपूर्व रहा। पहली बार दस देशों के राज्याध्यक्ष, राष्ट्रपति अथवा प्रधानमंत्री मुख्य अतिथियों के रूप में सम्मिलित हुए। पहले केवल किसी एक देश के प्रधानमंत्री अथवा राष्ट्राध्यक्ष को आमंत्रित किया जाता था और शायद भविष्य में भी इसी परंपरा का अनुसरण होगा। इस वर्ष आमंत्रित किए गए अतिथि पूर्व एशिया के देशों से थे। वे 'आसियान' संगठन के सदस्य हैं। भारत के इन देशों से सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध रहे हैं। इस क्षेत्र को इतिहासकारों ने पहले ग्रेटर इंडिया यानी बृहत्तर भारत भी कहा। इससे कभी-कभी भ्रांति भी पैदा होती थी। कुछ आलोचक कहते थे कि यह भारत की अहंमन्यता, विस्तारवादी मानसिकता का परिचायक है। पर यह गलत धारणा है। यह केवल भारत की प्राचीन संस्कृति के प्रभाव का परिचायक है, जो अपनी निहित शक्ति के कारण अपने आप इन देशों में फैली, उसको सामरिक शक्ति या किसी प्रकार के बाहरी दबाव के द्वारा प्रसारित नहीं किया गया। इसमें पुरानी वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति एवं बौद्धधर्म का प्रभाव था। यही कारण है कि कंबोडिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया आदि में रामायण और महाभारत का प्रभाव दिखाई पड़ता है। साथ ही साथ बौद्धधर्म भी तेजी से फैला और इस क्षेत्र के देशों, जैसे म्याँमार (बर्मा), थाईलैंड, कंबोडिया आदि में मुख्यत: बौद्ध धर्म का प्रभाव है।

सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध यहाँ अपना स्थायी प्रभाव छोड़ गए। अरब व्यापारियों के द्वारा इसलाम धर्म का प्रचार हुआ। मलेशिया, इंडोनेशिया मुख्यत: मुसलिम देश हैं, किंतु वहाँ रामलीला का आयोजन किया जाता है, रामायण का प्रचार-प्रसार है। एक बार बाली में एक कॉन्फ्रेंस के अवसर पर वहाँ के राष्ट्राध्यक्ष से अनौपचारिक बातचीत में प्रश्न किया कि यहाँ रामलीला के आयोजन के लिए तरह-तरह के मुखौटे हैं, हालाँकि आप लोग इसलाम धर्म के अनुयायी हैं। इसका जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि इसलाम हमारा धर्म है, परंतु रामलीला हमारी संस्कृति का अंग है, इसमें कोई विरोधाभास नहीं है। काश! इस प्रकार की सोच हमारे यहाँ भी होती। फिलीपींस में ईसाइयत मुख्य धर्म है। आपस की समस्याओं को सुलझाने एवं आज की बदलती परिस्थितियों में सुरक्षा तथा व्यापारिक संबंधों को दृढ़ करने के लिए पूर्व के देशों ने मिलकर 'आसियान' संगठन बनाया। भारत आसियान का प्रारंभिक सदस्य नहीं है, केवल एक पर्यवेक्षक है।

भारत की 'लुक ईस्ट' व्यवस्था

आज की आवश्यकताओं को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत के पुराने सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंधों की पृष्ठभूमि में 'लुक ईस्ट' यानी 'पूर्वी देशों की ओर ध्यान दें' की नीति का प्रतिपादन किया। लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का कहना है कि केवल लुक ईस्ट की नीति से काम नहीं चलेगा, आज के दौर में जरूरी है 'एक्ट ईस्ट' अथवा पूर्वी एशिया के देशों से सक्रिय संबंध बनाए जाएँ। गणतंत्र दिवस के आयोजन में आमंत्रण के लिए विदेश मंत्री ने राष्ट्राध्यक्षों से संपर्क किया अथवा स्वयं जाकर उन्हें निमंत्रित किया। २६ जनवरी के पहले प्रधानमंत्री मोदी की सब अतिथियों से आपसी संबंधों के विषय में अलग-अलग बातचीत हुई। राष्ट्रपति भवन में सम्मेलन हुआ, जहाँ सब अतिथि ठहरे हुए थे। सब ने एकजुट होकर आतंकवाद का विरोध किया तथा इसका डटकर सामना करने की आम राय व्यक्त की। उनका यह भी कहना था कि भारत को पूर्वी एशिया क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। इन सभी देशों के समक्ष आर्थिक विकास और सुरक्षा की समस्याएँ हैं। इस तरह की पहल से प्रधानमंत्री ने २६ जनवरी के आयोजन को एक नई सार्थकता प्रदान की। भारत की विकास की गति और सामरिक शक्ति किस प्रकार की है और हमारे यहाँ क्या-क्या संभावनाएँ हैं, इस अवसर पर इसका एहसास भी अतिथियों को हुआ, विशेषतया परेड के द्वारा। उन्हें भारत की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की झलक भी देखने को मिली। ये देश चीन की विस्तारवादी नीति से सशंकित हैं। इस अवसर पर उन सबको यह समझने का एक मौका मिला कि भारत की नीति विस्तारवादी नहीं है। ये देश न तो अमेरिका और न चीन के प्रभुत्व में आना चाहते हैं। वे शांति, सहयोग और बराबरी के संबंधों की अपेक्षा रखते हैं और उन्हें यह जानने का अवसर मिला कि विदेश नीति के क्षेत्र में भारत का यह मूल सिद्धांत है। भारत और पूर्वी एशिया के देशों के संबंध कैसे हों, जो सभी के लिए फायदेमंद हों, इस पर विचार करने के लिए नया परिवेश उभर आया है।

दाओस की बैठक

इसके पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की प्रतिवर्ष दाओस में होनेवाली बैठक में भाग लिया। यह पहला मौका था, जब भारत के प्रधानमंत्री ने इस सम्मेलन में पहले दिन अनेक देशों से

आए उद्योगपतियों, बैंकरों, अर्थ-विशेषज्ञों और राज्यों के प्रतिनिधियों को संबोधित किया। गत वर्ष इस सम्मेलन में चीन के प्रधानमंत्री ने प्रारंभिक आयोजन को संबोधित किया था। चीन के बाद भारत ही एशिया में एक आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है। जब देवगौड़ा प्रधानमंत्री थे, वे भी दाओस गए थे, पर एक छुटभैया के रूप में। उस समय भारत की आर्थिक स्थिति कुछ और ही थी। वे प्रधानमंत्री भी दूसरों के सहारे से यकायक बने थे, स्वयं निर्णय लेने में असमर्थ थे। १९९१ के उदारीकरण के बाद भारत के आर्थिक विकास ने एक नई गति प्राप्त की। आर्थिक क्षमता की दृष्टि से भारत का आज दुनिया के देशों में सातवाँ स्थान है। आर्थिक शक्ति के विकास के क्षेत्र और अंतरराष्ट्रीय आर्थिक सहयोग की दृष्टि से हमारी संभावनाएँ महान् हैं। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में उद्योगपतियों, बैंकरों आदि को अवगत कराया कि भारत में पूँजी निवेश के लिए अनेक क्षेत्र हैं, उसका वे लाभ उठा सकते हैं और इससे भारत को भी लाभ होगा। देश में हर प्रकार की तकनीकी क्षमता का बड़ा भंडार है। इसका लाभ पूँजी निवेशकों को मिलेगा। इससे सस्ते माल का उत्पादन करना संभव है। प्रधानमंत्री की सरकार ने जो नए कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं, उनका भविष्य में फल क्या होगा और जो नई नीतियाँ अपनाई हैं, उनके विषय में जानकारी दी। ये आम जनता की खुशहाली में सहायक होंगी और देश की सकल उत्पादन क्षमता में निरंतर वृद्धि करेंगी।

भारत एक लोकतांत्रिक देश है, जहाँ संविधान और कानून सर्वोपरि है। भारत में पूँजी निवेश के लिए उपलब्ध संसाधनों व सुविधाओं से भी सबको परिचित कराया। सबसे बड़ी बात तो यह थी कि नरेंद्र मोदी एक ऐसे प्रधानमंत्री के रूप में बोल रहे थे, जिसे जनता का समर्थन प्राप्त है, जो निर्णय ले सकता है। इससे पूँजी लगानेवालों का हौसला बढ़ता है। वे आश्वस्त होते हैं कि उनकी पूँजी सुरक्षित रहेगी। उभरती और बढ़ती हुई भारतीय आर्थिक क्षमता एवं राजनैतिक शक्ति के प्रवक्ता के रूप में मोदी दाओस में भारत का प्रतिनिधित्व करने गए। यह सबसे बड़ा फोरम है, जहाँ प्रतिवर्ष विशेषज्ञ, उद्योगपति, बैंकर, पूँजीपति और विश्व-व्यापार को बढ़ाने में जुटे प्रमुख लोग मिलते हैं। प्रधानमंत्री मोदी के इस फोरम में भाग लेने से देश को लाभ होने की पूरी संभावना है। नए भारत का मानचित्र क्या होगा, इसकी एक झलक विश्व को देखने को मिली। भारत का नेतृत्व विश्वसनीय है, यह प्रतीति वहाँ भाग लेनेवाले देशों को हुई। दाओस में उनके संबोधन का विश्वव्यापी प्रभाव हुआ। दाओस में की गई प्रधानमंत्री मोदी की भागीदारी २६ जनवरी के आयोजन में अतिथियों के लिए भी भारत की सही तसवीर प्रस्तुत करने में काफी हद तक सफल रही।

भारतीय विदेश नीति के अन्य पक्ष

प्रधानमंत्री मोदी न केवल पूर्वी एशिया के देशों से संबंध बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं, साथ-ही-साथ पश्चिमी एशिया के देशों से संबंध अच्छे रखने के प्रयास भी जारी हैं। ये देश अधिकतर इसलाम धर्म के अनुयायी हैं, यद्यपि उनमें भी आपसी मतभेद हैं, जैसे ईरान और सऊदी अरब में शिया-सुन्नी का मामला है। इजराइल यहूदियों का देश है, जो सैकड़ों वर्षों के उत्पीड़न एवं द्वितीय युद्ध की समाप्ति के बाद अपना एक राज्य स्थापित कर सके। यह लंबी कहानी है। इसी समय फिलिस्तीन और इजराइल की नई समस्या का भी जन्म हुआ अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप के बयान से कि वे स्थायी रूप में अमरीकी दूतावास यरूशलम स्थानांतर करेंगे। इसने पश्चिमी एशिया के देशों में काफी बेचैनी उत्पन्न कर दी। वे अधिकतर इसलामी राज्य हैं। उनकी अपनी आंतरिक समस्याएँ हैं। भारत का प्रयास है कि आपसी हितों को ध्यान में रखकर हर देश से अलग-अलग संबंध स्थापित किया जाए। इराक में उसके पुनर्निर्माण की समस्या है। तथाकथित इसलामी खलीफा और उसके इसलामिक स्टेट का पतन हो गया है, पर वह कहाँ छिपा हुआ है, पता नहीं। किंतु एक विचारधारा के रूप में इसलामिक स्टेट का आतंकवादी कहर स्थान-स्थान पर जारी है। यह कहानी यानी सलाफी विचारधारा काफी पुरानी है। यह सऊदी अरब से अन्य देशों में फैली है। सऊदी अरब की तेल की आमदनी ने इसको विस्तार दिया। पिछले दिनों अरब में सत्ता-परिवर्तन हुआ है। नए बादशाह बिन सलमान ने वहाँ बहुत से आंतरिक बदलाव किए हैं। वे उसे आधुनिकता की ओर ले जाना चाहते हैं तथा उदारवादी इसलाम का समर्थन करते हैं। सऊदी अरब और ईरान दोनों ही इस क्षेत्र का नेतृत्व करना चाहते हैं। इस स्पर्धा से इन राष्ट्रों में कई समस्याएँ खड़ी हो रही हैं। सीरिया और तुर्की की आपस में नहीं बन रही है। सीरिया के बारे में अमरीका और रूस की नीतियाँ अलग-अलग हैं। इजिप्ट और उत्तरी अफ्रीका के इसलामी राज्य भी इसी भँवर में फँसे हुए हैं। पेलेस्टीन सरकार का क्षेत्र भी अव्वास और हम्स में बँटा है। पुराने संबंध होने के अतिरिक्त आज भी हजारों लोग वहाँ नौकरी कर रहे हैं, व्यापार में लगे हैं। देश के सामने तेल की उपलब्धि व साथ-ही-साथ सुरक्षा का भी प्रश्न है। इसीलिए प्रधानमंत्री मोदी का प्रयास सबसे संतुलन और सामंजस्य बैठाने का है। यह दुरूह कार्य है।

प्रधानमंत्री मोदी भारत के पहले प्रधानमंत्री हैं, जो इजराइल गए। वहाँ के प्रधानमंत्री नेतन्याहू भारत आए। यह सब हाल की घटनाएँ हैं। मोदी यरूशलम गए, पर अलग से। पहले पेलेस्टीन और इजरायल को एक साथ देखा जाता था। अब भारत सबके आपसी हितों को ध्यान में रखकर दोस्ती का रिश्ता कायम करना चाहता है। इंडोनेशिया के बाद मुसलिम आबादीवाला सबसे बड़ा देश भारत है। इन देशों में क्या होता है, उसकी ओर भारतीय मुसलमानों का भी ध्यान रहता है। पाकिस्तान हमेशा समस्याएँ पैदा करने की कोशिश करता है, चाहे अफगानिस्तान की शांति की बात हो अथवा किसी अन्य मुसलिम देश की। पड़ोसी मालदीव की ज्वलंत समस्या आज देश के सामने है। इस समय वहाँ के शासक ने वहाँ जो हालात पैदा किए हैं, आपातकाल घोषित कर चीफ जस्टिस तथा अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया है, भारत हस्तक्षेप करे या न करे और करे तो किस प्रकार? यह एक दुविधा है। चीन की निगाहें इस ओर हैं। हमारी सुरक्षा का सवाल भी है। ऐसे में फूँक-फूँककर कदम रखने की जरूरत है। वास्तव में पूर्वी एशिया एक कठिन पहेली

है, भूलभुलैया है। इसकी समस्याओं की गंभीरता और कठिनाइयों की ओर इशारा किया गया है। इसके अधिक विवरण में जाना संभव नहीं है। इससे यह भी पता चलता है कि देश की विदेश-नीति देश की सुरक्षा से किस प्रकार जुड़ी है।

यही नहीं, नेपाल में ओली अगले प्रधानमंत्री बननेवाले हैं। उनका झुकाव चीन की ओर है। हमारी विदेश मंत्री उनको बधाई देने और आश्वस्त करने गई थीं कि भारत किसी प्रकार के आंतरिक हस्तक्षेप में रुचि नहीं रखता और केवल दोस्ती के संबंध तथा हर प्रकार की सहायता के लिये तत्पर है। बँगलादेश में आम चुनाव होनेवाले हैं। इस बार विरोधी दल की अध्यक्षा बेगम जिया भाग लेनेवाली थीं, पर एक ट्रस्ट के भ्रष्टाचार के मामले में उन्हें पाँच वर्ष की सजा मिली है। वे जेल में हैं। भारत को बँगलादेश की स्थिति पर भी नजर रखनी है। म्याँमार में रोहिंग्या मुसलमानों की वापसी और सुरक्षा के कदम उठाए जा रहे हैं। भारत की इस समस्या के निदान में दिलचस्पी है। हम जानते हैं कि उत्तरी-पूर्वी सीमा पर बहुत से सशस्त्र अलगावादी दल सक्रिय हैं और भारत को बहुत चौकसी रखनी पड़ती है। श्रीलंका में भी राष्ट्रपति श्रीसेन और प्रधानमंत्री विक्रम सिंह ने राजपक्षे की सरकार, जो अत्यंत तमिल विरोधी थी, को गठजोड़ बनाकर अपदस्थ कर दिया था। श्रीलंका की तमिल समस्या बनी हुई है, उनकी अनेक दिक्कतें हैं। आशा रही कि यह सरकार न्यायपूर्वक और मानवता के आधार पर कुछ रास्ता निकालेगी। इसी बीच राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री की मिली-जुली सरकार में मतभेदों की खबरें आने लगीं। राजपक्षे के दल को स्थानीय चुनावों में बहुत बड़ी सफलता मिली। आज की सरकार का भविष्य खतरे में दिखने लगा था, पर अब कुछ समझौता हो गया है और मिली-जुली सरकार काम करती रहेगी। श्रीलंका की तमिल समस्या का भारत पर बहुत असर पड़ता है। इससे पता चलता है कि सुरक्षा की दृष्टि से देश की विदेश-नीति और आंतरिक नीतियाँ जुड़ जाती हैं, एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। ऐसे में पड़ोसियों की समस्याएँ हमारे लिए सिरदर्द बन जाती हैं।

बजट के कुछ मुद्दे

अब अपने देश की कुछ आंतरिक समस्याओं की बहुत संक्षेप में चर्चा आवश्यक है। सरकार ने संसद् में बजट पेश कर दिया है। उसके पहले आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया था, जिसमें देश की आर्थिक स्थिति और समानताओं का अच्छा आकलन है। संसद् स्थगित हो गई है, ताकि स्थायी समिति उसपर विचार कर अपने सुझाव दे। बजट पारित होने के बाद ही अधिकारपूर्वक कुछ कहना संभव होगा। लेकिन इस बजट को आमतौर पर चुनावी बजट कहा गया है। सरकार ने अपने कार्यकाल में कार्यक्रमों या नीतियों में जो कमियाँ महसूस कीं, उनको सुधारने की कोशिश स्वाभाविक है। अगले वर्ष २०१९ में अप्रैल-मई में आम चुनाव होने ही हैं। बजट में किसानों और गाँव-गँवई की समस्या पर विशेष ध्यान दिया गया है, प्रावधान किया गया है। कृषि-संकट और किसानों की समस्याओं को लेकर बजट में कई प्रस्ताव और प्रावधान हैं, यद्यपि कुछ देर से ही सही, पर प्रधानमंत्री मोदी ने एक अच्छा कदम उठाया है। उन्होंने दिल्ली में कृषि विश्वविद्यालयों के वाइस चांसलरों और देश के अनेक कृषि-विशेषज्ञों का एक सम्मेलन बुलाया, यह जानने के लिए कि कृषि-संकट को दूर करने के लिए उनके क्या सुझाव हैं। २०२० तक किसान की आमदनी को दुगना करने के लिए सरकार को क्या करना चाहिए। हम समझते हैं कि इससे सरकार को अपनी नीति और कार्यक्रम निर्धारित करने में लाभ होगा।

किसानों को अपने उत्पादन का उचित दाम मिले, बजट में इसका प्रावधान किया गया है। उसमें अगर कोई खामी है, तो उसको दूर करना चाहिए। एक और बहुत दूरगामी महत्त्व की योजना 'आयुष्मान भारत' है, जो प्रत्येक नागरिक के लिए पाँच लाख रुपए तक के स्वास्थ्य इंश्योरेंस कवर का प्रबंध करेगी। राज्य सरकार के सहयोग से इस योजना का कार्यान्वयन होना है। यह अत्यंत महत्त्वाकांक्षी योजना है। इसकी पूरी रूपरेखा बननी है। कुछ टिप्पणीकारों ने अमरीका की ओबामा हेल्थ केयर योजना की तरह इसे मोदी हेल्थ केयर योजना की संज्ञा दी है। विरोधी दलों ने प्रश्न उठाया है कि इसके लिए पैसा कहाँ है? कॉपरेटिव फेडरलिज्म का तकाजा है कि राज्य सरकारें और केंद्र मिल-जुलकर तय करें कि इसका अनुपालन किस प्रकार हो। लेकिन खेद है, इस कल्याणकारी योजना को भी राजनीति के नजरिए से देखा जा रहा है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ने अभी से अपने राज्य को इससे अलग कर लिया है कि वे इसमें भाग नहीं लेंगी। उनकी अपनी व्यवस्था बेहतर है। हो सकता है कि कुछ अन्य राज्य जहाँ विरोधी पक्ष की सरकारें हों, २०१९ के आम चुनाव को देखते हुए खुद को इससे अलग कर लें। यहाँ एक बात स्पष्ट हो गई है कि सरकार को गंभीरता से अपने कार्यक्रमों का पुनर्निरीक्षण करना होगा कि वे कहाँ तक अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर रही है। सरकारी तंत्र और दलीय तंत्र यथावत् वाला रुख अख्तियार नहीं कर सकते हैं।

शीर्ष न्यायालय की छवि

१२ जनवरी को सर्वोच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीशों ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में जो प्रश्न उठाए थे, उनका निराकरण होना बाकी है। देश को पता नहीं है कि इस विषय में क्या हुआ। सरकार तथा कुछ अन्य लोगों ने कहा है कि शीर्ष न्यायालय स्वयं यह मसला हल कर लेगा। एक अनिश्चित सी स्थिति बनी हुई है। तरह-तरह की आशंकाएँ प्रकट की जा रही हैं। मामले का राजनीतीकरण हो रहा है, जो कि खतरनाक है। कुछ दलों ने शीर्ष न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के विरुद्ध महाभियोग की भी चर्चा की है, पर यह आसान नहीं है। इससे सर्वोच्च न्यायालय की साख बढ़नेवाली नहीं है। देश के एक वरिष्ठ अधिवक्ता, जो विधिमंत्री भी रहे हैं, ने नोएडा की बेनेट यूनिवर्सिटी में भाषण के बाद विचार-विनिमय के दौरान कह दिया कि सरकार जजों को लड़वा रही है। यह बात न जजों के लिए शोभनीय है और न जेठमलाजी के लिए ही। एक अन्य वरिष्ठ अधिवक्ता फली नरीमन ने तो बहुत पहले ही कहा था कि न्यायालय को खतरा अपने अंदर से है। बार कौंसिल भी चुप है। सर्वोच्च न्यायालय देश की संस्थागत आस्था है, उसे धक्का नहीं लगना चाहिए,

वैसे तो घर-घर मिट्टी के चूल्हे हैं। व्यक्ति से संस्था कहीं बड़ी है और उसे आँच नहीं आनी चाहिए। हम यही मानकर चलते हैं कि इस अध्याय का अब अंत हो गया है।

अयोध्या-विवाद

सर्वोच्च न्यायालय के सामने कुछ ऐसे मामले हैं, जिनमें पूरे देश की दिलचस्पी है। ऐसा ही एक मामला राम मंदिर-बाबरी मसजिद का भी है। सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि वह इसका निर्णय 'किसका हक है' इस आधार पर करेगा। शायद इसका तात्पर्य यह है कि इसे धार्मिक दृष्टि से नहीं देखा जाएगा। अच्छा है कि यह मामला अदालत में तय हो, पर जल्दी हो, क्योंकि देश को पहले ही काफी हानि हो चुकी है, मामले का निपटारा न होने पर व्यर्थ में मतभेद बढ़ते हैं। श्री रविशंकर ने फिर मध्यस्थता की पहल की है। उसमें सौदेबाजी के आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो गए हैं। विवाद में जाने की आवश्यकता नहीं है। उत्तर प्रदेश की सरकार ने भी मध्यस्थता के बारे में कोई रुचि नहीं दिखाई है। उत्तम यही है कि इस विवाद की समाप्ति शीर्ष न्यायालय के द्वारा ही हो, जो सबके लिए मान्य होगा।

क्या सांसद और अधिवक्ता भी?

एक जनहित याचिका सर्वोच्च न्यायालय के विचाराधीन है कि जो अधिवक्ता संसद् अथवा असेंबली के सदस्य हैं, उनको अदालतों में प्रैक्टिस की इजाजत नहीं मिलनी चाहिए। वे कानूनन 'पब्लिक सरवेंट' अथवा जनसेवक करार दिए गए हैं। उनको मासिक तनख्वाह मिलती है, पेंशन है, संसद् या असेंबली में उपस्थित रहने का दैनिक भत्ता मिलता है। उनके लिए निवास-स्थान का प्रावधान है। सफर या चिकित्सा जैसी अन्य सुविधाएँ हैं। ऐसे हालात में उन्हें वकालत करने देना असंवैधानिक है। ये लोग दोहरे फायदे उठा रहे हैं। संसद् या असेंबली की सदस्यता समाप्त होने पर ही उन्हें कानूनी प्रैक्टिस की इजाजत मिलनी चाहिए। यह बड़े-बड़े एडवोकेट का मामला है, पर याचिका में इसका औचित्य प्रतीत होता है। देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

सांसदों की अप्रत्याशित धन-वृद्धि

एक जनहित याचिका के ही दौरान न्यायाधीश चेमलेश्वर और अब्दुल नजीर की पीठ ने महत्त्वपूर्ण निर्णय और सरकार को आदेश दिया है कि वह कानून और नियमों द्वारा यह जानने की शीघ्र व्यवस्था करे कि संसद् एवं असेंबली के सदस्य को अपनी और अपने नजदीकी लोगों की आय का स्रोत क्या है, यह जानकारी चुनाव लड़ने के पहले दें। न्यायालय ने कहा कि पिछले पचास वर्षों से इन लोगों के पास आमदनी से ज्यादा जायदाद दिखाई दे रही है, जो कि लोकतंत्र के लिए घातक है। सरकार को स्थायी रूप से व्यवस्था करनी पड़ेगी कि वह इस मामले में निगरानी रखे। ऐसे लोगों की सदस्यता निरस्त होनी चाहिए, जिनके पास उनकी आमदनी से अधिक संपत्ति है। मतदाता का अधिकार है कि वह चुनाव लड़नेवाले और उसके नजदीकियों की आय के बारे में जानकारी हासिल करे। न्यायालय ने कड़े शब्दों में कहा कि ऐसे कानून बनानेवाले, जिनके पास आमदनी से अधिक संपत्ति और जायदाद है, उनकी सदस्यता निरस्त हो, क्योंकि यह अपराध है और इससे कानून के शासन के स्थान पर माफिया के शासन का मार्ग प्रशस्त होता है। भ्रष्टाचार को रोकने के लिए ऐसे कदम उठाने की आवश्यकता है।

पंजाब नेशनल बैंक का घोटाला

बैंकों के एन.पी.ए. होने यानी ऐसे कर्जे, जिनका भुगतान नहीं हो रहा, की समस्या काफी समय से है और अत्यंत चिंता का कारण है। इस समय एन.पी.ए. की मद में दस लाख करोड़ से अधिक राशि आँकी जा रही है। नीरव मोदी और पंजाब नैशनल बैंक के घोटाले से देश हतप्रभ है। विजय माल्या का मामला पहले से लटका हुआ है। यह बीमारी काफी पुरानी है। सत्ताधारी इसकी अनदेखी करते हैं। नीरव मोदी का घोटाला कैसे व क्यों हुआ और कौन दोषी है? इस पर समाचार-पत्रों और टी.वी. पर बहुत बहस चल रही है। जब तक तथ्य सामने न आ जाएँ, तब तक इस पर कोई टिप्पणी करना बेमानी है। स्पष्ट है कि बैंक अधिकारियों की साँठगाँठ से ही यह संभव है। इसमें राजनेताओं की क्या भूमिका है, इसका भी खुलासा होना चाहिए। कांग्रेस और अन्य विरोधी दल इस पर बहुत मुखर और आक्रामक हैं। उनका निशाना नरेंद्र मोदी हैं, जो व्यर्थ है। जनता में उनकी जो छवि बनी है, वह अभी भी वैसी ही है, जैसा कि सब ताजा आकलन बता रहे हैं। मोदी पर व्यक्तिगत रूप से जितना अधिक आक्रमण होगा, आरोप लगानेवालों का उतना ही नुकसान होगा। कांग्रेस हवा में उड़ रही है, राहुल गांधी अब अध्यक्ष हैं। गुजरात के चुनाव और राजस्थान में एक असेंबली और दोनों लोकसभा की सीटों पर विजयी होने के कारण कांग्रेस जमीनी सच्चाई से दूर होती दिखाई दे रही है। वे बीजेपी की संगठनात्मक शक्ति को भूल जाते हैं। भाजपा भी चुप बैठनेवाली नहीं है। पुराने मुरदे फिर उखाड़े जाएँगे। भाजपा का मुकाबला करने के लिए विरोधी दल आपस में यह भी नहीं तय कर पा रहे कि वे २०१९ के आम चुनाव में किसके नेतृत्व में उतरेंगे। शरद पवार, ममता और मायावती के लिए कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी को नेता मानना मुश्किल है। प्रधानमंत्री और भाजपा को सख्ती से यह देखने की आवश्यकता है कि उसके बड़बोले, जो सस्ती वाहवाही के लिए छपास और दिखास की चाह में जो चाहे बोल देते हैं; उसका खामियाजा सरकार और पार्टी को होता है, के ऊपर अंकुश लगाना चाहिए, ताकि सर्वसाधारण और विदेश में सरकार के बारे में भ्रांतियाँ पैदा न हों। ऐसे लोग चाहे वे सांसद या मंत्री हों, सरकार के लिए आत्मघाती होंगे।

कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

भारत के समसामयिक विषयों के संबंध में ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली के द्वारा एक पुस्तक-शृंखला प्रकाशित हो रही है। इसमें एक दर्जन से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं, जो आधिकारिक विद्वानों द्वारा लिखी गई हैं। हाल ही में सुहास पालशीकर द्वारा रचित 'इंडियन डेमोक्रेसी' यानी 'भारतीय प्रजातंत्र' एवं रेखा दिवाकर द्वारा 'पार्टी सिस्टम इन इंडिया' (भारतीय दलीय व्यवस्था) प्रकाशित हुई हैं। पहले अन्य विषयों, जैसे भारत की सिविल सेवाओं, सूचना का अधिकार,

भारतीय नागरिकता, बॉलीवुड एवं भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के संबंध में पुस्तकें आ चुकी हैं। हम केवल इस शृंखला को अपने पाठकों के संज्ञान में लाना चाहते हैं, पुस्तकों के विषय के विवेचन में जाना हमारा उद्देश्य नहीं है। प्रकाशक ने इस शृंखला की पुस्तकों को संक्षिप्त परिचयात्मक की संज्ञा दी है। लेखक का प्रयास है कि वह अपने चयनित विषय का तथ्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुतीकरण करे, ताकि पाठक को विषय की गूढ़ताओं और समस्याओं से परिचय हो सके। हर एक का अपना दृष्टिकोण होता है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी लेखक की मान्यता से सहमत हों, किंतु एकेडमिक प्रस्तुतीकरण विचार-विमर्श के लिए प्रेरित करता है। हर पुस्तक में अन्य संदर्भ पुस्तकों की एक सूची भी है, जिस माध्यम से विषय की अधिक गहनता की दृष्टि से आधार बनाया जा सकता है। ये पुस्तकें उपयोगी हैं, विशेषतया कॉलेज और विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए, किंतु वे राजनायकों, प्रशासकों और नागरिकों के लिए भी उतनी ही लाभदायक हो सकती हैं। सोचने और करने के लिए नए-नए मानसिक वातायन खुलते हैं। पुस्तकों का मूल्य आज के समय के हिसाब से वाजिब रखा गया है, फिर भी बेहतर होगा, यदि मूल्य २५० रुपए तक सीमित हो जाए, ताकि अधिकाधिक विद्यार्थी और अन्य लोग इस पुस्तकों को खरीद सकें। इससे प्रकाशन की खपत भी बढ़ेगी। इन पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद होना चाहिए। इससे शायद अधिक उत्तम हो कि कोई उत्साही हिंदी प्रकाशक इसी प्रकार की पुस्तकों की शृंखला प्रारंभ करे। विषयों के चुनाव के बारे में एक परामर्शदाता समिति का गठन किया जा सकता है। आवश्यकता पहल करने के साहस की है।

एक मित्र पिछले दिनों हमारे पास गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शिक्षा की छोटी-छोटी बातें' पाँच पुस्तकें ले आए। हिंदी बालपोथी शृंखला की इन पुस्तकों की हमें कोई जानकारी नहीं थी। बालपोथी शृंखला में पाँच पुस्तकें हैं। मित्र ने कहा कि उनकी शिक्षा का प्रारंभ इन्हीं पुस्तकों से हुआ था। वे वय में हमसे करीब दस-पंद्रह वर्ष छोटे होंगे। पुस्तकों को काफी लोट-पोट करने और कुछ अध्यायों को पढ़ने के बाद महसूस हुआ कि हिंदीभाषी प्रदेशों और अन्यत्र भी जहाँ हिंदी पढ़ाई जाती है, ऐसी पुस्तकों का उपयोग होना चाहिए। ये पोथियाँ न केवल सरल और सुरुचिपूर्ण हैं, देश की संस्कृति, प्रमुख स्थलों, त्योहारों और भारत की खेती, पेड़-पौधे की जानकारी देती हैं, जिनसे अधिकतर शहरी बच्चे अनजान ही रहते हैं। हमें ही नहीं पता था कि चंपा की कोई कटहलिया किस्म भी होती है। शुरू से ही चरित्र-निर्माण, अच्छे संस्कार बनें, स्वस्थ रहें, मिल-जुलकर रहना क्यों जरूरी है बातों को छोटी-छोटी कहानियों अथवा प्रसंगों द्वारा रेखांकित किया गया है। बच्चों के मस्तिष्क पर इसका अच्छा असर पड़ता है। क्या भगवान् हर जगह है, बच्चों में शुरू से ही सर्वधर्म समभाव की भावना पैदा करता है। किसी उपदेश की आवश्यकता नहीं है। ईमानदारी, सहयोग-भावना, परिश्रम आदि गुणों की जागृति कैसे हो, इन महत्त्वपूर्ण गुणों के बारे में साधारण पाठों के द्वारा समझाया गया है। गीता प्रेस के नाम से किसी को चौंकने की जरूरत नहीं है। इन पुस्तकों में यदि ध्रुव की कथा है, तो एक पाठ सत्यवादी अब्दुल कादिर पर भी है। एक पाठ अरब और चीन के बारे में भी है। चीन के बारे में, ताकि पड़ोस के देशों के बारे में जानकारी मिले, बच्चों की उत्सुकता बढ़े। ऐसी कोई बात इन पोथियों में देखने में नहीं आती है, जिस पर तथाकथित सेकुलरवादी एतराज करें। हम समझते हैं कि कुछ परिवर्तन भी अपेक्षित हों तो उस विषय में प्रकाशक या संस्थान से बात की जा सकती है। कुछ नए विषयों, जैसे बाल-बच्चियों की समता, छुआछूत की समस्या या इसी प्रकार के अन्य विषयों पर, जो आज जरूरी है, कुछ पाठ और समाहित किए जा सकते हैं। इससे बचपन से ही अच्छा साहित्य पढ़ने की आदत पड़ने लगेगी। खेद है कि इस ओर न शिक्षा अधिकारियों और न राज्य सरकारों का ध्यान है। केंद्र के भी अपने कुछ विद्यालय हैं, पर मुख्यतया प्रारंभिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार का दायित्व राज्य सरकारों का है। भारत के शिक्षामंत्री अथवा मानव संसाधन मंत्री को राज्य सरकारों का ध्यान इस ओर दिलाना चाहिए। हिंदीभाषी क्षेत्रों उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, दिल्ली, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड, हिमाचल आदि की सरकारों, खासकर मुख्यमंत्रियों और शिक्षा मंत्रियों को इस दिशा में क्रियाशील होना चाहिए। आदर्श जीवन-मूल्यों और नैतिक शिक्षा की ये पोथियाँ समर्थ साधन हैं। किसको एतराज होना चाहिए तुलसी के दोहो से—

तुलसी या संसार में भाँति-भाँति के लोग।
सबसे हिलमिल बोलिये नदी नाव संजोग॥
तुलसी या संसार में पाँच रतन हैं सार।
सत्य वजन अरु दीनता दया धर्म उपकार॥

क्या ये सर्वजन हिताय और समावेशी नहीं हैं?

विद्वान् लेखक ललित शर्मा द्वारा रचित 'झालावाड़ : इतिहास, संस्कृति और पर्यटन' पुस्तक प्राप्त हुई। पुस्तक का प्रकाशन पर्यटन विकास समिति, झालावाड़ (राजस्थान) द्वारा हुआ है। पुस्तक जैसा प्रो. सत्यनाराण समदानी, यशस्वी संपादक मीरायन, चित्तौड़गढ़ ने भूमिका में कहा है, ''पुस्तक वास्तव में अपनी (झालावाड़ की) विरासतों को समर्पित एक संपूर्ण संदर्भ ग्रंथ है।'' पिछले सात वर्षों में तीसरा संस्करण प्रकाशित होना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है। शोध और परिश्रम के द्वारा तैयार की गई यह पुस्तक लेखक के बहुपाठी होने के साथ-साथ खोजी दृष्टि की परिचायक है। राजस्थान और मध्य प्रदेश मालवा की सीमा पर स्थित झालावाड़ राजस्थान की आखिरी रियासत थी और ईस्ट इंडिया कंपनी के समय इसका निर्माण हुआ, यह पता नहीं था। ललित शर्मा ने पुस्तक का प्रणयन बड़े परिश्रम और निष्ठा से किया है। उन्होंने अनेक पुस्तकों की रचना की है, इनमें संत सेन और संत पीपाजी पर भी पुस्तकें हैं, जिनके कुछ भजन गुरुग्रंथ साहब में भी संगृहीत हैं। झालावाड़ के इतिहास, संस्कृति और पर्यटन पर उनकी पुस्तक अत्यंत पठनीय है। उनका प्रयास सराहनीय है और वे साधुवाद के पात्र हैं।

पर्यटन उद्योग

भारत सरकार की पर्यटन को बढ़ावा देने की नीति है। हर देश

इसका प्रयत्न करता है, क्योंकि इससे विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। दर्शनीय स्थलों पर न केवल विदेशी पर्यटक, बल्कि देश के अन्य भागों के निवासी भी जाना चाहते हैं। इससे अर्थव्यवस्था को बल मिलता है, रोजगार के नए-नए साधन उपलब्ध होते हैं। भारत तो इतना बड़ा और विविधताओं से भरा देश है कि एक जीवन में उसको जानना ही सहज नहीं है। दर्शनीय स्थान मुख्यतया धार्मिक, सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक अथवा प्राकृतिक सौंदर्य के दृश्यों के लिए जाने जाते हैं। कहीं समुद्र, कहीं रेगिस्तान अथवा पहाड़ों की छवि और छटा का सौंदर्य बिखरा पड़ा है। आंतरिक और विदेशी, दोनों प्रकार के पर्यटकों की सुविधाओं पर ध्यान देना आवश्यक है। यही नहीं, पर्यटकों में दोनों श्रेणियों के लोग होते हैं, कुछेक रईस, पर अधिकतर सीमित साधनवाले। राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता को मजबूत करने के लिए हमें भारत को जानने की अत्यंत आवश्यकता है। राज्य सरकारें और पर्यटन सुविधाओं की व्यवस्था करनेवाले व्यापारिक संगठन पर्यटकों की जानकारी के लिए तरह-तरह के ब्रोशर, पैंफलेट और पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। राजस्थान काफी समय तक हमारी कर्मभूमि रहा है, फिर भी ऐसा महसूस होता है कि अरे, हम कुछ देख ही नहीं सके! राजस्थान का हर जिला और गाँव दर्शनीय स्थलों अथवा पर्यटकों को रुचिकर लगनेवाली वस्तुओं से भरा पड़ा है। यहाँ की प्रमुख विशेषताएँ हैं—ऐतिहासिक स्थल, स्थापत्य कला, मूर्तिकला और घरेलू तथा हाथ से बनी वस्तुएँ, कुछ दैनिक उपयोग में आनेवाली और कुछ ड्राइंगरूम को सजाने की आदि। यह बात हर राज्य के बारे में कही जा सकती है। 'अपना भारत जानो' एक बड़ा अभियान है। यदि भारत के प्राकृतिक और सांस्कृतिक वैभव की जानकारी अधिकाधिक दे सकें, सुविधाएँ मुहैया करा सके तो बहुत से देशी पर्यटक शायद पहले उन्हें देखना पसंद करेंगे, अन्य देशों के दर्शनीय स्थलों को देखने के पहले। भारत के बारे में पहले ही विदेशियों में कुतूहल रहा, यह हम इतिहास के द्वारा जानते हैं, अब नए भारत को उदय होता देख रहे हैं—आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से।

भारत के प्रत्येक राज्य या प्रदेश की पर्यटन संभावनाओं का पूरा दोहन नहीं हो पा रहा है। यह तभी संभव होगा, जब दर्शनीय स्थलों के विषय में वहाँ के गाइड जानकार और कुशल हों। उनके प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। फिर इन स्थानों पर पहुँचने के लिए क्या-क्या साधन उपलब्ध हैं—रेल, सड़क अथवा वायुयान, इसकी जानकारी होनी चाहिए। रुकना पड़े तो उनके ठहरने के लिए आवश्यक सुविधाओं की व्यवस्था होनी चाहिए। पर्यटकों की सुरक्षा आज की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गई है। प्राय: शिकायतें आती हैं, स्थानीय शोहदे देसी और विदेशी पर्यटकों को परेशान करते हैं, उनके साथ दुर्व्यवहार करते हैं। ये लोग नहीं समझ पाते हैं कि ऐसे आचरण से वे अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारते हैं। नुकसान स्थानीय आर्थिक व्यवस्था का ही होता है। स्थानीय लोगों को यह समझना चाहिए कि दुनिया विविधता से भरी है। विदेशी पर्यटकों का रहन-सहन, कपड़े, भोजन शैली आदि विभिन्न तरह के होते हैं। उनपर फब्तियाँ कसना, उनको तंग करना स्वीकार नहीं किया जा सकता। विदेशी पर्यटकों से छेड़छाड़ या मारपीट की घटनाएँ गंभीर रूप ले लेती हैं। हम उन राज्यों को, जहाँ ऐसी घटनाएँ प्राय: होती रहती हैं, नामांकित नहीं करना चाहते, किंतु उन्हें इस समस्या की गंभीरता का एहसास होना चाहिए। उन्हें समझना होगा कि इससे देश की छवि धूमिल होती है और पर्यटकों की संख्या पर प्रभाव पड़ता है। सुरक्षा, खासकर महिला पर्यटकों की, एक चिंतनीय व गंभीर समस्या है। प्रशासन और पुलिस को इस विषय को हल्के में नहीं लेना चाहिए। इस समस्या के समाधान के लिए 'पर्यटन पुलिस' बनाने की बात हुई, पर पता नहीं फिर क्या हुआ। निजी और सरकारी पर्यटन व्यवस्था करनेवाले सभी संस्थाओं और विभागों को पर्यटन की समग्रता को समझना चाहिए। इस दिशा में सामूहिक प्रयास आवश्यक हैं। यह एक विभाग या मंत्रालय का विषय है, इस दूषित मानसिकता से सभी विभागों को ऊपर उठना है।

यह आवश्यक है कि केंद्र का पर्यटन मंत्रालय इन सब विषयों पर समग्रता से विचार करे, जो निजी पर्यटन व्यवस्था कर रहे हैं, उनके संगठनों से विचार-विमर्श करें। पहल और उसके बाद नीतियों का अनुपालन ठीक से हो रहा है, यह दायित्व तो केंद्रीय मंत्रालय का ही है। राज्य सरकारों का सहयोग प्राप्त करने की निरंतर कोशिश होनी चाहिए।

हमने पहले जिक्र किया है कि पर्यटकों के प्रति हमारा रुख ठीक नहीं है। अभी गोवा के एक मंत्री ने कहा कि वे केवल उच्च धनाढ्य पर्यटक ही गावा में चाहते हैं। उत्तर भारत से आनेवाले पर्यटकों को उन्होंने 'स्कम ऑफ द अर्थ' अथवा 'जमीन के कूड़ा-करकट' की संज्ञा दी है। उनकी राय में इन लोगों ने गोवा के पर्यटन के परिदृश्य को दूषित कर दिया है। इस प्रकार का बयान संकुचित मानसिकता का ही परिचायक है। हर भारतीय नागरिक को देश में कहीं भी जाने की छूट है। ठीक है, यदि पैसेवाले पर्यटक आते हैं, पर्यटन से अच्छी कमाई होती है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं होना चाहिए कि सत्ता में रहनेवाले उत्तर भारत में रहनेवाले लोगों की इस तरह अवमानना करें। इससे भेदभाव के बीज पड़ते हैं, जबकि देश राष्ट्रीय एकता की माँग करता है। शीला दीक्षित जब दिल्ली की मुख्यमंत्री थीं तो उनकी भी इस प्रकार की टिप्पणी को लेकर बड़ी प्रतिक्रिया व विरोध हुआ था। सत्ता में बैठे व्यक्तियों को अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए। पर्यटन बढ़ेगा सभी वर्गों के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराने पर, धनी वर्गों को आप और अधिक सुविधाएँ दें, आँखों पर बिठाएँ, यह तो मान्य है, किंतु कम आयवाले पर्यटकों की उपेक्षा और किसी क्षेत्र को इंगित करते हुए अपशब्द कहना पर्यटन की नैतिकता एवं मर्यादाओं का अपमान है। सरकार भी अपने मंत्री का बचाव करते हुए उसकी बातों को सही बताए, यह और भी विचित्र स्थिति है।

आपसी सौहार्द का पर्व होली एवं नव संवत्सर की पाठकों को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी

(त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी)

ब्रज में मनुष्य ईश्वर नहीं, ईश्वर मनुष्य है

• विद्यानिवास मिश्र

अद्भुत आश्चर्य है कि ऐतिहासिक घटनाओं के दवाब में जिस क्षेत्र में नफरत की परत जमनी चाहिए, वहाँ प्यार, कामहीन प्यार उभरता रहा। दूसरा अचरज यह है कि यहाँ की समृद्धि धन-लोलुपों को इतना ललचाती रही कि उसके कारण इस क्षेत्र को दर्जनों बार रौंदा गया, बस्ती-की-बस्ती टीला बनती गई और टीलों पर नई बस्ती बनी, परंतु यहाँ आर्थिक, सामाजिक विषमता के स्थान पर बराबरी या समता की भावना पनपती रही। प्यार और समता के इस योग के होते हुए लोग कहते हैं कि भक्ति-केंद्र ब्रज-संस्कृति के तो मानवीय आयाम तो कुछ हैं ही, लौकिक आयाम भी नहीं हैं, वहाँ तो बस अलौकिक अतिमानवीय रूप की छटा है या ठीक कहें, घनघटा है। यहाँ मानवीय आयाम की बात करनी ही व्यर्थ है, यहाँ भक्ति ने मनुष्य को उसके अस्तित्व से वंचित कर दिया है।

प्रश्न है कि मानवीय या लौकिक कोई ऐसी चमत्कार की कोटि है, जिसमें भक्ति कीर्तन हो जाए या उलटकर दूसरा प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या भक्ति स्वयं केवल लोकोत्तर की चिंता है, क्या भक्ति मानवीय नहीं है? दोनों प्रश्नों का उत्तर एक ही है कि ऐसा कुछ नहीं और कम-से-कम ब्रज में अपनी तरुणाई फिर से पानेवाली, फिर से नई शक्ति पानेवाली वैष्णव-भक्ति के संदर्भ में दोनों प्रश्न अर्थहीन हो जाते हैं।

एक तो यहाँ परमेश्वर स्वयं मनुष्य के, बहुत सामान्य मनुष्य के सहज सलोने अपनाव के चाहक हैं। उनकी भूख बिना माखन माखन-सा मानव-मन चखे जाती ही नहीं। उनकी प्यास यशोदा के दुलार के बिना नहीं बुझती, दूसरे मनुष्य की मनुष्य मात्र के लिए, व्यक्ति की समष्टि के लिए और एक की अनेक के लिए चिंता हो तो भक्ति का चरम चरितार्थ है। सबसे बड़ी कामना यहाँ मोक्ष नहीं है, क्या करेंगे पत्थर जैसा मोक्ष-पद लेकर, जहाँ खुद पत्थर होने का जोखिम है, हमें तो ऐसी भूमिका चाहिए, जहाँ दूसरे की पीड़ा अपनी पीड़ा हो जाए, दूसरे का दर्द अपना हो जाए और विशाल व विपुल के सुख में ही अपना सुख समा जाए। हमें तो एक साथ दीया होना है—अर्थात् मिट्टी की काया, स्नेह का आपूरण और अपने को जला के रोशनी करनेवाली बत्ती की चित्तवृत्ति—तीनों का एक अस्तित्व के रूप में संपुंजन—और होना है ओस-बिंदु की ढरकन, आकाश जैसे खुले मन का ऐसे द्रव में रूपांतरण, जो मोती की तरह एक क्षण झलकता है, पर छूने में नहीं आता; वह दिखता भी नहीं, बस थोड़ा-सा भिगो देता है। मनुष्य की ऐसी भूमिका को, जहाँ जीवन की सबसे ऊँची भूमिका माना जाए, वहाँ अलग से कौन और मानवीय आयाम ढूँढ़ने की जरूरत रह जाती है?

श्रीमद्भागवत में उद्धव जब गोपियों के सहज भाव से विभोर होकर मथुरा लौटते हैं तो सोचते हैं—

तासामहो चरणरेणुजुषामहं स्यां,
वृन्दावने किमपि गुल्मलतौषधीनाम्।
या दुस्त्यजं स्वजनमार्यपथं च हित्वा,
भेजुर्मुकुन्दपदवीं श्रुतिभिर्विमृग्याम्॥

जिन गोपियों ने सारी निजता विसर्जित करके स्वजन तजकर, लोक-परलोक की चिंता छोड़कर अच्छा और भला कहलाने लायक रास्ता छोड़कर एकांत भाव से श्रीकृष्ण की पदवी पाई, श्रीकृष्ण के चरणों में स्थान पाया, उन गोपियों की पद-रज से उमगनेवाला काश! मैं कोई झाड़ ही होकर यहाँ रह जाता, कोई औषधि होकर यहाँ पसर जाता, यह वृंदावन का पथ ही मेरा पड़ाव बन जाता। जिसे ऋषियों की दिव्यदृष्टि नहीं पा सकी, उस श्रीकृष्ण भाव को गोपियों ने ऐसे सहज, निश्छल आत्म-निषेधी प्यार से पा लिया। देवता होना व्यर्थ है, तप व्यर्थ है, नैष्कर्म्य व्यर्थ है, ज्ञान व्यर्थ है, जब तक कि माटी की काया में भाव की देह बनने की संभावना की तलाश नहीं होती। सबकी देवर्षि गंधर्व का यही तो तरस है—'हम न भई वृंदावन रेनु', कुछ न होते, हम वृंदावन की रज ही हो जाते—विशाल रस के पारावार का स्पर्श तो पा सकते, और कभी उस पारावार में और उद्वेलन होता, तो हम रज न रहकर रस में कभी-न-कभी विलीन होने की बाट जोहते रहते। उद्धव की यह आकांक्षा देवताओं-मुनियों की यह तरस जिस मानवीय आयाम के लिए है, वह क्या है, इसे थोड़ा और गहराई में जाकर समझा जाए। ब्रज में सभी लोग शुद्ध-निश्छल तो होंगे नहीं, कुछेक बावले होंगे और होते रहेंगे। अधिकतर लोग छल-प्रपंच में लिपटे पड़े रहेंगे, और जहाँ भगवद्भक्ति को ही छल-प्रपंच का सामान बनाने की सुविधा हो, भगवान् के चाहक गाहक बनकर उपस्थित हों, वहाँ तो और अधिक सुरक्षित सुविधा मिल जाती है, वहाँ तिलक-छापे और जपमाला प्रवंचना के सहज साधन बन सकते हैं, फिर कैसे वहाँ संस्कृति का निर्माण होगा? संगमरमर के फर्श से होगा, सोने-हीरे के मुकुट से होगा या मखमली-

रेशमी पहरावे से होगा या छप्पन प्रकार के भोगों से होगा? आज के संदर्भ में यह प्रश्न कुछ और तीखा हो उठता है, कल का वंचक वैष्णव भी चिंता करता है कि ब्रज की जमीन का जर्रा-जर्रा साफ-सुथरा होना चाहिए, पानी निर्मल होना चाहिए, हवा परब्रह्म की वंशी की फूँक से एक बार शुद्ध हो चुकी है, उसे उतना ही शुद्ध बना रहना चाहिए, कँटीले करीलों को वहाँ वैसे ही बने रहना चाहिए, क्योंकि वे ही तो श्रीकृष्ण की रस-सृष्टि के प्रत्यक्ष साक्षी हैं, उनकी जड़ों में श्रीकृष्ण की उस वेदना का रस आज तक मिला हुआ है, जो वेदना उन्हें प्रियाजी के पैरों में चुभे काँटे को निकालते समय हुई होगी। वह ब्रज के अस्तित्व के लिए कुछ-न-कुछ गुहार तो लगाता, पर आज तो किसी को चिंता नहीं। आज हम मनुष्य हो गए हैं न। यह जरूरी है कि ब्रज-संस्कृति मनुष्य को उसके परिवेश, उसके समूचे अस्तित्व से काटकर नहीं रखती; मनुष्य, पहाड़, नदी, पेड़-पौधे, पक्षी, रात-दिन, चाँद-सूरज सभी से मिलकर बड़ा मनुष्य बनता है, दूसरे शब्दों में नर-रूप में कृष्ण, गोपाल और बनवारी का योग ही नारायण है। पर मनुष्य कितना भी वंचक क्यों न हो जाए, कभी-कभी उसके मन में हूक उठती है : बच्चों की निर्व्याज हँसी क्यों नहीं हँसी जाती? किशोर मन का आवेग सत्यानाशी पर समूची सुख-चाह से तिरस्कृत करनेवाला आवेग क्यों नहीं उच्छ्वासित होता? गाँव के जंगल के आदमी की सीधी समझ क्यों नहीं समझ में आती? सब उस हूक के कारण रहीम, रसखान, हरिराम, व्यास, हरिदास, हरिवंश, मीरा, सूरदास नहीं बनते; पर अकबर जैसा प्रतापी बादशाह साधारण लिबास में छिपकर ब्रज का होना चाहता है, ब्रजभाषा में कुछ कहना चाहता है; ग्राउज जैसा परदेसी हाकिम ब्रजभाषा की कवि-गोष्ठी राजा के तौर पर नहीं, सहृदय भावुक के तौर पर करना चाहता है। यह सब यही सिद्ध करता है कि ब्रज-संस्कृति में एक विचित्र बात है। वह एक ओर परायों को अपना बना लेती है तो दूसरी ओर अपनेपन के भाव को सीमित अपनेपन के भाव को, अहमंता को ऐसा नष्ट करती है कि आदमी अपने से पराया हो जाता है। चैतन्य के परकीयाभाव का वास्तविक काव्यार्थ यही है कि श्रीकृष्ण के लिए प्यार करने का अर्थ है अपने से अपने भाव से वंचित हो जाना, ऐसे वंचित हो जाना कि पराया होकर करुणावश अपने लिए चिंता करने लगे। ऐसा परकीय भाव जब धारा बनकर उमड़ता है तो अपने आप ऐश्वर्य देह में लगी उबटन की तरह धुल जाता है। कुल-जाति के साथ जुड़ाव दूर किनारे छूट जाता है, सारी विद्या की सुधि-बुधि जाने कहाँ बिला जाती है। केशों में गुँथे फूलों के साथ और धार में बहते हुए अस्तित्व अपने आप कागद की नाव बन जाता है। वह नाव भी गल जाती है, अस्तित्व पानी बन जाता है। क्या मनुष्य-जीवन की चरम सार्थकता इससे कुछ अधिक होनी चाहिए? क्या कोई जगह सुरक्षित नहीं रहनी चाहिए, जहाँ मीरा को बावली बनाने के लिए, हरिदास के करवा में रखे जल को अमृत बनाने के लिए, राजाओं के मुकुट को भूलुंठित करने के लिए, चैतन्य को नए चैतन्य का रसमय चैतन्य का साक्षात्कार करने के लिए, रहीम-रसखान, ताज जाने कितने ऐसे लोगों के भीतर एक ऐसी चाह भरने के लिए, जिसमें न बैकुंठ की चाह रहे, न बैकुंठ में रहनेवाले हरि की चाह रहे, केवल चाह की चाह रह जाए, प्यास की प्यास रह जाए, जीवन एक अंतहीन उत्कंठा बन जाए और समस्त विश्व और विश्वात्मा उस उत्कंठा में ही आकार पा जाएँ? वह जगह अब भी ब्रजभूमि है, आज भी, इतनी सारी अमानवीय विडंबनाओं के बावजूद। आज भी ब्रज-संस्कृति में, ब्रज में पूरी तरह ब्रज की कल्पना से एकदम अलग हो जाने के बाद भी स्वप्न-रूप में ही सही, आँखों के छलावे के रूप में ही सही, मानवीयता का इतना सामान्य, इतना निर्विशेष, पर इतना ओर-छोरहीन आयाम देखने को मिल सकता है, कोई देखे तो सही, अपने को किनारे करके कोई भीतर झाँके तो सही। यह सपना ही सही बड़ा बनाता है, यह स्मृति ही सही मधुर बनाती है और यह छलावा ही सही मनुष्य को अनंत की ममता देता है।

गाँव के जंगल के आदमी की सीधी समझ क्यों नहीं समझ में आती? सब उस हूक के कारण रहीम, रसखान, हरिराम, व्यास, हरिदास, हरिवंश, मीरा, सूरदास नहीं बनते; पर अकबर जैसा प्रतापी बादशाह साधारण लिबास में छिपकर ब्रज का होना चाहता है, ब्रजभाषा में कुछ कहना चाहता है; ग्राउज जैसा परदेसी हाकिम ब्रजभाषा की कवि-गोष्ठी राजा के तौर पर नहीं, सहृदय भावुक के तौर पर करना चाहता है। यह सब यही सिद्ध करता है कि ब्रज-संस्कृति में एक विचित्र बात है। वह एक ओर परायों को अपना बना लेती है तो दूसरी ओर अपनेपन के भाव को सीमित अपनेपन के भाव को, अहमंता को ऐसा नष्ट करती है कि आदमी अपने से पराया हो जाता है।

सुधी पाठकों, लेखकों एवं विज्ञापनदाताओं को

'साहित्य अमृत' परिवार की ओर से

होली तथा नव नवसंवत्सर

की हार्दिक शुभकामनाएँ!

दान-पुन्न

• सुशील कुमार फुल्ल

मेज पर गुड़ की पेसी पड़ी थी, जो अब चींटियों का भोजन बन गई थी।

मियाँ-बीवी जाने लगे तो आदित्य ने अपनी माँ से कहा, ''जरा निन्नी के यहाँ जाना है पटेल नगर। बस दो घंटे में वापस आ जाएँगे। आप अंदर बैठकर टी.वी. देखते रहें। मैं बाहर से ताला लगा देता हूँ।''

''बाहर से ताला क्यों?'' वह चौंकी, गाँव में ऐसा नहीं होता। हम स्वयं अंदर से कुंडी लगा लें तो घबराहट नहीं होती, लेकिन कोई बाहर से ताला लगा दे तो अजीब सी अनुभूति होती है।

''यह दिल्ली है। यहाँ हर रोज लुटेरे घरों में घुसकर लूटपाट करते हैं और बाद में बुजुर्गों का मर्डर भी। बड़े बेरहम और जालिम लोग हैं। हम गए और आए। आप आराम से बैठें।'' कहकर उसने कमरे को बाहर से ताला लगा दिया।

ओम अंदर से चिल्लाती ही रही—''अरे, मेरी साँस घुटी जाती है। मैं मर जाऊँगी! मैं हूँ न यहाँ। फिर ताले की क्या जरूरत है?''

लेकिन उनपर कोई असर नहीं हुआ। वे दोनों धप-धप करते हुए सीढ़ियाँ उतर गए।

कमरे में बंद माँ के लिए आर.के. पुरम् का वह सरकारी आवास श्मशान की साँ-साँ में डूब गया था।

□

उसे लगा, वह गलत दरवाजे पर आ खड़ा हुआ था।

सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते उसका साँस फूल गया था। एक बार ओम ने कहा भी था, 'तुम डॉक्टर को दिखा क्यों नहीं लेते?'

'तुम्हारी लाडली बहू ने तो बहुत पहले ही डिक्लेयर कर दिया था कि मुझे श्वासी है और इसीलिए उसने वर्षों तक अपने बच्चों को मेरे पास नहीं आने दिया। कहती थी कि पापा गुल्फे फेंकते हैं। दमा नामुराद बीमारी है।' थोड़ा रुककर उसने फिर कहा, 'आजकल इसलिए सहन करती है, क्योंकि उसकी नजर मेरे बैंक बैलेंस पर है। जीवनशैली में कितना अंतर आ गया है। आजकल हर बच्चे को अलग-अलग तौलिए चाहिए। अलग कमरा चाहिए। हम आठ बहन-भाई एक ही तौलिए से काम चला लेते थे।'

उसने प्रथम तल पर पहुँचते ही घंटी बजाई। अंदर से कविता बाहर आई। ससुर के पाँव छूने के बाद उसने बैग पकड़ा और बिना किसी संकोच के कहा, 'पापा, आप बुरा न मानना। दौड़कर पासवाली मार्केट से पाँच किलो आटा तो ले आओ। आज इन्हें दफ्तर में बहुत काम था, इसलिए बाजार नहीं जा पाए।'

प्रतिष्ठित साहित्यकार। अब तक ६८ से अधिक ग्रंथ, जिनमें १२ कहानी-संग्रह, ८ उपन्यास, ६ बाल उपन्यास, १५ आलोचना ग्रंथ, अनेक संपादित ग्रंथ एवं उपन्यास अंग्रेजी में, हिंदी से अंग्रेजी तथा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद प्रकाशित। 'हिमाचल अकादमी पुरस्कार', 'चंद्रधर शर्मा गुलेरी पुरस्कार', 'अखिल भारतीय कहानी पुरस्कार', 'राष्ट्रीय पुरस्कार' सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित।

कबीर ने कुछ नहीं कहा। उसने केवल कविता की ओर आश्चर्य से देखा। आह, कितने बेबाक हैं ये शहरी लोग! उसे लाहौरी राम की याद आ गई। किसी ने उसके नाम पत्र दे दिया था कि कबीर और उसकी धर्मपत्नी आए तो उन्हें घर पर ठहरा लेना।

उन्होंने मसूरी जाना था। एक रात देहरादून में काटनी थी। वह मित्र की चिट्ठी लेकर लाहौरी राम के घर पहुँचे। चिट्ठी देखते ही उसने कहा, 'मैं नहीं जानता, यह व्यक्ति कौन है, जिसने तुम्हें चिट्ठी दी है।'

कबीर ने कई संदर्भ दिए, परंतु उसने पहचानने से साफ इनकार कर दिया। वह बहुत परेशान हुआ था। उन दिनों आम आदमी कहाँ ठहरते थे—होटलों में। दूर-पास की पहचानवाले के पास रुक जाना आम बात थी, लेकिन आजकल तो सभी होटलों या गेस्ट हाउस में ही ठहरना पसंद करते हैं। उसे याद है, वह रात उसे रेलवे स्टेशन पर ही बितानी पड़ी थी।

कविता बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए अंदर चली गई थी। कबीर धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतर रहा था।

□

वह बार-बार अंदर-बाहर आ-जा रहा था। शायद अपनी माँ से कुछ कहना चाहता था, परंतु कह नहीं पा रहा था। उसकी जीभ पर झेंप चिपक गई थी। माँ ने ही पूछ लिया, 'बेटा, क्या बात है? तुम परेशान लगते हो।'

तभी कविता ने अंदर आते हुए बिना किसी भूमिका के कहना शुरू किया—'माँजी, पैसे पेड़ पर तो नहीं लगते और फिर बीमारी पर खर्च तो निरंतर झरते हुए पत्तों की तरह होता है।'

आदित्य उसे अवाक् देखता रहा। बोला कुछ नहीं।

'तो फिर क्या चाहती हो?'

'माँजी, सारा खेल पैसे का है। रिइंबर्समेंट आते-आते तो देर लगेगी। फिर नेहा ने नया पंगा डाल दिया है। पति से लड़-झगड़कर घर

आ बैठी है। एक साल हुआ नहीं, अब डाइवोर्स चाहती है।'

'तो रिइंबर्समेंट के पेपर भर दो न।'

'सरकारी पैसा है, इतनी आसानी से नहीं मिलता।'

'आश्रितों के बिल जल्दी पास नहीं होते।' आदित्य ने दबी जबान में कहा। थोड़ा रुककर कुछ सोचने का अभिनय करते हुए बोला, दर-असल पापा ने तुम्हारे खाते में बहुत सा सरप्लस मनी डाल रखा है। वह साहस नहीं बटोर पा रहा था। जानता था कि वह झूठ बोल रहा था, परंतु कविता का उसपर दवाब था। वास्तव में जब हमारे मन में चोर होता है, तो उसकी उपस्थिति हमें किसी-न-किसी रूप में झकझोरती अवश्य है, भले ही हम स्वार्थवश मन की उस बात को अनसुना कर देते हैं।

ओम समझ गई। वह जानती है कि उसका बेटा अपने बाप से पैसा निकलवाता रहता है, कभी कोई बहाना बनाकर तो कभी कोई। अब उसकी नजर बुढ़ापे के लिए रखे पैसे पर टिक गई है। वह सोचने लगी कि खुद इतना पैसा कमानेवाला बेटा भी पैसे के लिए जीभ लपलपाने लगा है। शायद माँ-बाप का पैसा भी बच्चों को सरकारी पैसा लगने लग जाता है। दरअसल बिगाड़ा तो खुद इन्होंने ही है।

'फिर क्या? वह तो किसी और काम के लिए रखे हैं। फरीदाबाद वाला जो प्लॉट बेचा था, उसके पैसे भी तो तुम्हारे पास ही हैं, उसमें से खर्च कर लो।' ओम ने सुझाया।

'माँ, वह तो मैंने बच्चों की शादियों के लिए फिक्स्ड डिपॉजिट में रख दिए। कुछ अपने पी.पी.एफ. में जमा करवा दिए और फिर रवि अमरीका में एडमिशन लेना चाहता है।'

'सो तो ठीक है, परंतु तुम्हारे पापा ने सबकुछ तो तुम्हें दे दिया है। तुम इतने बड़े अफसर हो, खुद भी कुछ करना चाहिए। हमने तो उम्र भर पेट काट-काटकर जो पैसा जोड़ा, वह सब आप लोगों को दे दिया। अभी लड़कियों को तो कुछ भी नहीं दिया।' ओम की आवाज में उपालंभ भी था और एक आक्रोश भी।

कविता ने अपनी सास की बात अनसुनी करते हुए कहा, 'माँजी, आप चलने-फिरने लायक हो गईं, यही क्या कम है। घुटने बेकार हो जाएँ तो जिदंगी बेकार हो जाती है। अब इतना पैसा लगा है, तो उसकी रिइंबर्समेंट तो लेनी ही है न। सरकारी पैसा मिलता है, तो क्यों छोड़ें?'

'तो ले लो न, कौन रोकता है।' ओम ने सहज भाव से कहा।

'सरकारी पैसा ऐसे ही थोड़े मिल जाता है। इसके बड़े सख्त कायदे-कानून होते हैं।' वह फिर बोली।

'तो कायदे-कानून से भर दो न कागज।'

'रिइंबर्समेंट तो हो जाएगी, लेकिन माँ तुम्हारे अपने खाते में ज्यादा पैसे रहेंगे तो बिल पास नहीं होगा।' भोली सी सूरत बनाकर आदित्य ने कहा।

'फिर क्या चाहिए?'

'तुम्हारे खाते में जो बीस लाख जमा हैं न, उसे टेंपोरेरेली मेरे खाते में डाल दो। जब मेडिकल बिल का भुगतान हो जाएगा तो मैं पैसा वापस आपके खाते में डाल दूँगा। आप इस ट्रांसफर वाउचर पर हस्ताक्षर कर दो। फिर सब ठीक हो जाएगा।'

ओम ने क्षण भर के लिए चौंककर देखा, लेकिन फिर सँभलते हुए बोली, 'मैंने तो ऐसा कानून कभी देखा-सुना नहीं। तुम्हारे पापा से पूछ लूँगी।'

वह जानती है कि एक बार पैसा गया तो फिर तो वापस आने का प्रश्न ही नहीं। आज तक इसने कोई पैसा हाथ पर नहीं रखा और न ही कभी लेकर लौटाया है।

कविता को लगा, बना-बनाया खेल बिगड़ गया, परंतु सोचा कि जरा चालाकी से काम लेना होगा। सोने का अंडा चाहिए तो मुरगी को पुचकारना भी तो होगा।

□

सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते वह हाँफने लगा था। जब भी वह किसी से अपने दम चढ़ने की बात करता तो तुरंत सलाह मिलती कि यह तो नामुराद बीमारी दमा है, जिसका कोई सहज इलाज नहीं। वह चुप हो जाता।

कबीर खड़ा देखता रहा। आर.के. पुरम की बत्तियाँ झिलमिल-झिलमिल कर रही थीं। उसे लगा कि वह गलत दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया था। कैसे लोग हैं, जो समय पर रसोई का सामान भी पूरा नहीं रखते। मैं छह सौ किलोमीटर का सफर करके आया हूँ और आते ही हुक्म मिल गया कि पहले आटा लाऊँ तो रोटी मिलेगी।

वह धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरने लगा।

□

घर में कोहराम मचा हुआ था। कबीर वापस आ गया था। भाइयों को यह जरा भी अच्छा नहीं लगा। राजन ने तो कहा था, 'इतना पढ़-लिख बीमारी चिपक गई। मैं ड्रिल करता तो साँस फूलने लगता। हाँफकर बैठ जाता, परंतु यह सब तो फौज में नहीं चलता, सो वापस आ गया हूँ।'

वह हैरान था कि उसके भाइयों में उसके प्रति जरा भी हमदर्दी नहीं थी। वह तो उन्हें अवांछित लग रहा था, मानो वह सबका हक छीन लेगा।

'पढ़-लिखकर भी अगर घर में ही बैठना था, तो व्यर्थ में क्यों इतना खर्च करवाया।'

कबीर सेना में भरती हो गया था। बहुत खुश था। सेना में मिलनेवाली सुख-सुविधाएँ भला किसे अच्छी नहीं लगतीं। अनुशासन भरा जीवन। लेकिन दो साल बाद ही उसे डिस्चार्ज दे दिया गया, क्योंकि वह अनफिट घोषित कर दिया गया था। उसने कहा, 'मैं कब वापस आना चाहता था। पता नहीं, कहाँ से साँस की नामुराद बीमारी लग गई।'

माँ-बाप के लिए तो सभी बच्चे बराबर होते हैं। बूढ़े पिता ने पूछा, 'बच्चा, क्या करना चाहते हो। मैंने तो परमात्मा का लाख शुक्र मनाया था कि तुम्हारी सरकारी नौकरी लग गई, परंतु कौन जानता था कि तुम यहीं लौट आओगे। तुम्हीं बताओ, मैं तुम्हारे लिए क्या करूँ?'

'आप मुझे भी थोड़ी जमीन खेती के लिए दे दें, तो काम चल जाएगा। बाद में कोई नौकरी मिल गई तो देख लूँगा।'

'बावड़ी के पासवाली जमीन ही खाली है, वह ले लो। वैसे है तो

पथरीली, लेकिन उसे खेती लायक बनाया जा सकता है। थोड़ी मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी।'

'मुझे मंजूर है। खाली तो मैं बैठ नहीं सकता।'

उसने खूब मेहनत करनी शुरू कर दी। जल्दी ही उसके अन्न के भंडार भरने लगे, परंतु जेब में पैसे फिर भी नहीं होते थे। कुछ खरीदना हो या बच्चों को फीस आदि के लिए पैसे भेजने होते तो वह इंतजाम तो कर लेता, परंतु थोड़ी मुश्किल जरूर होती।

घर में कोई उत्सव था। उसके सेनावाले दोस्त भी आए हुए थे। बातों-ही-बातों में रमणीक ने कहा, 'कबीर, कई बार मेरा मन होता है कि मैं भी फौज की नौकरी छोड़कर खेती-बाड़ी शुरू कर लूँ। कितना सुखमय एवं शांत जीवन होता है और स्वतंत्र भी।'

'बात तो ठीक है, परंतु ऐसी गलती मत कर बैठना। ठीक है, खेती तपस्या है। इसमें शांति है और स्वतंत्रता भी। परंतु किसान की जान तो महाजन के पिंजरे में बंद रहती है।'

'क्या मतलब?'

'किसान के पास हार्ड कैश तो होता नहीं। अनाज है, लेकिन यह मंडियों में जाएगा। महाजन की कृपा होगी, तभी खरीदा जाएगा। तुम्हारी तन्ख्वाह तो हर महीने की पहली तारीख को सिरहाने के नीचे पड़ी होती है।' कबीर ने टिप्पणी की।

'वेतन भी तो काम करने पर ही मिलता है।'

'सो तो ठीक है, परंतु आज भी इतने किसान आत्महत्या क्यों करते हैं? जानते हो, पूस की रात का हल्कू आज भी महाजन की 'बाकी' चुकाते-चुकाते मर जाता है; पर बाकी है कि खत्म ही नहीं होती। फर्क सिर्फ इतना है कि आज बैंक महाजन बन गए हैं और उनके रिकवरी एजेंट यमदूत।' कबीर रुआँसे स्वर में बोला।

गटारियाँ मस्ती से खेतों में कीड़े-मकौड़े चुग रही थीं और कबीर उन्हें खड़ा गड़रिये सा निहार रहा था अपलक।

□

वह आया तो इस बार ओम ने फिर बात छेड़ दी कि बेटियों को भी उनका हिस्सा मिलना चाहिए।

आदित्य भड़क उठा, 'कैसा हिस्सा? उनके विवाह पर इतना तो खर्च कर दिया गया है। अब और क्या देना बाकी है?'

'खर्च तो तुम्हारे विवाह पर भी हुआ है।' कबीर ने कहा।

'यदि आपने जमीन या घर उनके नाम किया तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा। पहले ही आपने तीन लाख रुपए बाजार में डुबो दिए हैं। ज्यादा ब्याज के लालच में बाजार में पैसा फेंकना कहाँ की अक्लमंदी है।' बेटे के तेवर ही बदले हुए थे।

कबीर को बुरा तो बहुत लगा, लेकिन वह चुप ही रहा। बोला, 'वह मेरा पैसा है। तुम्हारे से तो नहीं लिया। यह मेरी बनाई-कमाई हुई जायदाद है। मैं चाहूँ तो तुम्हें भी हिस्सा न दूँ।'

'तो क्या छाती पर रखकर ले जाओगे? या पड़ोसियों को खुश कर जाओगे?' बौखलाया हुआ आदित्य बोला था, 'और हरि पाधे का हाल तो आपने देखा ही है। बेटों ने ही उसे पंखे से लटका दिया था और बाद में उनमें से एक बहन ने अपने भाई को ही···।'

कबीर सोचने लगा कि उसने गलती की। दरअसल ईजी मनी मिलते रहने से इनसान की प्यास वैसे ही बढ़ती है, जैसे नमकीन पानी पीने से प्यास भड़कती है। आदित्य नहीं जानता, उसके पापा ने किस प्रकार डाकघर के खाताधारकों का एजेंट बनकर कैसे पैसा कमाया। बस उसे तो पता है कि पापा से जब भी जितना माँगा, उससे दुगुना-तिगुना ही मिला। अब लहू मुँह को लग गया है, तो पैसा न मिलने पर तल्खी भी दिखाने लगा है।

मेज पर पड़ी गुड़ की पेसी और उससे लिपटी असंख्य काली-भूरी चींटियाँ, यह उनके लिए दान-पुन्न ही तो है। और माँ-बाप से लिपटी संतान। उन्हें पैसा देना दान-पुन्न ही है क्या या रैंजम? शब्दों का हेर-फेर हो सकता है, परंतु बात तो वहीं पहुँच जाती है।

आदित्य आता तो कबीर और ओम एकदम खिल जाते। माँ-बाप के लिए तो संतान-सुख सबसे बड़ा सुख होता है, लेकिन कभी-कभी कबीर को लगता कि बेटे का व्यवहार अलग-अलग समय पर अलग-अलग होने लगा। कभी वह कठोर शब्दों का प्रयोग करता और कभी बिल्कुल कोमल पदावली का। इस बार वह आया तो बड़ा मिठास भरा था। बोला, 'पापा, माँ के घुटनों में तकलीफ बढ़ गई लगती है। मैं चाहता हूँ कि मैं उनका चैकअप दिल्ली के किसी बड़े अस्पताल में करवा दूँ।'

कबीर सोचने लगा, बात तो ठीक है, परंतु पिछली बार बात चली थी तो कविता ने कहा था, अब तो पहाड़ में भी सुपर स्पेशिलिटी अस्पताल हैं। शायद वह नहीं चाहती कि कोई उसके पास दिल्ली में ठहरे; हालाँकि आदित्य को बड़ा घर मिला हुआ है, पाँच बेड रूमवाला। उसने कहा, 'यहीं करवा देंगे। दिल्ली बहुत दूर है।'

'पापा, क्या बात करते हो। बस या टैक्सी में यदि सफर मुश्किल लगता है, तो हम बाई एयर भी जा सकते हैं।' उसे पता था, पैसा तो बापू ने ही देना था।

ओम ने कहा, 'दर्द तो सचमुच बहुत होता है, परंतु डर भी लगता है कि यदि ऑपरेशन के बाद भी ठीक न हुआ तो? मिसेज हांडा ने दोनों घुटनों का ऑपरेशन करवाया और बिल्कुल ही बैठ गईं।'

'सबके साथ ऐसा थोड़े होता है। बाकी अपने-अपने भाग्य की बात है।' आदित्य ने कहा।

फैसला दिल्ली के ही पक्ष में हुआ।

जाने से पहले आदित्य ने कहा, 'पापा, मम्मी की चैकबुक और

अपना ए.टी.एम. दे देना। कोई एमरजेंसी हो सकती है।'

पिता ने पुत्र की ओर घूरकर देखा, परंतु कहा कुछ नहीं।

पैसा लेना हो तो इनसान कितना मधुर हो जाता है और यह कोई नई बात तो नहीं। दरअसल आदत तो खुद कबीर ने ही बिगाड़ी थी। बेटा क्लास वन अधिकारी है। हर वर्ष आयकर भी भरना होता है। एक बार उसने कह दिया था, 'बेटा, अगर जरूरत हो तो इनकम टैक्स भरने के लिए पैसे मुझसे ले लेना।' फिर तो उसे चटक ही पड़ गई थी। वह न केवल टैक्स के लिए हर साल पैसा मँगवा लेता, बल्कि पी.पी.एफ. में जमा करने के लिए भी कोई-न-कोई बहाना बनाकर लाख-दो लाख रुपए मँगवा लेता।

पैसा मँगवाना आम बात हो गई थी। बाद में कबीर को पता चला कि कविता अपने माँ-बाप के लिए भी उसी पैसे का उपयोग कर लेती थी।

कबीर बड़ा दु:खी होता, परंतु कर कुछ नहीं सकता था। आदित्य के लिए टकसाल खुल गई थी।

☐

ओम का एक घुटना बदल दिया गया था और आदित्य ने कोई तीन लाख रुपए अपनी माँ के खाते से निकाल लिए थे। उसने पूरी बिरादरी में यह सूचना फैलाने में कोई कोर-कसर न छोड़ी कि आदित्य ने अपनी माँ का इलाज एम्स में करवाया है और अब उसकी माँ घोड़ी की तरह दौड़ सकती है।

सबने कहा, 'बेटा हो तो ऐसा! कलयुग में अन्यथा कौन किसकी परवाह करता है।'

अब घर में ओम थी, जो चौबीस घंटे अपने कमरे में बंद रहती और कविता को मटरगश्ती के लिए खूब टाइम मिल जाता। थेरैपी के लिए एक महिला आती और ओम उससे ही बातचीत करके संतुष्ट हो जाती।

ओम को एक पुराना फोन आदित्य ने दे दिया था और वह अपने बहन-भाइयों से कभी-कभार बात कर लेती। उसका मन वापस अपने घर आने को करता, लेकिन अभी उपचार चल रहा था और फिर बीच-बीच में कबीर भी आ जाता था।

पहाड़ में घरों को ताला लगाने की जरूरत बहुत कम पड़ती है, लेकिन दिल्ली में लोग अपने आप से भी डरते हैं। और अगर एक ही सदस्य ने पीछे घर पर रहना हो तो वे बाहर से ताला लगा जाते हैं। पहली बार उन्होंने ओम को ताले में बंद किया तो वह चिल्ला उठी—''नहीं, मेरा साँस घुट जाएगा। मैं ऐसे बंद नहीं रह सकती। मैं तो मर जाऊँगी।''

आदित्य ने कहा, ''माँ, चिंता न करो। अंदर से भी यह चाबी से खुल सकता है।''

''जब मैं घर में हूँ, तो ताला लगाते ही क्यों हो?'' उसने ताला नहीं लगाने दिया था।

☐

आर.के.पुरम् के सेक्टर चार में पहुँचते-पहुँचते रात के नौ बज गए थे।

वह सरकारी आवास के बाहर खड़ा था। हैरान-परेशान। मुख्य द्वार पर ताला लटका हुआ था।

फिर उसे लगा, घर के अंदर कोई हलचल है। एक छाया बेचैनी से इधर-उधर घूम रही थी। कबीर चिल्लाया ''ओम, ओम!'' लेकिन कोई जवाब नहीं आया।

थका-हारा कबीर धड़ाम से फर्श पर बैठ गया।

साअ
पुष्पांजलि, राजपुर
पालमपुर-१७६०६१ (हि.प्र.)
दूरभाष : ९४१८०८००८८

बीता जाए बसंत

गीत

• नीरज नीर

सावन शीत शिशिर गया
बीत गया हेमंत,
अब तो आ जाओ प्रिये
बीता जाए बसंत।

पोर-पोर धरती खिली
और खिला आकाश,
मंजराए अमियाँ भरे
मादक मन एहसास।
प्रेम-गंध पसरा हुआ
चहुँ ओर दिग्दिगंत,
अब तो आ जाओ प्रिये
बीता जाए बसंत।

लाल रंग पलाश रँगा
पीले सरसों फूल,
मधुकर गुंजन कर रहा
मधु सौरभ में डूब।
विदीर्ण हृदय-शूल का
कर दो अब तो अंत
अब तो आ जाओ प्रिये
बीता जाए बसंत।

कोयल कूके माधुरी
छेड़े मनहर तान।
स्वर्ग सरीखी रात है
प्रात नयनाभिराम।
ईप्सित संग तुम्हारा
अब जीवनपर्यंत,
अब तो आ जाओ प्रिये
बीता जाए बसंत।

माघ मास का चंद्रमा
निकले दूध नहाय,
मेरे मन की पीर को
अपरिमेय कर जाए।
सूनापन ऐसे डसे
ज्यों कोई विषदंत,
अब तो आ जाओ प्रिये
बीता जाए बसंत।

साअ

'आशीर्वाद' शुभ गौरी एन्क्लेव के पीछे
बुद्ध विहार, पो.-अशोक नगर
राँची-८३४००२
दूरभाष : ८७९७७७७५९८

आलेख

भारतीय लोक-संस्कृति का महापर्व : होली

● कुलभूषण सोनी

भारतीय पुरातन संस्कृति और यहाँ की धार्मिक आस्थाओं से जुड़े लोकपर्वों का हमारे जीवन में अत्यंत महत्त्व रहा है। ये पर्व जहाँ एक-दूसरे के मन में प्रेम और उल्लास भरते हैं, वहीं अपने मूलभूत लक्ष्यों के कारणों को भी उद्घाटित करते हैं तथा भाईचारा एवं समत्वभाव भी दरशाते हैं। इतना ही नहीं, ये पर्व पुरातन लोक रीति-रिवाजों से भी जन-जन का मन सम्मोहित कर उन्हें आनंदानुभूति कराते हैं, साथ ही प्रेरणा के स्रोत भी बन जाते हैं। अत: हमें देश की पुरातन संस्कृति से अवगत करानेवाले इन लोकपर्वों को कभी नहीं भुलाना चाहिए। इनका अनुपालन, अनुसरण करने से हमारा पथ भी प्रशस्त होता है, मार्गदर्शन होता है, परंतु इन पर्वों का महत्त्व हमें इनसे जुड़ने पर ही ज्ञात होता है। चाहे वे किसी भी धर्म के माननेवाले हों, सभी अपनी सामाजिक और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इन पर्वों को बल देते हैं, जिनमें कुछ प्रमुख महापर्व हैं—होली, दीपावली और रक्षाबंधन।

आस्थाओं से जुड़े ये पर्व भारत में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी उत्साहपूर्वक धूमधाम से मनाए जाते हैं। इनकी स्मृति आते ही मानस-पटल पर ऐतिहासिक एवं पौराणिक कथाओं के चित्र स्वयं ही उमड़ पड़ते हैं। महापर्वों में होली ऐसा मस्ती भरा पर्व है, जिसके आनंद के रंग में रँगे लोग बेसुध होकर मस्ती की अनुभूति करते हैं।

ब्रज क्षेत्र में होली को 'होरी' कहते हैं तथा खड़ी बोली में होली का अर्थ गुजर गई, बीत गई या व्यतीत हुई घटना से है। इस पर्व का संबंध पौराणिक कथा के अनुसार भक्त प्रह्लाद की बुआ होलिका के जल जाने से उद्घाटित हुआ है, जिसे होली कहा जाता है। ब्रजक्षेत्र में होली पर्व आते ही ब्रज के महानायक लीलाधारी श्रीकृष्ण और उनकी प्रिया सुकुमारी श्रीराधा ब्रजेश्वरी सहित युगल लालित्य लीलाएँ स्वत: ही नेत्रों के समक्ष प्रदर्शित होने लगती हैं, जो व्यक्ति को भक्तिरस में सराबोर कर देती हैं। श्रीकृष्ण का यमुनातट पर श्रीराधा, गोपी एवं ग्वाल-बाल सखाओं के साथ होली खेलते हुए ठिठोली करना, पिचकारी से रंग मारना तथा कौतुक भरी क्रीड़ाएँ करना सभी को आनंदित करता है, जिसका संक्षिप्त भाव वर्णन ब्रजभाषा के मेरे इन दो सुंदरी सवैयों में देखिए—

जमुना तट भीर जुरी हरि के संग
खेलत ऐं वृषभानु किसोरी,
हँसिकै नंदलाल गुलाल उड़ावतु
पीत, हरे बहुरंग बहोरी,

सुपरिचित कवि एवं कथावाचक। कई काव्य-संग्रह प्रकाशित। देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित एवं आकाशवाणी के कई केंद्रों से प्रसारित। सामाजिक-धार्मिक कई संस्थाओं के पदाधिकारी रहे। संप्रति विभिन्न कलाओं के नवांकुर तैयार करने में संलग्न।

मन माहिं उमंग भरी सबकै
करिएँ मिली आपसु में बरजोरी,
पिचकारिन सों रँग देते सबै
नहिं जाति भनी मुख 'भूषन' होरी।

× × ×

संग रास रचैं वृषभानुलली
अरु नंद के नंदन वेणु बजावें,
सब ग्वाल-सखा कलहास करें
कबहूं घनस्याम गुलाल उड़ावें
ससि आनन की छबि को बरनें
ब्रजराज सजे सिसु केलि दिखावें
कथि 'भूषण' रंग रँगे ब्रजभूषन
आलिन्ह कूँ लख सैन चलावें।

इतना ही नहीं, होली के आने के कई दिनों पूर्व मंदिरों, चौपालों और घरों में संगीत-वाद्यों के साथ गायकों द्वारा अपनी सुमधुर ध्वनि एवं रागों में लोकगीत भी होली के ही गाए जाने लगते हैं—

होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया
आजु बिरज में होरी रे रसिया!
कौन गाँव के कुँवर कन्हैया?
कौन गाँव की गोरी रे रसिया
आजु बिरज में होरी रे रसिया!

नंद गाँव के कुँवर कन्हैया
बरसाने की राधा गोरी रे रसिया
आजु बिरज में होरी रे रसिया!

कै मन तौ यामें रंग घुरवायौ
कै मन केसर घोरी रे रसिया!
आजु बिरज में होरी रे रसिया।

सौ मन तौ यामें रंग घुरवायौ,
सौ मन केसर घोरी रे रसिया
आजु बिरज में होरी रे रसिया!

ऐसे अनेक लोकगीत मन को झकझोर देते हैं, होली का यह पर्व फाल्गुन मास की पूर्णमासी की रात्रि को होलिका-दहन के रूप में मनाया जाता है। सभी शहर, गाँव व देहातों में बसंत पंचमी के दिन वहाँ के बच्चे, युवक चौराहे पर होली सूचक दाड़ा (वृक्ष की डाली) या एक छड़ी भक्त प्रह्लाद के रूप में गाड़ देते हैं और उसे चारों ओर से लकड़ी व उपलों से ऊँचा ढेर बनाकर ढक देते हैं। सुहागिनें व्रत रखकर पति की दीर्घायु की कामना करते हुए होली के दिन प्रात: पूजन हेतु होलिका स्थल पर पहुँचती हैं तथा भक्त प्रह्लाद की तरह भगवान् से अपना सुहाग (पति) अमर रहने की मनुहार करती हुई पूजन करती हैं। रात्रि को शुभ मुहूर्त में पंडित से पूजा कराने के उपरांत होलिका-दहन किया जाता है। इस असवर पर भक्त, युवक और सभी एकत्र लोग होली और भक्त प्रह्लाद के जयकारे लगाते हैं। तदुपरांत अपने घर पर होली जलाते हैं।

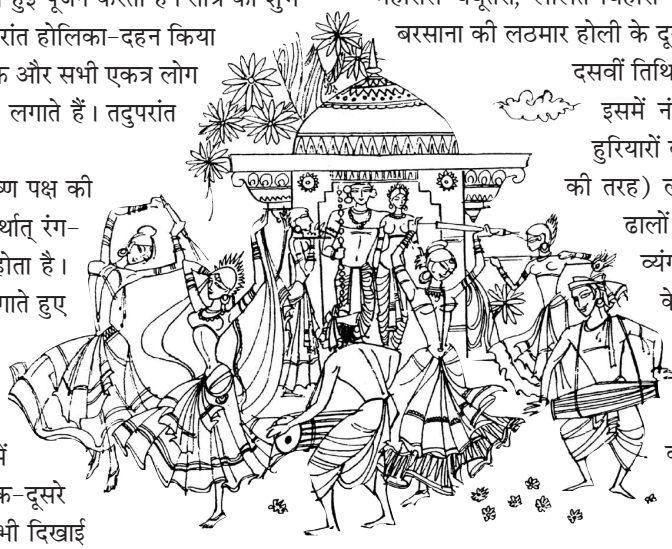

दूसरे दिन, अर्थात् चैत्र के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा प्रथम तिथि को धुलेंडी, अर्थात् रंग-गुलाल लगाने का मस्ती भरा दिन होता है। इस दिन हर कहीं मस्ती भरे झूमते-गाते हुए युवक दीख पड़ते हैं, जिनके चेहरे और वस्त्र रंग-बिरंगे अटपटे रूपों में दिखाई देते हैं, जो कि काले-पीले रंगों में सजे होने से पहचान में भी नहीं आते। किंतु संभ्रांत लोग एक-दूसरे से गले मिलते, उन्हें गुलाल लगाते भी दिखाई पड़ते हैं।

होली खेलने की पुरातन परंपरा में नंदगाँव और बरसाना की लठमार होली विश्वप्रसिद्ध है। इसे देखने प्रतिवर्ष लाखों-करोड़ों देशी-विदेशी पर्यटक यहाँ पहुँचते हैं तथा देखकर रोमांचित और चकित हो जाते हैं।

बरसाना की होली

अपनी अनूठी परंपरा को सँजोए यहाँ की यह लठमार होली विशेष महत्त्व रखती है। ब्रजेश्वरी राधा, अर्थात् श्रीजी की जन्मस्थली कहा जानेवाला यह गाँव उनके पिता वृषभानु द्वारा लगभग सवा पाँच हजार वर्ष पूर्व बसाया गया था। यहाँ आज भी श्रीजी का प्राचीन मंदिर अवस्थित है, यहाँ की 'रंगीली गली' से शुरू होनेवाली होली गुलाब, टेसू आदि के सुगंधित फूलों के रंगों से खेली जाती है। इन्हें 'हुरियारे' (होली खेलनेवाले युवक) आगंतुक दर्शकों पर छोड़ते हुए हास-परिहास करते हैं तथा बम (नगाड़ों) की थाप पर नाचते-गाते हैं।

होली का यह कार्यक्रम प्रतिवर्ष फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को लठमार होली के रूप में बस्ती के लोगों द्वारा आयोजित किया जाता है। इस दिन बरसाने की हुरियारिनें (युवतियाँ) विभिन्न पारंपरिक परिधानों में सजी एवं लाठियाँ लिये होती हैं। नंदगाँव के हुरियारे बरसाना की हुरियारिनों पर गीतों के माध्यम से जब व्यंग्य भरी फब्तियाँ कसते हैं तो हुरियारिनों की लाठियों के प्रहार शुरू हो जाते हैं। वे इनसे बचने के लिए ढालों की आड़ लेते हैं। यह दृश्य अत्यंत भयानक और अद्‌भुत होता है। शाम होते ही ये सभी हुरियारिनें उन हुरियारों में से एक युवक को पकड़ लेती हैं तथा कुआँ-पूजन की रस्म कराने के उपरांत छोड़ देती हैं। इसके उपरांत नंदगाँव की हुरियारिनें बरसाना के हुरियारों को इसी तरह होली खेलने के लिए अपने नंदगाँव में आमंत्रित करती हैं।

नंदगाँव की होली

श्रीकृष्ण के धर्मपिता नंद के द्वारा बसाया यह गाँव भी बहुत पुराना है। इसमें मोती कुंड, पान सरोवर, विहार कुंड, अक्रूरजी की बैठक, महारास चबूतरा, ललित बिहारी मंदिर आदि जग-प्रसिद्ध हैं। यहाँ बरसाना की लठमार होली के दूसरे दिन फाल्गुन के शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को लठमार होली खेली जाती है। इसमें नंदगाँव की हुरियारिनें बरसाना के हुरियारों को देखकर उनपर (बरसाना होली की तरह) लाठी प्रहार करती हैं और हुरियारे ढालों से स्वयं को बचाते हैं। यहाँ भी व्यंग्य भरे लोकगीत गाए जाते हैं तथा केसर, गुलाल, अबीर आदि द्रव्यों को मिलाकर उनपर रंग डालते हैं। इस दौरान राधा-कृष्ण की भव्य झाँकियाँ तथा लोक कलाकारों को कौतुक भरी कलाएँ चकित कर देती हैं। दर्शकों पर श्री बालरूप में राधा-कृष्ण रंगभरी पिचकारी छोड़ते हैं तो कुछ सखियाँ नाचती-गाती हुई सुनी जाती हैं—

होरी खेलन आयौ श्याम, आज याहि रंग में बोरौ री!
रंग में बोरौ री, करौ करि सों गोरौ री-होरी
मिलिकै सिगरी सखी, अबहि तुम केसर घोरौ री,
गालन मली गुलाल, करौ करि सों गोरौ री¨होरी!

इस तरह चैत्र मास में भी होली के लोकगीतों की गूँज तथा फूलडोल (हुरंगा) जैसे कार्यक्रमों की धूम हर किसी का मनोरंजन कर आत्मविभोर कर देती है; परंतु द्वेष और प्रतिशोध की भावना में होली का वर्तमान रूप विकृत होता जा रहा है। असभ्य लोग इस पुनीत पर्व को दूषित कर रहे हैं। आज मानवता की होली (इतिश्री) की जा रही है, आवश्यकता है शिक्षा, भाईचारा और पुनर्नव जागृति की।

श्याम ज्वैलर्स, निकट गोल मार्केट
प्रताप विहार, किराड़ी दिल्ली-११००८६
दूरभाष : ९२११६२५५६१

अप्रेंटिस

● धर्मेंद्र कुशवाहा

ट्रेन पूरे चार घंटे लेट थी। कंपार्टमेंट में घुसते ही उसने बैग को बर्थ पर दे मारा और कुत्ते-कमीने बदमाश··· की अस्फुट सी आवाज मुँह से निकल आई। वह ढांस लगाकर बैठ गया बेपरवाह सा, जैसे पूरा डिब्बा उसी का हो और वह जिस तरह चाहे उसका उपयोग कर सकता है।

उसने देखा कि लोकल पैसेंजर ट्रेन का प्रथम श्रेणी का कंपार्टमेंट, जिसकी अधिकांश सीटों से रेक्सीन गायब थी, चिंदियाए हुए से अपनी बेबसी का प्रदर्शन कर रहे थे, जैसे कोई बूढ़ा दाँतों का जबड़ा दिखाकर हँस रहा हो। पंखे बंद थे और बिजली गायब, ऊपर से पहाड़ी इलाके की बरसाती शाम व उमस। उसकी इच्छा हुई कि डिब्बा बदल दे, लेकिन पूरी गाड़ी में यही तो एक डिब्बा था प्रथम श्रेणी का और किसी डिब्बे में बैठना उसकी प्रेस्टिज के खिलाफ था। वह खड़ा हो गया, बिजली का बटन यों ही खट-खुट दबाया और दीवारों से लगे टूटे शीशे में कभी नीचे तो कभी ऊपर झाँककर अपने व्यक्तित्व का निरीक्षण करने लगा। कहीं आँख तो कहीं नाक और कहीं मुँह। कहीं भी उसे अपनी पूरी शक्ल दिखाई नहीं दी। वह घबराने लगा। उसे लगा कि इतने भद्दे कान और नाक उसके हो ही नहीं सकते। हताश सा बालों को सँवारता हुआ बैग के पास बैठ गया। पुन: झटके से उठा, जैसे कि कोई भूली हुई बात याद आ गई हो, खिड़की से लगे शीशे में कभी नीचे, कभी ऊपर झाँककर अपनी आकृति देखने लगा। गंदीले शीशे पर उसे अपना शरीर खूब उभरा हुआ नजर आया, तब कॉलर के पास का बटन लगाते हुए टाई को खींच लिया और आश्वस्त होकर बैठ गया। अब उसे गरमी नहीं महसूस हो रही थी। वह मन-ही-मन खुश था।

अजीब बात है, वह भूल जाता है कि उसे खुद को इंस्पेक्टर समझना चाहिए, न कि अप्रेंटिस। उसे अपने इस स्वभाव पर गुस्सा भी आता है। उसको इन बाबुओं और इनकी कैटेगरी से डरना नहीं चाहिए और न ही इन्हें मुँह लगाना चाहिए। उसने बाहर झाँककर देखा कि छोटे बाबू हरी झंडी लिये सिग्नल की ओर देख रहे थे। खलासी लाइन क्लीयर का कागज उड़ाता हुआ भागा जा रहा था। एक मरियल, रोड साइड का खारिस्ती कुत्ता पहले 'पीने का पानी' की टंकी को सूँघता, पुन: टाँग उठाकर पेशाब करता, फिर तीन टाँग पर दुलकी चाल से चलता हुआ फाटक से पार जा रहा था।

उसने जोर से आवाज लगाई—''छोटे बाबू, देखिए, परसों मैं फिर आ रहा हूँ, स्टेटमेंट तैयार रहना चाहिए···''

कोई उत्तर न पाकर उसे अच्छा नहीं लगा।

परंतु छोटे बाबू ने जवाब देने के बदले में बराबर झंडी हिलाना जारी रखा। कभी गार्ड की ओर तो कभी ड्राइवर की ओर, परंतु सबसे ज्यादा उसी की ओर।

''छोटे बाबू···'' वह पुन: बोला।

''हाँ···साहब, बन जाएगा। जानते ही हैं कि यहाँ ट्रेन पासिंग, टिकट बाँटना, टिकट कलेक्ट करना, माल बुक करना, ऊपर से वेलेस्टवालों ने और भी जान खा रखा है। कल से ही बैगन माँग रहे हैं। पर कंट्रोल है कि सुनता ही नहीं।'' कहकर छोटे बाबू ने पेड़ों के पास मिट्टी के लगे ढेर की ओर इशार किया, साथ ही आँखों में चमक और होंठों पर हलकी सी मुसकराहट आ गई।

वह इन मुसकराहटों को खूब समझता है।

''यह सबकुछ नहीं, पहले स्टेटमेंट। दफ्तर से कोई चार्ज-शीट आ जाएगी तो जानिएगा।'' उसने रोब से कहा।

''इन लव-लेटरों से कौन डरता है, चार साल से एक भी इंक्रीमेंट नहीं मिला, एक और सही।''

''इनाम तो दिला नहीं सकते, चार्ज-शीट···चार्ज-शीट।'' पोर्टर से किताब लेते हुए छोटे बाबू ने कहा, ''जाकर सिगड़ी जला और लैंप तैयार कर।''

उसे लगा कि जमे हुए शरीर के नाटे कदवाले गठीले बाबू की आवाज में गिट्टियों की कड़कड़ाहट और पत्थर की कठोरता है।

उसका मन उदास हो गया और अपनी इंस्पेक्टरी दबती सी नजर आने लगी। उसने कुरेदकर अपने को ऊपर उठाना चाहा, परंतु यह भावना दबती ही जा रही थी। उसे स्टेशन की बिल्डिंग पहले से ज्यादा छोटी मालूम पड़ने लगी। छोटा प्लेटफार्म और सबकुछ छोटा-ही-छोटा। छोटा बाबू और वह भी छोटा इंस्पेक्टर, अप्रेंटिस मात्र।

कुछ देर पहले जहाँ अपने को सबकुछ समझता था। उसे लगा कि उसका कुछ भी नहीं है।

सीटी की आवाज से उसकी तंद्रा भंग हुई। उसे कुछ अपनेपन का एहसास-सा हुआ। उसे कंपार्टमेंट बेगाना मालूम पड़ने लगा और यह कि यह गाड़ी उसकी नहीं है। गाड़ी एक चरमराहट के साथ हिल पड़ी, जैसे किसी काहिल को चलने के लिए बाध्य किया जा रहा हो। प्लेटफार्म

सुपरिचित लेखक। 'मुट्ठी बँधे हाथ' (कहानी-संग्रह) तथा अधिकांश पत्रिकाओं में साहित्य की विभिन्न विधाओं में रचनाएँ प्रकाशित, प्रसारित, अनूदित। तीन बार कथादेश हिंदी मासिक, दिल्ली द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित सारस्वत सम्मान।

सूना-सूना था। इक्के-दुक्के मुसाफिर जो भी थे, वे भी चढ़ चुके थे। सीमेंटेड प्लेटफार्म सफेदी लिये हुए झुटपुटे में मन में, आँखों में, उजले उजास का एहसास दिला रहा था।

उसने देखा—स्वर्ण वृक्ष एवं मौलश्री के इक्के-दुक्के पेड़ धीरे-धीरे चलते नजर आ रहे थे। हवा हलके-हलके फिर तेज होती गई। उसने ताजगी महसूस की और आशान्वित हो गया कि देर-सबेर गंतव्य तक पहुँच ही जाएँगे। लेकिन आज पूरी ट्रेन वीरान क्यों?'' उसने स्वयं से ही प्रश्न किया।

उसने तय किया कि अगले स्टेशन पर कंपार्टमेंट बदल देगा।

अगले स्टेशन पर वह प्लेटफार्म पर उतर आया और तीव्र गति से हाथ में बैग लिये आँखों से घूरता हुआ आगे बढ़ता ही जा रहा था। उसने पूरी ट्रेन छान मारी, लेकिन कहीं कुछ समझ में नहीं आया। आज के पढ़े-लिखे और साफ-सुथरे लोगों के बीच वह अपने को एडजस्ट नहीं कर पाता। इनके बीच उसको कुछ दूरी का एहसास होता है। वह कम पढ़े और गंदे वस्त्रोंवाले लोगों के बीच अपनी स्थिति को सुरक्षित पाता है। जूते-मोजे, फिर टाई उसे बरदाश्त के बाहर हो जाते हैं। उसे आराम नहीं मिलता। लेकिन इंस्पेक्टर हो गया है तो निर्वाह करना ही होगा। रेलवे में इंस्पेक्टर का अर्थ है—टाईधारी मनुष्य रूपी एक जीव।

कैसे-कैसे लोग गुजर जाते हैं, लेकिन आज की हालत से लगता है कि कभी कोई गुजरा ही न होगा। केवल भद्दी और भयानक आकृतियाँ ही जा सकती हैं और कोई नहीं।

एक डिब्बे में चार-पाँच मुसाफिर बैठे बीड़ी पीते हुए चकबंदी की बातें कर रहे थे। वह थोड़ा सा हटकर उन्हीं के पास बैठ गया और उनकी बातें सुनने लगा। उसे लगा कि वह अपने गाँववालों के पास बैठा है। उसे अपनी माँ की याद आ गई। माँ का चेहरा सामने नाच उठा, जो हर समय शादी की रट लगाए रहती है। लेकिन वह तो शादी उसी से करेगा। माँ से कई बार मना कर आया है, लेकिन वह तो मानती ही नहीं। घर जाने पर वह घेराव की स्थिति में आ जाता है, इसलिए घर कम ही जाने लगा है। माँ बेचारी क्या जाने कि उसका लड़का क्या चाहता है? प्रेम की पवित्रता क्या होती है, इसे कैसे समझाए? कई बार लोगों से बहस भी हो चुकी है प्रेम की पवित्रता पर, उसका नाम भी लोगों ने 'पवित्र प्रेमी' रख दिया। लेकिन वह उसे जीवनपर्यंत प्यार करता ही रहेगा, उसे पूरा विश्वास है कि वह अवश्य मिलेगी। वह उसे ढूँढ़ रहा है। केवल एक बार ही देखा था और वही क्षणिक भेंट जीवन में इतना बड़ा परिवर्तन ला देगी, वह सोच भी नहीं पाया था। कितने दिनों तक उसके खयालों में डूबा रह गया था, तभी से उसकी आदत-सी बन गई है···कंपार्ट-कंपार्ट ढूँढ़ने की।

वह ऐसी ही संध्या थी, जब उसने पहली बार उसको देखा था। ट्रेन चली जा रही थी। सभी मुसाफिर उतरकर जा चुके थे। केवल वे दोनों ही डिब्बे में रह गए थे। इसे संयोग ही मानने लगा है वह। अजीब हालत हो गई थी उसकी उस दिन। उसका संकोची संस्कार अचानक और भी घबरा उठा था। सबके चले जाने पर अगर उसे पता होता कि अब उस डिब्बे में कोई नहीं आएगा या सभी उतर जाएँगे तो वह भी उतर जाता।

अगले स्टेशन पर वह उतर भी रहा था, परंतु उसी ने न जाने का आग्रह किया था कि अकेले में डर लगेगा। काफी खतरनाक लोग रहते हैं इस एरिया में, जो कभी-कभी ट्रेनों में भी घुस जाते हैं। उसके स्वर में घबराहट और याचना थी। वह उसके बहुत नजदीक चली आई थी। उसने देखा, उसकी माँग कुँआरी थी।

उसका आग्रह सुनकर वह भी घबराया हुआ था। असमंजस एवं अचंभे की स्थिति में आ गया था। सबकुछ अप्रत्याशित सा था, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

और वह रुक गया था। पहले जब कंपार्टमेंट भरा था, उसने एक उचटती नजर से उसको देखा। उसने एक गर्द खाई हुई अधेड़ औरत का अंदाजा लगाया था, परंतु उसका अनुमान गलत था।

उसी ने उससे सबकुछ पूछ लिया था। कहाँ जाएँगे? क्या करते हैं? आदि-आदि और वह सब बताता चला गया। यद्यपि उससे कुछ पूछ नहीं पाया, परंतु उसे कई कोणों से अच्छी तरह निहार चुका था। उसे लगा कि उसको बहुत दिनों से जानता है, कहीं देखा है। वह केवल इतना ही कह पाया था कि घबराइए मत, जबकि वह स्वयं घबरा रहा था।

आज भी वह उसके लिए पहेली बनी हुई है। दोनों एक साथ ही उतरे थे, परंतु वह भीड़ में किधर निकल गई, उसे पता ही नहीं चल पाया और तभी से उसको ढूँढ़ रहा है, उस मुसकराहट को, जो जाते-जाते उसने दे दी थी···और आँखों के अगाध विश्वास को, जिसमें वह खो गया था। कितनी पवित्र थीं वे आँखें।

उस दिन जब वह ऑफिस में बैठा तो मन हिलोरें ले रहा था। लगता था, जैसे कि कोई महान् उपलब्धि मिल गई है। उसके मन में तीव्र भावना जाग्रत् हुई कि प्रेम की पवित्रता पर भाषण देना शुरू कर दे।

तभी से उसने इस संयोग को प्यार का रूप दे रखा है। मन-मंदिर में उसकी मूर्ति सजाकर पूजा भी करने लगा है। उसका आग्रह, निवेदन, उसकी आँखें, नाक, तीखी मुसकराहट और खनकती आवाज आज भी कानों में बजती रहती है। वह नारी उसके लिए महानतम होती गई और वह केवल प्यार के लिए गिड़गिड़ाता एक क्षुद्र प्रेमी। काश! वह एक बार फिर मिल जाती तो वह उससे कह उठता—'तुम्हारे बिन अब मैं जी नहीं सकता।' परंतु मिली नहीं।

अब तो वह उसी स्टेशन पर कोचिंग फेसेस कंपलीट करने के लिए आ गया और गुप्ता के साथ रह रहा है। गुप्ता अपने बच्चों को कभी क्वार्टर में नहीं रखता। क्वार्टर में रखने से बच्चे खराब हो जाते हैं। उसने अपनी पत्नी को अच्छी तरह समझा दिया है।

स्टेशन आने पर पार्सल ऑफिस में घुस गया, जहाँ गुप्ता काम कर

रहा था। डाउन ट्रेन की लोडिंग के लिए बिल्टियाँ बन रही थीं। वह गेट से मुड़ गया और वेटिंग रूम की ओर बढ़ने लगा। सामने ही बेयरा मिल गया। 'हूजूर सलाम' की एक जोरदार आवाज दी और फाटक खोल दिया। वह इस बेयरे को देखने का अभ्यस्त सा हो गया है—नाटा सा काला और सफेद साफा बाँधे। न जाने क्यों, उसे ऐसा बोध होता है कि यह बेयरा सफेद पगड़ी बाँधे ही पैदा हुआ होगा। हमेशा एक ही जगह, एक ही लिबास में तथा एक तरीके से ही उसे पाता है। न घटता है, न बढ़ता है।

वह वेटिंग-रूम में घुसने को लपका, परंतु रुक सा गया। उसकी हिम्मत नहीं हुई कि भीतर घुसे। उसका आत्मविश्वास डगमगाने लगा और हिम्मत टूट गई। वेटिंग-रूम में थियेट्रिकल पार्टी बैठी हुई थी। लिपी-पुती महिलाओं की सँवरी हुई आकृतियाँ और भड़कीले लिबास उसकी सहनशक्ति को तोड़ रहे थे। वह किसी बेंच या कुरसी पर बैठने की बजाय कनखियों से देखता हुआ लेबोटरी में घुस गया। लेबोटरी में घुसते ही उसे ऐसा लगा कि वह बच गया। लंबी साँस ली और अब वह शांति महसूस कर रहा था। हाथ-मुँह धोने तथा अन्य बहानों से वह विलंब करने लगा और हिम्मत जुटा रहा था कि उनके बीच बैठ सके।

डाउन ट्रेन के आने में बहुत देर होती जा रही थी और वह एक प्रकार से लेबोटरी में कैद सा हो गया था। वेटिंग-रूम से निकलते ही गुप्ता से मुठभेड़ हो गई।

''क्यों इंस्पेक्टर चलें, हाफ प्लेट चावल और दो चपाती में। कभी तो ठंडा-गरम हो जाया करे, आज आदिवासी क्षेत्र का अधिकारी आएगा...'' कहकर गुप्ता ने एक भेद भरी मुसकान उसके ऊपर फेंकी। व्यस्त वातावरण में मछली की गंध फैली हुई थी। चारों तरफ मछलियों के बड़े-बड़े झबलों से पानी रिस-रिसकर बह रहा था, जो प्लेटफार्म पर गाढ़ा तह जमाए फैला हुआ था। व्यापारी अपने माल की लोडिंग के प्रश्न पर वरीयता दिए जाने के लिए आपस में लड़ रहे थे। पहली गाड़ी में लदाई नहीं हो पाई थी। वे घाटा जोड़ रहे थे और गालियाँ दे रहे थे ट्रेन गार्ड को, जो कुछ लेता-देता नहीं था।

वह सीधे पुल से न जाकर एशेज के ढूह से होता हुआ सड़क पर आ जाना चाहता था, जो शॉर्ट-कट करने की उसकी आदत-सी बन गई थी। एक लाइन में बैरक की तरह बने हुए रेलवे क्वार्टर ऐसे लग रहे थे, जैसे यहाँ आदमी नहीं, वरन् कैदी रखे हाते हों। केले के बड़े-बड़े पत्ते मनहूसी में ऊँघते हुए खड़े थे, जो क्वार्टरों से छनकर आती रोशनियों को रोक रहे थे।

उसके जेहन में यही शब्द बार-बार गूँज रहे थे कि आदिवासी क्षेत्र का अधिकारी आया है।

एक बदशक्ल-सी काली आकृति उसकी आँखों में तैर गई। धारदार हथियार से की हुई चोट का निशान, जो अमिट गहरी रेखा सी बन गई थी, उस आदिवासी क्षेत्र के अधिकारी के मस्तिक के दाहिने ओर, जो चिल्ला-चिल्लाकर कहती है कि कत्ली है, कत्ली है। उसके मन में ऐसा बैठ गया कि वह उससे नफरत करता था।

वह समय काट रहा था, आज उसे जल्दी नहीं थी। डाउन ट्रेन जाने के बाद ही वह उठेगा।

क्वार्टर में आया तो देखा, पंगत जमी थी और फ्लश पर हाथ साफ किए जा रहे थे। वह पिछले दरवाजे से आता था। उसके आने की आहट पाते ही 'पवित्र प्रेमी' की आवाज सम्यक् स्वरों में गूँज उठी। वातावरण ठहाकों से गूँज उठा। यह उसकी पवित्रता का अपमान ही तो था। उसने दरवाजे से झाँककर देखा। वातावरण सिगरेट के धुएँ से अँटा हुआ था। देशी शराब की महक तीर की तरह उसके नथुनों से होती हुई कलेजे में बैठ गई और उसने दरवाजा बंद कर दिया। वह वहाँ नहीं रहना चाहता था, लेकिन क्वार्टर के आँगन के पास जो किचन था, उसमें वह अपना छोटा-मोटा सामान रखता था। उसने देखा, वहाँ टेबल फैन नहीं था। सबकुछ समझकर वह चुप रह गया। कमीज, टाई, पैंट उतारकर हैंगर पर डाल दिए और तौलिया ढूँढ़ने लगा, जो वहाँ नहीं थी। थोड़ी देर तक वह हथेली पर गाल रखे, चुपचाप जाने क्या सोचता रहा। फिर उसने सुराही की ओर हाथ बढ़ाया तो वह भी गायब थी। उसका गला सूख रहा था।

वह लेट गया और आकाश में फैले तारों को देखने लगा। उसने भीतर से दरवाजा बंद कर लिया, ताकि ये पियक्कड़ बार-बार पेशाब करने भीतर न जा सकें। साथ ही उसको डर भी था कि कहीं उसकी चोरी पकड़ी न जाए।

वह लेटकर आकाश की ओर जरूर देख रहा था, परंतु उसकी सारी जिज्ञासाएँ कमरे की ओर केंद्रित थीं, जहाँ शराब पी जा रही थी और जुआ खेला जा रहा था। उसकी इच्छा होती थी कि वह भी वहीं बैठ जाए, शराब पीने लगे और सबकुछ करने लगे, लेकिन न जाने कौन सी शक्ति उसे रोक देती थी। इच्छाओं का दमन करता हुआ वह बेबस, दु:खी, प्रताड़ित और दिनोदिन कमजोर होता जा रहा था।

उसकी नसों में तनाव आने लगा। बत्ती जलाकर उसने किताब उठा ली और पढ़ने लगा, परंतु उसका ध्यान पूरी तरह से कमरे की ओर था, जहाँ कुछ घटित होनेवाला था। अचानक जीप की घरघराहट ने उसको चौंका दिया और वह बत्ती बुझाकर चारपाई पर बैठ गया। वह शंकालु हो गया। उसने खिड़की के दरीचे से देखा, सभी ओर बोतलें एवं दोने पड़े थे और वह निराश होकर लेट गया। कोई नहीं था वहाँ।

बहुत देर तक सोता रहा, शायद वे सभी फिर से आ गए। नारी कंठ की आवाज और चूड़ियों की खनक से वह जाग उठा। वह कमरे में आती आवाज और एक-एक शब्द को पी जाना चाहता था, उत्तेजित हो उठा। उसकी धड़कनें अँधेरे में स्पष्टत: धक-धक करके बज रही थीं। न जाने कितनी औरतें आ चुकी होंगी? वह गिनने लगा।

हवा के साथ आसमान में गड़गड़ाहट सी उठी, लगा कि रेलवे यार्ड में हेड कोलाइजन हो गया हो, फिर जोरदार बारिश शुरू हो गई—

पहाड़ी बारिश।

वह नि:शब्द उठा और अपनी आँखों को खिड़की के दरीचे से लगा दिया तथा भीतर जो भी घटित हो रहा था, देखने लगा। अर्धनग्न नारी शराब की बोतल लिये पीनेवालों के गिलास भर रही थी और स्वयं पी रही थी। परंतु यह क्या! उसके मुख से चीख निकलते-निकलते बची, परंतु अपने आपको रोक लिया। दुबारा निश्चित किया कि कौन है? उसे विश्वास नहीं हो रहा था, जिसको आज तक पूजता आया, उसकी आँखें उसे पहचानने में धोखा नहीं खा सकतीं। यह तो वही थी। अब वह बरदाश्त नहीं कर सकता। उसके धैर्य की सीमा टूट चुकी थी। उसके मन में आया कि दरवाजा खोलकर भीतर चला जाए और उसके गालों पर चटाचट मारना शुरू कर दे, परंतु उसको ऐसा करने का अधिकार क्या है। उसने सिर पकड़ लिया। उसे चक्कर सा आने लगा। उसके मन में आया कि भीषण बरसात में दीवार फाँदकर कूद जाए और पानी में ही भागना शुरू कर दे, भागते-भागते अपने अस्तित्व को समाप्त कर दे। उन्हीं दिशाओं में खो जाए। परंतु ऐसा कर न सका। तब चारपाई को खींचकर बीच आँगन में डाल दिया। बूँदें तेज होती जा रही थीं। हताशा एवं निराशा की स्थिति में वह चित लेट गया। हवाएँ उसकी आत्मा को झकझोर रही थीं। बरसात की बूँदें उसके शरीर पर गिर-गिरकर रगों में समाती जा रही थीं। वह आँखें मूँदे लेटा रहा, न जाने कब तक। ठंडी बूँदें अब अंतर्मन में प्रवेश कर आत्मा के पट खोलती जा रही थीं। तब उसकी आँखों से गरम आँसू, असफलता और निराशा के आँसू, प्रतीक्षा और वेदना के आँसू प्रेम और घृणा के आँसू और जनम-जनम के बंधनों एवं संस्कारों के आँसू खारा पानी बनकर लुढ़कने लगे।

११८, साकेत नगर कॉलोनी
पो.-बी.एच.यू., वाराणसी-२२१००५ (उ.प्र.)
दूरभाष : ०९९३५२९७०१०

रूहें कुपोषण की शिकार क्यों

कविता

● मीनाक्षी भसीन

सजी-धजी, रंग-बिरंगी डिजाइनर
दीवारों से घिरी हुई
बड़े-बड़े अद्‌भुत से, शानो-शौकत का दम भरते हुए
परदों के बीच,
मखमली रेशम की बिछी हुई चादरों पे बैठकर
हमारी रूहें इतनी बेचैन-सी क्यों हैं?
तन के पोषण के मिल रहे हैं सभी आवश्यक तत्त्व,
फिर हमारी रूहें कुपोषण का शिकार क्यों हैं?
क्योंकि रूहें पवित्र विचारों की खुराक माँगती हैं,
ये लोगों की भीड़ नहीं,
रिश्तों में प्रेम का एहसास माँगती हैं।

हर काम के लिए रखे हैं
हमने कितने ही वर्कर,
जब लगे थकान लेट जाते हैं
आलीशान बिस्तर पर,
एरोबिक्स, जिम, योगा का भी
बनाया हुआ है हमने रुटीन,
कोई रोग न छू पाए हमें
खाते हैं इतने सारे विटामिन्स
फिर भी मन में इतनी झुँझलाहट सी क्यों है?
कुछ और पा लेने की जद्‌दोजहद
हर क्षण आहट-सी क्यों है?
क्योंकि रूह को परचिंतन नहीं,
आत्मचिंतन का फनकार चाहिए
इच्छा मात्र अविद्या की पल-पल पुकार चाहिए

बेशुमार उमड़ती नित नई इच्छाओं पर लगाम लगती नहीं
जितना खा लें, जितना पी लें
भूख-प्यास ये कभी मिटती नहीं,
चाहे सोते रहें पूरा दिन हम कमरे में बंद होकर
फिर क्या है कि हमारी थकान मिटती नहीं,
जिसे पाना था, उसे पाकर
जो चाहिए था, उसे समेटकर
कोई दिन नहीं जाता जब नई ख्वाईशात की
घंटी कानों में हमारे बजती नहीं
उस अजनबी, अनदेखे दूरस्थ को
पा लेने को मन बेकरार क्यों है?
क्योंकि जिस्म के साथ हमारी रूहों को भी व्यायाम चाहिए,
जिस पर है नहीं कंट्रोल ऐसी परिस्थितियों पे
सोचने को विराम चाहिए,
जानते तो हम हैं इतना पर,
अमल करने को भी तो कोई तैयार होना चाहिए।

ग्रीन वैली अपार्टमेंटस, सेक्टर-२२
जी-४०३, प्लॉट नं. १८
द्वारका, दिल्ली-११००७७
दूरभाष : ९८९१५७००६७

गाय एक पशु ही नहीं, प्रतीक भी है

• सुरेंद्र वर्मा

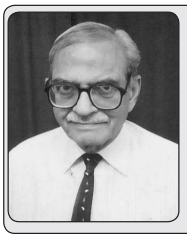

सुपरिचित लेखक-चित्रकार। अब तक तीन व्यंग्य-संग्रह, कला एवं साहित्य समीक्षा पर दो पुस्तकें, दो कविता-संग्रह तथा दर्शनशास्त्र पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित। 'महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार', म.प्र. दर्शन परिषद् द्वारा प्रशस्ति-पत्र। 'भारतीय साहित्य-सुधा-रत्न' उपाधि से अलंकृत।

प्रत्येक संस्कृति के अपने-अपने प्रतीक होते हैं, जो उस संस्कृति के मान्य मूल्यों को रूपायित करते हैं। भारतीय संस्कृति में गाय एक ऐसा ही प्रतीक है। जिस प्रकार कोई भी संस्कृति अपने प्रतीकों को किसी भी कीमत पर सुरक्षित रखना चाहती है, भारतीय संस्कृति भी गाय की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध है। यही कारण है कि गो-हत्या के विरुद्ध भारत में समय-समय पर आंदोलन और सक्रिय प्रतिरोध होते रहे हैं। आपको याद होगा कि इन प्रतिरोधों की शृंखला में विनोबा भावे तक ने एक समय आमरण अनशन किया था।

गो-हत्या के समर्थन में प्राय: यह तर्क दिया जाता है कि गाय किसी जमाने में बड़ी उपयोगी पशु रही होगी, किंतु उसकी उपयोगिता दिन-ब-दिन कम होती जा रही है। बूढ़ी गायें सर्वथा अनुपयोगी होती हैं और उनका रख-रखाव बहुत महँगा पड़ता है। एक तर्क यह भी है कि गो-हत्या से खाद्य सामग्री भी प्राप्त होती है। तमाम लोग गाय का मांस खाने के आदी हो चुके हैं और हमें व्यक्तिगत तौर पर खाने-पीने के किसी विकल्प पर बंदिश नहीं लगानी चाहिए। जाहिर है, ये सारे तर्क उपयोगितावादी चिंतन पर आधारित हैं, जो हमें गैर-भारतीय प्रदेशों से मिले हैं, किंतु केवल उपयोगितावादी दृष्टिकोण को ही भारतीय मनीषा और संस्कृति में कभी मूल्यवान् नहीं माना गया। हमारे यहाँ बेशक गाय अत्यंत उपयोगी पशु तो है, किंतु गाय की उपयोगिता ही उसकी मूल्यवत्ता को निर्धारित नहीं करती। गाय हमारे लिए इसलिए मूल्यवान् है कि वह हमारे सांस्कृतिक मूल्यों की वाहक भी है।

व्यक्ति के संदर्भ में व्यक्तित्व का जो अर्थ है, वही अर्थ समाज के संदर्भ में संस्कृति का है। संस्कृति समाज का व्यक्तित्व है और व्यक्तित्व व्यक्ति की संस्कृति है। जिस प्रकार कोई भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व से अलग नहीं होता, उसी तरह कोई भी समाज संस्कृति-शून्य नहीं हो सकता। व्यक्तित्व और संस्कृति दोनों ही व्यवहार के समग्र गुण की ओर संकेत करते हैं (व्यवहार से तात्पर्य केवल बाह्य व्यवहार से ही नहीं, बल्कि सोच-विचार और कल्पना करने से भी है)। व्यवहार के समग्र गुण को अपेक्षाकृत स्थिर और समान रहनेवाले प्रधान विशेषकों (ट्रेज) द्वारा ही समझा जा सकता है। इस प्रकार किसी भी समाज के स्थिर और समान रहनेवाले विशेषक ही उसकी संस्कृति का निर्माण करते हैं। जब हम किसी समाज की संस्कृति को भीरु या आक्रामक अथवा सहिष्णु या असहिष्णु कह रहे होते हैं तो वस्तुत: हम उसके प्रधान विशेषक की ओर संकेत कर रहे होते हैं। भारतीय समाज के परंपरागत प्रधान विशेषक क्या हैं, जो उसके व्यवहार के समस्त गुण एवं उसकी संस्कृति को समझ पाने में सहायता देते हैं और जो उसे अन्य संस्कृतियों से अलग करते हैं?

पाश्चात्य संस्कृति मूलत: एक उपयोगितावादी संस्कृति है। वहाँ जो उपयोगी है, वही मूल्यवान् है। वही सत्य है। उपयोगितावादी संस्कृति होने के कारण वहाँ जिन अन्य मूल्यों की कद्र की जाती है, वे हैं—शक्ति और गत्यात्मकता (power and dynamism), क्योंकि ये वे साधन हैं, जिनसे उपयोगी वस्तु हासिल की जा सकती है। साध्य-मूल्य केवल उपयोगिता है। यही कारण है कि वहाँ गाय की बजाय घोड़ा सांस्कृतिक प्रतीक हो गया है। भारत में जिस प्रकार कृषिकर्म में गाय उपयोगी रही है, उसी तरह पाश्चात्य देशों में घोड़े की उपयोगिता स्वीकार की गई है। घोड़ा न केवल वहाँ उपयोगिता में खरा उतरता है, बल्कि शक्ति और गति के लिए भी उसकी पहचान बनी है।

घोड़ा पश्चिम में एक संपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीक है। पश्चिम के चित्रकार भागते हुए घोड़े को गति के प्रतीक के रूप में चित्रित करते हैं और साधारणत: शक्ति का माप 'हॉर्स पावर' है, पर यहाँ एक और बात ध्यान देने की है। पश्चिम में घोड़े की हत्या वर्जित नहीं है। इसका कारण वहाँ की उपयोगितावादी संस्कृति ही है। उपयोगिता एक ऐसा मूल्य है, एक ऐसा साध्य है, जिसकी वेदी पर हम कितने ही घोड़ों की हत्या कर सकते हैं।

पश्चिम की तुलना में भारतीय संस्कृति की मनीषा बिल्कुल दूसरे ही प्रकार की है। ऐसा नहीं है कि यहाँ उपयोगिता के मूल्य को अस्वीकार किया गया हो, किंतु उपयोगिता को यहाँ कभी साध्य-मूल्य नहीं समझा गया। भारत में उपयोगिता 'अर्थ' के रूप में एक आवश्यक पुरुषार्थ है, किंतु यह केवल साधन-मूल्य है। गाय भी यहाँ उपयोगी है, किंतु केवल इसीलिए वह मूल्यवान् नहीं हो जाती। यह मूल्यवान् इसलिए है, क्योंकि वह प्रतीकात्मक रूप से भारतीय संस्कृति के किन्हीं अन्य मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। बेशक गाय कामधेनु है। वह दूध देती है। उसके बछड़े बड़े होकर बैल बनकर खेतों में हल जोतते हैं। मृत्योपरांत भी गाय का प्रत्येक अंग—सींग, चमड़ी, खुर आदि किसी-न-किसी रूप में काम आते हैं। यहाँ तक कि जिंदा गाय का मल-मूत्र भी स्वच्छता और औषध

गुणों के लिए उपयोगी है।

किंतु इतना सब होते हुए भी गाय केवल अपनी उपयोगिता की दृष्टि से मूल्यवान् नहीं है। यदि ऐसा होता तो गो-हत्या का विरोध न होता, क्योंकि गाय हत्या के बाद भी उपयोगी रहती है। वस्तुत: गाय भारत में सांस्कृतिक प्रतीक इसलिए है कि गाय के व्यवहार में उन चारित्रिक गुणों की पहचान की गई है, जो भारतीय संस्कृति के साध्य-मूल्य रहे हैं। ये मूल्य हैं—सहिष्णुता और प्रेम। गाय पशु-बल और गति की प्रतीक न होकर आत्म-बल और धैर्य की प्रतीक है। अहिंसा और सदाग्रह का प्रतीक है, इसीलिए इसे माता का दर्जा दिया गया है, किंतु घोड़ा जिस बल और गति के लिए जाना जाता है, वह केवल पशुबल है। भारत में पशुबल की बजाय आत्मबल पर अधिक बल दिया गया है। इस आत्मबल को ही अहिंसा और प्रेम से जोड़ा गया है (संदर्भ—गांधी)। एक पशु होते हुए भी इन गुणों की गाय में पहचान की जा सकती है। गाय प्रेम और धैर्य की प्रतिमूर्ति है, इसीलिए वह पूजनीय है। वह हमारी संस्कृति का प्रतीक बन गई है।

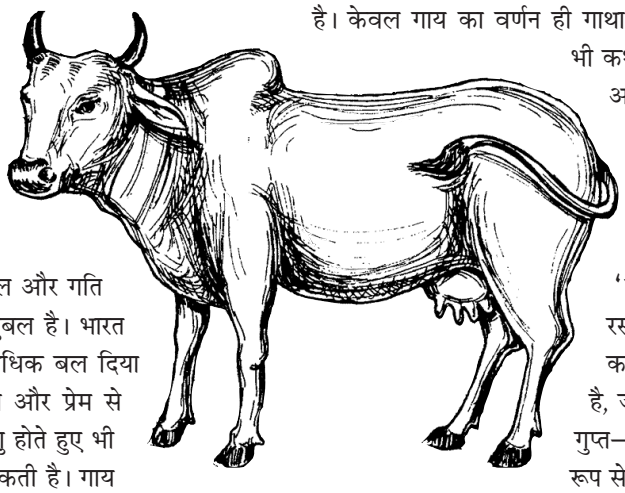

सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में गाय हमारे समाज और भाषा में पूरी तरह रच-बस गई है। हमारी संपूर्ण परस्पर बातचीत ही 'गोष्ठी' है। यह गायों की अंतरंग बैठक मात्र नहीं है। 'गो' केवल गाय नहीं है, हमारी 'वाणी' और 'आँख' की पर्यायवाची है। वह 'धरती' है और 'सूर्य' एवं 'चंद्रमा' भी। वह 'आकाश' है और 'जल' भी। 'गयल' (गैल) गाय के चलने से बना हुआ रास्ता ही नहीं है, मनुष्य के आगे बढ़ने का उचित 'मार्ग' भी है। 'गौख' केवल वह झरोखा ही नहीं, जिसमें से गायें झाँकती हैं। हमारे घर की छोटी खिड़की भी 'गवाक्ष' ही है। 'गवेषणा', कभी खोई हुई गाय की भले ही तलाश रही हो, यह आज शास्त्रीय शोध है। केवल गाय का वर्णन ही गाथा नहीं है, यह मानव अभिरुचि की भी कथा है। 'गुहार' कभी सिर्फ गाय की आवाज रही होगी, आज यह किसी भी व्यक्ति की पुकार हो गई है। 'गोधूलि' धूल उड़ाती गायों की लौटने की वेला तो है ही, संध्या काल ही 'गोधूलि' हो गया है। 'गोरस' दूध, दही, मट्ठा का ही रसास्वादन न रहकर समस्त इंद्रियों का सुख है। 'गोपुर' स्वर्ण का वह द्वार है, जो गोप्य है, रक्षणीय है। गोचर और गुप्त—दोनों ही स्थितियों में गाय समान रूप से उपस्थित है।

गांधीजी ने एक बार कहा था—''खादी वस्त्र नहीं, प्रतीक है। समानांतर यह कहने में कि गाय पशु नही, प्रतीक है, मुझे कोई दोष प्रतीत नहीं होता।''

सा
अ

१०, एच आई जी-१
सर्कुलर रोड, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९६२१२२२७७८

लेखकों से अनुरोध

- मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
- रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें।
- पूर्व स्वीकृति बिना लंबी रचना न भेजें।
- केवल साहित्यिक रचनाएँ ही भेजें।
- प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें; साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
- डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें।
- किसी अवसर विशेष पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम तीन माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके।
- रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

नवदुर्गा

• पं. के.के. त्रिपाठी

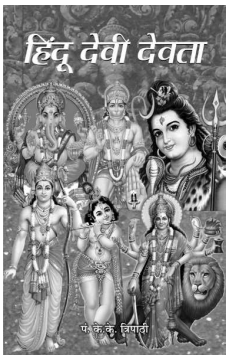

हिंदू धर्मावलंबियों में माँ भगवती दुर्गा की पूजा-आराधना का विशेष महत्त्व है। माँ दुर्गा के अनंत रूप हैं। श्रद्धालु इनके सभी रूपों की स्तुति कर इनकी कृपा के पात्र बनते हैं। वर्ष में दो बार माँ दुर्गा के नौ रूपों की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। नौ दिन चलनेवाले इस धार्मिक अनुष्ठान को नवदुर्गा-पूजन और नवरात्र-पूजन आदि कहा जाता है। देश भर में नवदुर्गा-पूजन उल्लास और भक्ति-भाव से मनाया जाता है।

इन नौ दिनों में माँ दुर्गा के विभिन्न नौ शक्तिरूपों की अर्चना की जाती है। ये नौ रूप माँ दुर्गा के साक्षात् शक्ति अवतार हैं, जो भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण कर उन्हें लोक-परलोक में मान-सम्मान दिलवाते हैं। माता दुर्गा के नौ शक्ति रूप इस प्रकार हैं—

शैलपुत्री

नवदुर्गाओं में माता शैलपुत्री प्रथम दुर्गा मानी जाती हैं। माता दुर्गा के इस रूप में उनके हाथों में त्रिशूल और कमल-पुष्प सुशोभित है। माता शैलपुत्री का वाहन वृषभ है। धार्मिक ग्रंथों में इनकी उत्पत्ति की निम्न कथा वर्णित है—

माता शैलपुत्री अपने पूर्वजन्म में दक्ष प्रजापति की कन्या के रूप में उत्पन्न हुईं। तब इनका नाम 'सती' रखा गया। देवी सती बचपन से ही अनन्य शिव-भक्त थीं। युवा अवस्था में उन्होंने अपनी शिव-भक्ति व तपस्या के बल से शिवजी को प्रसन्न किया और उन्हें पति-रूप में पाने की कामना की। शिवजी ने मनोवांछित वर देते हुए उन्हें पत्नी×रूप में स्वीकार किया।

एक बार दक्ष प्रजापति ने महायज्ञ का आयोजन किया। उस यज्ञ में उसने ब्रह्मा, विष्णु और इंद्र सहित सभी देवताओं एवं ऋषि-मुनियों को आमंत्रित किया, किंतु भगवान् शिव को निमंत्रण नहीं दिया। देवी सती ने जब यह सुना तो वे अपने पति का अपमान सहन न कर सकीं और उनका मन वहाँ जाने के लिए अत्यंत व्याकुल हो उठा।

वे क्रोधित होते हुए भगवान् शिव से बोलीं, ''हे नाथ! मेरे पिता दक्ष प्रजापति महायज्ञ का आयोजन कर रहे हैं। सभी देवताओं और ऋषि-मुनियों को वहाँ आमंत्रित किया गया है, किंतु उन्होंने आपको इस यज्ञ में न बुलाकर आपका अपमान किया है। मेरा मन इसे कदापि स्वीकार नहीं कर सकता। अत: हे नाथ! आप मुझे वहाँ जाने की आज्ञा दें।''

देवी सती के क्रोध को देखकर शिवजी बोले, ''हे देवी! आपको इस प्रकार क्रोधित नहीं होना चाहिए। दक्ष प्रजापति महायज्ञ के कर्ता हैं। यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वे किसे आमंत्रित करें और किसे नहीं। हमें इन व्यर्थ की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। इस प्रकार की बातें मन की कटुता को बढ़ाती हैं।''

भगवान् शिव के इस प्रकार समझाने पर भी देवी सती का क्रोध कम न हुआ। उनका प्रबल आग्रह देखकर भगवान् शिव ने उन्हें वहाँ जाने की अनुमति दे दी।

जब देवी सती यज्ञस्थली पर पहुँचीं तो वहाँ उन्हें चारों ओर शिव-निंदा सुनाई पड़ी। भी अपने सेवकों से घिरे हुए दक्ष प्रजापति शिव-निंदा में लीन थे। देवी सती की सभी बहनें उनका उपहास और व्यंग्य कर रही थीं। इस स्थिति को देखकर उनका क्रोध और बढ़ गया। वे अपने पति का अपमान सहन न कर सकीं और वहीं यज्ञ की अग्नि में उन्होंने स्वयं को भस्म कर लिया। जब भगवान् शिव को इस बात का ज्ञान हुआ तो उन्होंने अपने गणों को भेजकर उस यज्ञ का विध्वंस करा दिया।

देवी सती ने अगले जन्म में शैलराज हिमालय के घर जन्म लिया। वहाँ उनका नाम 'पार्वती' रखा गया, किंतु शैलराज हिमालय के घर उत्पन्न होने के कारण ही उन्हें 'शैलपुत्री' भी कहा गया। इस जन्म में भी माता शैलपुत्री ने अपनी तपस्या के बल से भगवान् शिवजी को प्रसन्न करके उन्हें पति-रूप में प्राप्त किया। नव दुर्गाओं में माता शैलपुत्री का महत्त्व और शक्तियाँ अनंत हैं। नवरात्रों में प्रथम दिवस पर माता शैलपुत्री की ही पूजा-अर्चना की जाती है।

ब्रह्मचारिणी

नवदुर्गा का दूसरा स्वरूप माता ब्रह्मचारिणी के रूप में विख्यात है। श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली माता ब्रह्मचारिणी के एक हाथ में जपमाला और दूसरे हाथ में कमंडलु सुशोभित होता है। पुराणों और धार्मिक ग्रंथों में इनकी उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है—

दक्ष प्रजापति की यज्ञ-वेदी पर प्राण त्यागने के बाद देवी सती ने पर्वतराज हिमालय की पत्नी मैना के गर्भ से पुन: जन्म लिया। कन्या के शुभ लक्षणों को देखते हुए उसका नाम 'पार्वती' रखा गया। जब पार्वती ने युवा अवस्था में प्रवेश किया तो एक दिन देवर्षि नारद घूमते-घूमते पर्वतराज हिमालय के यहाँ आ पहुँचे।

पर्वतराज हिमालय ने देवर्षि नारद का अतिथि-सत्कार किया और पार्वती का हाथ देखकर उसका भविष्य बताने का आग्रह किया।

देवी पार्वती को देखते ही देवर्षि नारद ने आसन से उठकर उन्हें प्रणाम किया। नारद के इस आचरण को देखकर पर्वतराज हिमालय और मैना आश्चर्यचकित रह गए।

उन्होंने नारदजी से इस आचरण का कारण जानना चाहा। तब वे हँसते हुए बोले, ''हे पर्वतराज! आपकी यह कन्या पूर्व जन्म में दक्ष प्रजापति की पुत्री और भगवान् शिव की पत्नी माता सती थीं। अपने

पिता दक्ष प्रजापति द्वारा पति का अपमान किए जाने पर उन्होंने यज्ञ-वेदी पर ही प्राणों का त्याग कर दिया था। अब उन्होंने देवी पार्वती के रूप में आपके घर में पुनर्जन्म लिया है। इसलिए मैंने इन्हें प्रणाम किया। अपने सुकर्मों के कारण ये इस जन्म में भी भगवान् शिव की पत्नी बनने का गौरव प्राप्त करेंगी।''

देवर्षि नारद की बात सुनकर देवी पार्वती ने उनसे भगवान् शिव की प्राप्ति का उपाय पूछा। नारदजी ने उन्हें कठोर तप द्वारा शिवजी को प्राप्त करने का उपदेश दिया।

नारदजी के उपदेशानुसार देवी पार्वती ने भगवान् शिवजी को पति रूप में प्राप्त करने के लिए सभी राजसी सुखों का त्याग कर कठोर तपस्या आरंभ कर दी।

देवी पार्वती ने तपस्या के आरंभिक १,००० वर्ष कंद-मूल खाकर व्यतीत किए। तत्पश्चात् ३,००० वर्षों तक केवल जमीन पर टूटकर गिरे हुए बेलपत्रों को खाकर वे तपस्या में लीन रहीं। इसके बाद अनेक वर्षों तक वे वर्षा, आँधी व धूप में भयानक कष्ट सहते हुए निर्जल और निराहार रहकर तपस्या करती रहीं।

देवी पार्वती ने हजारों वर्षों तक कठोर तपस्या की। इस तपस्या के फलस्वरूप उनकी काया एकदम क्षीण हो गई। उनकी कठिन तपस्या से तीनों लोकों में हाहाकार मच गया। इंद्र सहित सभी देवगण और ऋषि-मुनि देवी पार्वती की कठोर तपस्या से भयभीत हो गए। वे सभी ब्रह्माजी के समक्ष उपस्थित हुए और उनसे देवी पार्वती को मनचाहा वर प्रदान करने की प्रार्थना की।

अंत में परमपिता ब्रह्माजी ने देवी पार्वती को दर्शन दिए और बोले, ''हे देवी! तुम्हारी कठिन तपस्या के समक्ष सभी देवगण नतमस्तक हैं। इस प्रकार का कठोर तप केवल तुम्हारे द्वारा ही संभव था। तुम्हारी मनोकामना शीघ्र पूरी होगी। भगवान् शिव तुम्हें पति-रूप में अवश्य प्राप्त होंगे। कठोर तपस्या के कारण सृष्टि में तुम्हें ब्रह्मचारिणी, अर्थात् तप का आचरण करनेवाली कहा जाएगा।''

इसके बाद ब्रह्माजी ने देवी पार्वती का सौंदर्य उन्हें पुन: प्रदान कर दिया।

इस प्रकार अपने तप के बल से देवी पार्वती को भगवान् शिव पति-रूप में प्राप्त हुए और वे संसार में ब्रह्मचारिणी नाम से विख्यात हुईं।

माता ब्रह्मचारिणी की उपासना से भक्तों में तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार, संयम आदि की वृद्धि होती है और उन्हें सर्वत्र सिद्धि एवं विजय की प्राप्ति होती है। नवरात्रों के दूसरे दिन माता ब्रह्मचारिणी की पूजा-अर्चना की जाती है।

चंद्रघंटा

नवरात्रों के तीसरे दिन माता दुर्गा के शरीर से प्रकट हुई तीसरी शक्ति चंद्रघंटा की स्तुति की जाती है। इनके मस्तक में घंटे के आकार का आधा चंद्रमा शोभायमान है। यही कारण है कि भक्तजन इन्हें 'चंद्रघंटा देवी' कहते हैं।

माता चंद्रघंटा की कृपा से भक्तों के सभी पाप, शारीरिक कष्ट, मानसिक चिंताएँ और भूत-प्रेत आदि बाधाएँ दूर होती हैं। सिंह पर सवार ये माता भक्तों में निर्भयता के साथ-साथ सौम्यता के गुणों का समावेश करती हैं। जो भक्त शुद्ध मन, कर्म और वचन से माँ चंद्रघंटा की पूजा-अर्चना करते हैं, उनके शरीर दिव्य प्रकाश से आभायुक्त हो जाते हैं। उनके शरीर से प्रकाशयुक्त अदृश्य शक्ति का विकिरण होता रहता है, जिससे उनके संपर्क में आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति प्रभावित होता है और उसका काम सरलता से बनता चला जाता है। दुष्टों का संहार करने के लिए माँ चंद्रघंटा सदैव तत्पर रहती हैं, किंतु इनके दर्शक और आराधक को ये माता अपने सौम्य एवं शांति से परिपूर्ण रूप के दर्शन करवाती हैं।

माता चंद्रघंटा का शरीर स्वर्ण वर्ण का है। इनके दस हाथ बताए गए हैं, जिनमें खड्ग, अस्त्र-शस्त्र, बाण आदि विभूषित हैं। देवासुर-संग्राम में उनके घंटे की भयानक ध्वनि मात्र से सैकड़ों अत्याचारी दानव, दैत्य और राक्षस मृत्यु को प्राप्त हो गए थे।

इनकी मुद्रा सदैव युद्ध के लिए तैयार रहनेवाली होती है, जिसका तात्पर्य यह है कि अपने भक्तों के शत्रुओं के विनाश के लिए तैयार रहकर ये सदा उनका भला करने को आतुर रहती हैं। जिस भक्त पर माता चंद्रघंटा की कृपा होती है, उसे दैवी वस्तुओं के दर्शन होते हैं। दिव्य सुगंधियों की महक और विविध प्रकार की ध्वनियाँ सुनाई देने लगें तो यह समझ लेना चाहिए कि उस पर देवी की कृपा-दृष्टि बनी हुई है।

माता चंद्रघंटा की स्तुति विधि-विधान के अनुसार पूर्णत: पवित्रता के साथ करनी चाहिए। माता की कृपा प्राप्त कर हम समस्त सांसारिक कष्टों से मुक्त होकर परम पद के अधिकारी बन जाते हैं। साधना के दौरान भक्तों को सदैव माता के सौम्य रूप को अपने मस्तिष्क में केंद्रित रखना चाहिए।

कूष्मांडा

माता दुर्गा के चौथे स्वरूप को कूष्मांडा के नाम से जाना जाता है। नवरात्रों के चौथे दिन माता कूष्मांडा की पूजा-अर्चना की जाती है। माता कूष्मांडा का निवास-स्थान सूर्यलोक में है। इसी कारण उनके शरीर की कांति और आभा सूर्य के समान प्रकाशमान है। सृष्टि के संपूर्ण प्राणियों में इसी देवी का प्रकाश प्रदीप्त है। माता कूष्मांडा के दिव्य तेज से दसों दिशाएँ प्रकाशित हो रही हैं।

जब ब्रह्मांड का अस्तित्व नहीं था, चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार था, तब माता कूष्मांडा ने अपनी मंद मुसकान द्वारा अंड, अर्थात् ब्रह्मांड की उत्पत्ति की। इस प्रकार अपनी हलकी सी हँसी द्वारा ब्रह्मांड की रचना करने के कारण इन्हें माता 'कूष्मांडा' कहा गया।

ब्रह्मांड की उत्पत्ति के समय सूर्य एवं अन्य नक्षत्रों को माता कूष्मांडा ने अपने तेज से ही प्रकाश प्रदान किया था। तब से ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में अवस्थित तेज माता कूष्मांडा की छाया है।

सिंह पर सवार माता कूष्मांडा को आठ भुजाओं के कारण अष्ट भुजाधारी देवी भी कहा जाता है। इनके हाथों में क्रमश: कमंडलु, धनुष-बाण, कमल-पुष्प, अमृत-कलश, चक्र, गदा और सभी प्रकार की सिद्धियों व निधियों को प्रदान करनेवाली जप की माला सुशोभित होती है।

माता कूष्मांडा भक्तों को हर प्रकार की सिद्धियाँ, धन, ऐश्वर्य और

मोक्ष प्रदान करनेवाली देवी हैं। इनकी सच्ची उपासना और आराधना से भक्तों के सभी रोग, दु:ख, कष्ट-क्लेश और बाधाएँ समाप्त हो जाती हैं।

सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करनेवाली माता कूष्मांडा भक्तों की भक्ति और सेवा से ही प्रसन्न होकर उन्हें मनोवांछित वर प्रदान करती हैं। इनकी नियमित साधना से साधकों को धन-संपत्ति और ऐश्वर्य के साथ-साथ मोक्ष की भी प्राप्ति हो जाती है। माता कूष्मांडा की पूजा-अर्चना मनुष्य को विभिन्न प्रकार की व्याधियों से विमुक्त कर सुख-समृद्धि और उन्नति की ओर ले जाती है। भक्तों को शुद्ध और पवित्र मन से माता कूष्मांडा के स्वरूप को ध्यान में रखकर उनकी उपासना करनी चाहिए।

स्कंदमाता

स्कंदमाता माता दुर्गा के पाँचवें रूप में अवतरित हुईं। दुर्गा-पूजन में पाँचवें दिन स्कंदमाता की पूजा की जाती है। इनके पुत्र कुमार कार्तिकेय को स्कंद कहा जाता है, इसीलिए उनकी माता होने के कारण दुर्गा का यह स्वरूप 'स्कंदमाता' के नाम से प्रसिद्ध है।

स्कंदमाता की गोद में भगवान् स्कंद विराजमान होते हैं। स्कंदमाता की चार भुजाएँ हैं, जिनमें दो हाथों में कमल-पुष्प विभूषित हैं। एक हाथ वर-मुद्रा में और दूसरा हाथ भगवान् स्कंद को गोद में पकड़े हुए होता है। शुभ्र वर्ण की यह माता कमल के आसन पर आसीन रहती हैं, इस कारण ये पद्मासना देवी भी कहलाती हैं। सिंह भी इनका वाहन है।

सूर्य के समान तेजवाली स्कंदमाता अपने भक्तों की समस्त इच्छाओं को पूरी करनेवाली देवी हैं। इनकी निस्स्वार्थ भक्ति से साधक को सभी प्रकार की सिद्धियों और निधियों की प्राप्ति होती है।

स्कंदमाता की उपासना करने पर भक्त का हृदय शुद्ध हो जाता है। स्कंदमाता की उपासना करते समय साधक को अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर मन को एकाग्र करना चाहिए। उपासना के समय साधक का ध्यान लौकिक और सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर स्कंदमाता के स्वरूप में लीन होना चाहिए।

स्कंदमाता की उपासना की एक विशेषता यह भी है कि साधक द्वारा स्कंदमाता की पूजा-अर्चना करने से भगवान् स्कंद की उपासना भी स्वत: ही हो जाती है। इससे साधक को स्कंदमाता के साथ-साथ भगवान् स्कंद की कृपा-दृष्टि भी सहज ही प्राप्त हो जाती है।

यदि भक्त निस्स्वार्थ भावना से स्कंदमाता की पूजा-अर्चना करते हैं, तो वे उन्हें सुख-संपदा और ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। स्कंदमाता की उपासना करनेवाले भक्त सूर्य के समान अलौकिक तेज और कांति से संपन्न हो जाते हैं। माता की आराधना मात्र से ही उन्हें मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

कात्यायनी

माता कात्यायनी दुर्गा के छठे अवतार के रूप में पूजी जाती हैं। छठे नवरात्रा को माता कात्यायनी की पूजा-अर्चना की जाती है। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार माता कात्यायनी की उत्पत्ति की कथा इस प्रकार है—

कात्य नाम के ऋषि की वंशावली में एक प्रसिद्ध ऋषि कात्यायन उत्पन्न हुए। महर्षि कात्यायन माता दुर्गा के परम भक्त थे। उन्होंने अनेक वर्षों तक माता दुर्गा की कठोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर माता दुर्गा ने उन्हें दर्शन दिए और उनसे वर माँगने को कहा। तब महर्षि कात्यायन ने उनसे वर माँगा कि 'वे पुत्री रूप में उनके घर में जन्म लें।'

माता दुर्गा ने महर्षि कात्यायन को इच्छित वर प्रदान कर दिया।

कुछ समय पश्चात् जब पृथ्वी पर महिषासुर नामक असुर का अत्याचार बढ़ गया, तब माता दुर्गा के तेज से महर्षि कात्यायन के घर में माता दुर्गा के छठे स्वरूप का जन्म हुआ। महर्षि कात्यायन के यहाँ जन्म लेने के कारण ये 'माता कात्यायनी' के नाम से प्रसिद्ध हुईं।

माता कात्यायनी ने जन्म लेते ही विशाल रूप धारण कर लिया। उनके इस विशाल रूप को देखकर महर्षि कात्यायन ने उन्हें प्रणाम किया और तीन दिन शुक्ल सप्तमी, अष्टमी तथा नवमी तक उनकी पूजा-अर्चना की। माता कात्यायनी ने महर्षि की पूजा ग्रहण करने के बाद महिषासुर का वध किया।

पुराणों में वर्णित एक अन्य कथा के अनुसार, जब ब्रह्मा, विष्णु और शिव के मिश्रित तेज से माता दुर्गा के छठे स्वरूप का जन्म हुआ, तब महर्षि कात्यायन ने सर्वप्रथम उनकी पूजा की। इस कारण उनका नाम 'कात्यायनी' पड़ा।

माता कात्यायनी भक्तों को अमोघ फल प्रदान करनेवाली देवी हैं। ब्रज की गोपियों ने भी भगवान् कृष्ण को पति-रूप में पाने के लिए यमुना के तट पर इनकी पूजा की थी। चार भुजाधारी माता कात्यायनी का वाहन सिंह है। मनुष्य के समस्त पापों का नाश करके उसे मोक्ष प्रदान करनेवाली माता कात्यायनी सहज भक्ति से प्रसन्न हो जाती हैं। इनकी उपासना से मनुष्य को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष मिलता है।

कालरात्रि

माता दुर्गा के सातवें स्वरूप को माता कालरात्रि के नाम से जाना जाता है। माता कालरात्रि की काया घने अंधकार के समान एकदम काली है। इनके मस्तक पर तीन नेत्र विद्यमान हैं, जो ब्रह्मांड के समान गोल हैं।

माता कालरात्रि के सिर के केश घने और बिखरे हुए हैं। इनके गले में विद्युत् के समान प्रकाशमान माला सुशोभित है। श्वास लेते समय इनकी नासिका से अग्नि की तीव्र और भयंकर लपटें प्रकट होती हैं। यद्यपि इनका शरीर काला है, तथापि इनमें से विद्युत् के समान तेज प्रकाश-युक्त किरणें प्रकट होती हैं।

माता कालरात्रि का वाहन गर्दभ अर्थात् गदहा है। यह माता चार

भुजाओंवाली हैं। इनके दो हाथों में क्रमशः खड्ग और नुकीला अस्त्र विभूषित है, जबकि एक हाथ वर मुद्रा और दूसरा अभय मुद्रा में है।

भक्तों के लिए माता कालरात्रि का स्वरूप अत्यंत भयानक है, किंतु ये देवी उन्हें सदैव शुभ फल प्रदान करती हैं। अपने भक्तों को शुभ फल प्रदान करने के कारण इन्हें 'शुभंकरी' भी कहा जाता है।

माता कालरात्रि की पूजा-आराधना से भक्तों के समस्त पाप धुल जाते हैं और वे माता के दर्शन से मिलनेवाले पुण्य के भागी हो जाते हैं। यदि भक्त निस्स्वार्थ और भक्तिपूर्ण भावना से माता कालरात्रि की उपासना करते हैं तो उनके सभी कष्ट-क्लेशों का अंत हो जाता है और उन्हें सभी प्रकार के सुख व वैभवों की प्राप्ति होती है।

माता कालरात्रि दैत्य, दानव, राक्षस, भूत-प्रेत आदि का नाश करनेवाली देवी हैं। इनके स्मरण मात्र से ही भक्त की सभी ग्रह-बाधाएँ दूर हो जाती हैं। इनकी आराधना से भक्त भय-मुक्त हो जाते हैं। नवरात्र के सातवें दिन कालरात्रि की पूजा की जाती है। शुभ फल प्राप्त करने के लिए पूजा करते समय भक्त को अपने मन को शुद्ध और पवित्र रखना चाहिए।

महागौरी

नारदजी से शिवजी को प्राप्त करने के लिए तपस्या का उपदेश मिलने पर देवी पार्वती ने कठोर तप करने का निश्चय किया। इसके लिए उन्होंने सभी प्रकार के सुखों को त्याग जंगल में रहकर कठोर तप आरंभ कर दिया।

यह तप अनेक वर्षों तक चला। तपस्या के दौरान उन्होंने धूप, आँधी, वर्षा और शीत का भीषण प्रकोप सहा, जिससे उनका शरीर धूल, मिट्टी और पत्तों से ढक गया। इसके फलस्वरूप उनका शरीर काला पड़ गया। अंत में जब भगवान् शिव ने उन्हें दर्शन देकर पत्नी-रूप में स्वीकार करने का वचन दिया, तब उन्होंने अपनी जटाओं में से निकलनेवाली गंगा द्वारा उनका शरीर मल-मलकर धोया।

पवित्र और शुद्ध गंगाजल के स्पर्श से देवी पार्वती के शरीर का सारा मैल धुल गया और उनका शरीर गौर वर्ण होकर दीप्तिमान हो उठा। इस प्रकार गौर वर्ण की होने के कारण माता पार्वती का नाम 'महागौरी' प्रसिद्ध हो गया।

दुर्गा-पूजन के आठवें दिन माता महागौरी की उपासना की जाती है। माता महागौरी की चार भुजाएँ हैं। उनका वाहन वृषभ है। उनकी यह मुद्रा अत्यंत शांत और सौम्य है।

इनकी पूजा-अर्चना से भक्तों के सभी पाप धुल जाते हैं। इनकी शक्ति अमोघ और फल प्रदान करनेवाली है। सच्चे हृदय से इनकी आराधना करने पर भक्तों के सभी दुःख, क्लेश, ग्रह-बाधाएँ एवं पाप-संतापों का अंत हो जाता है और वे सभी प्रकार के पुण्यों को प्राप्त करने के अधिकारी बन जाते हैं।

माता महागौरी का ध्यान-स्मरण, पूजन-आराधन भक्तों के लिए कल्याणकारी है। इनकी उपासना करते समय साधकों को एकाग्रचित्त होकर माता महागौरी का ध्यान करना चाहिए। इनकी कृपा प्राप्त होने पर साधक को विभिन्न प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। भोग, ऐश्वर्य और मोक्ष प्रदान करनेवाली माता महागौरी सभी की मनोकामनाएँ पूर्ण करती हैं।

सिद्धिदात्री

नवरात्र के नौवें और अंतिम दिन माता सिद्धिदात्री की पूजा की जाती है। माता सिद्धिदात्री सभी सिद्धियों की स्वामिनी हैं। अपने भक्तों को विभिन्न सिद्धियाँ प्रदान करनेवाली माता सिद्धिदात्री की कथा इस प्रकार है—

जब माता दुर्गा के मन में सृष्टि-रचना का विचार आया, तब उन्होंने भगवान् शिव को उत्पन्न किया। शिवजी ने माता दुर्गा से सिद्धियाँ प्रदान करने की प्रार्थना की। उन्हें सिद्धियाँ प्रदान करने के लिए माता दुर्गा के एक अंश से देवी सिद्धिदात्री का जन्म हुआ, जो सभी प्रकार की सिद्धियों की ज्ञाता थीं। माता दुर्गा के आदेशानुसार माता सिद्धिदात्री ने भगवान् शिव को अठारह प्रकार की दुर्लभ, अमोघ और शक्तिशाली सिद्धियाँ प्रदान कीं। इन सिद्धियों की प्राप्ति से ही शिवजी में दैवी तेज उत्पन्न हुआ।

माता सिद्धिदात्री से सिद्धियाँ प्राप्त करके शिवजी ने विष्णुजी की और विष्णुजी ने ब्रह्मा की उत्पत्ति की। ब्रह्माजी को सृष्टि-रचना, विष्णु को सृष्टि के पालन-पोषण और शिवजी को सृष्टि के संहार का कार्य मिला।

नर और नारी के अभाव के कारण ब्रह्माजी सृष्टि-रचना के कार्य में कठिनाई महसूस हुई। तब उन्होंने माता सिद्धिदात्री का स्मरण किया। माता सिद्धिदात्री के प्रकट होने पर ब्रह्माजी बोले, ''हे माता सिद्धिदात्री! नर-नारी के अभाव के कारण मुझे सृष्टि-रचना करने में कठिनाई आ रही है। आप अपनी सिद्धियों द्वारा मेरी इस समस्या का समाधान करें।''

ब्रह्माजी की बात सुनकर माता सिद्धिदात्री ने अपनी सिद्धियों द्वारा शिवजी का आधा शरीर नारी का बना दिया। शिवजी आधे नर और आधे नारी के रूप के कारण अर्द्धनारीश्वर भी कहलाए। इस प्रकार ब्रह्माजी की समस्या का समाधान हो गया और सृष्टि-रचना का कार्य सुचारु रूप से चलने लगा।

माता सिद्धिदात्री कमल-पुष्प पर विराजमान होती हैं। इनका वाहन सिंह है। माता सिद्धिदात्री चार भुजाओंवाली देवी हैं। सिद्धिदात्री की उपासना करने से साधकों की सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। माता सिद्धिदात्री अपने भक्तों और साधकों को सिद्धियाँ प्रदान करनेवाली देवी हैं।

पुराणों के अनुसार माता सिद्धिदात्री अठारह प्रकार की सिद्धियाँ प्रदान करती हैं। ये सिद्धियाँ हैं—अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, सर्वकामावसायिता, सर्वज्ञात्व, दूरश्रवण, परकायप्रवेशन, वाक्सिद्धि, कल्पवृक्षत्व, सृष्टि, संहारकरणसामर्थ्य, अमरत्व, सर्वन्यायकत्व, भावना और सिद्धि।

माता सिद्धिदात्री की कृपा जिस पर हो जाती है, वह सारे सुखों को भोगते हुए अंत में मोक्ष को प्राप्त होता है। माता सिद्धिदात्री भक्तों की सभी लौकिक और पारलौकिक मनोकामनाएँ पूर्ण करती हैं। इनकी उपासना सभी कष्टों का अंत कर देती है। सा.अ.

(पं. के.के. त्रिपाठी की पुस्तक 'हिंदू देवी-देवता' से साभार)

फगुनवा में होली है

● पूरन सरमा

फागुन बौरा और मस्ती में इठला रहा है। यह शोख-बदमाश जो कर दिखाए, वह कम है। पलाश वनों में आग लगा दी है इस मरदुए ने। हवा चलती है तो नश्तर सा चुभो देती है। वन-उपवन एक मादक गंध से भरे हुए हैं। वह चाँदी की धारवाली नदी इतराती भाग रही है और कोयल की मीठी बोली आम्रकुंजों में गूँज रही है। यह फागुन ही तो है, जिसने मानव-मन में नया उल्लास और उमंग भर दिया है। पपीहा का राग प्रेम का प्रतीक बनकर गोरी के होंठों पर हलकी हँसी बिखेर देता है। फागुन उसके गालों पर ऐसी चिकोटी काट जाता है कि दोनों गालों पर हँसी के मारे गड्ढे पड़ जाते हैं। सरसों तो पूरी-की-पूरी पीत रंग से रँग गई है और खेत-खलिहानों में सनसनाता है अठखेलियाँ करता फागुनी राग। मनुहार की वेला को साथ लाया है मधुमास। कहीं दूर कोई अलगोजे पर गा रहा है फागुनी गीत और आसमान से उतर रहा है इस बेईमान मौसम का मादक संगीत।

सुपरिचित व्यंग्यकार। अब तक चौदह व्यंग्य-संग्रह, एक उपन्यास 'समय का सच' एवं बाल साहित्य की करीब बीस पुस्तकों का प्रकाशन। 'कन्हैयालाल सहल पुरस्कार' के साथ-साथ अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत-सम्मानित।

कौन सा फूल या कली है, जो इसको छूकर खिल न गई हो! सुगंध से सराबोर हो गए हैं गाँव-के-गाँव और उफ की थाप ने नया रंग चौपालों को दिया है। इसी का कमाल है कि माधवी और मोगरे की जुगलबंदी देखते ही बनती है। यह मौलश्री झर रही है अपने आप ही। अचेतन पहाड़ी में भर उठा है नया उच्छ्वास। आम बगरा रहा है और नए पत्तों की पाँत जरा सी हवा से भी हिल-डुल जाती है। प्रेम का पहाड़ा याद करने की उम्र ने लहलहाते खेतों के द्वार दस्तक दी है। फागुन कहाँ नहीं है, कोई कह नहीं सकता। गोचर-अगोचर को भर लिया है इस मनोहरी फागुन ने अपने पाश में और कोंपलों में फूटा है नया लावण्य। खुशबुओं के मेले लग गए हैं गाँव के गलियारों में, क्योंकि जो हवा यहाँ आई है, वह सीधी ही फूलों के रस से नहाकर चली आई है। एक मदहोशी सी छा गई है यहाँ-वहाँ, मन करता है, सारी उमंगें भर जाएँ मन के भीतर तक।

कठफोड़वा आम के पेड़ में अपनी कारीगरी से बना रहा है अपना कोटर और हरियल तोतों की बरात पहले ही आ बैठी है बागों में। बहार ने अपना डेरा जमा लिया है गुलाब की क्यारी में। पपीहा बहक रहा है और पीहू-पीहू की रट लगाए मदमाती ऋतु को दे रहा है प्यार की पहचान। वनिता बिहँसती हुई टेसू के रंग तैयार कर रही है, उसे पता है फगुनवा में होली है। जंगल में मंगल और उत्सव के राग। कुछ समझ में ही नहीं आता कि यह कैसा मौसम है, जिसमें गमक के साथ बहक-बहक जाता है मयूरी मन। मोर ने नाचने की बदहवासी में सबकुछ भुला दिया है। पहाड़ों की बर्फ पिघल गई है और झरने का मधुर संगीत कर्णप्रिय बनकर नैनों में साकार है। कहीं दूर किसी बैरागी ने अपने मन की आवाज को सुनकर प्रेम का नया तराना छेड़ा है। बाबा हो गए हैं गोरी के देवर और गुलाबी रंगों से भरी पिचकारी से रँग रही है हर किसी को। कौन गाता है रोज-रोज प्रेम से पगे ये गीत और कौन भरता है नए से नया रंग गमलों की पाँतों में।

अभी तो बाकी है होली के रंगों का धमाल। फागुन का समापन होली के रंगों की धूमधाम से होता है। होली और फागुन का रंग एक सा है। फागुन में होली है, रोज गाता है खलिहान। फागुन को पता है, उसका साथी चैत भी लग जाएगा उसके साथ ही। होली रंग-बिरंगी है। ऐसे गहरे प्यारे रंग, जो जम जाते हैं दिलों पर। छुड़ाए नहीं छूटते रंगों के निशान। होली के रंग न्यारे और नवीन हैं। मन न तो थकता है और न ऊबता, वह तो पगलाया-बौराया सा तलाशता है साथी को। भंग की तरंग है और मीठे स्वाद से भरी होली की पदचाप फागुन के लगते ही पहचान लेता है हर कोई मन। गाने दो मन को कोई प्रेमगीत और आने दो फगुनौटी को घर के द्वारे। सज गए हैं घर-बार बंदनवारों से। होली के रंग से कौन बचा है। सब कोई भीग रहा है और उतर आया है ठिठोली के बीच। मन को पढ़ लेने की उम्र है उस नवयौवना की, इसीलिए तो वह खिलखिलाती गुलाल उड़ाती है। गुलाल लाल-पीले, हरे-गुलाबी कई रंगों में और चेहरे पुत गए हैं इन्हीं रंगों में। साँसों में घुल गया है मौसम का शरबत और प्यार का खुमार टूटे नहीं टूटता। अंधा है होलीवाला रंग। बिना किसी भेदभाव के रंग डालता है छोटे-बड़े और हमउम्र पर।

फागुन का रंग है होली और उसकी पहचान है होली। रंगों की मार और पारदर्शी वस्त्रों में झाँकता है होली का सतरंगी स्वरूप। नैतिकता धरी है ताक पर और मन माने नहीं मानता, खेलता है मनभावन रंगीली होली।

फगुनवा में होली है, नहीं भूलता चेतन मन! मनुहार की इस वेला में प्रेम की होली खेलते हैं सब। रात को चाँदनी के गीत गाता है रूपहला चितेरा बहुरूपिया फागुन। यही फागुनवाला राग आलापा है फूलों के दल पर भँवरों ने। प्रकृति और मानव-मन का अटूट बंधन है फागुन और होली। वसंत यहाँ तक चला आया है अपना मदनोत्सव रूप लेकर। फाग और होली गाते हुए थकता नहीं है फागुन का सुहाना मौसम। दूरियाँ मिट गई हैं और सब एक-दूसरे के आस-पास महसूस कर रहे हैं अपनापन। मन यही तो गाएगा—फगुनवा में होली है।

१२४/६१-६२, अग्रवाल फार्म
मानसरोवर, जयपुर-३०२०२० (राज.)
दूरभाष : ०१४१-२७८२११०

कविता

अमंगल में मंगल

• प्रमिला मजेजी

फूल-फूल पर फागुन आया, टेसू फूले जंगल-जंगल,
फिर भी मन खामोश खड़ा है, जैसे चारों ओर अमंगल।

लाल फूल से लदी हुई है, डाल-डाल सेमल की सुंदर,
फिर भी मन का चेहरा पीला, जैसे थका पथिक हो पथ पर।

फूल गुलाबी, नीले, पीले, रंग खिल रहे हैं फूलों पर,
फिर भी मन उदास है, जैसे माली बाग उजड़ जाने पर।

डाल आम की बौराई है, बौराई कोयल की कूक,
फिर भी मन ने चुप्पी साधी, जैसे उसकी मंजिल दूर।

भरी गुलालों से हथेलियाँ, थिरक रहीं जग की पगथलियाँ,
फिर भी मन का मोर न नाचा, जैसे हो बरसों का प्यासा।

संस्कृति की छाया कुछ धूमिल, संस्कार के चिह्न न दिखते,
इसीलिए होली में शायद सारे गीत अधूरे लगते।

तान उठानेवाला सोया, बजे झाँझरी नूपुर कैसे,
हर आवाज शोर है केवल, शब्द सुनेगा कोई कैसे?

फिर भी होली तो होली है, रंगों की दुनिया बोली है,
ऐसे अवसर चूक गए तो, ताली ताल ठिठोली है।

इसीलिए इस पल को जी लें, पल-पल में पावनता रख लें,
जली होलिका का मतलब क्या, यदि जीवन में रंग न घोलें।

इत्र छिड़कने का मौसम है, दुनिया को रँगने का दिन है,
आज अभी ही शुरू करो, अब फागुन को गाने का दिन है।

इतना ही यदि कह लें, सुन लें, धरती की धुन बन जाएगी,
गिरती पड़ती इस दुनिया की, बेढब चाल सुधर जाएगी।

चेहरे-चेहरे रंग खिलेंगे, आँगन फागुन हो जाएँगे,
चौराहों पर होली होगी, सबके भाग्य मान जाएँगे।

सबके हाथों की रेखाएँ, शुभ रंगों से भर जाएँगी,
सबके माथे की चिंताएँ, धीरे-धीरे मिट जाएँगी।

हर टोली के आगे बच्चे, हर टोली के पीछे अनुभव,
हर टोली के साथ नाचता-गाता हुआ चलेगा मंगल।

नमन विहार, कोरबा (छ.ग.)

कविता

रजाई में दुबकने का मौसम

• देवेंद्र कुमार चौधरी

उफ्फ! यह जो ठंड का मौसम है
घर से बाहर निकलने
या प्यार में बहकने का मौसम नहीं है,
कल अंशु के पापा ने कहा
यह गाय के बियाने का भी मौसम नहीं है।
यह प्रकृति के अत्यधिक निकट आने
और जीवटता का नया पाठ सीखने जैसा
कुछ-कुछ वैसा ही मौसम है,
क्योंकि यह तो खेतों में
सरसों के पीले-पीले फूलों के
खिलखिलाने का मौसम है।
यह अलाव के पास बैठकर दो शब्द बतियाने
और तिल-गुड़-चावल से बने
एक अलग तरह के
गरमा-गरम खिचड़ी के खाने का भी मौसम है,
इस मौसम के बारे में आप जैसा खयाल रखते हों
अंततः तो यह रजाई में दुबकने का ही मौसम है।

ग्राम+पो : प्रतापगंज, सुपौल, बिहार-८५२१२५
दूरभाषः ०८७७२४९०८३

जब शिवशंकर ने होली खेली

● रमेशचंद्र

शिवशंकर जब होली खेलने गए थे, तब बिल्कुल ठीक तरह थे, किंतु जब लौटकर आए तो विचित्र दशा में थे। उनका शरीर विभिन्न रंगों से आच्छादित था। उनकी जटा बिखरी हुई थी। न उनके गले में नाग-माला थी, न माथे पर चंद्रमा और न सरकारी नल की तरह निरंतर बहनेवाली गंगा। उनके साथ नंदी भी नहीं था, जो उनके साथ बॉडीगार्ड की तरह रहता।

जैसे ही पार्वतीजी की दृष्टि भोलेनाथ पर पड़ी तो वे ललिता पवार की तरह गरजकर बोलीं, ''यह क्या हुलिया बनाकर आए हो? तुम्हारे वस्त्रालंकरण क्या चोरी हो गए। यह लाल-पीला और सुनहरी रंग कहाँ से लगाकर आ गए?''

''शांत हो देवी! एक साथ इतने सारे प्रश्न! जरा मुझे सुस्ताने तो दो।'' शराबी की तरह डोलते हुए महादेव मृगासन पर जा विराजे।

''लगता है, भंग पीकर आए हो।'' पार्वतीजी उसी स्टाइल में बोलीं तो नीलकंठेश्वर मुसकराते हुए बोले, ''भंग ही नहीं, धतूरे का भी सेवन किया है।''

''ओह माँ! यह तुम्हें क्या हो गया, जो ऐसा नशा करने लगे?''

''देवी! आज होली है न? आज के दिन सब चलता है। कहते हैं न 'बुरा न मानो होली है,' इसलिए मैं भी आज छककर आया हूँ। साल में एक यही दिन तो आता है, जब मैं देवताओं के साथ थोड़ी लगा लेता हूँ।'' चंद्रमौली भगवान् ने कहा तो पार्वतीजी ने स्त्रीसुलभ मुँह बिचकाते हुए कहा, ''तुम ठहरे भोले भंडारी। तुम्हें सब मूर्ख बनाते हैं। तुम उनकी सोसायटी के लायक तो हो नहीं, इसलिए वे तुम्हारे साथ हँसी-दिल्लगी करते हैं।''

''नहीं देवी! जो तुम कह रही हो, वह बात नहीं है। मैं इंद्र के दरबार में गया था। वहाँ पूरी महफिल जमी हुई थी। देव-ऋषि, मुनि, अप्सरा, गंधर्व, किन्नर, लोकपाल, दिक्पाल सभी थे। सभी ने मेरा ऐसा सम्मान किया कि मैं गद्गद हो गया।''

''कैसा सम्मान किया, जरा मैं भी तो सुनूँ?''

जब पार्वतीजी ने चिढ़ते हुए प्रश्न किया तो सदाशिव पीठ टिकाते हुए बोले, ''पहले तो देवताओं ने मुझ पर रंग और गुलाल मला, फिर कुछ ने सुनहरी रंग पोत दिया। मैं न-न करता रहा, परंतु किसी ने एक न सुनी।''

सुपरिचित साहित्यकार। देश की विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, व्यंग्य, लघुकथा आदि प्रकाशित एवं पुरस्कृत। संप्रति सेवानिवृत्त वाणिज्यिक कर अधिकारी।

''फिर?''

''फिर क्या, ब्रह्माजी अपना बुढ़ापा भूलकर मुझ पर टूट पड़े और बाल्टी के रंग से रँग दिया। मेरी दशा विचित्र हो गई। ठंडा पानी और मुझ पर ऐसा लगा, जैसे बर्फ से स्नान करा दिया हो। इसके बाद भगवान् विष्णु के संकेत से अग्नि, मित्र और वरुण को कुछ कहा। तीनों यमदूत की तरह आए और मुझे हाथों में उठा लिया। मैंने कहा, 'अरे भैया, मुझे कहाँ ले जा रहे हो?' इस पर सब खिलखिला पड़े। तीनों ने मुझे उठाकर रंग के हौद में फेंक दिया। जब मैं निकलकर बाहर आया तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि कहाँ और क्या कर रहा था। सारे देवता और ऋषिगण हो-हो कर हँस रहे थे। इसके बाद भंग का कार्यक्रम चला। देवराज इंद्र ने आग्रह करके मुझे भंग पिलाई। मैं मना करता रहा, किंतु उनकी जिद के आगे मेरी एक न चली।''

''लेकिन तुम्हारे नाग, चंद्रमा, डमरू, त्रिशूल, गंगा और नंदी कहाँ रह गए?''

''देवी! जाते समय तो सब थे मेरे साथ। अब कहाँ रह गए या टपक गए, इसका मुझे ध्यान नहीं है।''

''तुम्हें कुछ ध्यान भी रहता है?''

''अरे, जब हमारा ही ध्यान तुम्हें रहता, तब स्वयं का कहाँ से रहेगा।'' पार्वतजी ने उलाहना दिया।

''अच्छा, यह तो बताओ, कोई यहाँ तो होली खेलने नहीं आया था?''

''आए थे, वही तुम्हारे भूत-प्रेत और पिशाच। तुमने भी अच्छे लोगों का साथ किया। न ढंग से रहते हैं और न तुम्हें ढंग से रहने देते हैं।'' पार्वतजी ने नीलकंठेश्वर के मित्रों की बुराई करते हुए कहा तो उन्हें बड़ा बुरा लगा। वे बोले, ''देवी! मेरे मित्रों को

बुरा-भला कहने की कोई आवश्यकता नहीं। आज होली का दिन है, हँसी-ठिठोली, आनंद का, ऐसे में मेरा मूड ऑफ न करो।''

''ठीक है, नहीं करती, पर एक बात तो बताओ, तुम होली पर क्यों बाहर जाते हो। कभी घर पर भी होली मनाया करो।''

''क्या है, देवी कि मैं घर पर बोर हो जाता हूँ, इसी कारण होली के खास मौके पर चला जाता हूँ। देवताओं के साथ कुछ क्षण गुजार लेने से मन प्रफुल्लित हो जाता है।'' जटाधारी ने जैसे ही अपने मन की बात प्रकट की तो पार्वतीजी स्त्रीसुलभ स्वभाव से बोलीं, ''हाँ, तुम पुरुष हो! भला तुम्हें घर क्यों अच्छा लगेगा। तुम्हें घर तो काटने को दौड़ता होगा। यह दु:ख तो स्त्री के साथ बँधा है कि वह घर में अकेली और बोर होती रहे।''

''तुम भी क्या बे-सिरपैर की बात ले बैठीं! अच्छा, कार्तिकेय और गणेश कहाँ गए?'' अचानक रुद्रदेव को अपने दोनों पुत्रों की याद आई।

''जाएँगे कहाँ, वे भी होली खेलने अपने मित्रों के यहाँ गए होंगे। साथ में अपने वाहन मयूर और चूहा भी ले गए हैं। आखिर बेटे किसके हैं?''

पार्वतजी का उलाहना सुनकर कैलाशपति मृगासन पर लेट गए और मधुर मुसकान बिखेरते हुए बोले, ''देवी, तुम सही मौके पर अपनी बात कहने में माहिर हो। मान गया तुम्हें मैं!''

यह वार्त्तालाप चल ही रहा था कि इतने में 'नारायण-नारायण...' की ध्वनि सुनाई पड़ी।

''लगता है, नारदजी आए हैं।''

''और कौन होगा, छड़ा आदमी है, जिधर सींग समाता है, चला आता है। न कोई काम है, न कोई काज।'' कहती हुई पार्वती पर्वत की गुफा में प्रविष्ट हो गईं।

आते ही नारद ने प्रणाम करते हुए कहा, ''प्रभो, प्रणाम!''

''चिरंजीव भव नारद। कहो कैसे कष्ट किया?''

''भगवन्! मैंने सुना है कि आप होली खेलने इंद्रलोक गए थे। वहाँ आपके नंदी, चंद्रमा, नाग आदि गायब हो गए, क्या यह सच है?''

''हाँ नारद, बिल्कुल सच है। क्या उनका कुछ पता चला?''

'हाँ देवाधिदेव! मुझे विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि नाग, चंद्रमा और नंदी को यमराज ने गिरफ्तार कर लिया है।''

''लेकिन क्यों, उन्हें गिरफ्तार करने का तो कोई कारण नहीं है, नारद।''

''कारण है प्रभो! वे स्वर्ग के उद्यानों और सड़कों पर आवारागर्दी कर रहे थे। उन्हें इस तरह की हरकत करते देखकर यम के सैनिकों ने उन्हें हवालात में डाल दिया है।'' नारदजी ने विस्तारपूर्वक बताया तो औघड़दानी चिंतित हो उठे। थोड़ी देर तक चिंता की मुद्रा में रहने के बाद बोले, ''और गंगा का कुछ पता चला?'' प्रभो! मैंने सुना है कि कोई फिल्म निर्माता उसे फुसलाकर ले गया है। यह कहकर कि वह उसपर एक फिल्म बनाएगा।''

१०१-सी, पार्श्वनाथ नगर, अन्नपूर्णा मार्ग
इंदौर-४५२००९ (म.प्र.)
दूरभाष : ८३१९७८२२१८

गालन मलै गुलाल

क्षणिकाएँ

• विश्वंभर पांडेय 'व्यग्र'

खेलें सब होली रे

गौरी जोहवे बाट
फागुन को ठाट,
हाट रंग पिचकारी को
छुप गयो जाने कहाँ
देखें हम यहाँ
दो महतारी को।

डारूँ उनपे रंग
करूँ मैं तंग,
और वो झुँझलाए
मन में मेरे बात
पिचकारी साथ,
शायद ही बच पाए।

गालन मलै गुलाल
बिगाड़ें हाल,
आज दिन होरी को
करें हमें परेशान।
बाप बलवान
बदला लें चोरी को।

एक लगाए बात
करे एक घात,
ब्रज की गौरी रे
भोरे मेरे श्याम।
ललित ललाम
खेलें सब होरी रे!

मदमाती होली रे

होली में हुड़दंग
बजेगी चंग,
रंग की बौछारें
भावज के देवर,
लावें घेवर
लगें प्यारे-प्यारे।

डारे सबही रंग
चढ़ाएँ भंग,
मदमाती होली रे
नारी हुई निडर
चलाएँ मुद्गर
नैनों से गोली रे!

निखरा-निखरा रूप
सुबह की धूप,
मेरे मन को भाए
नाचे मन मोर
फागुन का जोर
सजन घर पर आए।

फागुन की रात
निराली बात,
चाँदनी छिटकाएँ
गावें गोरी गीत,
पुरानी रीति
सजन से इठलाएँ।

कर्मचारी कॉलोनी, गंगापुर सिटी
स.मा.-३२२२०१ (राज.)
दूरभाष : ९५४९१६५५७९

सैनिक

● गोपाल नारायण आवटे

मेरी बड़े दिनों से इच्छा थी कि सैनिकों के बीच सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करूँ, लेकिन मुंबई में कहाँ फुरसत है! रात-दिन भागना-ही-भागना। मैंने अपने साथी कलाकार सुनील से यह इच्छा प्रकट भी की थी।

सुनील अकसर वर्ष में एक-दो बार सीमा पर जाकर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया करता था। उसके ग्रुप में हमेशा कुछ नए व्यक्ति जुड़ते और कुछ कम भी होते थे। शूटिंग के बाद मेरी और सुनील की कोई विशेष चर्चा नहीं होती थी। मेरी एक फिल्म काफी सुपर-डूपर हिट गई थी, जिससे मेरी व्यस्तता बढ़ गई। वैसे भी फिल्मों में नायिका की उम्र ५-७ बरसों से अधिक नहीं होती। इसलिए मैंने चाहा था कि जितनी भी फिल्में मिल रही हैं, उन्हें ले लूँ। इनमें कुछ 'सी' क्लास की फिल्में भी थीं। मुझे मालूम था कि ये फिल्में कभी फ्लोर पर जाएँगी ही नहीं। मैंने तो साइनिंग अमाउंट ले लिया था। फिल्म बने, चाहे न बने, मुझे क्या मतलब!

लेकिन मैकअप, शॉट ओके, क्लेप, लाइट, साउंड, पैकअप जैसे शब्दों को सुन-सुनकर मैं परेशान हो गई थी। आखिर कब तक ये सब सुन पाऊँगी? मेरी सहेलियाँ अपने कार्यों में व्यस्त रहती थीं। जब उनके फोन आते तो मैं शूटिंग में बिजी रहती और मैं फोन करती तो वे आराम कर रही होती थीं।

अपने जीवन में मुझे एक अच्छे दोस्त और सहेली की कमी हमेशा खलती रही। फिल्मी जीवन है ही कुछ ऐसा कि किसी से हँसकर बात क्या की, और अगले दिन समाचार-पत्र में विवाह की खबर छप जाए। मैं ऐसे विवादों से बचना चाहती थी। सुनील के साथ मैंने एक-दो फिल्में ही की थीं, लेकिन उसका टाइम मैनेजमेंट बहुत ही अच्छा है। उसकी सोच स्पष्ट है। देश के लिए कुछ कर गुजरने की भावना है। सुनील अकसर कहता था, 'देश के लिए कुछ भी करना हो तो समय की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। अच्छा नागरिक, अच्छा टैक्स पेयर भी देशभक्त हो सकता है। हम यदि हमारे कर्तव्यों का ईमानदारी से यापन करें तो यही देशभक्ति है।' उसके भाषण को मैं सुनती और देश के लिए कुछ न कर पाने की पीड़ा मेरे मन में थी।

इधर मुंबई में काफी गरमी पड़ रही थी। मैं सोच रही थी कि यदि विदेश में फिल्म की कहीं शूटिंग तय हो जाए तो इस गरमी से मुक्ति मिले। इस समय जितनी भी फिल्में फ्लोर पर थीं, सब कम बजट की थीं और उनसे उम्मीद रखना मूर्खता होती। इसी बीच सुनील का फोन आया,

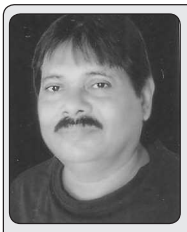

सुपरिचित कथाकार। अब तक छब्बीस कहानी-संग्रह, पाँच व्यंग्य-संग्रह, दो नाटक, सात उपन्यास, पाँच कविता-संग्रह एवं ढेरों संपादित कृतियाँ। 'डॉ. भीमराव अंबेडकर राष्ट्रीय सम्मान', 'डॉ. अंबिका प्रसाद वर्मा दिव्य पुरस्कार', 'राष्ट्रीय साहित्य गौरव सम्मान', 'रत्न भारती सम्मान' सहित डेढ़ दर्जन पुरस्कार प्राप्त।

उसने मुझे बताया कि उसका ग्रुप कश्मीर की तरफ सीमा पर फौजियों के लिए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने जा रहा है।

''कब?''

''अगले महीने का शिड्यूल है, क्या तुम भी चलना चाहोगी?''

''लौटेंगे कब?''

''अभी निकले नहीं और लौटने की बात होने लगी।'' सुनील के स्वर में व्यंग्य था।

''सुनील, मैं नहीं चाहती कि मेरे जाने का डायरेक्टर-प्रोड्यूसर पर बुरा प्रभाव पड़े।''

''यह सोच तो अच्छी है।''

''फिर बताओ, क्या कहूँ?''

''देखो, कम-से-कम दो सप्ताह तो लग ही जाएँगे।''

''बाप रे, दो सप्ताह!'' मैंने चौंककर कहा।

''देखो मधु, तीन दिनों में पहुँचेंगे, एक दिन का घूमना, एक दिन का कार्यक्रम, तीन दिनों में लौटेंगे, ८-१० दिन तो हो ही गए।''

''यह तो ज्यादा हो जाएगा।''

''तुम सच में चलना चाहती हो?''

''सच में घूमना चाह रही हूँ, यहाँ तो बोर हो गए।''

''तुम फ्लाइट से दिल्ली आ जाना, वहाँ से श्रीनगर तुम्हें गाड़ी मिल जाएगी।'' सुनील ने बताया।

''हमें पहुँचना कहाँ है?''

''अभी मैंने इंडिया गवर्मेंट में दो-तीन स्थानों पर कार्यक्रम करने की इजाजत माँगी है, जहाँ की मिल जाए, फिर मैं सुरक्षित स्थान भी चाह रहा हूँ।'' सुनील ने सहजता से कहा। ''कश्मीर में तो इन दिनों घुसपैठ और आतंकवादी गतिविधियाँ खूब चल रही हैं।'' इसलिए मैं चाह रहा हूँ कि हम ऐसे क्षेत्रों में ही चलें, जहाँ हमारी आवश्यकता हो, फिर इन दिनों

तुम भी तो बहुत पापुलर हो गई हो।'' सुनील ने प्रशंसा की।

''इतनी भी नहीं।''

''यह तुम क्या जानो ? फौज में काफी लोग तुम्हें जानते हैं।''

''वो कैसे ?''

''मेरा फोन नंबर उनके पास है, उनकी ही माँग थी कि यदि मधुजी यहाँ आकर कुछ प्रस्तुति करें तो हमें खुशी होगी।'' सुनील ने बताया।

''सच!''

''बिल्कुल सच।''

''सुनील, मैं फ्लाइट से आ जाऊँगी, लेकिन चाहती हूँ कि फौजियों के बीच जरूर जाऊँ, अपनी देशभक्ति प्रकट करूँ, कैसे वे लोग परिवार से इतने महीनों तक दूर रहते हैं, फिर भी खुश रहकर देशसेवा करते रहते हैं।'' मैंने भावुक होकर कहा।

''ठीक है, फिर मैं गुप में आपका नाम भी डाल रहा हूँ, जाने के एक माह पहले सूचना दे दूँगा।'' सुनील ने बताया।

''ओ.के.,'' कहकर मैंने फोन रख दिया।

सुनील का यह प्रस्ताव मुझे बहुत अच्छा लगा। यदि फ्लाइट से भी गई तो अपना खर्च करके जाना होगा, जो सैनिक हमारी रक्षा के लिए जान देने को तैयार रहते हैं, उनपर यदि मैंने कुछ खर्च ही कर दिया तो क्या कमी हो जाएगी। फिर मुझे इससे काफी प्रचार भी तो मिलेगा। यह प्रोजेक्ट बहुत अच्छा है, इस ग्रुप में मैं जरूर जाऊँगी। मैंने मन-ही-मन ठान लिया था।

सुनील का फोन आने की प्रतीक्षा थी। इस मध्य मैंने एक-दो बार फोन किया भी, लेकिन औपचारिक बातचीत ही हुई, जहाँ वह कार्यक्रम देना चाह रहा था, संवेदनशील क्षेत्र था और सरकार ऐसे जगह पर कार्यक्रम प्रस्तुत करने की आज्ञा नहीं दे रही थी, फिर इससे मेरा भी नाम जुड़ा था, जो बहुत अधिक तो नहीं, फिर भी काफी प्रसिद्धि पा चुका था। इस बीच मेरी एक और फिल्म हिट हो गई। उसके गीत और उन में मेरे नृत्य को भी काफी सराहा गया था। मेरे पास काफी ऑफर आ चुके थे।

अचानक सुनील ने मुझे सूचना दी कि वह अगले सप्ताह ग्रुप लेकर ट्रेन से निकल रहा है।

''और मैं ?''

''तुम फ्लाइट से आ जाना, हम वहाँ पिकअप कर लेंगे।''

''लेकिन सुनील, तुमने वादा किया था कि एक महीने पहले मुझे बताओगे।''

''सबकुछ बहुत जल्दी में तय हुआ है। अगले महीने से बरसात शुरू हो जाएगी तो वहाँ जाना नहीं हो पाएगा।''

''लेकिन इतने कम समय में यह सब कैसे संभव है ?''

''तुम कैंसिल कर दो, मैं बता दूँगा कि तुम्हारी तबीयत खराब चल रही है।''

''नो, यह ठीक नहीं है।''

''फिर चलो, हमें भला क्या दिक्कत है ?''

''ठीक है, तुम मुझे प्लान बताओ और पता भी मैं आने के विषय में तुम्हें कन्फर्म करती हूँ।'' कहकर मैंने पेन व कागज लिया और पता, तारीख, कहाँ पहुँचना है, कौन मिलेगा, उसका मोबाइल नंबर सब लिख लिया।

सुनील अगले सप्ताह अपने कार्यक्रम के अनुसार निकल गया। मैंने सचिव से कहकर शूटिंग की डेट को आगे बढ़वाने को कह दिया।

मुझे इस पिंजरे से निकलकर देश के सैनिकों के लिए कुछ करना है, सोचकर निश्चित दिन हवाई जहाज में बैठ गई। दिल्ली और वहाँ से श्रीनगर, जब वहाँ पहुँची तो लगा, स्वर्ग में आ गई हूँ, ठंडी हवा के मस्त झोंकों ने मेरी पूरी यात्रा की थकान मिटा दी।

रात में यहाँ रुकी, सुबह मेरे लिए एक गाड़ी की व्यवस्था कर दी गई थी। ड्राइवर मिलिटरी का ही था, कम बोलनेवाला, लेकिन मेरा पूरा ध्यान रखनेवाला। मैं उसके साथ चली जा रही थी। आड़े-टेढ़े रास्ते, बर्फीला मार्ग, तेज बहती नदी, पहाड़ी, ठंडी हवा, चारों ओर सुंदरता बिखरी पड़ी थी। मैं दोनों आँखों से निहारकर सब दृश्यों को अपने मन-मस्तिष्क में समा लेना चाह रही थी।

शाम के लगभग ४ बजे मैं सुनील के ग्रुप के पास पहुँच गई। हमारा कैंप काफी ऊँचाई पर था, चारों ओर बर्फ थी। इतनी ऊँचाई पर ऑफिस, रहने के मकान कैसे बनाए होंगे ? मैं यात्रा से थक भी गई थी। हमारा कार्यक्रम अगले दिन सुबह होनेवाला था। मैं चाह रही थी कि कुछ हलका-फुलका खाकर आराम कर लूँ, ताकि सुबह तरोताजा चेहरा लिये सैनिकों से मिल सकूँ। मेरा कमरा अलग था। वहाँ समस्त सुविधाएँ थीं। ग्रुप के साथ थोड़ा हँसी-मजाक करके मैं कमरे में चली गई। मैंने कॉफी पी और विचार करने लगी। मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि फौजियों के बीच कार्यक्रम करने आऊँगी, इससे कितनी विषम स्थितियों में भी ये लोग निडरता से ऐसे स्थानों पर रहते हैं। सच में ये लोग पूज्य हैं।

थोड़ी देर बाद दरवाजा बजा, कैप्टन और अधिकारी मुझसे मिलना चाह रहा था, मैं तैयार होकर गई। गर्मजोशी से सबसे मिली। मजाक हँसी-ठहाके चल रहे थे। मेरी फिल्मों पर बातचीत चल रही थी। मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। डिनर का समय हो गया था। हमारे आने के कारण विशेष भोज रखा गया था, जिसमें काफी फौजी आए हुए थे। भोजन के पूर्व टमाटर और चिकन सूप सर्व किया गया। मैंने सूप का एक गिलास उठा लिया। सब मेरे साथ फोटो खिंचवाना चाह रहे थे। मुझे भी कोई दिक्कत नहीं थी। सुनील दूर खड़ा-खड़ा सबकुछ देख रहा था। आज की शाम मैं ही नायिका थी।

अचानक सायरन बजा, तेज हलचल हुई। सैनिक एक जगह एकत्र हो गए। कुछ हमला होने की सूचना थी। आतंकवादी सीमा में प्रवेश कर गए थे। उन्हीं को लेकर संदेश था। देखते-देखते पूरा डायनिंग हॉल खाली हो गया। हमारा पूरा ग्रुप खड़ा रही गया और चंद सैनिक हमारी सेवा के लिए छोड़ दिए गए।

भोजन करने में मेरा मन नहीं लगा। थोड़ा बहुत भोजन करके मैं कमरे में चली गई। मन में रात भर कई विचार आते रहे और पता नहीं कब आँख लग गई। सुबह जब नींद खुली तो चारों ओर प्रकाश फैल

चुका था।

मैं कमरे से बाहर आई, तो एक सैनिक ने आगे बढ़कर मुझे गुड मॉर्निंग कहा और चाय लाकर दे दी। मैंने उससे जानना चाहा कि ''सैनिक सब लौट आए या नहीं?''

''आ चुके।''

''कब आए?''

''दो बजे रात को।''

''क्या हुआ?''

''पाँच आतंकवादियों को मार गिराया।'' उसने खुश होकर कहा।

मैं जब फ्रेश होकर बाहर आई, तब तक ग्रुप के अन्य साथी भी आ चुके थे।

रात को जो आतंकवादी हमला हुआ था, सब उसे विस्तार से जान लेने के बाद एक-दूसरे से शेयर कर रहे थे। मैं भी उनकी चर्चा में सम्मिलित हो गई और मैंने अपने एक साथी से कहा, ''इनका जीवन कितना कठिन है, लेकिन उसपर भी चेहरे पर कोई शिकन नहीं।''

''हम इन्हें सलाम करते हैं।'' सुनील ने मेरी बात को आगे बढ़ाते हुए कहा।

''कार्यक्रम कब प्रस्तुत होना है?''

'दस बजे, दो घंटों की प्रस्तुति के बाद लंच लेकर सीधे दिन-ही-दिन में निकल जाना।''

''रात कहाँ···''

''हम रात को बस से पठानकोट पहुँच जाएँगे, तुम होटल में ठहरोगी, हमने कमरा बुक करवा लिया है।'' सुनील ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा।

''थैंक्यू।''

''वेलकम'' कुछ पल ठहरकर उसने पुन: कहा, ''८:३० हो गए हैं, तुम चलकर कार्यक्रम स्थल देख लो, क्या प्रस्तुति होगी, उसे बारे में जान लो, तुम्हें क्या कहना-करना है, बता दो।'' कहकर सुनील डायरी खोलकर बैठ गया। मैंने उसे अपना कार्यक्रम बताया और जहाँ प्रोग्राम होना था, ग्रुप के साथ वह जगह देखने चल दी। कार्यक्रम के लिए एक खुला मंच था। सामने सैनिकों के बैठने की जगह थी। अधिकारियों के लिए चेयर लगी थी, जो मंच के पास थी।

मेरी फिल्मों की कैसेट पहले से पहुँच चुकी थी। हमें सबकुछ टेप रिकॉर्डर की आवाज पर ही करना था। माइक हमारे कॉलर में लगे थे। मेरे लिए सबकुछ पहली बार होना था। इसकी मैंने कोई तैयारी भी नहीं की थी। वैसे भी मुंबई में सामान्य व्यक्तियों से हमारी दूरी बनी रहती है। लेकिन यहाँ तो किसी भी प्रकार का भय नहीं था। हम सब मैकअप करके जब अपनी तैयारी के साथ पहुँचे, सैनिक वहाँ आ चुके थे। अधिकारी भी कुरसियों पर बैठ चुके थे। सुनील मजे हुए व्यक्ति की तरह मंच संचालन कर रहा था। हमारा एकमात्र उद्देश्य था, फौजी खुश हों, हँसें, ठहाके लगाएँ और हमारे पास होने का आनंद लें।

सुनील ने एक-दो हास्य कलाकारों को बुलाया और उनकी प्रस्तुति हुई। सैनिक बहुत खुश हुए। मुझे उन्हें मुसकराते-हँसते हुए देखना बहुत अच्छा लग रहा था। मेरे कार्यक्रम की घोषणा हुई तो सबने तालियाँ बजाकर स्वागत किया। दो-चार सीटियों की भी आवाज आई।

मैं मंच पर आई, सबको हाथ जोड़कर अभिवादन किया और कहा, 'मेरे सैनिक भाइयो, आपको मधु का नमस्कार, आदर सहित अभिवादन। सच जानिए, मेरे जीवन की पहली प्रस्तुति करने जा रही हूँ। अपने परिवार से इतने दिनों तक दूर रहकर उनसे मिलने का लेशमात्र भी दु:ख मुझे महसूस नहीं हो रहा। हमारे देश के अलावा और कहाँ देशभक्ति का ऐसा जज्बा हो सकता है? मैं ऐसे जोश को सादर चरण-स्पर्श करती हूँ। आपसे प्रेरणा लेकर जीवन जीने का प्रयास करूँगी। रात अचानक आप सब बिना भोजन किए चले गए। मैं देखकर चकित रह गई, देश के लिए इतना समर्पण! मैं सोच भी नहीं सकती थी। मेरा आदर सहित नमन स्वीकार करें।' मैंने अपनी बात कही तो उपस्थित सैनिकों ने खूब तालियाँ बजाईं। समूह से दूर एक सैनिक ने शांति से सब कार्यक्रम की प्रस्तुति प्रारंभ कीं।

एक देशप्रेम का गीत गाया गया और उसके पश्चात् सारा वातावरण संगीतमय हो चुका था। सुनील ने मुझे सैनिकों की फरमाइश बताई। इस तरह तीन नृत्यों की लगातार प्रस्तुतियाँ हुईं। कार्यक्रम काफी गरिमापूर्ण था। सैनिकों का भरपूर मनोरंजन हो चुका था। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रकट करने के लिए सुनील ने मेरा नाम प्रस्तुत किया। मैंने कहा, 'यदि आपका थोड़ा भी मनोरंजन कर पाए तो इसके लिए स्वयं को भाग्यशाली मानते हैं। हम परिवार से दूर रहकर भी आपकी मस्ती-आनंद देखकर आपसे सीख लेने की जरूरत है। आपका धन्यवाद, जो आपने हमें देखा, सराहा, भविष्य में कभी भी मौका मिला तो मैं अवश्य आऊँगी। सुनीलजी और हमारे ग्रुप की ओर से हम आपके आभारी हैं।''

कार्यक्रम समाप्त हो गया। सब सैनिक साथ में फोटो लेना चाह रहे थे। फोटो उतारे, भोजन के लिए हम डाइनिंग हॉल में गए। भोजन कर रही थी कि अचानक मेरी दृष्टि उसी सैनिक पर जाकर टिक गई, यह वही था, जो पेड़ के नीचे खड़ा था। मेरा दिल धक्क से हो गया, आखिर यह है कौन? कोई आतंकवादी तो नहीं? लेकिन अन्य लोगों का ध्यान उस ओर क्यों नहीं है? मैं भोजन कर रही थी, लेकिन मेरा ध्यान रह-रहकर वहीं जा रहा था। भोजन के बाद औपचारिक बातचीत के बाद हम अपनी मोटरगाड़ी की ओर बढ़ चले, वह भी तेजी से मेरे पास आया। मैं बुरी तरह से घबरा गई। वह पास आया, उसने मुझसे कहा, ''मुझे आपसे कुछ बात करनी है—प्लीज, एक मिनट,'' मैं असमंजस में खड़ी हो गई, क्या कहूँ, मैंने कहा, ''कहिए।''

''थोड़ा अलग समय दे दीजिए, मधुजी।'' उसने विनम्रता से कहा। सुनील और ग्रुप के व्यक्तियों ने आँखों के इशारे से जाने को कह दिया। मैं थोड़ी दूर उसके साथ चली गई।

''कहिए।'' मैंने पुनः पूछा।

उसने कहा, ''आपका उद्‌बोधन बहुत अच्छा था, मधुजी, लेकिन···''

''लेकिन क्या?'' मैंने जानना चाहा।

''मधुजी, हमें भी पत्नी, माँ, बच्चों की बहुत याद आती है, लेकिन अनुशासन के चलते अपनी पीड़ा का नक्शा चेहरे पर नहीं बनने देते। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि हम परिवार से दूर रहकर सुखी हैं। हमें भी वे सब एहसास होते हैं, जो एक सामान्य व्यक्ति को होते हैं। आपने जिस तरह हमारे परिवार से दूर रहने की प्रशंसा की, उसमें हमें आपने कहीं से भी इनसान की दृष्टि से देखने की कोशिश नहीं की।

''प्लीज मधुजी, हमें भी इनसान की नजर से देखें, उसी दृष्टि से सोचें। धन्यवाद मधुजी, जो आपने हमें इतना समय दिया।'' कहकर वह तेजी से लौट गया।

वादियों में तेज ठंडी हवाएँ चल रही थीं। मैं ठगी सी उसे जाते हुए देखती रही।

सोहागपुर-४६१७७१
जिला—होशंगाबाद (म.प्र.)
दूरभाष : ०७५७५-२७८३३६

मीठे लगते हैं ताने भी

मुक्तक

● रामदरश मिश्र

फसलें उदास फागुनी बोलीं बयार से—
'हम देख रही राह हैं कहना बहार से',
बोली बयार—'आई थी, आकर है रम गई
आने लगी है अब तो वो दिल्ली में कार से।'

है फेंक रहे पेड़ जीर्ण पट उतार के
कोई मुझे बुला-सा रहा है पुकार के,
बेचैन हो रहे हैं निकलने को घर से मन
दस्तक-सा दे रहे हैं सुनो दिन बहार के।

छेड़ता फिर रहा इस-उस को इस पवन की नीयत ठीक नहीं
सबको रंग में रँग जाने दो इस वक्त नसीहत ठीक नहीं,
नवजीवन के हैं रंग भरे उद्‌दाम तुम्हारी मस्ती में
स्वागत है हे मधुमास सखे, गो मेरी तबीयत ठीक नहीं।

चलते-चलते ठहर गया मैं लगा कि कोई बोल रहा है
मैंने देखा एक फूल है जो रह-रह मुँह खोल रहा है,
'सुनो' कहा उसने—'वसंत है, फूला हूँ, लेकिन दिन भर जो
पतझर झरता रहा दर्द वह मेरे भीतर डोल रहा है।'

फूल खिले, पत्थर भी पिघले, गूँज उठे हैं वीराने भी
रह-रह कूक रही है कोयल अपने लगते अनजाने भी,
फेंके गए हसीन करों से ठंडे जल में आँच विहँसती
छेड़-छाड़ अच्छी लगती है, मीठे लगते हैं ताने भी।

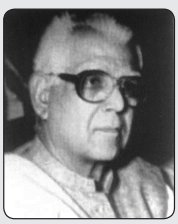

हिंदी के मूर्धन्य कवि-साहित्यकार, जिन्होंने साहित्य की अनेक विधाओं को अपने रचनात्मक अवदान से समृद्ध किया। 'जल टूटता हुआ' और 'पानी के प्राचीर' उपन्यासों की धूम रही। अभी हाल में कविता-संग्रह 'आम के पत्ते' व्यास सम्मान से अलंकृत। इसके अतिरिक्त भी अनेक विशिष्ट सम्मानों से सम्मानित।

आज सेमलों और पलाशों पर अंगारे दहक रहे हैं
पागल हुई हवा खुशबू से, अब काँटे भी महक रहे हैं,
पगडंडियाँ चलीं गीतों के गाँव नहाई-सी रंगों में
मेले में छवियों के इस, लो बूढ़े मन भी बहक रहे हैं।

देखो अंबर में कोई रंगों का तान वितान रहा है
झुंड-झुंड मस्तों का दल बन मस्ती का तूफान रहा है,
मेले में रंगीन नजरों के मैं हूँ अनजान-सा खड़ा
फिर भी लगता है रह-रह कोई मुझको पहचान रहा है।

होली आई रंग झरती-भरती कंठों में राग हो
फूल प्यार के खिले मनों में बुझी द्वेष की आग हो,
होरिहारे फिर रहे बरसते द्वार-द्वार मंगल-वाणी
'सदा अनंद हेऐहि द्वारे जिये से खेले फाग हो।'

आर-३८, वाणी विहार
उत्तम नगर, नई दिल्ली

साहित्य का समाजशास्त्र

● प्रणव शास्त्री

भारतीय साहित्य का मूल उद्देश्य सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय माना गया है। अत: इसी उद्देश्य के अनुरूप साहित्य का स्वरूप विकसित हुआ। आचार्य मम्मट ने काव्य के जो छह प्रयोजन निर्धारित किए, उनमें आत्मशांति के साथ-साथ मधुर उपदेश को भी स्थान दिया है। काव्य की रचना इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की जाती है। 'रामायण' का सबसे प्रमुख उपदेश है कि हम राम के समान आचरण करें तथा रावण के व्यवहार से दुर्गुणों को त्यागने का सबक लें।

साहित्य और समाज का महत्त्वपूर्ण संबंध है। समाज में जो कुछ होता है, उसका प्रतिबिंब साहित्य में दिखाई पड़ता है। इसलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने यह सिद्धांत प्रतिपादित किया कि जनता की चित्तवृत्ति के साथ ही समाज की चित्तवृत्ति में भी परिवर्तन होता है। जनता की चित्तवृत्ति तत्कालीन परिस्थितियों से निर्मित होती है। अत: वे साहित्य का अध्ययन करने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों के अध्ययन पर सर्वाधिक बल देते हैं।

साहित्य समाज को दिशा-निर्देश देता है तथा अपने लिए आधारभूत सामग्री भी समाज से ही प्राप्त करता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि दोनों में अन्योन्याश्रित संबंध है। वीरगाथा काल में युद्ध-वर्णन की अधिकता होने से वीरता की प्रवृत्ति प्रमुख थी, तो भक्तिकाल में मुगलों के आक्रमण से उत्पन्न निराशा के कारण लोगों की चित्तवृत्ति भक्तिभाव की ओर झुक गई। रीतिकाल में समाज की विलासी प्रवृत्ति का निरूपण है, तो आधुनिक काल में देशप्रेम एवं राष्ट्रीयता की प्रवृत्ति प्रधान है।

साहित्यकार युग निरपेक्ष होकर साहित्य की रचना नहीं कर सकता। कबीर का जन्म ऐसे समय में हुआ, जब रूढ़िवादिता चरम शिखर पर थी, पारस्परिक विद्वेष समाज को विशृंखलित कर रहा था। सर्वत्र जाति प्रथा, ऊँच-नीच की भावना, बाह्य आडंबर एवं पाखंड व्याप्त था। इसीलिए कबीर के काव्य में इनका विरोध है तथा समाज को एक नई दिशा देने के लिए कविता के माध्यम से उपदेश दिए गए। तुलसी ने 'रामचरितमानस' के माध्यम से आदर्श चरित्रों की परिकल्पना करते हुए हमें यह बताया कि आदर्श पिता, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति तथा आदर्श राजा कैसा होना चाहिए।

निश्चय ही भक्तिकाल में साहित्य ने समाज को नवीन दिशा दी और उसे आशावादी संदेश दिया। सूर का समस्त साहित्य पाठकों को आनंद, उत्साह और प्रेम से सराबोर कर देनेवाला है।

साहित्य का स्वरूप समय के साथ-साथ बदलता रहता है। आधुनिक काल में भारतेंदु युग से लेकर नई कविता तक साहित्य का स्वरूप बदलता रहा है। राष्ट्रप्रेम एवं देशभक्ति तत्कालीन युग की आवश्यकता थी। गांधीजी के स्वतंत्रता आंदोलन का पूरा-पूरा प्रभाव द्विवेद्वीयुगीन एवं छायावादी काव्य पर दिखाई देता है। कालांतर में प्रगतिवादी चेतना का विकास हुआ, जिसने शोषकों के प्रति घृणा एवं शोषितों के प्रति सहानुभूति का चित्रण किया। नई कविता में अस्तित्ववाद, क्षणवाद, लघु मानव की प्रतिष्ठा की गई। इस प्रकार साहित्य के उत्थान-पतन का प्रतिबिंब तत्कालीन समाज में भी देखा जा सकता है।

साहित्यकार ने कभी समाज-सुधारक की भूमिका ग्रहण की तो कभी वह देशप्रेम की भावनाओं को जगानेवाला चारण बना। मानव-जीवन की समस्त भावनाएँ एवं आकांक्षाएँ तत्कालीन साहित्य में देखी जा सकती हैं। आज का साहित्यकार सजग है। वह अपने कर्तव्य के प्रति उदासीन नहीं है। वह ऐसा गीत विहग है, जो जानता है कि वसंत का वाहक वही है। 'झाँसी की रानी' कविता किस प्रकार लोगों के हृदय में त्याग-बलिदान की भावना भर देती थी, यह किसी से छिपा नहीं है।

बुंदेले हर बोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसीवाली रानी थी।

माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अभिलाषा' तत्कालीन स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेनेवाले वीरों की हार्दिक इच्छा को अभिव्यक्त करती है—

मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर सीस चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।

निश्चय ही आज का साहित्यकार सजग है, जो अपनी भूमिका को भलीभाँति पहचानता है। साहित्य का स्वरूप उसकी इस सजगता पर ही

सुप्रसिद्ध मनीषी लेखक। अब तक विविध पंद्रह ग्रंथ एवं ४०० शोध लेख प्रकाशित। आकाशवाणी, दूरदर्शन पर तीस वार्ताएँ, साक्षात्कार। नेशनल रिसर्च कॉन्फ्रेंस में ४०० शोध-पत्र तथा अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में ५० शोध-पत्र वाचन। अनेक अकादमिक संस्थानों के सदस्य, अधिकारी। छोटे-बड़े अनेक पुरस्कार-सम्मान प्राप्त। संप्रति हिंदी विभागाध्यक्ष, उपाधि महाविद्यालय, पीलीभीत (उ.प्र.) एवं संस्कार भारती एवं अ.भा.सा. परिषद् के प्रांतीय अधिकारी।

निर्भर है, ऐसा निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

भारत जैसे विशाल देश में अनेक जातियों, धर्मों, संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का होना स्वाभाविक है। यहाँ रहनेवाले सभी लोग भारतीय हैं। भारतीयता के दो प्रमुख तत्त्व हैं—राष्ट्रीयता एवं संस्कृति। अर्थात् सभी भारतीयों की राष्ट्रीयता एवं संस्कृति समान है। भारत की संस्कृति सभी भारतीयों की संस्कृति है, भले ही वे विभिन्न धर्मावलंबी हों, विभिन्न सभ्यताओं से हों या विभिन्न भाषा-भाषी हों। वासुदेवशरण अग्रवाल ने राष्ट्र के तीन तत्त्व माने हैं—भूमि, जन और संस्कृति। इन तीनों के मिलन से राष्ट्र बनता है। राष्ट्रीयता के मूल तत्त्व हैं—भौगोलिक एकता, धार्मिक एकता, भाषा, संस्कृति, परंपरा की एकता एवं समान हित।

भारतीय संस्कृति का अर्थ—भारतीय संस्कृति का अभिप्राय भारतीय चिंतन, भारतीय दर्शन, भारतीय कला, भारतीय आध्यात्मिकता, भारतीय जीवन-मूल्यों से है। इसके साथ-साथ 'अनेकता में एकता', अर्थात् समन्वय की भावना को भारतीय संस्कृति की पहचान माना जा सकता है।

भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—(१) आध्यात्मिकता, (२) धर्म की प्रधानता, (३) समन्वयवादी दृष्टिकोण, (४) कर्म सिद्धांत एवं पुनर्जन्म, (५) विश्व-बंधुत्व, (६) संयुक्त परिवार प्रथा, (७) वर्णाश्रम धर्म व्यवस्था, (८) भौगोलिक एकता, (९) सामाजिक एकता।

यहाँ यह ध्यान रखना है कि सभ्यता और संस्कृति में अंतर है। सभ्यता से तात्पर्य जीवन शैली से है, जबकि संस्कृति का तात्पर्य चिंतन एवं मान्यताओं से है।

समाजशास्त्र का अर्थ—''जॉनसन के अनुसार समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो सामाजिक समूहों का, उनके आंतरिक स्वरूपों का, संगठन के स्वरूपों का, उन प्रक्रियाओं का, जो इस संगठन के स्वरूपों को बनाए रखती हैं अथवा परिवर्तित करती हैं और समूहों के बीच पाए जानेवाले संबंधों का अध्ययन करता है।''

समाजशास्त्र व्यक्ति, समाज, संस्कृति, सामाजिक संबंधों और सामाजिक क्रिया को प्रभावित करनेवाले तत्त्वों का अध्ययन करता है।

भारतीयता के समाजशास्त्र का अभिप्राय भारत में रहनेवाले समस्त वर्णों, धर्मों, संस्कृति की विशेषताओं का अध्ययन करना है। भारतीय समाज की सभ्यता, संस्कृति का अध्ययन ही भारतीयता के समाजशास्त्र में किया जाता है।

साहित्य का समाजशास्त्र—समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में साहित्य की रचना-प्रक्रिया का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इससे साहित्य और समाज के अंतर्संबंध को जाना जा सकता है। बाबू गुलाबराय के अनुसार, ''साहित्य हमारे समाज का प्रतिबिंब ही नहीं है, वह उसका नियामक और उन्नायक भी है। साहित्य समाज पर अपना व्यापक प्रभाव डालता है। वह मानव संबंधों को दृढ बनाता है, समाज को संगठित करता है।''

भक्ति आंदोलन, समाज-सुधार आंदोलन, राष्ट्रीय आंदोलन को संचालित करने में साहित्य की विशिष्ट भूमिका रही है। कबीर ने हिंदू-मुसलिम एकता को बढ़ावा दिया, तो तुलसी के साहित्य में समन्वय की विराट् चेष्टा है। जायसी ने सांस्कृतिक एकता पर बल दिया, तो समग्र भक्ति साहित्य ने हिंदू समाज में व्याप्त निराशा को दूर करने का कार्य किया।

साहित्य अपनी व्यंजना शक्ति के द्वारा व्यक्ति को सन्मार्ग पर लाता है। बिहारी ने एक दोहे के माध्यम से राजा जयसिंह को सचेत कर कर्तव्य-पथ पर अग्रसर किया था—

नहिं पराग नहिं मधुर, नहिं विकास इति काल।
अली कली ही सों विंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

स्पेंसर का कथन है—''साहित्य व्यक्ति को उपयोगी एवं शालीन अनुशासन के रूप में ढालता है।'' हिंदी समीक्षकों ने साहित्य को समाज में सहयोग की वृद्धि करनेवाला तत्त्व मानकर उसकी आवश्यकता पर बल दिया है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ''राष्ट्रीय पुनर्निर्माण हेतु श्रेष्ठ साहित्य अपेक्षित है।''

साहित्य और समाज के बीच प्रचलित प्रमुख सिद्धांत निम्नलिखित हैं—(१) प्रतिच्छाया सिद्धांत, (२) नियामक सिद्धांत, (३) प्रभावक सिद्धांत, (४) व्यक्तित्व सिद्धांत, (५) संप्रेषण का सिद्धांत, (६) समाजवादी यथार्थ का सिद्धांत।

साहित्य का सृजन सामाजिक समस्याओं को उभारने, उनसे मुक्ति पाने तथा जनता में चेतना जाग्रत् करने हेतु किया जाता है। साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीयता, राष्ट्रीयता, सांस्कृतिक बोध को जगाए रखते हैं। आदर्श राज्य व्यवस्था का 'मॉडल' तुलसी के 'रामचरितमानस' में है, साथ ही वे सामाजिक-पारिवारिक आदर्श को भी प्रस्तुत करने में सफल रहे हैं।

साहित्य समाज का दर्पण कहा जाता है। जो कुछ समाज में हो रहा है, उसी का प्रतिबिंब साहित्य रूपी दर्पण में दिखता है। मार्क्स के अनुसार—

१. जो लेखक अपनी रचनाओं में वर्गहित की चर्चा करता है, वह सामान्य कोटि का कलाकार है।

२. जब कोई लेखक वर्गीय दृष्टिकोण से ऊपर उठ जाता है, तभी वह समाज की प्रकृति और उसमें रहनेवाले मनुष्यों के संबंधों की अच्छी छवि प्रस्तुत कर पाता है।

सामाजिक संबंधों का विश्लेषण करने में भी साहित्यिक वृत्तियाँ सहायता करती हैं। महान् साहित्यिक रचना देशकाल की सीमा से परे होती हैं, क्योंकि वे समवेत मन की उपज हैं और इसलिए विश्व-दृष्टि को प्रस्तुत करतीं, संकुचित दृष्टि को नहीं। उपर्युक्त विवचेन से स्पष्ट है कि साहित्य का समाज के साथ घनिष्ठ संबंध है। दोनों को एक-दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता।

कल्पतरु, ए-३०, वसुंधरा कॉलोनी
पीलीभीत-२६२००१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९८३७९६०५३०

धूल से भरे शब्द

● मनोज सिंह

उसने आगे बढ़कर दरवाजा खोला तो आवाज कुछ-कुछ उसी तरह की थी, जैसे किसी हॉरर फिल्म के दृश्य में विशेष प्रभाव लाने के लिए डायरेक्टर को फोटोग्राफर के साथ-साथ संगीतकार की भी विशिष्ट मदद लेनी पड़ती है। मगर यहाँ डर नहीं पैदा हो पा रहा था। थका हुआ दिमाग वैसे भी कुछ नहीं कर सकता। हाँ, यह जरूर लग रहा था कि दरवाजा कई दिनों बाद खुला है। अचानक अंदर से आई सीलन से भरी हवा ने इस बात पर मुहर लगाई थी।

भीतर कमरे में अँधेरा पसरा हुआ था। मगर उसके सधे हुए पाँव कुछ ही देर में स्विच बोर्ड के नजदीक पहुँच चुके थे। बल्ब के जलते ही चारों तरफ पीला प्रकाश फैल गया। मेरी नजर अनायास ही चारों तरफ घूम गई। हर ओर दीवार के साथ खड़ी लकड़ी की बड़ी-बड़ी रैक-अल्मीरा, जिनके काँच में से अंदर रखी हुई किताबें झाँक रही थीं। पढ़ने में कुछ नहीं आ पा रहा था। काँच धूल से धुँधले पड़ चुके थे। किताबों के कवर पर छपे शब्द तक रोशनी मुश्किल से पहुँच पा रही थी। हाँ, यह तो जरूर दिख गया था कि इनमें से कुछ बड़ी मोटी किताबें थीं। मैं इनकी संख्या को देखकर हतप्रभ हो रहा था। इतना विशाल व्यक्तिगत संकलन! मैंने आश्चर्य से एक लंबी साँस ली।

नजरें एक बार फिर सक्रिय हुईं। दरवाजे के ठीक दाईं ओर एक विशिष्ट टेबल थी, जिस पर ठीक पीछे सीढ़ीनुमा लकड़ी की पटरियाँ लगाई गई थीं। हर पायदान पर कई सारी ट्रॉफियाँ। ऊँचाई के अनुसार सबसे नीचे सबसे छोटी और फिर अगली सीढ़ी पर उनसे ऊँची। ये मुझे आकर्षित कर अपने पास बुला पातीं, इसी बीच वे आगे बढ़ चुकी थीं। उसने आगे बढ़कर सामने की दीवार पर बंद पड़े खिड़की के पल्लों को खोला। बाहर की रोशनी धड़धड़ाकर ऐसे अंदर घुसी, मानो महीनों से इंतजार कर रही हो। शाम हो चली थी। सूरज खिड़की के रास्ते अंदर तक पहुँचने में ही खुश हो रहा था। तो यह पश्चिम दिशा होनी चाहिए। धूप के गोलाकार बीम में हवा ने अपना अस्तित्व बना लिया। रास्ते में असंख्य धूल के कण किरणों के साथ अचानक तैरने लगे। इनसे ही तो धूप की पहचान बनी थी, नहीं तो इनका अपना अस्तित्व कहाँ दिखाई पड़ता। अजीब है प्रकृति का नियम, दूसरे को रोशनी देनेवाले की खुद कोई चमक नहीं।

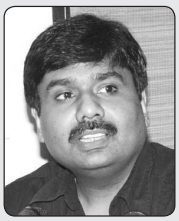

सुपरिचित लेखक। अब तक 'चंद्रिकोत्सव' (खंड-काव्य); 'बंधन', 'कशमकश', 'हॉस्टल के पन्नों से' (उपन्यास); 'व्यक्तित्व का प्रभाव', 'चिंता नहीं चिंतन' (लेख-संकलन); 'दुबई : सपनों का शहर' के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं में कहानी एवं लेखों का नियमित प्रकाशन।

मैंने चारों ओर फिर नजर घुमाई, यहाँ तो धूल का साम्राज्य था, जिसने चारों ओर कब्जा जमा रखा था। रोशनी में उसके चेहरे की झुर्रियाँ एक बार फिर साफ नजर आ रही थीं, मगर आज न जाने क्यों चेहरे पर दमक रही थीं। उसने एक लंबी साँस ली और फिर गर्व से चारों ओर देखने लगी। मुझसे अधिक मेरी निगाहें अब भी जगह-जगह पर अटक रही थीं। सबकुछ धूल में नहाया हुआ था। जाते हुए सूर्य की किरणों ने धूल को और उजागर किया था। वातावरण में अब धूल के बिखरे कण चमक रहे थे। हमारे आने से यहाँ के शांत वातावरण में खलबली सी मच गई, तभी तो कमरे में चारों ओर इन कणों की हलचल बढ़ गई थी। मानो उन्हें हमारे आने की सूचना मिल गई हो। उधर रोशनी ने रैक, किताब, टेबल यहाँ तक कि काँच को भी अपनी कहानी कहने के लिए उकसाया। मगर धूल इसे रोकने के प्रयास में थी। काँच की चमक धूमिल थी। वे धूल से ढके होने पर अपनी निराशा जाहिर कर रहे थे। पीछे रखी किताबें खामोश थीं और शब्द छिप गए से प्रतीत हो रहे थे। क्या उनका अब कोई अस्तित्व बचा था? मैंने कोशिश की, मगर मुझे उनका एहसास नहीं हुआ। मुझे थोड़ा अटपटा लगा। क्यों? इन शब्दों की ट्रॉफियाँ भी तो मृतप्राय पड़ी हैं! धूल का साम्राज्य इन पर भी तो था। क्या इनकी अब कोई कीमत नहीं? नहीं-नहीं, ये कितनी अनमोल हैं। इन्हें पाने के लिए तो मैं खुद कितनी मेहनत कर रहा हूँ। ये अगर मुझे मिल जाएँ तो मैं कितना खुश हो सकता हूँ? मैं शब्दों से खेलनेवाला लेखक इन खुशियों को व्यक्त करते समय शायद शब्दों में ही उलझ जाऊँ। ऐसा होता है। इतनी ही खुशी तो अमृता मैडम को भी मिली होगी, जब यह सब सम्मान

उन्हें प्राप्त हुआ होगा।

मेरा उत्साह बढ़ा और दोगुने उत्साह से मैंने धूल के पीछे झाँकने की कोशिश की तो पाया, शब्द अब भी बाहर निकलने को प्रयासरत थे। उन्हें पहचाना जा सकता था। कुछ इनमें राज्य सरकारों के अकादेमी के द्वारा दी गई थीं। कई मंच और सम्मेलनों के नाम जाने-पहचाने लग रहे थे। सभी अपनी-अपनी लकड़ी और धातु की ट्रॉफियों में से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। इसी कतार में सोवियत संघ की एक ट्रॉफी पर नजर गई। इसने मुझे आकर्षित किया। आज सोवियत संघ इतिहास में दफन था तो यहाँ उसकी ट्रॉफी धूल में सनी पड़ी थी। मैं उसकी ओर आगे बढ़ा। सोवियत और हिंदुस्तान के बीच शब्दों के आदान-प्रदान का लंबा इतिहास रहा है। मगर अब वह बात कहाँ? शब्द क्या अदृश्य हो गए थे? या ये भी धूल में छिप गए? पता नहीं। मन में जिज्ञासा हुई, लगा, उठाकर देख लूँ उस इतिहास को। मगर संकोच ने मुझे रोका। मैंने चतुराई से धीरे से घूमकर देखा तो वे अब भी मंद-मंद मुसकराते हुए चुपचाप पीछे खड़ी थीं। इस बार हमारी निगाहें टकराईं। उनके चेहरे पर एक बार फिर मुसकराहट उभरी। उसमें इस वक्त एक बार फिर विशिष्ट भाव थे। मैं शब्दों के लिए एक बार फिर चूक रहा हूँ, शायद उनका अभिमान या अपने प्रति विशेष लगाव या अपनी ऊँचाइयों को किसी और की नजरों में देखने की खुशी। बड़ा मुश्किल है कहना। वह चुपचाप थी, एकदम स्थिर। दोनों हाथ पीछे। यहाँ चेहरे से अधिक आँखों की ऊर्जा व्यय हो रही थी। यहाँ उन्हें शब्दों की आवश्यकता नहीं थी। शायद मैं समझ रहा था। वे देख भी रही थीं और समझ भी रही थीं कि मैं उनकी उपलब्धियों, विशिष्ट पुरस्कारों, सम्मानों को न केवल देख रहा हूँ, उनके महान् होने को प्रमाणित भी कर रहा हूँ। उसके चेहरे का गर्व मुखर हो रहा था। मैंने आगे बढ़कर एक बार फिर चारों ओर नजरें घुमाईं। इस बीच एक अल्मीरा के नजदीक पहुँचा। अंदर की किताबें करीने से रखी हुई थीं। यकीनन इन्हें महीनों नहीं, वर्षों कहना चाहिए, खोला नहीं गया होगा।

पीछे हुई हलचल ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा। खिड़की के पास स्थित टेबल पर पड़े टेबल क्लॉथ को उन्होंने इसी बीच उठाया। लगा कि मानो कमरे में घमासान शुरू हो गया हो। धूल के कणों की आपस में धक्का-मुक्की तेज हुई। सूरज की किरणों में इन्हें तेज गति से दौड़ते हुए देखा जा सकता था। इस पर विज्ञानवाले शोध कर चुके होंगे। मगर ये मुझे अच्छे लगते हैं। फिर चाहे ये ऐसा जिस लिये भी करते हों। कणों के रंग भी बदल रहे थे। इस पर कविता भी लिखी जा सकती है और साहित्य का सृजन किया जा सकता है। मगर फिलहाल ये धीरे-धीरे आस-पास के शब्दों पर फिर जमने लगे थे।

टेबल क्लॉथ के नीचे यह स्टडी टेबल होनी चाहिए, उसका रोजवुड कलर उभरकर आया। धूल यहाँ तक नहीं पहुँची थी। कितना सुंदर फर्नीचर रहा होगा? नहीं, है। सिर्फ धूल झाड़ने की तो बात है। साथ में रखी थी एक ऊँची कुरसी। शायद इसी पर बैठकर वे लिखती हों। वह टेबल क्लॉथ के साथ फुरती से दरवाजे से बाहर की ओर निकली। शायद धोने की तैयारी थी। इसी बीच मैं थोड़ा स्वतंत्र हुआ। कमरे में अकेला जो रह गया था। क्या करूँ, कहाँ से शुरू करूँ? अभी भी समझने की कोशिश में लगा हुआ था। मगर न जाने क्यों धीरे-धीरे किताबों के ऊपर की धूल मेरे मन-मस्तिष्क पर भी महसूस होने लगी। मैंने हड़बड़ाकर अपने विचारों को झकझोरा। तभी मेरी निगाह दीवार पर टँगे फोटोफ्रेम पर पहुँचकर रुक गई, मैडम की फैमिली फोटो थी।

एक बार फिर मैं उनके चेहरे की ओर देख रहा था। वे यहाँ भी मुसकरा रही थीं। तब भी चेहरे पर गर्व था। लेकिन मुझे इस बार उनकी आँखों ने अधिक आकर्षित किया। उसके लिए शब्द एक बार फिर धूमिल हो रहे थे। फोटो कोई पचास साल पुराना होना चाहिए। हाँ, दोनों बच्चे, जो मेरी उम्र के ही हैं, तब अपनी बाल्यावस्था में थे। वैसे मैडम केश में फूल लगाकर सुंदर लग रही थीं। बगल में खड़े थे सहगल साहब। यकीन ही नहीं होता कि ये वही शख्स हैं, जो बाहर बिस्तर पर लेटे हुए हैं। पिछले दो-तीन सालों से वे चल-फिर नहीं पाते। लगता है, अब यहाँ से जल्द-से-जल्द जाना चाहते हैं। उनकी आँखों से निकलते भाव के लिए एक बार फिर शब्द कम पड़ रहे थे। तो क्या हुआ, मैं सब समझ रहा था, यह क्या कम है? इन बच्चों को मैंने कभी आते-जाते नहीं देखा। देख भी कैसे सकता हूँ? सुना है, पिछले बीस-पच्चीस वर्षों से दोनों स्थायी रूप से न्यूजीलैंड में रहने लगे हैं। आते हैं, बड़े आत्मविश्वास के साथ स्वयं ही मैडम ने अनेक बार कहा था। मगर फिर मुझे क्यों नहीं दिखे? वैसे तो मैं तकरीबन हफ्ते में दो बार यहाँ आ ही जाता हूँ। तो फिर क्या, वे कुछ घंटों के लिए ही आते हैं? कहीं अपने पिता को सिर्फ देखने तो नहीं आते?

मेरी नजरें उस फोटोफ्रेम की कहानी से निकलकर बगल के फोटोफ्रेम में पहुँचीं। कुछ लंबा-चौड़ा सा प्रशस्ति-पत्र था। अकादेमी अवार्ड का प्रशंसा-पत्र था। ओह! यह वही तो है 'शब्दों का इतिहास' उपन्यास पर। कितना जबरदस्त उपन्यास था। बाँध लेता है। मैं उसे कई बार पढ़ गया था। मगर वही शब्द अब इस वक्त मुझसे दूर हो रहे थे। मैं उस प्रशस्ति-पत्र के शब्दों को धूल से नहाते हुए देखकर भ्रमित हो रहा था। अचानक इनमें मुझे अपना भविष्य दिखा, जहाँ मैं एकदम अकेला था, गर्व की चोटी पर। अपाहिज सहगल साहब इस बार मुझे देखकर हँस रहे थे और दोनों बच्चे ताली मारकर मानो मेरा मजाक उड़ा रहे थे। घबराकर वापस लौटा तो इस बार अपना लिखा सारा मुझे धूल में सना हुआ महसूस हुआ। साअ

३५८, सेक्टर-३० ए,
चंडीगढ़
दूरभाष : ९४१७२२००५७

विज्ञापनबाजी एक कला

• विनोद शंकर गुप्त

आपने पतंगबाजी, कलाबाजी, मेहमानबाजी आदि बाजियों के बारे में तो सुना ही होगा, ऐसे ही विज्ञापनबाजी भी होती है। इस कला में जो जितना पारंगत होता है, उतना अपना सामान बेचने में सफल होता है। विज्ञापनबाजी लोगों को अपनी बात कहने-समझाने की एक कला है। यह जितनी आकर्षक और रोचक होगी, उतनी ही सफलता देगी। विज्ञापनबाजी किसी चीज या बात को प्रकाश में लाना होता है। विज्ञापनबाजी कोई नई बात नहीं है, यह बहुत प्राचीन है। विज्ञापन आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हर चीज बिकती है, उसका प्रचार आवश्यक है। अब जैसे-जैसे विज्ञान उन्नति कर रहा है, विज्ञापन के भी अलग-अलग साधन उपलब्ध हो गए हैं। विज्ञापन एक कला है। महाविद्यालयों में अब इसकी भी पढ़ाई होती है। विज्ञापन भी एक उद्योग हो गया है। यह लाखों-करोड़ों का उद्योग है और खूब फल-फूल रहा है।

बड़ी-बड़ी विज्ञापनबाजी बाद में, पहले साधारण लोगों की विज्ञापनबाजी का आनंद लें। फल और सब्जी सभी खाते हैं, सब्जी और फल बेचनेवाले उनकी बिक्री का भी विज्ञापन करते हैं। आवाज लगाते हैं—''भँवर काली जामुन ले लो, पेड़ के पके पपीते ले लो, शहद से भी मीठे हैं। यकीन न हो तो खाकर देख लो, ये चमन के अंगूर हैं, कश्मीर का सेब है, काबुल का मीठा सर्दा है, कंधारी अनार है, मुंबई का केला है, नागपुर के संतरे हैं। पूना की मौसमी है, ककड़ी क्या है लैला की उँगलियाँ और मजनू की पसलियाँ हैं'' आदि-आदि। इस संदर्भ में मेरे घर आगरा में जो फल बेचनेवाला श्री राधेलाल आता था, उसके विषय में पिताजी बाबू गुलाबरायजी ने अपने एक लेख 'मेरे जीवन को सफल बनानेवाला' में उसकी विज्ञापन कला का वर्णन किया है, देखिए—

''वे अपनी चीज की प्रशंसा करना जानते हैं। केला के मोटे होने के संबंध में वे कहेंगे, 'सोट की सोट, बल्ली की बल्ली'। संतरों और मुसम्मियों की सिफारिश में वे कहेंगे कि पतले छिलके के हैं, रस चूता है, लो काटकर दिखा दूँ। यदि उनके पास मुसम्मियाँ हुईं तो मुसम्मियों के गुणगान करेंगे और संतरे हुए तो उसकी पुष्टिकारिता की प्रशंसा करेंगे। 'गंगा गए गंगादास और जमुना गए जमुनादास।' यदि संतरे छोटे और हरे हुए तो कह दिया कि बड़े संतरे तो देखने के ही अच्छे होते हैं, उनके अंदर फाँकें सूखी होती हैं। वे पोले होते हैं। उनमें छिलके के सिवाय कुछ नहीं होता। यदि संतरे लाल और बड़े हुए तो छोटे जरा तुरस थे। ये

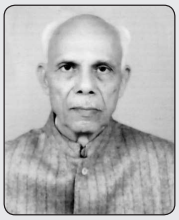

जाने-माने साहित्यकार। 'बाबू गुलाबराय व्यक्तित्व और कृतित्व : एक झलक', 'जीवन पाथेय', 'बाबू गुलाबराय की हास्य-व्यंग्य रचनाएँ','बाबू गुलाबराय के विविध निबंध', 'मेरे मानसिक उपादान : बाबू गुलाबराय', 'मेरी कहानी मेरी जुबानी', 'बाबू गुलाबराय विचार-सार' (संपादित ग्रंथ) एवं विविध पत्र-पत्रिकाओं में सामाजिक व पुरातत्त्व विषय पर लेख प्रकाशित।

मीठे तो हैं। वदतो व्याघात और असंगति उनके लिए दोष की कोटि में नहीं आते। अमरूद उनके सब इलाहाबादी होते हैं और प्राय: सभी तोते की चोंच का प्रमाण-पत्र पाए हुए होते हैं। कुछ पिचके-पिचकाए होते हैं। उनके लिए रेल की दुर्व्यवस्था दोषी ठहराई जाती है। भाव के संबंध में वे आवाज कुछ मंद कर कहते हैं कि 'कहिएगा नहीं, अमुक बाबूजी को तो चौदह आने सेर दे आया हूँ, आपको बारह आने सेर दूँगा।' हर साल वे मुझे कमती मूल्य पर देते हैं; किंतु बात यह है कि उन फलों का वास्तविक मूल्य वही होता है, जिस पर वे मुझे देते हैं। रोज यही व्यापार चलता है, किंतु हर रोज कुछ नवीनता रहती है। उनका माल खूब बिकता है, कुछ बातों के बल पर और कुछ सस्तेपन के कारण।

''वे झूठ अवश्य बोलते हैं, किंतु इतना ही, जितना लेखक लोग। मैं रोज थोड़ा बेवकूफ बन जाता हूँ, किंतु मैं 'बतरस लालच लाल' के कारण बेवकूफ बनना पसंद करता हूँ। फल मेरे जीवन की आवश्यकताओं में से हैं। उसकी बातें मेरे विनोद का कारण बनती हैं। आवश्यकता की पूर्ति के साथ यदि विनोद भी हो जाए तो क्या महँगा है। मैं काकभुशुंडिजी और लोमश ऋषि से प्रार्थना करता हूँ कि राधेलालजी चिरायु हों और उनके फल मुझे सदा पुष्टि, तुष्टि एवं स्फूर्ति देते रहें।''

भुना चना बेचनेवाला आवाज लगाता है—'चना जोरगरम बाबू, मैं लाया मजेदार, चना जोरगरम···।' मूँगफली बेचनेवाला भी मूँगफली को बादाम का आनंद बताकर बेचता है। रेल और बसों में सुरमा बेचनेवाले सुरमा की इतनी तारीफ करेंगे और कहेंगे कि इसे लगाकर चश्मा उतर जाएगा। ऐसे ही अनेक फेरीवाले अपने-अपने माल का विज्ञापन करके ग्राहक पटाते हैं। विज्ञापन ग्राहक पटाने की कला है।

बहुत पहले की बात है, जब फिल्मों के विज्ञापन टेलीविजन जैसे नहीं होते थे, तब ताँगों में फिल्म के पोस्टर लगाकर ग्रामोफोन या लाउड

स्पीकर द्वारा फिल्म के गाने बजाकर प्रचार होता था। विज्ञापन समाचार-पत्रों तथा पत्रिकाओं में पहले भी दिए जाते थे, परंतु अब तो कोई भी दैनिक समाचार-पत्र, चाहे वह किसी भी भाषा में हो, आधे पृष्ठ तो विज्ञापन से भरे होते हैं। समाचार-पत्र का पहला पृष्ठ एक ही वस्तु का होता है, वह भी कभी आधा खाली, आधा भरा। समाचार-पत्र में हर चीज के विज्ञापन देख लीजिए—शादी-विवाह के लिए कोई लड़का या लड़की चाहिए, घर किराए पर चाहिए या घर या फ्लैट खरीदना हो आदि-आदि। जब चुनाव का समय होता है तब तो राजनैतिक पार्टियों को समाचार-पत्रों की बहुत ज्यादा आवश्यकता हो जाती है। समाचार-पत्रों के मालिकों की चाँदी हो जाती है। खूब विज्ञापन मिलते हैं। समाचार-पत्रों में एक-दो पृष्ठ सिनेमा के विज्ञापनों से भी भरे रहते हैं।

टी.वी. पर जब हम कोई सीरियल देखते हैं तो बीच-बीच में विज्ञापन आ जाते हैं। विज्ञापन सीरियल से अधिक रोचक लगते हैं। कभी-कभी विशेषकर जब सीरियल में कुछ दम नहीं होता। महिलाओं के शृंगार के सामान के विज्ञापन बहुत होते हैं, जैसे काजल, बिंदी, शेंपू, साबुन, तेल, बालों को डाई (रँगने) के रंग, लिपस्टिक, क्रीम, पाउडर और आभूषण आदि। उन्हें देखकर महिलाएँ आकर्षित होती हैं और खरीद भी लेती हैं। जो चीज टी.वी. पर दिखाई जाए, उसका मूल्य भी अधिक हो जाता है, परंतु उसकी चिंता किसको होती है।

आजकल टी.वी. सबसे अच्छा माध्यम है विज्ञापन के लिए। टी. वी. लगभग सभी लोग देखते हैं, भले ही समाचार देखने के लिए या कोई सीरियल व फिल्म देखने के लिए। भले ही समाचार का चैनल हो, वह भी कुछ-कुछ अंतराल पर विज्ञापन देना शुरू कर देता है और आधे घंटे के सीरियल में १५ मिनट के विज्ञापन होते हैं। फिल्म देखिए तो उसकी मजबूरी में विज्ञापन को देखना पड़ता है। अब इन विज्ञापनों को देखकर कितने लोग उस विज्ञापन के अनुसार सामान खरीदते होंगे? उद्योग-जगत् विज्ञापनों के लिए अभिनेताओं-अभिनेत्रियों के द्वारा अपने माल का प्रचार करवाते हैं। महान् अभिनेता को विज्ञापन के लिए कभी कार ठीक करने का मेकैनिक बनना पड़ता है, कभी हजाम बनानेवाला नाई तो कभी किसी तेल के विज्ञापन के लिए मालिश करनेवाला। अभिनेता कभी उद्योगपतियों के लिए तो कभी सरकारी विज्ञापनों के लिए अभिनय करता है। जो तेल का विज्ञापन करता है, क्या उसने कभी अपने सिर में वह लगाकर सिर का दर्द दूर किया है? सिनेमा के जो भी कलाकार या खिलाड़ी किसी भी चीज का विज्ञापन करते हैं, क्या वे उसका उपयोग करते हैं? शायद कभी नहीं। केवल जनता को आकर्षित करने के लिए। कुछ डिटरजेंट पाउडरों का विज्ञापन आता है—'कैसे भी दाग मिट जाएँगे इससे कपड़े धोने पर।' ये केवल विज्ञापन होते हैं, इनमें सत्यता कितनी होती है, यह तो उसका उपयोग करनेवाला जानें।

झूठे विज्ञापन देनेवालों को विज्ञापन की कला से कुछ अधिक काम लेना पड़ता है। उसके लिए तो उतनी ही चतुराई की आवश्यकता होती है, जितनी कि ठगी की। किंतु अच्छे और उपयोगी माल बनानेवालों को भी इस कला का सहारा लेना पड़ता है। 'मुश्क आनस्त कि खुद बिबोयद न कि अत्तर बिगोयद' अर्थात् कस्तूरी वही है, जिसकी खुशबू खुद आए, न कि अत्तार कहे कि यह कस्तूरी है। संस्कृत में भी कहा गया गया है कि कस्तूरी की सुगंध बताने के लिए कसम खाने की जरूरत नहीं पड़ती, 'नहिं कस्तूरिकामोदः शपथेन विभाव्यते'। यह सब ठीक है, किंतु कस्तूरी की खुशबू भी अत्तार की दुकान तक ही सीमित रहती है। उसके लिए भी विज्ञापन आवश्यक हो जाता है।

विज्ञापन देनेवालों में कुछ सीधा मार्ग पसंद करते हैं और कुछ पेचीदा। लेकिन सीधे और पेचीदा दोनों मार्गों के लिए उसकी कला का ज्ञान आवश्यक है। विज्ञापन का व्यवसाय लोगों को नौकरी और काम-काज का अवसर देता है। पुरुषों और महिलाओं को विज्ञापन के लिए मॉडलिंग करने का अवसर मिलता है, जिससे उन्हें बहुत आर्थिक लाभ होता है। विज्ञापन सही भी होते हैं और केवल दिखावा भी। कुछ विज्ञापनों से ग्राहक ठगा भी जाता है, परंतु विज्ञापन के उद्योग में जो लगे हैं, उन्हें कोई हानि नहीं। उन्हें तो अपने काम के लिए धन प्राप्त हो ही जाता है। विज्ञापन से जनता को नए-नए उत्पादकों की जानकारी मिलती है, चाहे वे उसे खरीदें या नहीं, जैसे विंडो शॉपिंग होती है।

टी.वी. पर जब हम कोई सीरियल देखते हैं तो बीच-बीच में विज्ञापन आ जाते हैं। विज्ञापन सीरियल से अधिक रोचक लगते हैं। कभी-कभी विशेषकर जब सीरियल में कुछ दम नहीं होता। महिलाओं के शृंगार के सामान के विज्ञापन बहुत होते हैं, जैसे काजल, बिंदी, शेंपू, साबुन, तेल, बालों को डाई (रँगने) के रंग, लिपस्टिक, क्रीम, पाउडर और आभूषण आदि। उन्हें देखकर महिलाएँ आकर्षित होती हैं और खरीद भी लेती हैं। जो चीज टी.वी. पर दिखाई जाए, उसका मूल्य भी अधिक हो जाता है, परंतु उसकी चिंता किसको होती है। इन सब चीजों का विज्ञापन अधिकतर अभिनेत्रियाँ या सुंदर महिलाएँ ही करती हैं। पुरुष भी पीछे नहीं हैं, वे भी ऐसी-ऐसी चीजों का प्रचार करते हैं, जो कभी, स्वयं प्रयोग में नहीं लाते और वस्तु की खूब तारीफ करते हैं। ताले, लोहे के सरिये, सीमेंट या कोई वस्त्र अथवा कोल्ड ड्रिंक, खाने की चीजें, पंखे, टूथपेस्ट आदि-आदि। सिनेमा हॉल में विज्ञापन फिल्म शुरू होने से पहले और इंटरवेल में दिखाए जाते हैं। बड़े परदे पर वे अधिक आकर्षक और प्रभावशाली होते हैं।

जब दस ठगों के बार-बार कहने से कि यह भेड़ नहीं, कुत्ता है, आदमी तथाकथित कुत्ते को फेंककर सर का भार हलका कर लेता है, ऐसे एक ही चीज को रोज-रोज देखने से वस्तु की उपयोगिता में विश्वास होने लगता है। झूठे विज्ञापनवाले तो इसी बात पर चलते हैं कि दुनिया बहुत बड़ी है और बेवकूफों की कमी नहीं है, कोई-न-कोई शिकार फँस ही जाएगा। किंतु उन्हें यह बात ध्यान रखनी चाहिए कि

काठ की हाँड़ी एक ही बार चढ़ती है। हाँ, अपने भाग्य से उनको रोज नई हाँड़ी मिल जाती है, पर बकरे की माँ कब तक खैर मना सकती है, कभी-न-कभी कलई खुल ही जाती है।

अपना माल बेचने के लिए दुकानदार वर्ष में एक-दो बार सेल लगाते हैं, 'हर माल आधे दामों में दे रहे हैं' का विज्ञापन करके ग्राहकों को आकर्षित करते हैं। कहीं-कहीं लिखा होता है—'दो साड़ी खरीदो, एक फ्री मिलेगी' या 'दो कमीज की खरीद पर एक फ्री मिलेगी।' इस तरह ग्राहकों को लुभाया जाता है। दुकानदार कभी अपना घाटा कर कोई माल नहीं बेचता। यह तो जनता को आकर्षित करने का एक तरीका है। खरीदनेवाला सोचता है कि हम बड़े फायदे में हैं। यह सब विज्ञापनबाजी का कमाल ही तो है। सब अपने को चतुर समझते हैं। चतुर तो विक्रेता ही है, जो अपना माल बेच लेता है और कमाई करता है।

अपनी चीज का विज्ञापन लोग सड़कों के किनारे दीवार या बाउंडरीवाल खाली मिल गई तो उसपर ही पेंट कराकर करवा देते हैं जिसकी बाउंडरीवाल है, उसकी चिंता नहीं कि वह खराब हो जाएगी। सड़कों पर, बाजारों में आजकल बिजली की रोशनी द्वारा विज्ञापन दिखाने का भी फैशन हो गया है। ऐसे विज्ञापनों पर खूब खर्च किया जाता है। ये आकर्षक तो लगते ही हैं, सड़कों और बाजारों की रोनक भी बढ़ा देते हैं।

पुस्तकों का भी विज्ञापन होता है, पर टी.वी. या सिनेमा हॉल या पोस्टरों द्वारा नहीं, वह होता है साहित्यक कार्यक्रमों में विमोचन के अवसर पर या पत्र-पत्रिकाओं में समीक्षा छपवाकर। यह विज्ञापन का सबसे अच्छा तरीका है। यह सम्मानजनक है और इससे समीक्षक भी यश प्राप्त करता है।

आज विज्ञापन का युग है। कोई चीज बिना विज्ञापन के नहीं बिकती। हर चीज का बाजार बड़ा हो गया है। हमारे देश का माल विदेशों में जाता है और हम भी विदेशों से सामान खरीदते हैं। बड़ी-बड़ी विदेशी और देसी कंपनियाँ विज्ञापन में बहुत धन लगाती हैं। यही कारण होता है, जिससे कोई भी वस्तु लागत मूल्य से कहीं अधिक महँगी मिलती है। आजकल की व्यापारिक सफलता का अधिकांश श्रेय विज्ञापनों को जाता है। कुशल व्यापारी वह है, जो विज्ञापन का कौशलपूर्ण आयोजन और संयोजन कर सकता है। इसके लिए अनुभव आवश्यक है। ग्राहक भी सोच-समझकर सामान खरीदे, यही उसके लिए अच्छा है।

ए-३, ओल्ड स्टाफ कॉलोनी,
जिंदल स्टेनलैस लि.
ओ.पी. जिंदल मार्ग, हिसार
दूरभाष : ९४१६९९५४२२

बाल-गीत

प्यार भरी फिर होली आई

● **राजेंद्र निशेश**

सुपरिचित रचनाकार। अब तक सात व्यंग्य-संग्रह, तीन बालगीत-संग्रह प्रकाशित। विभिन्न प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः सभी विधाओं पर रचनाओं का निरंतर प्रकाशन। चंडीगढ़ साहित्य अकादेमी एवं हरियाणा साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित।

लक्ष्य बड़े हैं

नए साल के लक्ष्य बड़े हैं
हम भी तो तैयार खड़े हैं।

आँधी से लड़ना जो जाने
ऐसे दीपक उजियारे हैं,
दुश्मन की भाषा पहचाने
बन जाते हम अंगारे हैं।

नया इतिहास हमको लिखना,
घाटी, पर्वत हमीं चढ़े हैं।

पतझर की भाषा को जानें
बन जाते हम बहता झरना,
निकल पड़े जब नई डगर पर
बाधाओं से कैसा डरना?

खेल-मैदान कैसा भी हो,
प्रतिभागी से खूब लड़े हैं।

श्रम की पूजा करनी आती
विकास पूर्ण हो जाएगा,
जैसा भी फैला अँधियारा
नया सवेरा उग आएगा।

सच्चाई की मीठी भाषा,
हरदम सबके साथ जुड़े हैं।

प्रेम की गंगा

झूम-झूमकर नाच दिखाती
प्यार भरी फिर होली आई,
गाँव, नगर सब धूम मची है।
ढोल-मंजीरे संग में लाई।

नीले, पीले, हरे, गुलाबी
छटा दिखाएँ अपनी सारे,
पिचकारी के साथ नाचते
हर मुखड़े पर लगते न्यारे।
कृत्रिम रंगों को ठुकराकर
मस्तानों की टोली आई।

मिल-जुलकर सब मौज मनाते
हँसी-खुशी के खुलते खाते,
मिल-बाँटकर खाते गुझिया
ऊँच-नीच की भेद मिटाते।

भाँग-गाँजा सभी ठुकराकर
प्रेम की गंगा खूब बहाई,
झूम-झूमकर नाच दिखाती
प्यार भरी फिर होली आई।

२६९८, सेक्टर ४०-सी
चंडीगढ़-१६००३६
दूरभाष : ९४१७१०८६३२

स्वप्नदर्शी

● अश्विनीकुमार दुबे

सुपरिचित व्यंग्य लेखक एवं उपन्यासकार। 'घूँघट के पट खोल', 'शहर बंद है', 'अटैची संस्कृति', 'अपने-अपने लोकतंत्र', 'फ्रेम से बड़ी तसवीर', 'कदंब का पेड़' (व्यंग्य-संग्रह), 'जाने-अनजाने दुःख' (उपन्यास)। उत्कृष्ट लेखन के लिए भारतेंदु पुरस्कार, अखिल भारतीय अंबिका प्रसाद दिव्य पुरस्कार प्राप्त।

आज इंजीनियरिंग कॉलेज पूना का वार्षिक परीक्षा-परिणाम घोषित हुआ। विश्वेश्वरैया प्रथम श्रेणी में विशेष योग्यता के साथ पास हुए। कई मित्रों ने आ घेरा और विश्वेश्वरैया को इस विशेष सफलता के लिए बधाई देने लगे। ''अब आगे क्या करने का इरादा है?'' विश्वेश्वरैया के घनिष्ठ मित्र अर्जुन केलुस्कर ने पूछा।

''सबसे पहले तो अपने गाँव जाकर माँ के चरण स्पर्श कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करना है। माँ ने बहुत मुश्किलों में रहते हुए, बहुत कठिनाइयाँ झेलते हुए मुझे पढ़ाया है। मेरे मामा ने भी मेरी पढ़ाई में बहुत मदद की। आज का दिन मेरी माँ और मेरे मामा के लिए बहुत खुशी का दिन है। सबसे पहले मुझे उनसे मिलकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करना है।'' विश्वेश्वरैया ने मुसकराते हुए अर्जुन से कहा। रामानुज, केशव और अब्बास ने भी विश्वेश्वरैया को बधाई दी। विश्वेश्वरैया ने प्रसन्नचित्त होकर सबको धन्यवाद दिया।

''विश्वेश्वरैया! तुमने इंजीनियरिंग के तीन वर्षीय पाठ्यक्रम को केवल ढाई वर्षों में पूरा कर लिया, इसलिए तुम्हें 'जेम्स बोर्कले मेडल' दिए जाने की भी घोषणा की गई है।'' अर्जुन ने मुसकराते हुए कहा।

''मेरी सारी सफलताओं का श्रेय मेरी माँ और मामा को है। उन्होंने कभी मुझे कोई कमी महसूस नहीं होने दी। मैं किशोरावस्था में था, तब मेरे पिता इस दुनिया से चल बसे। मेरी पढ़ाई का पूरा बोझ मेरी माँ के ऊपर आ गया। छह भाई-बहनों के बड़े परिवार को मेरी माँ ने तब किस प्रकार पाला होगा, यह सोचकर मैं बहुत दुःखी हो जाता हूँ। एक कट्टर ब्राह्मण परिवार में तरह-तरह के बंधन होते हैं। मेरी माँ ने घर-परिवार की सारी मर्यादाओं का पालन करते हुए घर का और पास-पड़ोस के धनी परिवारों का कार्य करते हुए हम सब भाई-बहनों का पालन-पोषण किया। लगातार मेहनत करना और खूब मेहनत करना मैंने अपनी माँ से ही सीखा। मुँह-अँधेरे सुबह उनके दिन की शुरुआत होती और रात्रि बारह बजे जब तारीख बदल जाती, तब उनके हाथ-पैर विश्राम पाते। उनकी दिनचर्या ही मेरी जिंदगी का पहला पाठ है, जिसके कारण मैंने खूब मन लगाकर पढ़ा। आज मैंने जब इंजीनियरिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी में 'जेम्स बोर्कले मेडल' के साथ पास की है, तब मुझे अपनी माँ द्वारा पढ़ाया गया पहला पाठ 'अथक परिश्रम' याद हो आता है। मैं अब जल्द-से-जल्द अपनी माँ के पास पहुँच जाना चाहता हूँ।''

विश्वेश्वरैया की बातें सुनकर अर्जुन की आँखें भर आईं। उसने पुनः एक बार विश्वेश्वरैया को बधाई दी। गर्मजोशी के साथ हाथ मिलाया और उसे गाँव जाने के लिए विदा किया।

आंध्र प्रदेश के कुरूनूल जिले में मोक्षगुंडम् गाँव है। इस गाँव में उस समय अधिकांश ब्राह्मण परिवार निवास करते थे। कभी किसी मुखिया ने यह गाँव ब्राह्मणों को दान में दिया था। यह एक तीर्थस्थल है। यहाँ कई छोटे-बड़े कुंड हैं। जन विश्वास है कि इनमें डुबकी लगाने से लोगों के पाप धुल जाते हैं। विश्वेश्वरैया के पूर्वज कभी इसी गाँव में रहते थे। विश्वेश्वरैया के नाम के आगे एम. इसी गाँव के नाम से लगा है। बहुत दिन हुए जब विश्वेश्वरैया के पिता मोक्षगुंडम् छोड़कर बंगलुरु से साठ किलोमीटर दूर मुड्डेनहल्ली गाँव में आकर रहने लगे थे। विश्वेश्वरैया का जन्म इसी गाँव में हुआ था। विश्वेश्वरैया जब पाँच वर्ष के ही थे, तब एक रात उनके घर में चोरी हो गई। पिता किसी काम से दूसरे गाँव गए हुए थे। घर में विश्वेश्वरैया की माँ और उनके भाई-बहन थे। रात को खाना खाकर सब लोग सो गए। सुबह उठकर देखा तो पूरा घर खाली हो चुका था। मानो चोर बहुत दिनों से इस घर की टोह ले रहे थे। जैसे ही घर का मुखिया घर से बाहर गया कि उन्होंने अपना कारनामा कर दिखाया। माँ के जेवर, कपड़े, बरतन और रसोईघर में रखा साल भर का अनाज तक चोर बड़ी होशियारी से उठाकर ले गए।

विश्वेश्वरैया की माँ श्रीमती वेंकटालक्षम्मा इस घटना से बहुत दुःखी हुईं। विश्वेश्वरैया के पिता श्रीनिवास शास्त्री को दूसरे गाँव में खबर भिजवाई गई। वे अपनी यात्रा स्थगित करके तुरंत घर लौट आए। घर का हाल बेहाल था। चोरों ने कुछ नहीं छोड़ा था। उनका बस चलता तो वे घरवालों को वहीं छोड़कर समूचा घर उठा ले जाते। परिवार के लिए भोजन के लिए अनाज तक न बचा था। गृहस्वामी श्रीनिवास शास्त्री धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने इस घटना को विधि का विधान मानकर स्वीकार कर लिया। वे अपने मित्र-परिचितों के पास से अनाज ले आए। सबसे पहले रसोई-घर को भरा जाए, जिससे घर के सदस्यों के पेट भर सकें। बाकी सामान तो धीरे-धीरे फिर आ जाएगा, ऐसा सोचकर वे घर-गृहस्थी को नए सिरे से जोड़ने लगे। वे इस गाँव के जाने-माने वैद्य थे। उनकी ख्याति दूसरे गाँवों में भी फैली हुई थी। दूर-दूर से उनके पास लोग अपना इलाज कराने आते रहते थे। उनके घर में इतनी बड़ी चोरी हो गई, यह जानकर उनके मित्र-परिचित बहुत दुःखी हुए और

मदद के लिए खुलकर सामने आए।

विश्वेश्वरैया की माँ इस चोरी की घटना से बहुत बेचैन थीं। कैसे तो तिल-तिल करके उन्होंने गृहस्थी जोड़ी थी और एक रात में वर्षों की कमाई चली गई। शास्त्रीजी उन्हें ढाढ़स बँधाते, परंतु उनका मन न मानता। वे बहुत व्यथित रहने लगीं। सहसा एक दिन उन्होंने घोषणा की—''अब हम इस गाँव में नहीं रहेंगे। इस गाँव ने हमारा सबकुछ छीन लिया। यहाँ मेरे बच्चे दाने-दाने के लिए मोहताज हो गए। हम किसी दूसरे गाँव में चलकर अपनी गृहस्थी बसाएँगे।''

शास्त्रीजी अपनी पत्नी की घोषणा सुनकर दंग रह गए। उन्होंने कई प्रकार से अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश की, ''भागवान, इस गाँव में अपनी प्रतिष्ठा है। लोग भलीभाँति जानते-पहचानते हैं। इस गाँव के लोग तो अपने यहाँ इलाज कराते ही हैं, दूर-दूर से कई गाँवों के लोग अपना पता पूछते हुए इलाज कराने यहाँ आते रहते हैं। घर का सारा सामान चोरी में चला गया, इसका मुझे भी दु:ख है। शायद भाग्य में यही लिखा था। अब जो हो गया सो हो गया, उस घटना के लिए अफसोस करना व्यर्थ है। यहीं रहकर हम अपनी गृहस्थी फिर से जोड़ लेंगे। इस घटना के कारण गाँव छोड़ना ठीक नहीं है।''

''इस गाँव में लोग आपसे ईर्ष्या-द्वेष रखते हैं। लोग जलते हैं आपकी प्रतिष्ठा देखकर। यह चोरी यों ही नहीं हो गई। बहुत दिनों से चोर इस घर की टोह ले रहे थे। किसी परिचित का भी इसमें हाथ है। घर आने-जानेवाला कोई इसमें मिला हुआ है। चोरों को इस घर की एक-एक बात मालूम थी कि कौन चीज कहाँ रखी है? घर में क्या-क्या सामान है? उन्हें सब पहले से मालूम था। वे गृहस्वामी के दूसरे गाँव जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही आप दूसरे गाँव गए, उन्होंने घर का पूरा सामान चुरा लिया। मेरे बच्चों के लिए रसोई में एक दाना तक नहीं छोड़ा। मुझे नहीं रहना इस गाँव में। कहीं और चलने की तैयारी करिए आप।'' शास्त्रीजी की धर्मपत्नी वेंकटालक्ष्म्मा ने अपनी बात बहुत स्पष्ट रूप से सामने रखी।

''दूसरे गाँव में जाकर बसेंगे। पता नहीं कैसे लोग मिलें? यहाँ तो हम लोग कई वर्षों से रह रहे हैं। नए गाँव में, नई परिस्थितियों में हमें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।'' शास्त्रीजी ने यहीं रहने का आग्रह दुहराया।

''आप मरीजों को देखने के लिए एवं दूसरे कामों से अकसर बाहर जाते रहते हैं। मुझे अकेले अपने घर में छोटे-छोटे बच्चों के साथ रहना पड़ता है। आगे भी यहाँ कोई दुर्घटना हो सकती है। चोरों ने इस गाँव में हमारा घर देख लिया है। मुझे डर लगता है। मैं इस गाँव में अब नहीं रहना चाहती। चिकबल्लापुर में हमारे कई रिश्तेदार रहते हैं। अब हम वहीं चलकर रहेंगे।'' विश्वेश्वरैया की माँ ने अपना दो-टूक निर्णय सुनाया।

शास्त्रीजी को उनके सामने हथियार डालने पड़े। इस प्रकार श्रीनिवास शास्त्री का परिवार मुड्डेनहल्ली छोड़कर चिकबल्लापुर में आकर रहने लगा।

आज इंजीनियरिंग की परीक्षा 'जेम्स बोर्कले मेडल' के साथ प्रथम श्रेणी में पास करके विश्वेश्वरैया अपने गाँव चिकबल्लापुर में अपनी माँ के पास जा रहे हैं। चिकबल्लापुर से विश्वेश्वरैया की बहुत यादें जुड़ी हुई हैं। छह भाई-बहनों के परिवार में विश्वेश्वरैया अपने माता-पिता की दूसरी संतान हैं। उनकी हाई स्कूल तक की शिक्षा इसी गाँव में हुई। उनके बचपन के मित्र, स्कूल के सहपाठी सब इसी गाँव में रहते हैं। उनके स्कूल के शिक्षक श्री कृष्णागिरि राघवेंद्रराव उन्हें बहुत याद आते हैं। वे स्कूल के दिनों में विश्वेश्वरैया को खूब पढ़ने और आगे बढ़ने के लिए हमेशा प्रोत्साहित करते रहते थे।

घर पहुँचते ही विश्वेश्वरैया ने माँ के चरणों में अपना सिर रख दिया। बड़े भाई गाँव में ही खेतों में काम करते थे। छोटे भाई-बहन वहीं गाँव में रहते हुए शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। सबने विश्वेश्वरैया को चारों ओर से घेर लिया। विश्वेश्वरैया की माँ संघर्षों की आँच में तपी हुई एक देवी तुल्य महिला थी। उन्होंने इतना बड़ा परिवार अपनी मेहनत और लगन से अकेले पाला और पाल रही हैं। विश्वेश्वरैया के पिता श्रीनिवास शास्त्री तो चिकबल्लापुर आने के कुछ वर्षों बाद स्वर्ग सिधार गए थे। उस समय विश्वेश्वरैया की उम्र पंद्रह बरस रही होगी।

विश्वेश्वरैया को अपने पिता के साथ रामेश्वरम् तक पैदल तीर्थयात्रा करने की खूब याद है। चिकबल्लापुर आने के बाद एक बार श्रीनिवास शास्त्री ने अपनी पत्नी श्रीमती वेंकटालक्ष्म्मा और द्वितीय पुत्र विश्वेश्वरैया के साथ रामेश्वरम् तक की पैदल यात्रा की। उसी समय से विश्वेश्वरैया को खूब पैदल चलने की आदत हो गई। कभी भी कितनी भी दूर जाना हो, विश्वेश्वरैया पैदल ही निकल पड़ते थे। उनके पिता श्रीनिवास शास्त्री एक कुशल वैद्य और अत्यंत धार्मिक व्यक्ति थे। उन्हें पुराने धार्मिक ग्रंथों का बहुत ज्ञान था। बात-बात पर संस्कृत के श्लोक सुनाते थे। विश्वेश्वरैया ने बहुत सारी पौराणिक कथाएँ अपने पिताजी से सुन रखी थीं, परंतु हर छोटी-छोटी बात पर अपने पिता द्वारा भाग्य का जिक्र करते रहना उन्हें कभी पसंद नहीं आया।

माँ ने विश्वेश्वरैया के सिर पर मैसूरी पगड़ी रखते हुए कहा, ''बेटा, इसे हमेशा पहना करना। यह पगड़ी हमारी आन-बान और शान की प्रतीक है। तुझे आगे चलकर अपने खानदान का नाम रोशन करना है। तेरे पिता नामी वैद्य थे। प्रसिद्ध चिकित्सक रहे वे। तुझे बड़ा इंजीनियर बनना है।''

माँ, शायद इंजीनियर के काम को पूरी तरह न जानती थीं, परंतु उन्हें इतना जरूर पता था कि उनके बेटे ने इंजीनियरिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है। उनकी नजर में इंजीनियर का काम विभिन्न प्रकार की मशीनों को बनाना और सुधारना है। पिता लोगों की सेहत सुधारते थे। बेटा लोगों के काम आनेवाली मशीनों को सुधारेगा, यह सोचकर उन्हें खुशी है। विश्वेश्वरैया अपने छोटे भाई-बहनों के लिए कुछ कपड़े और मिठाइयाँ लाए थे। वे अपने थैले से उन्हें निकालकर बाँटने लगे। इतने में दरवाजे पर दस्तक हुई। विश्वेश्वरैया ने देखा, दरवाजे पर उनके गुरु श्री कृष्णागिरि राघवेंद्रराव खड़े हैं। विश्वेश्वरैया दौड़कर दरवाजे की ओर लपके और बढ़कर उनका स्वागत किया। सामने बिछे हुए तख्त

पर उन्हें सादर बिठाकर विश्वेश्वरैया ने उनके चरण स्पर्श किए। वे प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हुए बोले, ''बेटा, मुझे मालूम हो गया है कि तुम इंजीनियरिंग की परीक्षा में विशेष योग्यता के साथ पास हो गए हो। पूना में मेरे एक मित्र रहते हैं। उन्होंने अपने खत में तुम्हारे विषय में सूचना दी थी। मुझे तो पहले ही विश्वास था कि तुम एक दिन जरूर इस गाँव का नाम रोशन करोगे।''

''सब आपका आशीर्वाद है, गुरुजी। आपने हमारी नींव मजबूत की। आप लगातार हमें खूब पढ़ने की प्रेरणा देते रहे। एक-एक विषय को आपने हमें बहुत विस्तार से समझाया। जीवन में हमेशा धैर्य रखना आपने ही हमें सिखाया। आपके आदर्शों पर चलते रहकर ही मैंने यह सफलता पाई।'' विश्वेश्वरैया ने विनम्रतापूर्वक कहा। इतने में माँ एक प्लेट में मिठाई और पानी का गिलास लेकर बैठक में हाजिर हुईं। राघवेंद्रावजी ने तुरंत खड़े होकर उन्हें प्रणाम किया और कहा, ''इसकी क्या जरूरत थी?''

''कुछ ज्यादा नहीं, आपका मुँह मीठा करा रही हूँ। आपकी मेहनत का ही नतीजा है कि विश्वेश्वरैया आज कॉलेज की पढ़ाई पूरी करके घर आ गया।'' माँ ने कहा।

''इसने इतने अच्छे नंबरों के साथ परीक्षा पास की है कि नौकरी मिलने में कोई देर नहीं लगेगी। अब यह घर में नहीं बैठेगा। इसकी शादी करो और इसे देश की सेवा करने दो।'' रावजी ने कहा।

''बंगलुरु में इसके मामा रहते हैं। उन्होंने अपने घर में रखकर इसे पढ़ाया-लिखाया, इस योग्य बनाया। इसकी शादी के लिए वे ही कोई योग्य कन्या की तलाश करेंगे।'' माँ ने कहा।

विश्वेश्वरैया ने मिठाई की प्लेट अपने गुरुजी की ओर आगे बढ़ाई। रावजी ने मिठाई का एक टुकड़ा उठाया और मुँह में रख लिया।

''मिठाई अच्छी है, तुम पूना से लाए होगे?'' उन्होंने विश्वेश्वरैया की ओर मुसकराकर देखा। पानी पीकर वे विश्वेश्वरैया से फिर बोले, ''बेटा, पढ़ाई का कभी अंत नहीं होता। पढ़ाई अर्थात् सीखना, यह काम जीवन भर चलेगा। जहाँ नौकरी पर जाओगे, वहाँ नए लोग मिलेंगे। वे तुमसे ज्यादा जानकार और अनुभवी होंगे, तुम्हें उनसे भी बहुत कुछ सीखना होगा। इसी प्रकार नए शहरों में जाओगे, तुम्हें विलायत जाने के भी अवसर मिल सकते हैं, वहाँ सब जगह सीखने को, जानने को बहुत कुछ है। वह सब तुम्हें खुली आँखों से देखना और जिज्ञासु मन से समझना है। एक अच्छा इंजीनियर बनने के लिए अपनी जिज्ञासा को कभी मरने मत देना। यह जिज्ञासा ही आदमी को महान् बनाती है।'' इतना कहकर रावजी चलने को हुए।

विश्वेश्वरैया ने उन्हें विश्वास दिलाया, ''सर, आपकी बातें हमेशा याद रखूँगा। मैं अपनी जिज्ञासा को हमेशा जीवंत रखूँगा, कभी उसे शांत नहीं होने दूँगा। अभी मैंने जाना ही क्या है? दुनिया में जानने, सीखने और समझने के लिए बहुत कुछ शेष है।''

वे हमेशा कहते, ''सफलता के लिए जीवन में कड़ी मेहनत के अलावा कोई रास्ता नहीं है।'' मैंने उनकी यह बात हमेशा याद रखी। पूना में रहते हुए मुझे मामा और उनके परिवार की बहुत याद आती थी। मैं कल ही बंगलुरु के लिए रवाना होता हूँ। मामा और उनके परिवार से मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी।

''बस, तुम्हारे ऐसे ही विचार बने रहें, यही मेरी कामना है। अपनी माँ और मामा का हमेशा खयाल रखना। इन्होंने बहुत कष्ट उठाते हुए तुम्हारे जीवन को सँवारा है।'' इतना कहकर रावजी चले गए। एक सप्ताह जाने-कैसे बीत गया, विश्वेश्वरैया को पता ही नहीं चला। स्कूल के सहपाठी, बचपन के मित्र और छोटे भाई-बहन सबके बीच रहते हुए विश्वेश्वरैया को बहुत अच्छा लग रहा था। विश्वेश्वरैया को तैरने का बहुत शौक था। जब वे हाई स्कूल में यहाँ पढ़ते थे, तब रोज सुबह दोस्तों के साथ तालाब में नहाने जाते थे। माँ रोकती, ''बेटा, गहरे पानी में मत जाना।' वे माँ को विश्वास दिलाते, 'माँ, मुझ पर भरोसा रखो। मेरे दोस्तों की तो जरा में ही साँस भर जाती है। मैं पूरा तालाब इस ओर से उस ओर तक तैरकर चला जाता हूँ और साँस नहीं फूलती। कोई कहे तो दोबारा भी मैं ऐसा ही कर सकता हूँ।' 'परंतु तुम दोबारा ऐसा कभी नहीं करोगे।' माँ डपटते हुए विश्वेश्वरैया से कहती। एक दिन माँ ने विश्वेश्वरैया से कहा, 'तेरे मामा तुझे बहुत याद करते रहते हैं। कुछ दिनों के लिए उनके पास बंगलुरु होकर आ जा। उनसे भी आशीर्वाद ले ले।''

विश्वेश्वरैया ने अगले दिन ही बंगलुरु जाने का इरादा किया। उसे लगा कि मैंने स्वयं माँ से क्यों नहीं कहा कि उसे मामा के पास बंगलुरु जाना है। मामा उसे बहुत प्यार करते हैं। चिकबल्लापुर में हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी होने के बाद मामा ने उसे अपने पास बंगलुरु बुला लिया था। मामा का बड़ा परिवार है, फिर भी उन्होंने मेरी पढ़ाई की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और उच्च शिक्षा के लिए सेंट्रल कॉलेज में मेरा एडमिशन कराया। मामा की आमदनी कम थी और उसी में उन्हें मेरी पढ़ाई का खर्चा भी उठाना होता था। मितव्ययिता का पाठ मैंने वहीं रहकर सीखा। उन दिनों मामा के घर में बहुत आर्थिक तंगी रहती थी। मामा एक-एक पैसा बहुत सोच-विचारकर खर्च करते थे। मैं इस स्थिति को भलीभाँति समझ रहा था। मैं इस कठिन स्थिति में अपनी पढ़ाई पूरी करते हुए मामा पर अतिरिक्त आर्थिक भार नहीं डालना चाहता था। मैंने घर-घर जाकर बच्चों को पढ़ाने का काम शुरू किया। कॉलेज की अपनी पढ़ाई और दूर-दूर के परिवारों में जाकर बच्चों को पढ़ाना, मुश्किल काम था, परंतु मैंने हार नहीं मानी। रोज आठ-दस किलोमीटर पैदल चलता था। दिन में कॉलेज की अपनी पढ़ाई पूरी करते हुए शेष समय में विभिन्न परिवारों में जाकर उनके बच्चों को पढ़ाया करता था। देर रात तक अपनी पढ़ाई भी करता रहता। मेरी कड़ी मेहनत देखकर मामा बहुत प्रसन्न रहते थे। वे हमेशा कहते, 'सफलता के लिए जीवन में कड़ी मेहनत के अलावा कोई रास्ता नहीं है।' मैंने उनकी यह बात हमेशा याद रखी। पूना में रहते हुए मुझे मामा और उनके परिवार की बहुत याद आती थी। मैं कल ही बंगलुरु के लिए रवाना होता हूँ। मामा और उनके परिवार से मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी।

सुबह ८ बजे की बस है बंगलुरु जाने के लिए। माँ ने सुबह से बहुत

सारा नाश्ता बना दिया। मैंने भी अपना बैग तैयार कर लिया। तीन-चार दिन तो बंगलुरु में रहना ही है। वहाँ कॉलेज के बहुत से सहपाठी हैं। उनसे मिलकर उनके हालचाल पूछना होगा। जिन परिवारों के बच्चों को मैं उन दिनों पढ़ाने जाया करता था, उनके यहाँ भी मिलने जाऊँगा। अपने विद्यार्थियों से मिलकर मुझे बहुत खुशी होगी।

□

मामा ने बड़े उत्साह के साथ विश्वेश्वरैया को गले लगाया। मामी और बच्चों ने भी विश्वेश्वरैया को अपने बीच पाकर बहुत हर्ष मनाया। आज विशेष भोजन बनाया गया। विश्वेश्वरैया ने जब मामा को बताया कि उसने इंजीनियरिंग की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास कर ली है, तब खुशी के मारे उनकी आँखें छलक आईं। विश्वेश्वरैया ने अपनी सारी परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी में पास कर लीं, यह बात तो उन्हें पहले मालूम हो चुकी थी। पूना में उनके कई मित्र रहते थे, जिनसे उनका पत्र-व्यवहार बना रहता था। वे प्राय: अपने भानजे के विषय में उनसे मालुमात करते रहते थे। लेकिन यह बात उन्हें विश्वेश्वरैया से ही मालूम हुई कि उसने इंजीनियरिंग का त्रिवर्षीय कोर्स ढाई वर्षों में ही बहुत अच्छे नंबरों के साथ पूरा कर लिया था। इसी विशेषज्ञता के कारण उसे 'जेम्स बोर्कले मेडल' प्रदान किया गया। कॉलेज में एडमिशन के समय विश्वेश्वरैया ने घर के पतेवाले कॉलम में बंगलुरु में मामा के घर का पता ही लिखवाया था। कॉलेज से विश्वेश्वरैया के नाम कोई सूचना आती तो वह मामा के पते पर ही आती थी।

खाना खाने के बाद मामा ने विश्वेश्वरैया से उसके भविष्य की योजनाओं के विषय में पूछा। विश्वेश्वरैया ने विश्वासपूर्वक कहा, ''पूना विश्वविद्यालय से सर्वप्रथम आनेवाले छात्रों को नौकरी नहीं ढूँढ़नी पड़ती। बंबई राज्य को उनकी सूची विश्वविद्यालय द्वारा भेज दी जाती है। फिर राज्य शासन सुविधानुसार उन्हें नौकरी पर रख लेता है। इस प्रकार मैं सोचता हूँ कि कुछ दिनों में ही मेरा नियुक्ति-पत्र आपके पते पर यहीं बंगलुरु में आता ही होगा।''

''देश में अंग्रेजों का शासन है। नौकरियों में उच्च पदों पर पहले अंग्रेजों को ही मौका दिया जाता है। कई विभागों में तो सर्वोच्च पद सिर्फ उन्हीं के लिए आरक्षित हैं। ऐसी स्थिति में तुम्हें अपने काम में विशेष योग्यता दिखानी होगी, वरना ये विदेशी तुम्हें आगे नहीं बढ़ने देंगे।'' मामा ने अपना मंतव्य बताया।

''हाँ, यह बात तो है, मामा। अंग्रेज भारतीयों के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते। वे हम लोगों को द्वितीय स्तर का नागरिक मानते हैं, जबकि भारतीयों में योग्यता की कमी नहीं है। कई क्षेत्रों में तो भारतीय अंग्रेजों से कई गुना ज्यादा प्रतिभाशाली साबित हुए हैं। शासन अंग्रेजों का है, इसलिए वे हमें जान-बूझकर आगे नहीं बढ़ने देते।'' विश्वेश्वरैया ने अपनी बात कही।

''कोई कितने ही रोड़े अटकाए, लेकिन मेहनत, लगन और योग्यता

''देश में अंग्रेजों का शासन है। नौकरियों में उच्च पदों पर पहले अंग्रेजों को ही मौका दिया जाता है। कई विभागों में तो सर्वोच्च पद सिर्फ उन्हीं के लिए आरक्षित हैं। ऐसी स्थिति में तुम्हें अपने काम में विशेष योग्यता दिखानी होगी, वरना ये विदेशी तुम्हें आगे नहीं बढने देंगे।''

एक-न-एक दिन रंग लाती है। तुम्हें अपनी नौकरी के दौरान जो भी काम सौंपा जाए, उसे निर्भीक होकर पूरी तन्मयता के साथ करना। अंग्रेज अफसर उसका मूल्यांकन करें, न करें, उसकी चिंता कभी मत करना। कभी-न-कभी तो अंग्रेजों का शासन समाप्त होगा। वैसे भी इन दिनों अंग्रेजी शासन के खिलाफ भारतीय जन में बहुत असंतोष फैल रहा है।'' मामा ने विश्वेश्वरैया को फिर समझाया।

विश्वेश्वरैया को आज अपने विद्यार्थियों से मिलने उनके घर जाना है। मामा के घर से विश्वेश्वरैया के उन विद्यार्थियों के घर बहुत दूर हैं। लगभग आठ-दस किलोमीटर विश्वेश्वरैया को पैदल चलना होगा। विश्वेश्वरैया उनके घर उनसे मिलने न भी जाएँ तो क्या! उनसे उन्हें कोई काम थोड़े ही है, परंतु अपने विद्यार्थियों के हालचाल पूछना। उस दौरान उनके पढ़ाई का, क्या हुआ जब वे पूना में रहे? क्या दूसरे शिक्षक से वे आगे की पढ़ाई पूरी करते रहे? या हार मानकर बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ दी? किसी काम-काज में लग गए क्या? यह सब जानने की विश्वेश्वरैया के मन में बड़ी इच्छा है।

वे तैयार होकर पहले की भाँति पैदल ही निकल पड़े। आज उन्होंने मैसूरी पगड़ी पहन रखी है। कभी-कभी वे इसे पहन लेते हैं। हमेशा पहनने की अभी आदत नहीं बनी। विश्वेश्वरैया को लगता था कि सामाजिक कार्यक्रमों, उत्सवों में और किसी के घर जब उनसे भेंट करने जाएँ, तब इस पगड़ी को जरूर पहनना चाहिए। आज वे अपने सिर पर पगड़ी पहने हुए शान से बंगलुरु की सड़कों पर पैदल चले जा रहे हैं। हालाँकि उन्हें सिर पर पगड़ी बाँधना अभी ठीक से नहीं आता। आज तो पगड़ी बाँधने में मामा ने उनकी मदद की थी।

सबसे पहले वे अपने प्रिय विद्यार्थी बसंतराव के घर पहुँचे। दरवाजा बसंत ने ही खोला। सिर पर पगड़ी के कारण एक क्षण उसे विश्वेश्वरैया को पहचानने में मुश्किल हुई, परंतु जैसे ही विश्वेश्वरैया ने कहा, ''बसंत कैसे हो?'' अगले ही क्षण उसने अपने गुरु विश्वेश्वरैया को पहचान लिया। बसंतराव ने तुरंत विश्वेश्वरैया के चरण स्पर्श किए और भीतर दीवान पर बैठने का आग्रह किया। इतने में बैठक में बसंत के माता-पिता भी आ गए। उन्होंने विश्वेश्वरैया को तुरंत पहचान लिया और बहुत खुश होकर बोले, ''ओह, आप! पूना से कब आए? बसंत तो आपको खूब याद करता है।''

''इसकी पढ़ाई कैसी चल रही है? इन दिनों इसे पढ़ाने कौन आता है?'' विश्वेश्वरैया ने उत्साहपूर्वक पूछा। ''बसंत ने हाई स्कूल प्रथम श्रेणी में पास कर लिया। आजकल सेंट्रल कॉलेज में आगे की पढ़ाई कर रहा है।'' पिता ने सहर्ष बताया।

बसंत की माँ ने नाश्ते की प्लेट सामने रखते हुए कहा, ''आपके पूना जाने के बाद इसने किसी और से पढ़ने के लिए मना कर दिया। कहता था कि आपने सारे विषय इतनी अच्छी तरह से समझा दिए हैं कि अब आगे घर पर किसी टीचर से पढ़ने की जरूरत नहीं है। अब वह

अच्छी तरह मन लगाकर पढ़ रहा है।...और बेटा, तुम्हारी पूना में पढ़ाई पूरी हो गई?''

''हाँ माँजी, मैंने भी अपनी पढ़ाई पूरी कर ली है।''

''खुश रहो बेटा! खूब तरक्की करो।''

''सर, मैं भी सेंट्रल कॉलेज की परीक्षाएँ पास करके आगे इंजीनियरिंग की शिक्षा लेना चाहता हूँ।''

''जरूर, क्यों नहीं! मेरे गाँव के शिक्षक श्री कृष्णागिरि राव कहा करते हैं कि एक अच्छा इंजीनियर बनने के लिए अपनी जिज्ञासा को कभी नहीं मरने देना चाहिए। निरंतर जिज्ञासा बनाए रखनेवाला व्यक्ति ही जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ सकता है।'' विश्वेश्वरैया ने एक फल का टुकड़ा मुँह में रखते हुए कहा।

''सर, मैं आपकी यह बात हमेशा याद रखूँगा।''

बसंत को भविष्य की शुभकामनाएँ देकर और उसके माता-पिता से नमस्ते करके विश्वेश्वरैया अपने दूसरे विद्यार्थी से भेंट करने के लिए सामने की सड़क पर तेज डग भरने लगे।

अपने दूसरे विद्यार्थी सुधीर पाल के यहाँ पहुँचकर उन्होंने पाया कि उनके पूना जाने के पश्चात् उसने हाई स्कूल की परीक्षा पास करके पढ़ाई छोड़ दी।

''आपके पूना जाने के पश्चात् सुधीर का मन पढ़ाई से उचट गया। एक-दो लोगों को घर पर पढ़ाने के लिए बुलाया भी, परंतु उसका फिर मन नहीं लगा। वह हमेशा आपकी ही तारीफ करता रहता। घर का कारोबार है। इकलौता बेटा है हमारा, इसलिए हाई स्कूल की परीक्षा के बाद हमने उसे व्यापार में लगा दिया। यहाँ वह मन लगाकर काम कर रहा है, परंतु अपनी प्रारंभिक शिक्षा के लिए वह आपको हमेशा स्मरण करता है।'' सुधीर के पिता ने विश्वेश्वरैया का स्वागत करते हुए कहा।

दूसरे कमरे से सुधीर ने आकर तुरंत विश्वेश्वरैया के पैर छुए।

''जो भी करो, नौकरी अथवा व्यवसाय। पूरा मन लगाकर करो।'' विश्वेश्वरैया ने कहा।

इसी प्रकार विश्वेश्वरैया अपने दो और विद्यार्थियों से मिले। उन्हें भी अपने पूर्व शिक्षक से मिलकर खुशी हुई। उसमें से एक आगे डॉक्टरी की पढ़ाई करने के लिए बाहर जाना चाहता था। दूसरा, जिसका बड़ा परिवार था। उसके पिता उसे आगे नहीं पढ़ा सकते थे, उसने वहीं बिजली विभाग में नौकरी कर ली, जबकि वह विश्वेश्वरैया का होनहार विद्यार्थी था। विश्वेश्वरैया को उसके परिवारवालों से मिलकर यह महसूस हुआ कि ज्यादा बच्चे पैदा नहीं करना चाहिए, ऐसा होने से बच्चों की परवरिश और शिक्षा-दीक्षा ठीक से नहीं हो पाती। बड़े परिवार को पालने में ही घर के मुखिया की सारी आमदनी खर्च हो जाती है। वह अपने लिए और बच्चों के लिए कोई योजना नहीं बना पाता।

विश्वेश्वरैया शाम तक अपने सभी पूर्व विद्यार्थियों से मिलकर घर आ गए। आज उन्होंने बीस किलोमीटर से ज्यादा पैदल यात्रा की थी। वे चाहते तो आते समय रिक्शा में बैठकर भी घर आ सकते थे, परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया। लंबी दूरी तक लगातार पैदल चलते रहने की उन्हें आदत है। पूना में भी वे मीलों पैदल चला करते थे। हालाँकि साइकिल चलाना उन्हें पसंद है। वे साइकिल को बहुत अच्छा वाहन मानते हैं। इसके हैंडिल में तीन-चार थैले लटका लो, पीछे कॅरियर में भी सामान का बोझा बाँध लो, कोई परेशानी नहीं। धीरे-धीरे साइकिल के पैडल भरते हुए जहाँ जाना चाहो, चले जाओ। सामान ज्यादा हो तो सब तरफ से साइकिल पर लादकर हैंडल पकड़कर पैदल ही उसे ढुलकाते हुए ले जाओ। इस प्रकार साइकिल आमजन के कामकाज के लिए बहुत अच्छी सवारी है। विश्वेश्वरैया के पास अपनी साइकिल नहीं है, परंतु मामा की साइकिल उन्होंने कई बार चलाई है। घर पहुँचते ही मामा ने उनके हाथ में एक लिफाफा थमाते हुए कहा, ''यह लिफाफा आज ही तुम्हारे नाम डाक से आया है। मैंने खोला नहीं। हालाँकि मैंने अनुमान लगा लिया है कि इसमें क्या है? लिफाफे पर सरकारी मुहर है, इसलिए इसमें अवश्य तुम्हारा नियुक्ति-पत्र होना चाहिए।''

विश्वेश्वरैया ने लिफाफे पर सरकारी मुहर देखी। निश्चित ही यह एक शासकीय पत्र था। उन्होंने तुरंत लिफाफा खोला और उसमें रखा हुआ पत्र निकालकर फटाफट पढ़ गए। उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक मामा को बताया, ''आपका अनुमान बिल्कुल सही है। बंबई राज्य में मुझे सरकारी नौकरी मिल गई है। 'लोक कर्म विभाग' के प्रमुख कार्यालय बंबई में मुझे तीन दिनों के भीतर अपनी उपस्थिति दर्ज करानी है। तत्पश्चात् वहाँ से वे मुझे कार्यस्थल पर पदस्थ करेंगे।''

''बड़ी खुशी की बात है, बेटा।'' कहकर मामा ने विश्वेश्वरैया के सिर पर हाथ रखा। मामी और बच्चों ने भी मामा-भानजे का यह वार्त्तालाप सुन लिया था। विश्वेश्वरैया को बंबई राज्य में सरकारी नौकरी मिल गई, यह जानकर सबको बहुत खुशी हुई।

''मामा, मैं आज रात में ही चिकबल्लापुर निकल जाता हूँ। माँ को यह खुशखबरी देकर कल ही बंबई के लिए प्रस्थान कर जाऊँगा। बंबई राज्य बहुत बड़ा है। इसकी सीमाएँ महाराष्ट्र, गुजरात और कर्नाटक तक फैली हुई हैं। पता नहीं मुझे किस जिले में भेजा जाता है, इसलिए पूरी तैयारी के साथ ही मुझे बंबई जाना होगा।'' विश्वेश्वरैया ने कहा।

''ठीक है बेटा, तुम आज रात को निकल जाओ। खाना बन गया है, भरपेट खाकर निकलना। बंबई पहुँचकर अपनी कुशलता का तुरंत समाचार देना और पत्र में अपनी नियुक्ति का ब्योरा जरूर लिख भेजना। इसी प्रकार जीवन में आगे बढ़ो। मेरी शुभकामनाएँ और आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ हैं। जीजाजी के देहांत के पश्चात् मेरी बहन वेंकटालक्ष्म्मा ने बहुत कष्ट उठाए हैं। अब उसकी आशाएँ तुमसे बँधी हैं। तुम आगे बढ़ो और अपने छोटे भाई-बहनों को भी आगे बढ़ाओ।'' मामा ने विश्वेश्वरैया को समझाया।

(महान् अभियंता मोक्षगुंडम् विश्वेश्वरैया के जीवन पर आधारित उपन्यास का एक अंश)

साअ

५२५-आर, महालक्ष्मी नगर, इंदौर-१०

दूरभाष : ०९४२५१६७००३

कहानी

श्रद्धांजलि

● राम कुमार तिवारी

जब भी मोबाइल की गैलरी खोलता हूँ, तुम्हारी कई तसवीर सामने आ जाती हैं। यह ट्रेड फेयर में खिंचवाई थी। यह गाँव के आँगन में मैंने खींची थी। यह राँचीवाले घर के गेट के सामने की है और यही तुम्हारी आखिरी तसवीर बन गई। उस दिन शाम को कॉलेज से लौटा ही था कि तुम बोल उठी थीं, 'चलो, नीचे बैठेंगे।' मुझे केवल तुम्हारी बाँह पकड़नी पड़ती थी और तुम सहजता से सीढ़ियाँ उतरने लगतीं। सहजता से तुम्हारा सीढ़ियाँ उतरना मुझे यह सोचकर आनंदित कर देता था कि नब्बे की उम्र में भी तुम स्वस्थ हो। सीढ़ी उतरकर आँगन में जाने के लिए भी एक फुट नीचे पैर रखना पड़ता। यहाँ भी तुम्हारी ताकत सहज दिखाई देती। आँगन छोटा है, जिसे पार कर गेट है। गेट तक पहुँचते ही मैं कहता, 'गेट पकड़कर खड़ी रहना, मैं कुरसी लाता हूँ।' तुम खड़ी रहतीं। मैं दौड़कर कुरसी ले आता। तुम्हें बैठाता और बगल में मैं भी बैठ जाता।

यह एक नियमित दिनचर्या बन गई थी। आते-जाते लोग माँ-बेटे को एक साथ बैठे देख कई तरह की ठिठोली-उक्तियाँ कहते जाते। कभी-कभी पास बैठकर इधर-उधर की गप्पें भी करते। तुम्हें यह अच्छा लगता। यही तुम्हारा मनोरंजन था। टी.वी. अब तुम नहीं देखतीं। एक तो ठीक से दिखाई नहीं पड़ता, दूसरे सुनाई भी कम देता था। सीरियल की कहानी भी ऊटपटाँग लगती थी।

उस दिन लोग गप्पें मारकर जा चुके थे। शाम होने को थी। सूरज क्षितिज में छिपने ही वाला था। उसकी मद्धिम रोशनी तुम्हारे चेहरे पर इस तरह आलोकित थी कि चेहरे की एक-एक झुर्री स्पष्ट निखर रही थी। मोबाइल के कैमरे से देखा तो तुम इस अवस्था की एक सुंदर अनुकृति सी लगीं। मैंने फोटो खींच लिया तो तुमने देखना चाहा। देखते ही बोलीं, 'इसे बनवाकर घर में कहीं रख देना।' मैंने वैसा नहीं किया, किंतु आज लगता है कि वह तुम्हारी आज्ञा थी। इसके बाद मुझे तुम्हारी और कोई फोटो खींचने का अवसर नहीं मिला। अवसर मिला, किंतु तुम उस देह से दूर जा चुकी थीं। तुम्हारी मृत देह आँगन में रखी गई थी और मैंने उस निर्जीव देह की अंतिम फोटो खींची। फोटो खींचकर तत्काल बंगलुरु और रूपनगर (पंजाब) भेज दी, जहाँ तुम्हारे दोनों पोते रहते हैं।

आज मुझे तुम्हारी यह चिंता सच होती दिखाई दे रही थी। जब भी तुम्हारे पोते यहाँ आते, हाल-चाल पूछते, तुम यह एक बार जरूर कह देती, 'तुम लोग बहुत दूर रहते हो। दो-तीन दिन लगता है आने में। मरते समय तुम लोगों से भेंट नहीं हो पाएगी।' आज यही सत्य हो रहा है। दोनों को पंद्रह-बीस दिनों की छुट्टी नहीं मिलती, इसलिए मुझे उनसे यही कहना उचित लगा, 'श्राद्ध में आ जाना'। सचमुच तुम्हारी चिंता वाजिब थी। आज लोग इक्कीसवीं शादी की दुहाई देते फक्र से कहते सुनाई देते हैं कि दुनिया सिमट गई है, ग्लोब गाँव की तरह हो गया है, घंटों में आदमी कहाँ-से-कहाँ जा सकता है, किंतु समय पर ऐसा संभव होता दिखता नहीं। आम आदमी वहीं-का-वहीं है। तुम दस दिन अस्पताल में रहीं, पोते तो दूर में थे, किंतु कितने तुम्हारे अपने भी तुमसे नहीं मिल सके। उस दिन मेरी भी भेंट तुमसे नहीं हो पाती, लेकिन मैं मानता हूँ कि यह तुम्हारी ही जिद रही होगी कि जब तक मैं कॉलेज से नहीं आऊँगा, तुम प्राण नहीं त्यागोगी। तुम्हारी यह जिद तब तक बनी रही। मैं आते ही तुम्हारे पास गया। तुम सो रही थीं। तुम्हें छूकर जैसे ही पूछा, 'माँ बैठोगी?' मुझे लग रहा था कि बैठने से तुम्हें आराम मिलेगा। तुम छूते ही जाग गई थीं और बड़े आराम से बोलीं, 'हाँ, बैठाओ।' मैंने तुम्हारी पीठ की तरफ हाथ का सहारा दिया और तुम गद्दों के सहारे बैठ गई थीं। चेहरा बिल्कुल वैसे ही शांत था, जैसे तुम्हारे सोकर उठते समय मैं देखता था। लेकिन आँखें अब भी बंद थीं। मैंने आँखें खोलने के लिए कहा, तुमने किंतु नहीं खोलीं। शायद खोल नहीं पाईं। मुझे चिंता हुई। फिर पूछा, 'कुछ खाओगी?' तुमने 'हाँ' कहा था।

बिस्तर के एक ओर तुम्हारी बहू थी कटोरी में दलिया लिये और दूसरी तरफ मैं एक हाथ से तुम्हारे सिर को थामे दूसरे हाथ से तुम्हें खिला रहा था। बहुत चाव से तुमने दलिया खा लिया तो मेरी चिंता कुछ कम हुई, लेकिन मन बार-बार सोच रहा था कि तुम आँखें क्यों नहीं खोल रही हो! मैंने फिर कहा, 'माँ, आँखें खोलो, कितना सोओगी?'

तुमने कोई उत्तर नहीं दिया। मेरी चिंता और बढ़ गई। अचानक तुमने जोर से हिचकी ली। यह असामान्य हिचकी थी। मैंने तुम्हें गौर से देखा और फिर पत्नी की ओर देखा। उसने कहा, 'पानी दीजिए, हिचकी ठीक हो जाएगी।' मैंने तुमसे फिर पूछा, 'पानी पियोगी?' तुमने 'हाँ' कहा था। सिर भी हिलाया था।

तुमने आराम से आधा गिलास पानी पी लिया। मैंने आश्स्वस्त होने के लिए पुन: पूछा, 'और पानी पियोगी?' तुमने जोर से कहा था, 'नहीं, बस हो गया।' तुम्हारी साँसें जोर-जोर से चलने लगीं। मैं तुससे पूछ रहा था, 'माँ, क्या हो रहा है तुमको? कैसा लग रहा है अभी?' लेकिन तुम उत्तर नहीं दे पा रही थीं। एक अज्ञात भय मेरे मन को घेरने लगा। मैंने

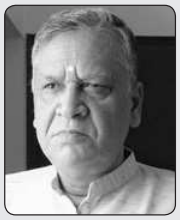

सुपरिचित लेखक। अब तक ग्यारह भौगोलिक, नौ साहित्यिक, पाँच अन्य पुस्तकें तथा छत्तीस शोध-पत्र प्रकाशित। कई पत्रिकाओं का संपादन। 'साहित्श्री', 'विद्यावाचस्पति', 'संगम सम्मान', कथा संगम पुरस्कार से सम्मानित । संप्रति अध्यक्ष, भूगोल विभाग, राँची विश्वविद्यालय।

पत्नी की ओर देखा। उसके चेहरे पर भी भय की छाया दीख रही थी, तथापि उसने पूछा, 'माँ को गंगाजल दीजिएगा?'

'हाँ, जल्दी लाओ।' मैंने काँपते स्वर में कहा।

'लीजिए।' वह तुरंत पूजाघर से ले आई।

मैंने चम्मच का इंतजार न करते हुए उँगलियों से ही तुम्हारे मुँह में गंगाजल का पर्याप्त अंश डाल दिया। इत्मीनान से तुम घूँट-घूँट कर पी रही थीं। तुम्हारी साँसें धीमी हो रही थीं। एक-दो बार रुकने जैसी भी लगीं। अब साँसें छोटी-छोटी होने लगीं। मैंने अपनी दोनों हथेलियों से तुम्हारा चेहरा थाम लिया। तुमने अचानक आँखें खोलीं और एक टूक हम लोगों को देखकर बंद कर लीं। आँखों के साथ तुम्हारी साँसें भी बंद हो गईं। मैंने पत्नी से कहा, 'लगता है, माँ अब नहीं रहीं।' माँ, तुमने मेरी हथेलियों के बीच ही अपने प्राण त्याग दिए थे। शायद तुम इसी के लिए मेरा कॉलेज से आने का इंतजार करती रहीं। मेरे आते ही दस-पंद्रह मिनटों में सबकुछ हो गया। बासठ वर्षों से माँ-बेटे के बीच चल रहा अहर्निश संभाषण थम गया था।

उस दिन तुम मुझसे कुछ बोल नहीं सकीं, लेकिन अब हरदम मुझे यही लगता है कि अगर बोल पातीं तो निश्चय ही यही पूछतीं, 'आज क्यों आने में देर हो गई?'

मेरे देर तक घर से बाहर रहने पर तुम्हारी चिंता जैसे मेरे बचपन के दिनों में थी, वैसी ही ताउम्र बनी रही। इसीलिए मेरा यह कहना गलत होगा कि यह तुम्हारी ही जिद रही होगी कि जब तक मैं कॉलेज से नहीं आऊँगा, तुम प्राण नहीं त्यागोगी। अब मैं समझ रहा हूँ, यह तुम्हारी जिद नहीं थी; तुम्हारी चिंता थी कि मैं देर क्यों कर रहा हूँ। तुम भले ही पूछ नहीं पाईं कि मैं आज कैसे जल्दी घर आ गया, लेकिन अब यह स्पष्ट है कि तुम्हारी चिंता ही मुझे जल्दी खींच लाई थी।

अब मुझे स्वयं पर कोफ्त होती है कि मैं और जल्दी क्यों नहीं आया। हो सकता है, तब तुम कुछ बोलतीं भी। वैसे मुझे यह पता है कि अगर कुछ बोलतीं भी तो वह मेरे प्रति तुम्हारी चिंता के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता था।

कितनी बातें याद करूँ! जब भी मेरे साथ नीचे गेट के पास बैठने के लिए उतरतीं; सीढ़ियों से ही तुम्हारी चिंताओं की व्याख्या शुरू हो जाती। गाँव में इस बार खेत किसको देगा? बारी में साझेदार कौन लगाया है? हिसाब-किताब ठीक से रखता है या नहीं? गाँव से लौटते समय घर के दरवाजा ठीक से बंद किया था या नहीं? गेट तक पहुँचकर जब कुरसी पर बैठ जातीं, तब पूरे घर को नीचे से ऊपर तक बहुत गौर से निहारतीं। सामने की रेलिंग देखकर कहतीं, 'इधर दरवाजा क्यों खोल दिया है?' मेरे बहुत समझाने पर भी नहीं समझतीं कि वह दरवाजा नहीं, रेलिंग है।

उनकी चिंता कभी-कभी अतिरेक की सीमा लाँघ जाती और कई काल्पनिक चिंताएँ गढ़ने लगतीं। उनकी चिंताएँ मेरे प्रति होती ही इतनी थीं कि कोई अन्य व्यक्ति सुने तो इन्हें बीमार समझने लग जाए। मुझे भी कभी-कभी यह खीझ की सीमा तक ले जातीं। लेकिन अब समझ रहा हूँ कि सभी माँ की चिंताएँ एक जैसी ही होती हैं। पत्नी जब बच्चों से बातें करती है और उनकी सामान्य समस्याओं को अपनी चिंता बना लेती है, तब मेरी यह सोच सिद्ध होती है कि सभी माओं की समस्याएँ एक जैसी ही होती हैं। सृष्टि के विधान में माँ बनना जिस प्रकार एक रहस्यमयी चमत्कार है, उसी प्रकार माँ की सोच भी विस्मयकारी ही होती है।

यहाँ 'विस्मयकारी' शब्द लिखना ही उचित है। शायद कोई दूसरा शब्द यहाँ उचित न लगे। मैंने ऐसा कई बार तुमसे भी कहा है, लेकिन तुम मानती ही कहाँ थीं। तुम्हारी धुन ही अलग रहती।

उसी दिन की बात है। मैं चार बजे कार्यालय से निकलने ही वाला था कि पत्नी का फोन आया, 'माँ गिर गई हैं, अपने बिस्तर से उठकर कुरसियों के सहारे सोफे तक जा रही थीं, लेकिन सँभाल नहीं पाई, हाथ छूट गया और वहीं जमीन पर गिर गई हैं; हम उठा नहीं पा रहे, जल्दी आइए।'

मैं घर पहुँचते ही तुम्हारे सामने जा बैठा था। तुम जमीन पर पाँव पसारे सोफे के सहारे पीठ टिकाकर बैठी थीं। बायाँ पाँव ठीक था, किंतु दाहिने पाँव का पंजा जमीन के समानांतर था। पहली नजर में देखकर ही पता चल गया कि हड्डी टूट चुकी है। मैंने तुमसे तत्क्षण कहा, 'अब अस्पताल जाने से ही ठीक होगा।' लेकिन तुम्हारा कहना था, उँगली पकड़कर खींचो तो ठीक हो जाएगा। मोच आई है, इसीलिए उठ नहीं पा रही हूँ।' मैंने फिर समझाया, 'यहाँ ठीक नहीं होगा,' किंतु तुम्हें अस्पताल जाना ठीक नहीं लग रहा था। तुम बोल नहीं रही थीं, लेकिन सोच तो यही रही थीं कि इस हलकी मोच के लिए अस्पताल क्यों ले जाया जा रहा है। झूठ-मूठ खर्च बढ़ाने से क्या फायदा? तुम्हें मेरा खर्च करना, चाहे वह तुम्हारे लिए ही क्यों न हो, भाता नहीं था। जब दर्द बढ़ने लगा था तब वहीं जाकर अस्पताल जाने के लिए तैयार हुईं।

एंबुलेंस मँगवाई, तब भी तुम्हारी यही चिंता कि घर में गाड़ी होते दूसरी गाड़ी मँगवाना जरूरी था क्या? जब मैंने कहा, तुम उस गाड़ी में नहीं बैठ पाओगी तो तुम झट से कह उठीं, 'मैं बैठ जाऊँगी, हमें समझाया कि कोई समस्या नहीं होगी।' तुम्हारी ऐसी ही बातें खीज पैदा करती थीं। कभी-कभी मैं तुमसे पूछता भी था, 'माँ, तुम ऐसी क्यों हो? मेरी इतनी चिंता क्यों करती हो?' तो तुम दूसरी-तीसरी बातें करने लगती थीं। तुम कहतीं भी क्या, तुम्हारी अनंत चिंताओं को देख मैं स्वयं विमूढ़-असहाय सा महसूस करने लगता। मुझे पता है, तुम जीवन भर अपनी चिंताओं में घुलती रहीं और बाद में तुमने मेरी चिंताओं को भी ओढ़ लिया। चिंताओं की बाढ़ थी तुम्हारे पास।

अस्पताल में डॉक्टरों ने जब कहा, 'ऑपरेशन के सिवा कोई विकल्प नहीं है।' तब तुम्हारा डॉक्टर से यह कहना कि बिना ऑपरेशन ही दवा से ठीक कर दीजिए। यह कैसी बात थी? डॉक्टर के बहुत

समझाने पर ही तुम ऑपरेशन के लिए तैयार हुईं। यह तो डॉक्टर भी समझ रहा था कि माँ बेटे को अधिक खर्च में डालना नहीं चाहती। लेकिन यह चिंता तुम्हारी थी, इसमें कोई डॉक्टर भला क्यों शामिल होता। तुम्हारी समझ का भाव अलग था और डॉक्टरों की समझ का धरातल भिन्न था। मुझे तो लगता है, बढ़ती उम्र में आदमी अधिक सृजनशील हो जाता है। उसकी चिंता, मोह-माया किसी सृजनशीलता से कम नहीं होती। भले ही वह अन्य लोगों को सृजनशील न दिखाई दे, किंतु उनकी ऐसी चिंताओं में अधिक चमक आ जाती है।

बूढ़ा व्यक्ति ज्यों-ज्यों परिवार के लोगों से स्वयं को अधिक उम्र के कारण या शारीरिक थकान के कारण दूर हटता महसूस करता है, वह स्वयं को ही जीवन का पाठ पढ़ाने लगता है। यह पाठ उसे मौन की पाठशाला की ओर ले चलता है। तब समाज और परिवार के लोग दूर से ही उसकी तुलना शिशु से करने लगते हैं, जबकि वह शिशुवत् वृद्ध अपने भीतर संसार भर के ऊँच-नीच के विभिन्न अनुभवों से आप्लावित होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार, समाज और देश को अपनी देह से अधिक प्रेम करने लगता है। लेकिन सक्रिय रूप में कुछ नहीं कर पाने की विवशता के कारण वह परिजनों को अपने गिरते स्वास्थ्य की देख-रेख में बहुत परेशान नहीं करता। इसी में वह अपना संतोष ढूँढ़ता है और संतुष्टि का आभास महसूस कर चिरनिद्रा में अनंत विश्राम के लिए आँखें मूँद लेता है।

माँ, मुझे नहीं मालूम कि तुमको अचानक प्रकृति द्वारा मुझसे छीन लिया जाना कितना ठीक है, लेकिन तुम्हारे बिना अब घर के सामने गेट के पास बैठना ठीक नहीं लगता। साअ

राम कुटीर, सरपंच टोली, अरसंडे
पोस्ट-बोड़ेया, राँची-८३४००६ (झारखंड)

गजल

खुलकर रोए बाबूजी

● **अशोक 'गुलशन'**

कभी बैठकर कभी लेटकर चलकर रोए बाबूजी,
घर की छत पर बैठ अकेले जमकर रोए बाबूजी।

अपनों का व्यवहार बुढ़ापे में गैरों सा लगता है,
इसी बात को मन-ही-मन में कहकर रोए बाबूजी।

बहुत दिनों के बाद शहर से जब बेटा घर आया,
उसे देखकर खुश हो करके हँसकर रोए बाबूजी।

नाती-पोते बीबी-बच्चे जब-जब उनसे दूर हुए,
अश्कों के गहरे सागर में बहकर रोए बाबूजी।

जीवन भर की कर्म-कमाई जब उनकी बेकार हुई,
पछतावे की ज्वाला में तब जलकर रोए बाबूजी।

कभी रहे महफिल में तो फिर रोना-गाना भूल गए,
तन्हा होकर खुद से मिलकर खुलकर रोए बाबूजी।

शक्तिहीन हो गए और जब अपनों ने ठुकराया तो,
पीड़ा और घुटन को तब-तब सहकर रोए बाबूजी।

उनकी त्याग-तपस्या का जब कोई प्रतिफल मिला नहीं,
अपनी ही किस्मत से तब-तब लड़कर रोए बाबूजी।

हरदम हँसते रहते थे वो किंतु कभी जब रोए तो,
सबसे अपनी आँख बचाकर छुपकर रोए बाबूजी।

तन्हाई में गुलशन की जब याद बहुत ही आई तो,
याद-याद में रोते-रोते थककर रोए बाबूजी। साअ

उत्तरी कानूनगोपुरा, बहराइच-२७१८०१ (उ.प्र.)
दूरभाष : ९४५०४२७०१९

कविता

होली के हुड़दंग में

● **सुरेंद्र अग्निहोत्री**

मौसम मस्त हुआ सभी हुए खुशहाल।
होली के हुड़दंग में उड़ा खूब गुलाल॥

टेसू से रंग बना पीला और लाल।
होली रंग से खेल लो, रहे न कोई मलाल॥

हया-शर्म को छोड़कर अधर करो तुम लाल।
रंगों के रसरंग में रखना यही खयाल॥

कर लो दिल की बात चलो न कोई चाल।
होली फिर आएगी अब तो अगले साल॥

: दो :

फागुन में खिल उठा गोरी तेरा रंग,
आमों की अमराई में सपनों की जंग।

मन-मयूर-सा नाचता लेकर खूब हिलोर,
गोरी तुमने आने में क्यों कर दी भोर?
मंद-मंद सी बह रही सुखमय सुवास,
हौले से आ गया यह फागुनी मधुमास।
माहुर, बिछुवा चमके तो करधनिया,
खोजत फिर रही अपना तो साँवरिया।
आँगन में चटक गई है धूप,
दर्पण में देख रही क्यों रूप?
फागुन की मस्ती में अधर हुए लाल,
प्रेमी लेकर आ गया रंग औ गुलाल। साअ

ए-३०५, ओ.सी.आर.
विधानसभा मार्ग, लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ०८७८७०९३०८५

यह असार संसार

● बालकवि बैरागी

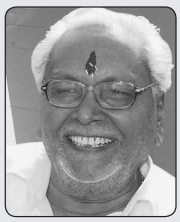

सुप्रसिद्ध कवि एवं विचारक। कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण और यात्रा-वृत्तांत समेत साहित्य की अनेक विधाओं में विपुल लेखन। काव्यानुवाद और मालवी गीतों का संग्रह भी प्रकाशित। आकाशवाणी और दूरदर्शन से निरंतर प्रसारण। कई फिल्मों के भी गीत लिखे। लोकसभा तथा राज्यसभा के सदस्य रहे।

ज्ञानवर्द्धक दोहे

तितली जावे फूल पर, भ्रमर कली पर जाय।
यह कुदरत का नियम है, तू क्यों शोर मचाय॥

हद से बढ़ने पर कटें, केश और नाखून।
तोड़ लिया जाता सदा, खिलता हुआ प्रसून॥

आगत का स्वागत करो, करो नहीं अपमान।
नित्य निराले रूप में, आते हैं भगवान॥

जनम, मरण और भाग्य, सब बिल्कुल देवाधीन।
तब भी हम सक्रिय रहें, जैसे जल में मीन॥

आगत से मत पूछिए, कब जाएँगे आप।
षड़ज बिना आता नहीं, कोई भी आलाप॥

मनुज जनम हमको मिला, यह प्रभु का उपकार।
सार-सिद्ध-संसार है, यह असार संसार॥

यम आएगा एक दिन, ले जाएगा साथ।
एक-आध दिन तो करो, जीवन से कुछ बात॥

प्रभु ने सौंपा है हमें, हस्तलिखित यह ग्रंथ।
जीवन जिसका नाम है, जिसके अर्थ अनंत॥

साँस-साँस जिसकी ऋचा, साँस-साँस है मंत्र।
मिट्टी की यह पालकी, फिर भी नहीं स्वतंत्र॥

जिस जीवन में हो नहीं, कोई भी आदर्श।
वह जीवन जीवन नहीं, लाख जिए सौ वर्ष॥

जिसकी आँखों में नहीं, पर-पीड़ा का नीर।
सिर्फ बिजूका मात्र है, उसका सुखी शरीर॥

हे पुष्पराज!

हे सुमन!
हे पुष्पराज!
तुम यदि खिले हो तो अब
भले ही टूटो-फूटो,
या मुरझाओ
पर
तुम्हारा धर्म है कि
अपनी सुरभि से
'समय' को सुरभित
कर जाओ।

आदान-प्रदान

भँवरे
कलियों को चूमेंगे,
फूलों से पराग लेंगे
और आराम से गुनगुनाते हुए
चल देंगे।
न पौधों को प्रणाम करेंगे
न टहनियों को धन्यवाद देंगे
बगिया का एहसान मानना तो दूर,
अपने गीतों में उसका
नाम भी न लेंगे।
इन भँवरों को
मधुमक्खियों से मिलाओ,
और आदान से ज्यादा
प्रदान का पाठ पढ़ाओ।

कविनगर, पोस्ट : मनासा
जिला : नीमच-४५८११० (म.प्र.)
दूरभाष : ०९४२५१०६१३६

राम झरोखे बैठ के

बुद्धिजीवी का बदलाव

● गोपाल चतुर्वेदी

वह शहर का जाना-माना बुद्धिजीवी है। उसका जीव जो है वह बुद्धि के सहारे ही पला-बढ़ा है। वह बचपन से ही बुद्धि की प्राथमिकता का कायल है। पहले वह अपने सहपाठियों को लड़वाता था, एक से दूसरे का कान भरकर। ''रामू कह रहा था कि श्यामू ने उसकी नोटबुक चुरा ली है, वरना पढ़ाई में सिर्फ इस लड़के की क्लास में पोजीशन कैसे आती?'' श्यामू जब रामू से सच्चाई का सामना करने की चुनौती देता तो वह समझाता कि बात पारस्परिक विश्वास में उससे कही गई थी, यदि श्यामू ने ऐसा कुछ किया तो वह और रामू दोस्त कैसे रहेंगे? तब आगे की सूचना का स्रोत ही बंद हो जाएगा।

इतना ही नहीं, वह प्राध्यापकों का भी विश्वास-पात्र बनता, उनसे अपने साथियों की शिकायत कर—''सर! मुरारी ने ही ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया था कि 'गधा हमारा क्लासटीचर है।' आपने इसके लिए सारी क्लास को बेंच पर खड़ा किया था। आप जैसे टीचर के प्रति ऐसा लिखने का हमने विरोध भी किया था, पर हमारी सुनता कौन है? चूँकि हमें बुरा लगा तो हमने सोचा कि आपको सच्चाई बता दें।'' उसके बुद्धिजीवी होने की नींव इसी समय से पड़ गई थी। अब तो उस नींव पर बुद्धि की एक शानदार अट्टालिका खड़ी है। उसके व्यक्तित्व के निर्माण में दूसरे बुद्धिजीवियों का भी योगदान है। उनकी देखा-देखी उसने भी 'हँसना मना है' की एक होर्डिंग अपने चेहरे पर चस्पाँ कर ली है। जब कभी-कभार वह अपनी कामयाबी पर प्रफुल्लित होता है तो अकेले में ठट्ठा मारकर हँस लेता है कि दूसरों को किस चालाकी से ठगा, वरना अब उसे मुसकराने तक से परहेज है। दुनिया भर के दुःख-दर्द से पीड़ित गंभीर व्यक्ति की छवि उसने परिश्रम से बनाई है। इसीलिए वह उत्सव-त्योहार से भी कतराता है। उसे किसी विचारधारा से खास लगाव नहीं है। उसका लगाव सिर्फ स्वार्थ सिद्धि का साधन है।

आजादी के बाद रूस से प्रभावित सरकार ने मार्क्स-लेनिन के पढ़े-लिखे चेलों को राजकीय संरक्षण बख्शा है। जाहिर है कि अपना उल्लू साधने को लेखक-प्राध्यापकों ने ऐसी हस्तियों का अनुकरण ही उचित समझा है, वह भी इस हद तक कि प्रगतिशीलता ही बुद्धिजीवी की परिभाषा बन गई है। कुछ समय तक तो हाल यह था कि जब तक बुद्धि के सहारे जीवित व्यक्ति जहाँ नौकरी करता था, उस निजी संस्थान के मालिक को शोषण के लिए गाली न दे ले, उसे खाना हजम न हो। इसे 'जिस थाली में खाओ, उसी में छेद करना' भी कहते हैं। ऐसी हरकत वह यूनियन की बैठकों में ही करता था। यूनियन का सक्रिय सदस्य वह बना भी इसीलिए था कि कामचोरी का बहाना मिल सके।

कुछ जानकारों की मान्यता है कि 'यूनियन' नामक संस्था ऐसे निठल्लों का संगठन है, जो काम से विरक्त हैं, साथ ही राजनैतिक महत्त्वाकांक्षा से भी ग्रसित हैं। कामचोर जीवन के हर क्षेत्र में पाए जाते हैं। इसीलिए 'यूनियन' नामक संगठन हर संगठित क्षेत्र की शोभा है। कुछ शिक्षाशास्त्रियों ने अनुभव के आधार पर इस भोगे हुए सच को स्वीकार किया है कि जैसे एक गंदी मछली पूरे तालाब को गंदा करने में समर्थ है, वैसे ही पढ़ाई से विमुख, पर सियासत से प्रेरित कुछ छात्र, किसी भी कॉलेज-यूनिवर्सिटी में यूनियन बनाकर करते हैं। ये ऐसे पेशेवर छात्र हैं, जो साल-दर-साल विभिन्न विषयों में एम.ए. की डिग्री एकत्र करते हैं और उसके बाद पी-एच.डी. के नाम पर संस्थान और छात्रावास पर कब्जा बरकरार रखने के विशेषज्ञ हैं। इन्हीं की देखा-देखी अब तो प्राध्यापकों ने भी यूनियनों का गठन कर लिया है। करेला और नीम चढ़ाकर इस सुखद माहौल में शिक्षा की गुणवत्ता के पतन का अनुमान ही संभव है। देश में हम कितनी भी डींगें मार लें, ईमानदारी के समान दुनिया के शिक्षा संस्थानों में हम प्रथम दस में भी नहीं आते हैं, भले ही हमारे यहाँ के छात्र दसनंबरियों में अग्रणी हों।

जाहिर है कि हमारा नायक अपने शहर के कॉलेज के प्रबंधन से जुड़ा था। यह जुड़ाव भी उसने अपने प्रयास से साधा था। दरअसल उसका दावा था कि इस निजी कॉलेज के संस्थापक का वह दूर का रिश्तेदार है। शोध करके पाए इस संबंध का उसने पूरा फायदा उठाया। कुछ दिनों तक तो नए संबंधी उससे कतराए। उन्हें भी मन-ही-मन संदेह था कि यह नया और अजनबी रिश्तेदार कहाँ से आ टपका है? उन्हें पता था कि सफलता संबंधों की जननी है। यदि कल वह असफल रहे तो यही रिश्तेदार उससे मुँह चुराएँगे। बुद्धिजीवी अपनी मुहिम में लगा रहा। जैसे कुत्ते दुम हिला-हिलाकर इनसानों का दिल जीतने में सफल हैं, उसने भी जुबान हिला-हिलाकर यही करतब किया। कभी शहर में उसके द्वारा बनाई गई शिक्षण-संस्था की बढ़ी ख्याति की चर्चा करके, कभी उसके इस परोपकार की प्रशंसा करके। ''लोग आज भी याद करते हैं कि आपने इस शहर में पहली निजी शिक्षण-संस्था बनाई है। कई उद्योग लगाकर लाभ कमाने का सोचते हैं, आपने शिक्षा की ज्योति जलाकर

दूसरों की जिंदगी का अँधेरा दूर करने का कार्य किया है। दूसरों के भले का ऐसा चिंतन ही व्यक्ति को बड़ा बनाता है।''

उसके निरंतर जुबान हिलाने से संस्थापक प्रभावित हुए बिना न रह सका। उसने एक दिन बुद्धिजीवी से पूछ ही लिया, ''भैया, कॉलेज के अंग्रेजी विभाग में दो-तीन वेकेंसी हैं, आप भी किसी में क्यों नहीं अप्लाई कर देते? सिलेक्शन तो हो ही जाएगा।'' हमारा नायक असलियत से परिचित था। दुनिया के सामने अपने थर्ड डिवीजन की पोल क्यों खुलने दे? उसकी ही क्यों, कई ज्ञानियों की मान्यता है कि परीक्षा किसी के भी ज्ञान की वास्तविक परख नहीं है। उसे विश्वास है कि वह शिक्षा व्यवस्था की इसी खामी का शिकार रहा है। लोग जब उसकी स्वयं की शिक्षा के बारे में पूछते हैं तो वह बड़ी विनम्रता से उत्तर देता है, ''हमने भी एम.ए. किया है।'' इसके आगे चर्चा पर पूर्ण विराम लग जाता है।

यों तो वह हर विषय पर मुखरित है, स्त्री-विमर्श से लेकर सामाजिक सौहार्द तक। श्रमिकों से लेकर किसानों की हर समस्या का उसने अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि उनका मौलिक निदान भी सुझाया है। 'दैनिक टंकार' उसका प्रिय अखबार है। उसमें बिला नागा वह हफ्ते में 'कॉलम' लिखता है। किसानों की कठिनाई का हल, उसके अनुसार एक ही है कि सरकार उनकी फसल खरीदे और मुफ्त में बीज वितरित करे। हर पंचायत प्रमुख को सरकारी खर्चे पर ट्रैक्टर दिया जाए, ग्रामवासियों के उपयोग के लिए। डीजल और ड्राइवर का खर्चा पंचायत उठाए, गुड़ाई के एवज में शुल्क लगाकर।

इसके अलावा जब मॉल-संस्कृति का आगमन हुआ तो उसने अपने लेखन के माध्यम से उसका जमकर विरोध किया। मॉल सिर्फ मालदार लोगों के लिए है। यह छोटे व्यापारियों की हत्या की साजिश है। किसी ने उससे प्रश्न किया कि विकास को वह साजिश किस अर्थ में निरूपित करता है, जबकि मॉल तो एक सुगम और सस्ता बाजार है, हर उपभोक्ता सामग्री, जैसे जूते से लेकर जैम तक के लिए। उसका तर्क था कि साजिश शब्द का प्रयोग उसने जान-बूझकर किया है। मॉल अपनी थोक खरीद के कारण सब्जी से लेकर सॉस तक फुटकर बाजार से कम दरों पर बेचने में समर्थ है। जब कमजोर की हार हर प्रतियोगिता में निश्चित है तो छोटा व्यापारी मॉल के सामने कैसे टिक पाएगा? जैसे-जैसे मॉल का चलन बढ़ेगा, वैसे छोटे व्यापारियों का उन्मूलन भी।

वह मॉल के विरुद्ध सड़क पर आंदोलन भी चला चुका है, इससे वह व्यापारियों के बीच खासा लोकप्रिय है। किसी मंत्री-मुख्यमंत्री या राज्यपाल से व्यापारियों का प्रतिनिधि मंडल मिलने जाता है तो वह उसमें शामिल किया जाता है। आजकल कोई समान धंधे का हो न हो, उसका प्रवक्ता तो हो ही सकता है। यों बिना किसी लाभ की प्रेरणा के कोई इनसान कुछ भी नहीं करता है। हमारा बुद्धिजीवी इस नियम का अपवाद नहीं है। बाजार में आज उसकी पहचान है। उसकी हर खरीद 'डिस्काउंट' पर होती है। उसे उधार पर माल देने में कोई हिचकिचाता नहीं है। रसद-राशन की सस्ती डिलीवरी फोन करने पर घर में ही हो जाती है। 'दैनिक टंकार' में नियमित रूप से उसकी फोटो भी छपती रहती है—कभी नई दुकान के उद्घाटन, कभी व्यापारी सम्मेलन तो कभी दुकानदारों के डेलीगेशन के साथ। कुछ का खयाल है कि छोटे व्यापारियों का ऐसा हितचिंतक मिलना कठिन है, वह भी बिना वेतन और बिना किसी स्वार्थ के!

शायद ही किसी को पता हो कि मॉल के मालिक से उसकी निजी खुन्नस है। वह उसके शहर में इतना बड़ा बाजार एक छत के नीचे लेकर आए और उसको कोई लिफ्ट तक नहीं दी। उसको उद्घाटन तक पर नहीं बुलाया। उसके अहं को ठेस लगी। कोई शहर में बाहर से आए और उसके महत्त्व को नकारे, यह वह कैसे बरदाश्त करता? उसने वही किया, जो वह कर सकता था। छोटे व्यापारियों के साथ साँठगाँठ कर मॉल-संस्कृति के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया।

विद्वानों की मान्यता है कि अकसर ऐसे आंदोलन अहं के टकराव के नतीजे हैं। जिस परिवार के बेटे या बेटी प्रजातंत्र में राजशाही के अनुरूप प्रधानमंत्री बनने के लिए ही जन्म लेते हैं, वहाँ कोई दूसरा प्रधानमंत्री बन जाए तो यह पद के पारिवारिक उत्तराधिकारी को कैसे सुहाएगा? अगर कहीं कार के नीचे सड़क पर गड्ढा भी दिखे तो प्रधानमंत्री से स्पष्टीकरण माँगना उसके आहत अहं के नजरिए से उचित प्रक्रिया है। बिना किसी खास बैकग्राउंड के प्रधानमंत्री ने देश के पारिवारिक प्रजातंत्र में उसका नैसर्गिक हक छीना है। उसे पूरा अधिकार है प्रधानमंत्री से अंट-शंट सवाल पूछने का। और कोई है, जिसमें ऊल-जलूल सवाल उठाने का साहस हो? अन्य के अभाव में मूर्खता के इस दायित्व का वहन भी उसे ही करना पड़ रहा है। वह सोचता है कि न्याय के इस युद्ध में वह इकलौता वीर व साहसी योद्धा है, जो जनतंत्र विरोधी ताकतों के प्रतीक प्रधानमंत्री को अकेला चुनौती दे रहा है। उसकी समझ में इस मुहिम में देश का नुकसान हो, तब भी चलता है। इस संघर्ष में उसे चीन के साथ खड़े होने में भी कोई आपत्ति नहीं है। उसे मुगालता है कि यह उसके नेतृत्व क्षमता की स्वीकृति है एक महाशक्ति द्वारा। जैसे अपनी गुलेल से गौरैया गिराकर बच्चा प्रसन्न हो कि उसने हवाई जहाज मार गिराया। ऐसी उपलब्धि का कोई कर ही क्या सकता है? जहाँ राजनीति में सामान्य नेताओं का जन्म ही पचास साल की आयु के बाद होता है, वही खानदानी दावेदार तो जन्मजात नेता है।

कुछ ऐसे भी हैं, जो अपने स्वयं के आकलन में पैदाइश से ही महान् होते हैं। यह चारित्रिक गुण बहुधा लेखकों और छोटे-बड़े परदे के नायक-नायिकाओं में पाया जाता है। अपने आकलन को सच साबित करना ही उनकी प्रेरणा है, नहीं तो वे कागज काले करते ही क्यों? अथवा उभरते कलाकार क्यों मैदान में टिके रहते? हमारे बुद्धिजीवी ने भी कॉलेज के संस्थापक के लैक्चरर बनने के प्रस्ताव को यह कहकर ठुकरा दिया कि ''सर! आपकी सेवा में जो सुख है, वह कॉलेज की नौकरी में कहाँ से आएगा?'' वह उम्रदार संस्थापक को यह बताना भी नहीं भूला कि उसे अपने पिता की सेवा का पावन अवसर नहीं मिल पाया था। इधर उसका जन्म हुआ, उधर उनकी मृत्यु हो गई। अब उम्रदार संस्थापक का सान्निध्य और सेवा ही उसके जीवन का लक्ष्य है। उसे दूसरों को बेवकूफ बनाने की अपनी पैदाइशी प्रतिभा पर गर्व है।

बुजुर्गवार ने अपने दम पर कॉलेज की स्थापना की थी, उसे

स्नातक स्तर तक पहुँचाया था। वे कोई बुद्धू तो थे नहीं, पर खुशामद ऐसी हिना है, जो धीरे-धीरे रंग लाती है। बुद्धिजीवी भी कौन कम था? वह जुबान की दुम हिला-हिलाकर संस्थापक को पटाने में लगा रहा। उसे पता था कि घर में बूढ़े-बुढ़िया के अलावा और कोई नहीं है। एक बेटा है, जो उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका गया और अब वहीं का होकर रह गया है। साल-दो साल में एक बार आता है अपनी अमेरिकन पत्नी के साथ। संपर्क तो 'फेस-टाइप' से हो ही जाता है। बेटा जब पहली बार अमेरिकन वाइफ को लेकर पधारा था तो संस्थापक ने एक 'रिसेप्शन' दिया था घर की नई बहू के उपलक्ष्य में। पर इस औपचारिक स्वागत के बाद बेटा-बहू दोनों का आगमन कम हो गया। कुछ हद तक इसमें मियाँ-बीवी की व्यस्तताएँ थीं और कुछ फेस-टाइप की करामात।

हमारे बुद्धिजीवी नायक ने अपने सतत संपर्क से यह भी सूँघ लिया था कि बूढ़े-बुढ़िया इस अमेरिकन बहू से खास खुश नहीं हैं। वह तो इकलौती संतान के कारण भला-बुरा सहना ही पड़ता है। उसके पास यह भी जानकारी थी कि लड़का आई.टी. उद्योग में बड़ा पदाधिकारी है। उसके पास कंपनी के शेयर भी हैं और करोड़ों का वेतन भी। कभी-कभी वृद्ध उससे अंतर की पीड़ा भी शेयर कर लेते, ''अब राजीव तो शायद ही भारत आए, वहाँ की लगी-लगाई नौकरी और घर-गृहस्थी छोड़कर। ऐसे भी यहाँ कौन उसके अनुरूप वेतन या अवसर देगा?'' बुद्धिजीवी के मन में इसी समय एक योजना का जन्म हो चुका था, पर वह सही मौके की तलाश में था—बूढ़े से उसके अनुपालन की आशा में।

इस बीच वृद्धा कुछ अस्वस्थ हो गई, खाँसी आए तो आती ही चली जाए। शहर के सबसे योग्य और महँगे डॉक्टर ने उनकी जाँच की। आजकल डॉक्टर कितना भी काबिल हो, पर उसकी योग्यता, महँगी फीस के साथ ही जुड़ी है। पड़ोस के युवा डॉक्टर ने मोहल्ले की माताजी के नाते उनका परीक्षण किया तो दमे की शिकायत बताई और दवा दी। गनीमत है कि सभ्यता की इतनी प्रगति के बाद भी भारत के छोटे शहरों में गली-मोहल्लों के रिश्ते अभी जिंदा हैं, वरना महानगरों में तो पड़ोसी भी एक-दूसरे को पहचानते तक नहीं हैं। बेटे को जैसे ही खबर लगी, वह अगली फ्लाइट से आ पहुँचा। पहले तो उसने अपनी माँ को अस्पताल शिफ्ट करवाना चाहा। शायद बीमार को अस्पताल में ही रखते हैं अमेरिका में। घर पर दूसरों को क्यों संक्रमण हो? उन्होंने साफ इनकार कर दिया ''प्रवीण है तो! बड़ा अच्छा डॉक्टर है।'' फिर बेटे ने उन्हें अमेरिका ले जाने का प्रस्ताव दिया, ''वहाँ हमें इलाज की बड़ी सुविधा है।'' पर माँ में जिद का गजब का माद्दा था। उन्होंने स्पष्ट स्वर में उत्तर दिया, ''मुरदे जहाँ के होते हैं, वहीं फुँकते हैं। हम न शहर छोड़ेंगे, न घर।''

बुद्धिजीवी इस पूरी बीमारी के दौरान खुद व्यस्त हो गया था अपने ससुर की गंभीर हालत के कारण। उन्हें दिल का दौरा पड़ा था। बुद्धिजीवी व उनकी पत्नी की उपस्थिति में वह प्रभु को प्यारे हो गए। बुद्धिजीवी जब एक दो-सप्ताह बाद लौटकर आया तो वृद्धा बेहतर थीं और बेटा लौट चुका था। बुद्धिजीवी ने मतलब की बात के लिए एक-डेढ़ सप्ताह का इंतजार किया, फिर वह अपनी योजना की बौद्धिक उलटी रोक न पाया, ''सर! एक कॉलेज ने आपको इतनी प्रसिद्धि दी है। हम चाहते हैं कि एक और तकनीकी शिक्षण संस्था आप खोलिए। कौन जाने, अमेरिका वाले भैया को भी उसमें रुचि हो?''

बुद्धिजीवी इनसानों को नचा सकता है, नियति को नहीं। संस्थापक ने इस सुझाव पर विचार करने का आश्वासन तो दिया, पर वह तीन-चार वर्ष तक इस पर विचार ही करते रहे। इस अंतराल में बुद्धिजीवी कॉलेज का काम देखते-देखते शिक्षा-शास्त्री बन बैठा। 'दैनिक टंकार' में अब उसके लेख शैक्षणिक सुधार के मसले पर आने लगे है। वह यूनिवर्सिटी की सीनेट का सदस्य है। उसका नाम कुलपति के पद के लिए प्रचारित होता है। सबको पता है कि इसके पीछे किसका हाथ है। अब उसका झुकाव प्रगतिशील धारा की ओर न होकर कुछ दक्षिणपंथी होने लगा है। वह रोज मंदिर जाता है, पर उस थर्ड डिवीजन का क्या करे? सरकार उसे कुलपति बनाना चाहती है, पर तृतीय श्रेणी हमेशा आड़े आ जाती है।

संस्थापक और उनकी पत्नी आयु के कारण शिथिल पड़ चुके हैं और अकसर बीमार भी रहते हैं। बुढ़ापा स्वयं में एक रोग है। अब वृद्ध दवा पर जीवित हैं, अन्यथा संभावना कभी भी टें बोलने की है। बुद्धिजीवी कोशिश में है कि शिक्षण संस्था का काम-काज अपने नाम करवा ले, पर बूढ़ा है कि राजी ही नहीं होता। अचानक एक दिन वह घर में गिरा और उसके प्राण-पखेरू उड़ गए।

बेटे को सूचना दी गई। बेटा भी पत्नी से संबंध-विच्छेद के बाद वहाँ अकेला था। वह सब छोड़-छोड़कर भारत आ गया। घर पहुँचने पर सबसे पहले वह बुद्धिजीवी से टकराया। 'आप कौन?' बुद्धिजीवी ने प्रश्न किया। वास्तविकता जानकर वह संबंधों का हवाला देने लगा। वसीयत में बूढ़ा सबकुछ अपने इकलौते बेटे के नाम छोड़ गया था। धीरे-धीरे बुद्धिजीवी का शिक्षा संस्था से आधिपत्य समाप्त हो गया। अब बेटा अनुभव व ज्ञान के कारण शहर की बौद्धिक हस्ती बन गया है। बुद्धिजीवी इस बदलाव से आकुल है।

आजकल वह अपने प्रगतिशील संपर्कों से भेंट-मुलाकात में लगा है और अकसर बड़बड़ाता है, ''क्या करें मति मारी गई थी, जो इस संस्थापक के चक्कर में पड़ गए। उसने हमारा खूब दोहन किया है।'' शिक्षा के क्षेत्र से निराश होकर बुद्धिजीवी इधर अपने पुराने अड्डे—प्रगतिशीलों के बीच, नहीं तो छोटे व्यापारियों के मध्य देखा जाता है। 'टंकार' के लेखों में वह परीक्षा प्रणाली के पीछे पड़ा है। महिला-पुरुषों की बराबरी उसका प्रिय विषय है। सरकार द्वारा व्यापारियों के शोषण पर भी उसकी कलम चलती है। उसका निष्कर्ष है कि ''शोषण कोई भी करे, हम शोषित के साथ हैं।'' यों शोषण की शिकार महिलाओं में उसकी विशेष रुचि है। लगता है कि उसका वैचारिक आस्था बदलने का वक्त आ गया है।

९/५, राणा प्रताप मार्ग
लखनऊ-२२६००१
दूरभाष : ९४१५३४८४३८

नृत्य करती हवाएँ

● संजय पंकज

सुपरिचित साहित्यकार। 'यवनिका उठने तक', 'माँ है शब्दातीत', 'यहाँ तो सब बनजारे', 'मंजर-मंजर आग लगी है' कृतियाँ चर्चित। पत्र-पत्रिकाओं एवं संकलनों में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से प्रसारित। 'अर्चना साहित्य पुरस्कार', 'अवंतिका सरस्वती सम्मान', 'कलाश्री सम्मान' सहित दर्जन भर सम्मान।

कालयात्री है समय

बीत गया जो वर्ष
चाहे जैसा था
क्यों हर्ष करें?
कोई शिकायत भी नहीं
अनंत कालयात्री है समय,
स्वागत करते हुए
सहर्ष हम शत-शत अभिनंदन करें।
साथ हो लें
कभी चुपके, कभी सन्नाटा तोड़ते हुए
शब्द, संवाद, लय, मुद्रा, अनुकृति में,
अतीत को संबल बना
सुदृढ़ करें वर्तमान को
और संकल्प लें
कदमताल भरते हुए,
एक-दूसरे के साथ हँसते-रोते
गाते हुए गले-गले लग
भविष्य को सँवारेंगे हम बंधु
साथ ही अभिनय करेंगे
और अपना-अपना चरित्र,
टाँक देंगे आसमान में
ताकि धरती पर जो भी उगे नया
देखता हुआ आसमान
फैल जाए दिशाओं में
अमित शुभकामनाएँ हैं नववर्ष की।
उठो, जागो और बढ़ो, गहकर निर्भय सत्य
'मनुर्भव:' उद्घोष करो, समझो जीवन-लक्ष्य।

हम सूरज बनें, न बनें
दीप जलाएँ और घोषणा लड़ने की।

उत्कर्ष भरा हो नववर्ष

होगा कोई सूरज
लेकिन जरूरत है आग बचाने की।

आसमान का परचम कोई लहराए,
हम गाएँगे धरती के गीत
हम सुनेंगे अँखुआते बीजों को
हम देखेंगे आसमान नापती चिड़ियों को
हम फूँक मार जगाएँगे आग को
छिटकने देंगे चिनगारियों को
फैलने देंगे लपटों को
जल जाने देंगे उस सबको,
जिससे धरती बोझ से दब रही है
कराह रही है, दम तोड़ रही है।

नई पौध उगे ऐसी नमी चाहिए,
खुली हवा, खिली जमी चाहिए।

अपने-अपने हिस्से का सुख और अभिनय
जीते और करते हुए,
नेपथ्य में जाने से पहले
स्नेह दें, आशीष दें, प्यार दें, बल दें उन्हें
जिनके पर आसमान तौलने के लिए बेताब हैं।

हमारा नवसंवत्सर

नदी का सतत प्रवाह
कलकल-छलछल करती
उछलती-मचलती लहरें,
जिसे चूमने उतरती हैं
सूरज की बेटियाँ
बहनों के संग आ जाती हैं
नृत्य करती हवाएँ,
सर्दी के दिनों में
नदी की कोख में
जा समाती है आग।
और इन सबको
अपनी छाती में सँभाले पृथ्वी
कभी इतराती नहीं
और अपनी नित्य सखी
प्रकृति से गलबहियाँ करती
पर्वत से सागर तक
नदी को बहने देती है अनवरत।
पृथ्वी जानती है
कि प्रकृति पुरुष में
तो वह आकाश में अंतर्लीन है,
ठीक वैसे ही सागर में
मिल जाती है नदी
दिन मास में, मास वर्ष में
और वर्ष सदी में
युगों से विलीन हो रहे हैं,
यह एक निरंतर और शाश्वत यात्रा
शून्य के वृत्त में महाकाल का
अनीह नृत्य है।
जो आत्मा-परमात्मा के अटूट
अछोर और असीम संबंध को
लय-प्रलय में आनंदबद्ध करता है

मौसम अँगड़ाई लेकर
करवट बदलता है,
प्रकृति में रंग-गंध की
लहरें उठने लगती हैं।
पूर्वजों ने ऋतुओं का
सम्मान करते हुए
उसकी ऊर्जा को
आत्मसात् किया और कहा
कि यह नवसंवत्सर
हमारी सनातन परंपरा है
और हमारा नया साल
यहीं से शुरू होता है।

'शुभानंदी' नीतीश्वर मार्ग
आमगोला, मुजफ्फरपुर-८४२००२ (बिहार)
दूरभाष : ०९९७३९७७५११

होलिकोत्सव

● दादूराम शर्मा

प्रतिनायक शिशिर प्रोषितपतिका प्रकृति को अकेली और असहाय पाकर उसपर अत्याचार करने लगा, उसका चीरहरण कर डाला। नायिका ने उसके विरुद्ध अपने प्रवासी प्रियतम वसंत को पवन दूत द्वारा शिकायती पत्र भेजा और उसने बिना विलंब किए अपने सहचर कुसुमायुध को साथ लेकर युद्ध छेड़ दिया तथा उसपर विजय पाकर अपनी प्रेयसी की अनावृत देह लतिका को पल्लव-पट से सुसज्जित कर दिया और उसे पुष्पभण पहना दिए। आगत-पतिका प्रकृति अपने अनुकूल नायक द्वारा इस तरह शृंगारित होकर उल्लसित हो उठी और नभ से लेकर धरा तक उसका चंद्रमुखी उज्ज्वल हास-विलास परिव्याप्त हो गया—

पुष्पाभरणा प्रकृति का सुरभित हास-विलास,
फैला नभ से धरा तक चंद्रमुखी उल्लास।

वैसे शिशिर को अत्याचारी प्रतिनायक कहना उचित प्रतीत नहीं होता, क्योंकि उसने वनस्पतियों के पीत पर्णों के जीर्ण आवरण को हटकर धरती को शस्यश्यामला बना दिया और इस तरह वसंत के आगमन का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। उसका ध्वंस (पतझड़) वसंत के नवसृजन की पूर्वपीठिका ही तो था। अब वसंत ने उसके शीत से वातावरण को मुक्त कर दिया है। नव पल्लवों का दुकूल पहनकर प्रकृति ने पुष्पाभरणों से अपना शृंगार कर लिया है। होले में आए अधपके गेहूँ-चने आदि धान्यों से उसका यौवन छलक रहा है। आम्रमंजरियों की मंदिर और मधूक (महुए) की मादक गंध से मदमत्त मारुत मंद गति से बह रहा है। मतवाली कोयल वसंत का जयगान कर रही है। किंशुकों के अगणित दीप जलाकर और विविध चित्र-विचित्र सुमनों से वनसेज सजाकर प्रकृति नायिका कांत वसंत की प्रतीक्षा कर रही थी। उसके द्वारा प्रिय वसंत को बुलाने के लिए भेजी गई दूत कोयल सोल्लास गीत गाते हुए उसे आदर सहित लेकर आ गई है। प्रकृति का रोम-रोम उल्लसित हो रहा है। आपादमस्तक रक्त कुसुमों-किंशुकों से लदा पलाश वन प्रकृति में होली खेलने का सजीव दृश्य उपस्थित कर रहा है। कोयल फाग गा रही है।

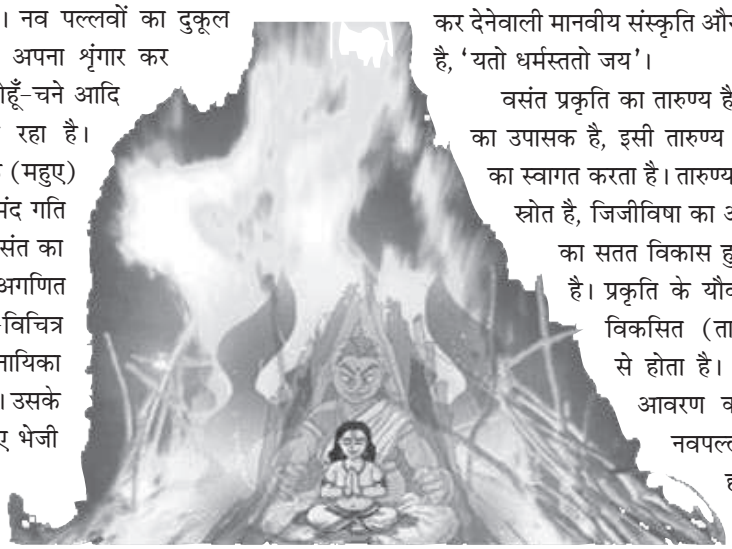

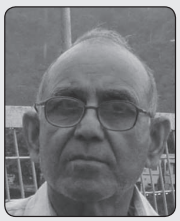

सुपरिचित निबंधकार। 'रसाल और पलाश' (ललित निबंध-संग्रह); 'अर्चना' (काव्य संकलन); 'ईश्वरीय न्याय' (एकांकी संकलन); 'चक्कर काली मुंडीवाले का' (व्यंग्य संकलन) चर्चित एवं विभिन्न पत्रिकाओं में ३०० से अधिक रचनाएँ प्रकाशित। संस्था आशीर्वाद तथा हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

मानव आदिकाल से ही प्रकृतिजीवी रहा है, उसके विविध क्रिया-कलाप, समस्त उत्सव और आमोद-प्रमोद प्रकृति से प्राकृतिक परिवर्तन से जुड़े रहे हैं। भारत पर्वों, उत्सवों और त्योहारों का देश है। इन पर्वों और उत्सवों का संबंध या तो इन्हीं प्राकृतिक परिवर्तनों से होता है अथवा धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राष्ट्रीय या राजनैतिक घटना विशेष से। होली एक सामाजिक-सांस्कृतिक पर्व है। फाल्गुन पूर्णिमा से रंगपंचमी चैत्र कृष्ण पंचमी तक मनाया जानेवाला यह त्योहार एक ओर प्राकृतिक परिवर्तनजन्य मानवीय उल्लास का सहज उच्छलन है तो दूसरी ओर आतंक और उत्पीड़न के पर्याय हिरण्यकशिपु के दु:शासन के साथ छल-प्रपंच की प्रतीक होलिका को प्रह्लाद रूपी सदाचार के साधनातल में भस्म कर देनेवाली मानवीय संस्कृति और धर्म की चिर विजय का पर्व है, 'यतो धर्मस्ततो जय'।

वसंत प्रकृति का तारुण्य है। मानव समाज इसी तारुण्य का उपासक है, इसी तारुण्य का वरण करता है, तरुणाई का स्वागत करता है। तारुण्य क्रियात्मक ऊर्जा का अजस्र स्रोत है, जिजीविषा का अक्षय उत्स है। इसी से विश्व का सतत विकास हुआ है और उत्तरोत्तर हो रहा है। प्रकृति के यौवन का शृंगार इन्हीं प्रत्यग्र-विकसित (ताजे खिले) सुरभित सुमनों से होता है। निर्जीव पीत पर्णों के जीर्ण आवरण को वह उसी तरह हटाकर नवपल्लव धारण कर लेती है, जैसे हम फटे-पुराने वस्त्रों को उतारकर फेंक देते हैं और नए वस्त्र पहन लेते हैं। इस 'फागुनी रंग' की विशेषता यह है कि यह चर-अचर, मानव और मानवेतर पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी को अपने रंग में रँग देता है, ठूँठों में भी तरुणाई भर देता है—

रहा न कोई चर-अचर जिसके मन न उमंग
ठूँठों पर भी चढ़ रहा तरुणाई का रंग।
ऋतुराज का यह मादक प्रभाव देखिए
ढली उस के वृद्ध भी राम-भक्ति-रस त्याग
डूब-डूब रसराज में झूमें-गाएँ फाग।

पक चुके, किंतु गीले अनाज (गेहूँ, चना, मटर आदि) को 'होला' कहा जाता है। इसे भूनकर खाया जाता है। चने का होला तो बहुत ही स्वादिष्ट लगता है। होले का आस्वादन करानेवाला यह पर्व इसीलिए 'होली' कहलाता है। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन लकड़ी एकत्र करके व्यवस्थित रचकर उसे सजाया जाता है। हिरण्यकशिपु की बहन होलिका के नाम पर, जो भक्त प्रह्लाद को जलाने के लिए उसे गोद में लेकर चिता पर बैठ गई थी और उसमें आग लगा देने पर स्वयं ही भस्म हो गई थी किंतु पह्लाद प्रज्वलित चिता से सकुशल बाहर निकल आए थे, इसे भी 'होलिका' कहा जाने लगा। इसके चारों ओर लोग डफ, मृदंग व झाँझ बजाते हुए फाग गाते हैं और नाच-नाचकर उत्सव मनाते हैं। फिर शुभ मुहूर्त में होलिका दहन किया जाता है। सदाचार के अक्षय और असत् पर सत् की विजय का प्रतीक पर्व है यह होली।

दूसरे दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को, जिसे 'धुरेंडी' कहा जाता है, रंग-गुलाल से होली खेली जाती है। नर-नारी सभी पारस्परिक भेद-भाव और वैर-विरोध भुलाकर प्रेम से होली खेलते हैं। बौरों (आम्र मंजरियों) से आम बौरा जाते हैं तो आमजन भी भंग पीकर बौरा जाते हैं। हँसी-ठिठोली होती है, हँसगुल्ले छूटते हैं। झूमते-गाते, रंग-गुलाल खेलते लोगों से गली-गली में नगर-ग्रामों में हुड़दंग मच जाता है। सभी होली के रंग में सराबोर हो जाते हैं। घर-घर मिष्टान्न खाए और खिलाए जाते हैं। इस मिलन पर्व होली में जातिभेद, धर्मभेद, अमीर-गरीब का भेद, ऊँच-नीच का भेद, सभी भेद मिट जाते हैं और सभी परस्पर प्रेम के रंग में रँग जाते हैं।

यों तो होलिका और हिरण्यकशिपु के अंत के साथ ही 'होलिकोत्सव' प्रारंभ हुआ और यह सहस्त्रों वर्षों से मनाया जा रहा है, किंतु गोवर्धनधारी प्रेममूर्ति गोपाल कृष्ण ने अन्नकूट 'गोवर्धन पूजा' के श्रीगणेश के बाद इसे भी व्यापकता प्रदान की। बरसाने की होली कृष्ण काल से ही अपने नव्यतम और भव्यतम रूप में मनाई जा रही है। देश-विदेश से पर्यटक बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष इस उत्सव का आनंद लेने के लिए मथुरा आते हैं। होली मानव की अजेय जिजीविषा, अपराजेय जीवंतता, अजस्र-अविश्रांत प्रेमधारा और अमर उत्सवप्रियता की प्रतीक है।

भारतीय संस्कृति में राम विग्रहवान् धर्म हैं तो कृष्ण प्रेम विग्रह हैं। धनुर्धर राम का प्रण 'सकृदेव प्रपन्नाय तवास्नीति च याचते, अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम' है तो गीतानायक चक्रधर कृष्ण की भी उद्घोषणा है 'सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज, अहं त्वा सर्वपापेभ्यो भोक्षयिष्यामि मा शुच:'। राम लोकरक्षक हैं तो कृष्ण लोकरंजक। सुरक्षा के साथ रंजन (आमोद-प्रमोद) मानव का सहज प्राप्य है। वह योग-क्षेम के साथ-साथ जीवन में उमंग और उल्लास भी चाहता है। होली यही उसे देती है। राम के अनुयायी भक्त त्यागमय, संरक्षणात्मक और सृजनात्मक धर्म के मार्ग के पथिक बन जाते हैं तो मुरली मनोहर गोपाल कृष्ण के आराधक समर्पणमय प्रेम, पारस्परिक आमोद-प्रमोद की उन्मद यमुना में अवगाहन करने लगते हैं। उन्हें चराचर जगत् प्रेमविग्रह कृष्णमय दिखाई देने लगता है। प्रेम का सर्वव्यापी प्रवाह प्रवाहित करने के लिए सन्नद्ध हैं, ये होली खेलते हुए कृष्ण के दीवाने! ईश्वर करे, होली के प्रेम का यह उद्दाम प्रवाह अविच्छिन्न बना रहे और समस्त विश्व इसमें ऊभने-चूभने लगे, डुबकी लगाने लगे!

आज विश्व पर सर्वनाश के भयानक मेघ मँडरा रहे हैं। सर्वरक्षक कहलानेवाला धर्म विकृत होकर सर्वभक्षक बन गया है। त्याग-राग-सद्भाव के मानव-व्रत को छोड़कर इस धरा पर सर्वसंहारक अस्त्रों की होड़ तो पहले से ही मची थी, अब 'सर्वग्रासी आतंकवाद' धर्म का मुखौटा लगाकर उपस्थित हो गया है। अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए औरों का स्वत्व छीनते, अपने जीवन के लिए औरों के प्राण हरते और अपने सुख के लिए दूसरों को कष्ट देते मनुष्य व मानव समुदाय को तो हम सभ्यता के आदिम युग से ही देखते आ रहे हैं, किंतु औरों के प्राण हरने, दूसरों का सर्वनाश करने के लिए 'आत्मघाती' बन जानेवाला आदमी तो अत्याधुनिक युग की वीभत्स-विकृत सृष्टि है। शवों के ढेर पर उत्सव मनानेवाला कौन सा धर्म है यह? हँसती-खेलती बस्तियों को श्मशान बना देने के लिए स्वयं को बम से उड़ा देनेवाला कैसा आदमी है यह? किस जन्नत को पाने के लिए आत्माहुति दे रहा है यह! उनके द्वारा विश्व में 'मौत का तांडव' मचवानेवाले इन वीभत्स नर-पिशाचों को इससे क्या मिलेगा? 'विश्व को शवों का ढेर बनाकर ये उसपर कैसी हुकूमत करना चाहते हैं? दुनिया को जहन्नुम बनाकर किस जन्नत का ख्वाब देख रहे हैं ये?

क्या हम एकजुट होकर स्वार्थ-द्वेष-अलगाव और सर्वनाश की इन विषैली झाड़ियों को काटकर 'होली' में झोंक पाएँगे? क्या हमारी यह सदाशा और सत्प्रतीक्षा कभी पूरी हो पाएगी—

कर आतंकी शिशिर के हिरण्यकशिपु का अंत,
अभय प्रेम प्रह्लाद ले आए नृसिंह वसंत!

महाराज बाग, भैरवगंज
सिवनी, जिला-सिवनी-४८०८८१ (म.प्र.)
दूरभाष : ०८८७८९८०४६७

ध्वनि

मूल : **वी.वी.एन. मूर्ति**

अनुवाद : **वी.एस. कमलाकर**

श्री वी.वी.एन. मूर्ति तेलुगु कथा-साहित्य में सर्वाधिक पढ़े जानेवाले लेखक हैं। वे तेलुगु साहित्य में अत्यंत प्रतिष्ठित हैं; अब तक इनकी डेढ़ सौ कहानियाँ और आठ उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं। उत्कृष्ट लेखन के लिए उन्हें 'श्री कोंडेपूडि श्रीनिवासनराव पुरस्कार', 'तेलुगु विश्वविद्यालय पुरस्कार', 'आवंच सोमसुंदर पुरस्कार' 'रावि शास्त्री पुरस्कार' आदि प्राप्त हुए हैं। यहाँ इनकी एक रसपूर्ण कहानी प्रस्तुत कर रहे हैं।

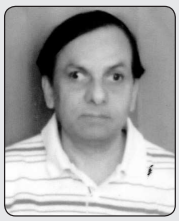

मैं अनेक हूँ। उनमें दो मुख्य हैं—मेरी दृष्टिहीनता और मेरा इसलाम।

इन दोनों में किसके पता चलने से उसका मुँह बंद होगा? किसके पता चलने से उसकी आवाज और तेज होगी? मुझे जो गालियाँ दे रही थी, उसके फूलों का स्पर्श मेरी नाक से हुआ, शायद मेरे ही जैसी लंबी होगी। मेरी लंबाई और मेरी चौड़ी छाती को देखकर अम्मीजान में आनंद दिखाई देता था। अप्रयत्न ही मेरी साँस ने फूलों की उस महक को सुड़का। मेरी उस साँस के अतिरिक्त मेरे शरीर का कोई भाग उससे लगा होगा, वही मेरा जुर्म था।

विचार एक के ऊपर एक बड़ी तेजी के साथ फिसल रहे थे। मेरे कुछ कहने के पहले ही वह बस के अन्य लोगों से, शायद मर्दों से मेरी धृष्टता का सही जवाब चाह रही थी। दूसरी ओर के लोगों में शायद मेरा काला चशमा शंका उत्पन्न कर रहा था। यदि मेरे हाथ में आवाज देनेवाली एक छड़ी होती तो शायद उन्हें वह शंका नहीं होती।

उनकी गालियों को, लोगों की शंकाओं को, मेरे विचारों को विराम देते हुए एक नरम हाथ ने 'यहाँ बैठिए' कहते हुए मुझे बिठाया।

'मुन्नी! तुमने अच्छा किया, वकील साहब बैठिए।'

उस नर्मी का नाम सत्या था। उस सत्या को मेरे जीवन में भी जारी रहने की सुविधा प्रदान करने का श्रेय सूर्यचंद्र वर्मा को जाता है। अंधा वकील हूँ। कोई भी याद रख सकता है। वर्मा ने मुझे मेरी गाड़ी के साथ याद रखा। आज आप गाड़ी में क्यों नहीं आए? वह पहला प्रश्न था। गाड़ी में ही आता रहता हूँ। आ सकता हूँ। आ सकनेवाले बहुत कम भारतीय मुसलमानों में मैं भी एक हूँ। लेकिन मुझे बस ही पसंद है। ध्वनियाँ, आवाजें, गंध, स्पर्श, हँसी, बातें ऐसा महसूस होता है, मानो दुनिया मेरे चारों ओर एक सुहाना गुनगुना गरम चादर ओढ़ रहा हो। ऐसा भी लगता है कि अम्मीजान के दिए गए विचारों की उँगलियों से दुनिया को छू रहा हूँ। लेकिन एक ही बात काँटे जैसी चुभती रहती है, वह है दुनिया की दया।

मेरे उतरने का स्टॉप आ गया। मेरे सेल का जी.पी.एस. मुझे चेता रहा था। तब तक बातों में व्यस्त वर्मा 'मुझे और सत्या को यहीं उतरना है' कहते हुए मेरे पीछे उतर गया। उस नरम हाथ ने मेरी मदद के लिए मेरे हाथ को थामा। नीचे उतरने के बाद—

''मेरा थामना आपको अच्छा नहीं लगा?''

''आप लंबी हैं?''

''क्यों-क्यों?'' आवाज में नर्मी समाप्त हो रही थी।

वह नरमी क्यों समाप्त हो रही थी, बाद में समझ में आया। हम अकसर अपनी बातों के दौरान स्वयं को व्यक्त करने के लिए जितना समय निकालते हैं, उतना समय सामनेवाले और उसकी बातों को समझने के लिए शायद ही निकालते हैं। यह बात बहुत बाद में सत्या ने ही मुझे समझाई। साँवलों के प्रति गोरों में और नाटों के प्रति लंबों में एक और प्रकार की हीन भावना।

''चलो पापा, चलते हैं।'' शायद वह चली जा रही थी।

''ठहरो मुन्नी, ठहरो!'' कहते हुए शायद वर्मा बेटी के पीछे हो गया।

उस पल मुझे उसके असभ्य व्यवहार पर बहुत गुस्सा आया। मैंने जो कुछ कहा, वह मेरे स्वानुभव के सहारे बना विचार मात्र था। उस समय मेरा निश्चित विचार था कि उस तरह मेरा कहना सभ्यता के दायरे में ही आता है। उस दिन समाप्त हो जानेवाली कहानी को दोपहर में मिलकर वर्मा ने आगे बढ़ाया।

सत्या के जीवन में उसकी लंबाई ने बहुत मुसीबतें ला खड़ी कीं। अदालत की दहलीज पर कदम रखना पड़ा। इंटरनेट के माध्यम से सगाई पक्की हुई। वर्मा ने बेधड़क लड़की की लंबाई पाँच फिट लिखी। दूल्हे ने फोटो देखा—पसंद आई। घर आकर भी देखा—पसंद आई। जाति-गोत्र धन-दौलत, सबकुछ ठीक-ठाक लगे। जब सबको सबकुछ पसंद था तो

देरी किस बात की? शादी हो गई। तीन महीनों के वैवाहिक जीवन के बाद दूल्हे को शक हुआ। नापकर देखा तो चार फिट दस अंगुल ही थी। धोखे की शिकायत करते हुए अदालत का दरवाजा खटखटया। जोरदार तर्क था कि शादी नहीं चलेगी, रद्द होनी चाहिए।

''क्या सच है?''

''आज सुनवाई है।''

''पागल लगता है?''

''मुझे सबकुछ यथार्थ ही लिखना था।''

''तलाक के लिए वह कारण काफी नहीं है।''

''वह तलाक नहीं माँग रहा है। उनके वकील का तर्क है कि सन् १९५५ ई. हिंदू विवाह कानून के अनुसार, यदि फरियादी को फ्रॉड करके शादी के लिए मनवाया जाता है तो वह शादी नहीं चलेगी।''

''क्या अदालत ने स्वीकार किया?''

''वकील बड़ा बुद्धिमान है। मेरे दामाद के पास पैसा और जिद बहुत ज्यादा है।''

वर्मा ने बहुत सारी बातें बताईं। मीडिया ने इस केस को बड़ी तूल दी। चर्चा हुई। कुछ लोगों ने कहा कि दो अंगुल बढ़ाकर झूठ बताना कन्या के पिता के लिए शुक्र नीति के समान ही है। शादी के लिए कहे गए झूठ से पाप नहीं होता है। बड़े-बड़े झूठों के बीच जिंदगी गुजार रहे हैं। कुछ लोगों ने साधु की नैतिक दृष्टि से कहा कि इतना छोटा सा झूठ तो आटे में नमक के बराबर है।

कठिन नैतिक दृष्टि को अपनाते हुए और कुछ लोगों ने कहा, ''छोटा हो या बड़ा, आखिर झूठ तो झूठ ही है। कानून के मुताबिक यह जुर्म साबित हो या नहीं, लेकिन यह गलत ही है। कुछ गलतियों को इसी दुनिया में भुगत लेते हैं। यहाँ बच जाने पर भी वहाँ बच नहीं सकते हैं।''

कुछ लोगों का प्रश्न था कि लंबाई उसके लिए यदि उतना मायने रखती तो शादी से पहले ही क्यों नहीं नाप लिया? एक चीज को खरीदते समय उसकी गुणवत्ता और माप आदि को परख लेना क्या उपभोक्ता की जिम्मेदारी नहीं है?

उत्तर में कुछ लोगों ने कहा कि एक वस्तु को इस्तेमाल करने के बाद यदि पता चले कि बनावट में ही कमी है, तब उसे अस्वीकार करने का अधिकार उपभोक्ता को है। जातीय असमानता की बात को उठाते हुए कुछ लोगों ने कहा कि क्या स्त्री वस्तु है? वस्तु गुणवत्ता की परख युगों से स्त्री के संदर्भ में लागू होती आ रही है। कुछ ने यह भी जोड़ा कि असल में खरीदारी होती है तो धन देकर स्त्री ही खरीदी जाती है।

कुछ और लोगों ने कहा कि इस केस में भी मर्द के पक्ष में न्याय नहीं होगा, क्योंकि आज प्रत्येक कानून में स्त्री पक्षधरता और सुरक्षा ही अधिक है। दृश्य एवं अक्षर माध्यमों ने कुछ समय तक इस पर चर्चा करने के बाद भाग लेनेवालों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित कर पल्ला झाड़ लिया। वर्मा के बताए गए विषयों के साथ अपनी विवेचना-बुद्धि को जोड़कर मैंने सुना।

''आप क्या कहेंगे?'' वर्मा ने कहा।

''मैं मुसलमान हूँ। मेरा धर्म इसलाम है।'' मैंने कहा।

लेकिन उनके स्वर में क्या मतलब! जैसे प्रश्नार्थक शब्दों के प्रतिध्वनि से पता चला कि वे दंग रह गए हैं।

''मेरे नाम से आपको मेरा धर्म पता है। इसलाम जानते हैं?''

''बताइए!'' वर्मा ने पूछा।

''सृष्टि के सभी प्राणी और पदार्थ मुसलमान ही हैं। अल्लाह परवरदिगारे आलम हैं, जिनका हुकुम सबके लिए सिर आँखों पर। उस खुदा के प्रति समर्पण ही इसलाम है—ला इल्लाह इल्लइल्लाह मुहम्मदरसुलउललउल्लाह की कलिमा को मानने पर यह सबकुछ अलग से समझ में आएगा।''

''ऐसी मान्यताएँ हिंदुओं में भी हैं। सभी धर्मों में भी होती हैं।'' बीच में ही बोल उठा।

''क्या आप हिंदू नहीं हैं?''

''मैं नास्तिक हूँ। फिर भी मेरे विश्वास और अविश्वास से इसका कोई संबंध नहीं है। आप जो कह रहे हैं, उसका मेरी बेटी की स्थिति पर आपके विचारों से क्या संबंध है, वह मुझे पूरी तरह से समझ में नहीं आ रहा है।''

''कुछ तो समझ में आया है न, वह क्या है?'' मैंने कहा। वर्मा हँसकर उठ खड़ा हुआ और बोला, ''कहते हैं कि वकील लोग अपनी बातें सामनेवालों की मुँह में ठूँसकर उन बातों को ही उगलवाते हैं बस, और क्या है? सबकुछ प्रारब्ध मानकर भोगो, चाहे धर्म जो भी हो, यही तो कहता है।'' जाने से पहले मैंने अपना विजिटिंग कार्ड दिया। वह उसे सँभालकर रखेगा और बाद में उसका उपयोग करेगा, ऐसा मैंने नहीं सोचा।

मुझे बड़ी झुँझलाहट महसूस हुई। मुझे सबको समझना पड़ता है, लेकिन कोई भी मुझे समझने की कोशिश नहीं करता है। अधिक-से-अधिक दया दिखा सकते हैं। क्या मुसलिम शरीयत ऐसे केस का सामना करेगा? शादी को एक अनुबंध माननेवाले समाज, उसे एक दैवी निर्णय माननेवाले समाज, मेरा विचार है कि स्त्री सुरक्षा से संबंधित जिस समस्या का सामना कर रही है, उसकी त्रुटियों पर मैं कुछ बोलूँ। लेकिन उस आवाज की नरमी मेरा पीछा करती ही रही।

अम्मीजान सुनकर फोटो में से बोलीं, 'देखनेवालों को चेहरा ही सबकुछ बताता है, लेकिन सुननेवालों को आवाज ही सबकुछ बताती है।' अम्मीजान की बात मेरे लिए ईमान है।

मेरा मोबाइल मेरे इ-मेल्स पढ़कर सुना रहा था। वर्मा ठीक उसी समय आ धमका। सत्या ने खुदकुशी की कोशिश की···जब वर्मा ये बातें कह रहा था, तो उसकी आवाज में सिहरन बिल्कुल स्पष्ट थी।

मृत्यु चाहे जिसकी भी क्यों न हों, वह खबर कष्ट देती है। उन व्यक्तियों के साथ हमारी आत्मीयता के आधार पर कष्ट की तीव्रता निर्भर होती है। सत्या के साथ मेरा परिचय स्वल्प ही था। बतानेवाला पिता होने के कारण आवाज में हलचल जरा अधिक थी। लेकिन मुझमें उससे भी कहीं अधिक हलचल का कारण··· ? हर व्यक्ति और इससे संबंधित एक

समूह होता है। उसका एक नाम भी होता है। धर्म, जाति, भाषा, प्रांत, राज्य, देश···इस तरह अनेक। कभी-कभार इन सभी समूहों से परे भी हम प्रतिस्पंदित होते हैं। तब प्रश्न उठ खड़ा होता है कि हमें हिला देनेवाला और मिला देनेवाला तत्त्व क्या है।

उस क्षण ये प्रश्न, विचार कुछ भी नहीं थे, केवल एक उद्विग्नता के सिवा। उनके साथ जाकर पुलिसवालों और डॉक्टरों से मिलकर बातें कीं कि यदि आत्महत्या पाप हो और फैसले के दिन जवाब देना पड़े, तो कोई समस्या ही नहीं है। कानून उसे जुर्म करार देता है। जीवित बचे लोगों को मुजरिम कहता है। जीवित रहने में विफल होकर मरने के प्रयास में असफल होकर व्यक्ति मुजरिम बन जाता है।

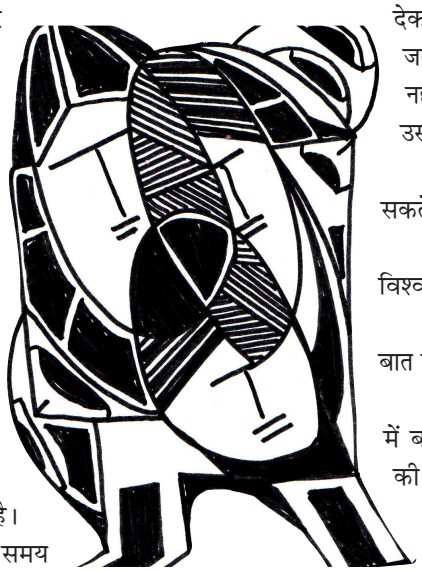

सत्या के अस्पताल से सुरक्षित लौटने और कानून से बच निकलने में जो कुछ भी बन पड़ा, मैंने किया। इसके बाद एक दिन वर्मा मेरे घर पर मुझसे मिला और एक विनती की। बातचीत शुरू करते हुए बोला, ''गलती मेरी और सजा उसे मिली?''

मैंने हँसकर कहा, ''इस जुर्म का निर्धारण करना और फैसला देना, क्या आप ही का काम है?''

देखनेवाले कहते हैं कि हँसने पर मैं अच्छा लगता हूँ। मेरे गाल पर छोटा सा डिंपल पड़ता है। वह भी जहाँ पड़ना चाहिए, वहीं पड़ता है। उस समय मैं काला चश्मा लगाए हुए था। सफेद कुरता-पजामा पहना था। एक बड़े कमरे में था। वह कमरा एक विशाल बँगले में था। वह बँगला बड़ी सावधानी से देखभाल किए जा रहे सुंदर बगीचे के बीचोबीच था। वह वैसी ही बड़ी-बड़ी खुली जगहों, बँगलों और बगीचों से बने कतार में था। अत: मैं अच्छी लगनेवाली पृष्ठभूमि में ही था।

''आपके कहने का मतलब···'' हकलाकर रुक गया।

मैंने कहा, ''दो अंगुल बढ़ाकर बताने का जुर्म आपने किया। अदालती मुकदमा, शादी का टूटना, खुदकुशी, उसे सजा—यह सब आपने कहा।'' कुछ देर तक चुप रहा, फिर पूछने पर बोला, ''आप खुद अपनी आँखों से नहीं देख सकते हैं, लेकिन आपमें अंतर्दृष्टि है और मुझसे अधिक देख सकते हैं।''

''इतना आसमान पर मत चढ़ाइए! गिरूँगा तो हड्डी-पसली एक हो जाएँगी।'' हँसी की लहरें चारों ओर फैल गईं।

''आपकी मित्रता सत्या को दृढता प्रदान करेगी।''

उस क्षण में उनका ऐसा कहना मुझे बड़ा अच्छा लगा। उस समय उसकी नरम आवाज ने और नरम होकर मेरी यादों को छुआ।

उसके चले जाने के बाद लगा कि क्या वाकई वह आवाज इतनी नरम है? विचारना चाहूँ तो मुझे न आए हुए सत्या का मेल पढ़ने की शक्ति मेरे मोबाइल में ही नहीं, बल्कि मुझमें भी नहीं है। वर्मा अकसर फोन कर रहा है। जब-तब मिल भी रहा है। एक-दो बार सत्या को भी साथ में ले आया। एक-दो बातों को छोड़कर सत्या अधिकतर मौन ही रही। उस आवाज की नरमी मन को स्पर्श करती ही रही। मन यकीन दिलाने की कोशिश कर रहा है कि सत्या में कुछ खासियत है। वर्मा को ईश्वर पर, नियति पर रत्ती भर भी विश्वास नहीं है। अपनी इस आस्थाहीनता से पत्नी को खूब सताया। बेपरिवार का बना दिया। बेटी को अनाथ बना दिया। दुनियादारी के खिलाफ सोचनेवालों को दुनिया के विरुद्ध ही जिंदगी गुजारनी चाहिए। अंदर के विचारों को पूरी स्वतंत्रता देकर बाहरी दुनिया के सामने अदृश्य शृंखलाओं में जकड़कर जिंदगी गुजारनेवालों से निस्सहाय कोई नहीं है। वर्मा की स्थिति आस्थाहीनता नहीं है, बल्कि उससे निर्मित होनेवाली परिस्थिति है।

''वर्माजी! आप अपने में अब विश्वास बढ़ा सकते हैं न?''

''जिस रास्ते पर विचार डग भरते हैं, उस पर विश्वास अंकुरित नहीं होते हैं।''

''ढेर सारे अविश्वासियों के आस्थावान बनने की बात मैंने सुनी है।''

''नहीं, नास्ति के विश्वास से अस्ति के विश्वास में बदले हैं। यह संभव है। वैचारिक प्रवृत्ति में सत्य की खोज करनेवालों में कोई आस्था नहीं होती है।''

''मैं समझा नहीं। मैं मानने को तैयार नहीं हूँ।''

''आप जैसा भी समझें। मेरी जिंदगी तो बीत गई। सत्या की जिंदगी तो अभी भी बहुत लंबी है। यदि मेरे विचारों का प्रभाव उस पर होता तो शायद वह ऐसा नहीं करती।'' उनका गला रुँध सा गया, ''बेसहारा-सी बन गई है। आप फिर से उसमें आस्था जगा सकते हैं।'' उस आवाज में हार, दृढता, आशा तीनों मिश्रित होकर ध्वनित हो रहे थे। मेरी बातों को उन्होंने अनसुना कर दिया। असत के भ्रमजाल से सत्या बड़े धीरे से मेरे जीवन में प्रवेश कर गई। मैं जो कुछ भी कहता, बड़े ध्यान से सुनती। कोई प्रश्न नहीं थे। टीका-टिप्पणी भी नहीं थी। उसके चेहरे को देखकर उसे परखने का अवसर मेरे पास नहीं है। बातें सुनकर कुछ समझने का अवसर सत्या नहीं देती थी। बस एक मार्मिक मौन। एक-दो बातें बनाकर मेरे हृदय को छूकर मुझे किसी कसावदार फंदे में कसती थी। पिता के प्रोत्साहन से ही वह मुझसे मिल रही थी। मेरा मन मुझे खूब प्रोत्साहित कर रहा था। बताया गया कारण, उसमें जीवन के प्रति आशा जगाना, ईश्वर में आस्था बढ़ाना था। ध्वनित होनेवाला कारण जीवन देना था। नास्तिक के लिए धर्म के बाधा बनने का अवसर ही नहीं था।

''आप जवाब नहीं दे रही हैं।'' कुछ दिनों के बाद एक दिन अपनी निराशा को ढकते हुए मैंने कहा।

''प्रश्न हो तो उत्तर होंगे, सर!'' वह स्वर अपने में और अधिक

नरमी भरते हुए बोली शायद पहली बार उसमें उत्साह की एक छोटी-सी लहर उमड़ती हुई सुनाई पड़ी।

''तो आपका मतलब है कि मैं सब स्टेटमेंट्स ही दे रहा हूँ।''

''अवसर मिलने पर बेजुबाँ वकील के सामने जुबान चलानेवाले पब्लिक प्रासिक्यूटर के जैसे।''

हँसी की गुनगुनी गरमी से बर्फ पिघलने लगी और कुछ बातों के बाद—''पहले आपको धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ।''

''क्यों?''

''मेरे पापा ने मेरी खुदकुशी की कोशिश का कारण बताया। उनका मानना है कि यह फिर से न दोहराई जाए, जिसका उपाय आपके पास है। आपको भी इसका विश्वास दिलाया गया। आपने जो जिम्मेदारी ली है, उसे पूरी लगन से निभा रहे हैं, है न?''

''आप जो कहना चाह रही हैं, कहिए।''

''मेरे पापा में कुछ अंधविश्वास हैं। लोगों को देखते ही, जो राय बनती है, उसी के मुताबिक उनके साथ पेश आना, उनमें से यह एक है। पिछले दिनों की उनकी बातों और व्यवहार पर गौर करने से मुझे एहसास हुआ कि मेरे बरताव ने उन्हें कितना शैटर किया है, इतना ही नहीं...''

''कहिए-कहिए।''

''आपके साथ हुई इन चार-पाँच मुलाकातों से मुझे लगा कि आपके प्रति मेरे पापा का इंप्रेशन गलत नहीं है। सचमुच आप बहुत अच्छे हैं। क्या आप मेरी एक मदद कर सकते हैं?''

''कर सकनेवाली हो तो जरूर करूँगा।''

''मेरे पापा से कहिए कि मैं वह काम नहीं दोहराऊँगी। जरूरत पड़े तो उन्हें यकीन दिलाने के लिए''...रुककर फिर बोली कि ''पापा को यह भी बताइए कि मेरी आस्था ईश्वर में हो गई है या बताइए कि आस्था आप ही ने दिलवाई है, मेरी काउंसलिंग करने का बोझ भी आपके सिर से उतर जाएगा।''

''तो आप चाहती हैं कि मैं झूठ बोलूँ।''

''इन...न...मेरा मतलब यह नहीं है।''

''आप तो वही कह रही हैं। मैं झूठ नहीं बोलूँगा।''

सत्या ने कुछ नहीं कहा।

''मेरे अंदाज से आपके पापा कुछ अलग ढंग से जिंदगी बिताए हैं, विवाह किए हैं। आपकी परवरिश भी वैसे ही किए हैं। शायद वे चाह रहे थे कि आप कुछ अलग जीवन बिताएँ। ऐसे आदमी को महसूस हुआ ही होगा कि आप शादी के मामले में फैसले स्वतंत्र होकर करें। आखिरकार...'' कहकर मुझ जैसे अकिंचन पर निर्भर होना भी उनके अलग से बरताव का संकेत है, कहते हुए जुबान की नोक तक आई बात को काटकर मैंने आगे कहा, ''ठीक है, एक पिता की हैसियत से उनकी वह बात कहना, शायद ध्वनित होने का साहस भी उनमें नहीं रहा हो। खुद उन्होंने ही शादी के प्रयत्न किए, जिसका परिणाम ऐसा निकला। यदि उसने कोई बहाना बनाकर आपको इनकार किया तो आपको अपने पापा से कहना था कि पापा, क्या मैं इस कमीने के बिना जिंदा नहीं रह सकती हूँ? चलिए, तलाक दे देते हैं। आपने वह भी नहीं किया। अदालत, मुकदमा, कहाँ और क्यों आपका धीरज जवाब दे गया? आखिर आपने ऐसी कोशिश की और उनकी कमर तोड़ दी। मुझ जैसे अनजाने से आपने कहा न कि उस काउंसलिंग के लिए भी हाँ कह दी। आप खुद झूठ नहीं बोलती हैं। सच है, आप कुछ भी नहीं कहती हैं!''

मुझे जो कहना था, पूरा हो गया। बहुत देर तक मौन राज करता रहा।

''सर! मैं चलती हूँ।''

''क्या नाराज हो गई हैं?''

''आपने स्पष्ट कर दिया कि अब मुझे ही फैसला लेना है। मुझे थोड़ा वक्त चाहिए।''

सत्या चलने को तैयार हुई। ''एक मिनट...'' कहकर बिल अदा कर काफी डे से बाहर आकर गाड़ी की ओर चलते हुए जरा रुककर... ''मेरे साथ चलेंगी, जहाँ चाहें पहुँचा दूँगा।'' मैंने कहा।

''मुझे कुछ अलग काम है।'' वह बोली।

हँसने का प्रयत्न करते हुए मैंने कहा, ''जानता हूँ!''

पहली बार सत्या ने स्पर्श किया।

''आज आप मुझे एक बात बताकर मेरे गुरु बने। ध्वनित नहीं होना चाहिए। आपने कहा कि बताना है—मैं इस देश की औरत हूँ न! ध्वनित होना ही हमारी जिंदगी है। आपको भी उसका आचरण करना है। मैंने जो कहा, उसको ही आपको लेना चाहिए'' हँसी में नरमी भरते हुए बोली। उसकी वह हँसी, आवाज, स्पर्श मेरा पीछा कर रहे हैं।

मेरा सारथी मुझ अकेले को ही लेकर चला।

एक महीना गुजर गया। इस बीच बहुत सारी घटनाएँ घट गईं। आपसी समझौते पर सत्या तलाक के लिए मान गई। लंबाई के मामले में मीडिया के हलचल का कारण बनी सत्या को तंग करने की कोशिश करनेवाले और उसकी खुदकुशी के प्रयत्न का कारण बने सहकर्मी अध्यापक के बारे में सत्या ने मैनेजमेंट को शिकायत की। उन्होंने तुरंत काररवाई नहीं की तो सहकर्मियों को इकट्ठा कर और महिला संस्थाओं की मदद से उस पर काररवाई करवाई। निडर होकर स्कूल जाने लगी।

वर्मा ने मिलकर कहा कि मेरी बातों का असर उसकी बेटी पर खूब हुआ है। यथार्थ में मैंने भी सत्या में ऐसे परिवर्तन की कल्पना तक नहीं की थी। मुझे ऐसा भी नहीं लगा कि मैं ही इस परिवर्तन का कारण हूँ। मैंने सोचा कि अल्लाह बड़ा दयामय है।

मेरा स्पर्श करनेवाली वह नरमी उसकी आवाज में ही नहीं, उसके पूरे व्यक्तित्व में है। एक बार उसने कहा कि आपने साहित्य खूब पढ़ा होगा?

''जरा-सी फेर-बदल। पढ़ा नहीं है, सुना है। मेरे पिताजी संस्कृत के विद्वान् थे। कई साहित्यकारों को सुनाया। शास्त्री मेरा जिगरी दोस्त है। आज मेरे इस स्थिति तक पहुँचने में और यों खड़े हो सकने में मेरी अम्मीजान-बाबाजान का जितना हाथ है, उतना उसका भी। मेरे साहित्यिक परिचय और मेरी पढ़ाई का एक आधार वही है।''

शास्त्री के बारे में बातें। अम्मीजान-बाबाजान का एक्सीडेंट। पिठापुरम् से हैदराबाद के लिए परिवार की शिफ्टिंग।

एक बार शास्त्री ने मेरी दृष्टिहीनता के बारे में कहा, ''मेरी अम्मी और अब्बू का सगे भाइयों की संतान होना ही है।'' अम्मीजान ने उसका उत्तर देने को कहा। मैंने दिया। तुम्हारी अम्मी और अब्बू भी तो भाई-बहन की संतान हैं, फिर तुम्हें प्रॉब्लम क्यों नहीं हुआ? तुरंत शास्त्री बोला, ''हाँ, यह भी सच है। यह है हमारा शास्त्री।'' मैंने कहा। सत्या की हँसी सुनाई पड़ी। मन में हलचल सी मची।

''क्यों इतना हँस रही हैं?'' मैंने पूछा। फिर से हँसी, और अधिक सच्चाई और स्वच्छता से।

''ध्वनित नहीं होना चाहिए। कहना चाहिए।'' फिर से मैंने कहा। मेरी आवाज में बेकाबू होती एक मादकता थी।

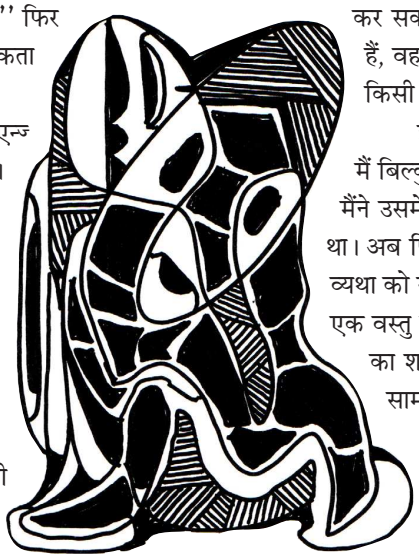

''ठीक है, बताती हूँ। मेरी हँसी को आपने एन्ज वॉय किया। फिर भी सवाल करना नहीं छोड़ा। दूसरी बार हँसने का कारण यही है। आपका तर्क मान लेनेवाले हों तो वे आपके बहुत निकट हो जाते हैं। आपके शास्त्रीजी के जैसे हर तरफ हँसी बिखर गई।

सत्या से जब भी मिलता, मुझमें दो ऊँची लहरें उठकर गिर पड़तीं। पहली, भावना की तरंग, उसका साथ मेरे जीवन को पूरा करेगा। दूसरी तरंग, वह मुझे प्राप्त नहीं होगी। एक का पीछा करती दूसरी। प्राप्त हो तो भी उसका कारण मेरी स्थिति भी हो सकती है और उसकी भी। ऐसी हालत में इसे प्राप्य माना जाए या अप्राप्य? अम्मीजान कहती थीं कि यकीन करके धोखा खा जाओ, लेकिन अविश्वास करके अवसर मत खोना। अम्मी की बात मेरे लिए ईमान है। लेकिन विश्वास और वह भी साथ रहनेवाले मनुष्यों पर तथा वह भी मेरी इस स्थिति में बहुत कठिन है। आशा अपने लिए अविश्वास को रक्षा का कवच बना लेती है।

आखिरकार मैं खुद को थाम नहीं सका। तब तक एक साल गुजर चुका था।

एक दिन जान-बूझकर ओल्गा के साहित्य पर चर्चा छेड़ी। कई बार मैंने गौर किया कि जब भी सत्या ओल्गा का नाम सुनती तो उसमें एक उत्साह उमड़ने लगता। मुझे आशा थी कि चर्चा अवश्य शादी पर होगी।

सत्या बड़े उत्साह से कहती जा रही थी, ''मेरे पापा का मानना है कि उपन्यास में प्रतिपादित स्वतंत्रता, ओल्गा द्वारा अपेक्षित स्वतंत्रता, स्त्रियों को आवश्यक स्वतंत्रता, ये सब अलग हैं। वे उपन्यास के बारे में, लेखक के बारे में, समाज के बारे में अलग-अलग बातें करते हैं। ओल्गा से उन्हें बड़ा लगाव है। ओल्गा को पढ़ने के बाद मुझे लगा कि स्त्रियों की समस्याओं का हल मात्र आर्थिक स्वावलंबन में ही नहीं है।''

मुझे कड़वी गोली निगलने का अनुभव-सा हुआ। मेरी नजर में ओल्गा आज की पढ़ी-लिखी लड़कियों की वैवाहिक आशाओं की एक प्रेरणा है। मेरा मानना है कि जब भी ओल्गा का उल्लेख आता है तो औरत, यदि शादीशुदा हो तो अपने जीवन के बारे में, कन्या हो तो अपने विवाह के बारे में अवश्य कुछ-न-कुछ विचार व्यक्त करेगी। सत्या अपने साहित्यिक विचारों और पिता के विचारों की खिचड़ी बनाकर लगातार कुछ कहती ही जा रही थी।

मेरे संयम का बाँध टूट गया। संयम को बरबस तोड़ डालने का जोश मुझ में उमड़ आया। ''ज्ञानोदय को परिभाषित करते हुए कांट कहता है कि उसके लिए अत्यंत आवश्यक तत्त्व मात्र स्वेच्छा ही है। उसका कथन है कि अत्युन्नत मानव-समाज जनता को वह स्वेच्छा प्रदान कर सकता है। ओल्गा जिस स्वेच्छा का उल्लेख करती हैं, वह एक उन्नत समाज से, पुरुषों की स्वेच्छा से बिना किसी संबंध के कदापि संभव नहीं है।'' मैंने कहा।

इसके बाद के वार्त्तालाप में सत्या ने जो कुछ कहा, मैं बिल्कुल समझ नहीं सका। विषय के प्रति उत्सुकता से मैंने उसमें भाग ही नहीं लिया। वह केवल एक बहाना ही था। अब फिर विचारता हूँ तो महसूस होता है कि सत्या की व्यथा को समझने का एक अवसर मैं फिर खो चुका हूँ। उसे एक वस्तु के रूप में पाने के लिए मेरे द्वारा किए गए प्रयत्न का शतांश भाग भी उसके प्रति एक व्यक्ति के रूप में सामीप्यता पाने की कोशिश मैंने नहीं की।

ध्वनियों को त्यागकर जब मैंने सीधे विवाह का प्रस्ताव रखा, तब भी मुझे यह बात समझ में नहीं आई।

''सत्या! मेरी इच्छा है कि मैं तुम्हारे लिए एक नया प्रकाश बनूँ और तुम मेरे जीवन का आधार बनो।''

बहुत दिनों के प्रयास से बनाया गया यह वाक्य मुझे ही बिल्कुल कृत्रिम सा लगने लगा। उसी क्षण मुझे पता चला कि वाक्य कितना कमजोर था।

''जरूर।'' तुरंत सत्या ने कहा।

उस स्वीकृति से मुझे अपार आनंद हुआ। असीम शंका भी हुई।

''तुम्हारे पापा से बात करूँगा।'' मैंने कहा।

''किसके बारे में?''

''शादी के बारे में, कब और कैसे?''

''जरा रुको तो, किसके बारे में?'' उसने पूछा।

''हमारी शादी के बारे में!'' जरा संशयात्मक स्वर में मैंने कहा।

बहुत देर तक सत्या की ओर से कोई बात नहीं हुई।

मैंने भी उस मौन को जारी रखा। मुझे लगा कि उस थोड़े से मौन में उसे दे सकनेवाला आधार मेरे पास कुछ भी नहीं है। यह बात कहने के बाद क्या मैं उसे खोने जा रहा हूँ? अगले ही क्षण उसका स्तर बहुत बढ़ गया। फिर सत्या ने किसके बारे में 'जरूर' कहा?

''सत्या!'' बहुत देर के बाद मैंने पुकारा।

''हाँ।'' बोली। मैं जिस नरमी को ढूँढ़ रहा था, वह उसमें वैसी ही थी। उतने हलचल में भी वह वैसी ही अनुभूति दे रही थी।

''कैसे मान लिया कि मैं शादी करूँगी? याद कर रही हूँ कि मैंने तुम्हें कहाँ और कब ऐसा अवसर दिया है।'' वह बोली। उसकी बात पूरी ही नहीं हुई। मैं कुछ कहने ही वाला था···उसकी आँखें थीं···उपयोग करती हुई मेरा हाथ पकड़ा। मेरे हाथ ने उससे क्या कहा पता नहीं?

''हममें विवाह करने की योग्यता नहीं है, फिलहाल हम जिन परिस्थितियों में हैं, उनमें विवाह हमारे सत्संबंधों के लिए समाप्तिसूचक होगा। प्लीज समझो!'' सत्या ने कहा।

''हाँ, सच ही है—एक अंधे के साथ शादी और वह भी एक मुसलमान के साथ!'' मैं बेकाबू हो गया।

''तुम ऐसे कैसे बोल रहे हो!'' सत्या के हाथ में मेरा हाथ वैसे ही था। उसे झटक देने के मेरे जोश को सत्या समझ रही थी।

''तुम्हारी बातों का और क्या मतलब है?'' मैंने कहा।

समझ आई—समाज के बारे में, वैवाहिक बंधनों के बारे में, अपने अनुभव से बने निर्णयों के बारे में, व्यक्तियों की आत्मीयता को विनष्ट करनेवाले शादी के असर के बारे में, बोली कि उसका मन विवाह को स्वीकार नहीं कर रहा है। मेरा मन कुछ भी स्वीकार नहीं कर रहा है। उसके निराकरण की भावना से मेरा मन बाहर निकल नहीं पा रहा है। वह उन वाक्यों को जितनी भी सरलता से क्यों न कह रही थी, परंतु मुझे उनमें निराकरण के अलावा और कुछ ध्वनित नहीं हो रहा था।

समझा-समझाकर, मुझे सुन-सुनकर, देख-देखकर आखिर में सत्या बोली, ''आँखों का न होना कोई कमी नहीं है। दूसरे इंद्रियों का, किसी वैज्ञानिक उपकरण का उपयोग कर उस कमी को पूरा किया जा सकता है, लेकिन शायद तुम और भी आहत होगे!''

''कहो, इससे ज्यादा और क्या आहत कर सकोगी?''

''आँखें बंद कर लेना न सुधारी जा सकनेवाली कमी है। मेहरबानी करके जरा सोचो कि शादी अलग है। दोस्ती अलग है। काम अलग है। प्रेम अलग है।''

''फिलहाल मैं मान रहीं हूँ कि इन चारों में से किसी एक के लिए किसी दूसरे को अपनाना सही नहीं है। मुझ पर यकीन करो। शादी के बारे में मेरी भावनाओं को मेरी बातें व्यक्त कर रही हैं। मेरी भावनाओं को स्वीकार कर सकते हो, चर्चा कर सकते हो, इनकार कर सकते हो, लेकिन तुम मान रहे हो कि मैं उन्हें अपने निराकरण के लिए ही उपयोग कर रही हूँ। इसका कारण तुम्हारा वाच्यार्थ की अपेक्षा ध्वनि पर ही अधिक निर्भर होना है।''

''सत्या,'' अनजाने में ही मेरा मन मेरी आवाज में भर आया।

''अधिक संख्यावालों में अधिक प्रतिशत से, कम संख्यावालों को कम आँककर देखा जाता है कि भावना कम संख्यावालों का पीछा करती ही रहती है। बहुत कम लोग इसी तथ्य का सहारा लेते हुए दुनिया में अनेक अवांछनीय कृत्य करवाते जा रहे हैं। ऐसे लोग अधिक संख्यावालों के भी हो सकते हैं या कम संख्यावालों के भी। वे अपने लक्ष्यों की घोषणा अलग से भी कर सकते हैं। लेकिन उन कम लोगों का लक्ष्य एक ही है—मनुष्य को मनुष्य से जोड़नेवाले सभी मार्गों को बंद कर देना। यथार्थ में ऐसे कम लोग ही पूरी मानवजाति पर मानसिक स्तर पर शासन कर रहे हैं। सबसे पहले हमें व्यक्तियों के रूप में इस स्थिति से बाहर निकलना है। हमें चर्चा करना सीखना चाहिए। विचारों को बदलने का प्रयत्न प्रेम से, संयम से करना चाहिए। हम पर शासन करनेवाली भावनाओं में कौन सी अपनी हैं! कौन सी थोपी जा रही हैं! बीज और छिलकों को अलग करने में सक्षम होना चाहिए, उसमें हमे संगी-साथी बनना चाहिए। दोस्त! चलो, ध्वनि को मात्र ध्वनि ही मानकर कोई भी किसी भी बात को सीधे कहनेवाली दुनिया का सपना देखेंगे। मेरी विनती एक ही है कि जहाँ तक बन पड़े, हमें बातों पर और उनके वाच्यार्थ पर ही निर्भर होना चाहिए, जिससे कि हमारे एक होने के अवसरों की संभावना कुछ हद तक बनेगी। प्लीज, सीधे समझने की कोशिश करो।''

प्लॉट नं.२२, कामेश्वरी नगर
साईं आई.टी.आई. के सामने
अरसाविली, श्रीकाकुलम-५३२४०१ (आं.प्र.)
दूरभाष : ०९४४१२६७०६१

इस अंक के चित्रकार

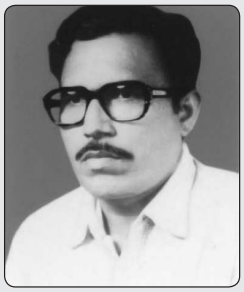

राजेंद्र परदेशी

सुपरिचित रचनाकार एवं चित्रकार। साहित्य की लगभग सभी विधाओं में रचना-कर्म। 'हताश होने से पहले' (कविता-संग्रह), 'भोजपुरी लोककथाएँ', 'दूर होता गाँव' (लघुकथा-संग्रह), 'शब्दों के संधान' (हाइकु-संग्रह), 'शब्द शिल्पियों के सान्निध्य में' (साक्षात्कार-संग्रह) तथा रेखांकन विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लगातार प्रकाशित हो रहे हैं।

संपर्क : भारतीय पब्लिक अकादमी,
चांदन रोड, फरीदी नगर, लखनऊ-२२६०१५
दूरभाष : ०९४१५०४५५८४

घनाक्षरी

कोयल की मीठी बोली

● आभा सिंह

वसंत

सरसों के फूल खिले, हरे-पीले रंग मिले,
नैनों में दूर तलक, पीली सी लुनाई है।

वासंती हवा के झोंके, गुनगुने ठंडे होके,
तन को सुहाने लगे, झूमी अँगनाई है।

धानी-धानी ओस धुली, कोंपलों की नींद खुली,
फूलों ने रंग-बिरंगी, झालर सजाई है।

गन्ने की चौधार गिरे, झाग तो रसीले तिरे,
कोल्हू की घुमर-घूँ-घूँ, बैलों ने मचाई है।

मित्र

दीवटों में ज्योति जैसा, सीपियों में मोती जैसा,
नैनों का उजाला देखो, मित्र ऐसा पाया है,

मीठी है उसकी बोली, मिसरी हो जैसे घोली,
बातों में सच्चाई झाँके, दिल में समाया है।

दु:ख में साथ निभाए, सुख में खुशी मनाए,
हर पग संग रखे, जैसे कोई साया है।

धन्य हैं भाग हमारे, पुण्य कभी किए सारे,
मित्रता का उपहार, सीने से लगाया है।

पर्वत

गर्व से पहाड़ तने, ऊँचे हैं विशाल बने,
कुदरत हरी-भरी, तिजोरी छिपाएगी।

लालच से मन हारा, छील दिया तन सारा,
बादल घने छाएँगे, बारिश न आएगी।

बिगड़े हैं रंग-रूप, बिखरेगी निरी धूप,
हरियाली राजसी की, छटा कैसे छाएगी।

कोई न पहाड़ होगा, मरु का दहाड़ होगा,
नदियों की मौत होगी, पीढ़ी कहाँ जाएगी।

मीठे बोल

कोयल की मीठी बोली, सीख देती है अबोली,
मधुरस पगी वाणी, जग जीत आई है।

जो विरोधी काँटे बोए, और क्रोधी आपा खोए,
शांत सुरों की चाश ने, अगन बुझाई है।

कड़वे करेले जैसे, नीम के बसेरे जैसे,
गुड़ की सी बातों ने ही, तलखी मिटाई है।

ताने तीखी तलवारें, खील-खील अँकवारें,
सयानों ने बैन बीच, शक्कर घुलाई है।

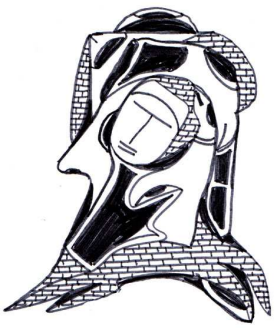

हँसी के रूप

चाँद की चमक जैसी, भानु की दमक जैसी,
सितारों की छाँव नीचे, किलक बिछाई है।

नयनों में निखरी है, होंठों पर बिखरी है,
दिल में है खुशी जैसी, मुसकान छाई है।

साँसों में पहेली लगे, फूलों की सहेली लगे,
खिलखिली ठुमक के उजाला ले आई है।

सीने में जो गुदगुदी, सिहरन मुँदी-मुँदी,
मचल के ठहाकों ने, जिंदगी बौराई है।

जीवन के विलोम

रात का है अँधियारा, दिन का है उजियारा,
आगे-पीछे जब आते, समय बिताते हैं।

सुख में ही आशा हँसे, दु:ख में निराशा कसे,
चलें एक-दूजे संग, जीवन सजाते हैं।

सूरज का ताप जले, चंद्रमा का शीत गले,
गलबाँही डाले आते, मौसम बनाते हैं।

प्रकाशित कृतियाँ–'कोने की आकाश', 'अब तो सुलग गए गुलमोहर', 'परछाइयों के अक्स', 'अस्तित्व का हठ', 'माटी कहे', 'टुकड़ा-टुकड़ा इंद्रधनुष'।

प्रेम में साँसें पिघलें, घृणा में हिंसा निगले,
कड़वे तो मीठे भी हैं, नियम निभाते हैं।

प्रार्थना

बिन बोले बोल रहे, बिन सुने सुन रहे,
भगवन् ने इनको, ऐसा ही बनाया है।

विद्यालय में आना है, सबके जैसा जीना है,
कठिन तपस्या को भी, सहज बनाया है।

वाणी नहीं वीणापाणि, आँखों से दुनिया जानी,
संकेतों से विनती को, मुखर बनाया है।

हे शारदे माँ सुन लो, हत कंठों को गुन लो,
श्रद्धाभक्ति सींचकर, आस को जगाया है।

भाव

भाव उड़े तरंग से, तितलियों के रंग से,
छूने को तो हर बार, हाथ ही बढ़ाया है।

अँखियों में बस गए, अधरों में रच गए,
बार-बार बोली को यूँ, शहद बनाया है।

कुहरे से लिपटे हैं, अंतस में सिमटे हैं,
प्रीत को अंक भर के, झूले में सुलाया है।

जीत में उमड़ते हैं, हार में घुमड़ते हैं,
आँसू की बूँदें बनके, हिया हरसाया है।

सा.अ.
मकान नं. ८०-१८६
मध्यम मार्ग, मानसरोवर,
जयपुर-३०२०२० (राजस्थान)
दूरभाष : ०९९२८४९४११९

जिंदगी

● रागति रमा

अनंतराम नौकरी से अवकाश प्राप्त कर चुके थे। इस अवसर पर उनके मदरसे में एक सम्मान सभा का आयोजन किया गया। शाम का वक्त था। सभा में सभी लोग बैठे थे। एक अध्यापक ने कहा कि अनंतरामजी ने तीस साल तक इस पाठशाला के लिए अपना जीवन अर्पित किया है। उनके कारण ही पाठशाला की उन्नति हुई है। यह प्रशंसा नहीं, सच है। इस पाठशाला में पढ़े-लिखे अनेक विद्यार्थी आज ऊँचे-ऊँचे पदों पर कार्यरत हैं।

सभा में सभी ने तालियाँ बजाईं। लेकिन अनंतराम के मन में उल्लास नहीं, उद्वेग है। आनंद नहीं, वेदना है। इस पाठशाला से तीस साल का बंधन टूट रहा है। कल से पूरी जिंदगी आराम से बीतेगी, सोचकर उनकी आँखों में आँसू भर आए।

रात के दस बज गए थे। सम्मान सभा समाप्त हो गई। अनंतराम अपने परिवार के साथ घर चले गए। खाने-पीने के बाद घर के सभी लोग अपने-अपने कमरों में चले गए, लेकिन अनंतराम को नींद नहीं आई। उन्होंने देखा, पत्नी गहरी नींद में थी।

खिड़की से बाहर देखा, तो चारों तरफ सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। कल से आराम···आराम···आराम, जिंदगी भर आराम; यह उनके लिए असहनीय हो रहा था।

उनकी नित्य दिनचर्या आँखों के सामने आ गई—सुबह-सुबह उठना, कसरत करना, घर के पीछे कुएँ के पानी से नहाना, वहाँ के पेड़-पौधों को पानी देना, उसके बाद अखबार पढ़ना, घर-परिवार के साथ-साथ चाय-नाश्ता लेना, अपने घर के समीप मदरसे तक पैदल चले जाना, उसके बाद पाठशाला के काम-काज में तल्लीन होना, इन सबके बीच संतोष से दिन गुजरे।

एक दिन अनंतराम अखबार पढ़ रहे थे, तो उनके मन में संशय हुआ, कि अगर पत्नी आकर कहे, आपको तो दिन भर आराम करना है। बेटे को जल्दी दफ्तर जाना है। अखबार पहले उसको दीजिए तो!

अगर बेटे ने कहा कि पापा, आप बूढ़े हो गए, आराम कीजिए। घर की जिम्मेदारी मेरी है। बाबूजी, आज क्या पकाना है? यदि बहू ने नहीं पूछा तो अपनी क्या इज्जत रह जाएगी! नहीं, यह जिंदगी असह्य है।

एक दिन अकस्मात् अपने प्रिय दोस्त जगपति की याद आ गई। शाम को वे जगपति के घर गए। जगपति दो साल पूर्व नौकरी से रिटायर हो गए थे। जगपति ने अपनी बहू से कहा कि अनंतराम के लिए चाय ले आओ; किंतु बहू न लाई। अपने पति के दोस्तों को चाय-नाश्ता दे दिया।

यह देखकर जगपति बहुत चिंतित हुए और कहा कि परिवार के लोगों की नजरों में मैं एक बेकार इनसान हूँ।

तेलुगु मातृभाषा है। तेलुगु में 'रेपटिवरकु आगे' (कविता-संग्रह), 'अम्माइलू जाग्रत्ता' (कहानी-संग्रह) प्रकाशित। आकाशवाणी से कई कहानियाँ, एकांकी प्रसारित। विविध तेलुगु पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित।

दु:खी हृदय से अनंतराम अपने घर लौट आए। दो दिन के बाद जगपति ने फोन किया कि एक दुकान में नौकरी मिली है। अब मुझे फिर से परिवार से पहले की तरह सम्मान मिलने लगा है।

उस रात अनंतराम को नींद नहीं आई। सुबह होते ही उठकर दरवाजा खोला तो पत्नी ने कहा, ''सुबह-सुबह उठने की क्या जरूरत है? सारा दिन क्या करेंगे?'' अनंतराम हताश हो गया। हृदय की पीड़ा बढ़ने लगी।

इतने में बहू ने आकर पूछा, ''बाबूजी, क्या पकाना है?'' अनंतराम ने झिड़कते हुए कहा, ''मुझसे क्यों पूछती हो, अपने पति से पूछो।'' बहू अवाक् रह गई।

रोज अनंतराम अपने परिवार के लोगों पर गुस्सा होते, झिड़कते; रोज अकेले बैठकर सोचते, दु:खी हो जाते। पिता को इस अवस्था में देखकर बेटे के मन में अनेक विचार उत्पन्न होते।

उस रात आठ बजे परिवार के सभी लोग खाना खाने के लिए बैठे। अनंतराम ने धीरे से कहा, ''ट्यूशन सेंटर में अध्यापक का काम मिला। मैंने नौकरी करने का निश्चय किया है।'' परिवार के लोग चकित हो गए। बेटे ने कहा, ''पापा, आपको क्या हो गया। हम नौकरी करने से ही इज्जत देनेवाले लोगों में से नहीं हैं। पापा, हम कौन हैं, कैसे हैं? आपने हमें पाला-पोसा, बड़ा किया। हमारे हृदय में आपकी क्या जगह है, आप नहीं जानते! सोचिए, खूब सोचिए। रिटायर होने के बाद से हम बदल गए हैं क्या? आप नौकरी करें या न करें, हमारे दिल में आपका स्थान ऊँचा एवं पवित्र है और हमेशा रहेगा। हम सब एक हैं।

बेटे की बातें सुनते-सुनते अनंतराम के हृदय की पीड़ा समाप्त हो गई। उनके अधरों पर मुसकान खिल गई।

प्लॉट नं. २०३, वैशाखी टावर्स, स्प्रिंग रोड
विशाखापत्तनम-५३०००२ (आंध्र प्रदेश)
दूरभाष : ८०१९६९१७८९

प्रेम तलाशता है प्रेम

मूल : **कार्लोस द्रुमोंद दि अंद्रादे**

अनुवाद : **बालकृष्ण काबरा 'ऐतेश'**

सुप्रसिद्ध ब्राजीलियाई कवि-रचनाकार कार्लोस द्रुमोंद दि अंद्रादे का जन्म ब्राजील के दक्षिणी-पूर्वी क्षेत्र के माइनिंग विलेज, मिनैज जेराइज में ३१ अक्तूबर, १९०२ को हुआ। वे सरकारी सेवा में रहे, किंतु साथ-ही-साथ उन्होंने पारंपरिक रूपों से अलग सशक्त काव्य-लेखन किया। वे ब्राजीलियाई आधुनिकतावादी काव्य-लेखन में अग्रणी रहे। वे अपने देश के सबसे लोकप्रिय और सर्वाधिक अनूदित कवि हैं। १७ अगस्त, १९८७ को उनका निधन हुआ। यहाँ उनकी कुछ कविताएँ दे रहे हैं।

मैं रच रहा हूँ एक गीत

मैं रच रहा हूँ वह गीत,
जहाँ मेरी माँ व सभी माँएँ
देखेंगी स्वयं का प्रतिबिंब,
वह गीत जो बोलता दो नयनों की तरह।

मैं चल रहा हूँ उस सड़क पर
जो गुजरती कई गाँवों से,
लोग मुझे नहीं देख पाते हों किंतु मैं
देखता और सलाम करता पुराने मित्रों को।

मैं खोल रहा हूँ रहस्य उस व्यक्ति की तरह
जो प्रेम करता या मुसकराता है।
प्रेम तलाशता है प्रेम
बड़े ही स्वाभाविक तरीके से।

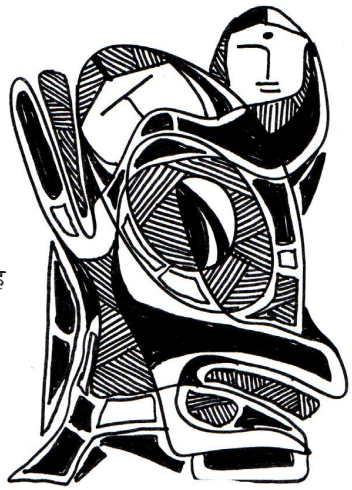

मेरा जीवन, हम सबका जीवन
रचता बस एक नगीना,
मैंने सीखे नए शब्द
किया प्रयोग अन्य शब्दों का बड़ी सुंदरता से।

मैं रच रहा हूँ एक गीत
लोगों को जगाने
बच्चों को सुलाने।

तुम्हारे कंधों ने उठा रखी है दुनिया

वह समय आ जाता है जब आप
और नहीं कह सकते, ओ मेरे भगवान्!
वह समय पूर्णतः परिमार्जन का
वह समय जब आप और नहीं कह सकते, ओ मेरे प्यार!
क्योंकि प्यार सिद्ध हो चुका है व्यर्थ,
कि आँखें रोती नहीं
कि हाथ केवल करते हैं अनगढ़ काम
कि हृदय है शुष्क।

स्त्रियाँ व्यर्थ ही देती हैं दस्तक तुम्हारे दरवाजे पर,
जो तुम खोलते नहीं।
तुम रहते हो अकेले, बत्तियाँ बुझी हुई हैं,
और अँधेरे में चमकती हैं तुम्हारी विशाल आँखें
जाहिर है तुम अब नहीं जानते हो कैसे सहते हैं पीड़ा
यह भी कि तुम अपने मित्रों से भी कुछ नहीं चाहते।

कौन करता है परवाह यदि बुढ़ापा आता है—क्या है बुढ़ापा?
तुम्हारे कंधों ने उठा रखी है दुनिया
और है यह एक बच्चे के हाथ से भी हल्की
युद्ध, अकाल, मकानों के भीतर पारिवारिक झगड़े
सिद्ध करते हैं केवल यही कि जीवन चलते रहता है,
कि किसी ने भी अभी तक स्वयं को नहीं किया है मुक्त
कुछ (जो नाजुक हैं) इस नजारे को मानते हुए क्रूर
पसंद करेंगे मरना।
वह समय आ जाता है जब मृत्यु नहीं करती सहयोग
वह समय आ जाता है जब जीवन होता है एक जरूरत
सिर्फ जीवन, बिना किसी बचाव के।

पुरातन दुनिया का स्मरण

क्लारा बच्चों के साथ बगीचे में घूम रही थी
हरी घास से लगता था आसमान हरा
पुलों के नीचे था स्वर्णिम जल
अन्य दृश्य थे नीले, गुलाबी, नारंगी
एक पुलिसवाला मुसकरा रहा था
लोग जा रहे थे साइकलों से
एक लड़की आई लॉन में चिड़िया पकड़ने,
क्लारा के लिए सबकुछ था शांत
समूची दुनिया–जर्मनी, चीन

बच्चों ने देखा आकाश, इसके लिए नहीं थी मनाही,
मुँह, आँख, कान सब खुले थे, नहीं था कोई खतरा
क्लारा को डर था फ्लू, गरमी और कीड़ों से
क्लारा को डर था कहीं छूट न जाए ग्यारह बजेवाली गाड़ी
वह इंतजार करती थी पत्रों का, जो आते थे बमुश्किल
वह नहीं पहन पाती थी हमेशा नया ड्रेस
लेकिन वह घूमती थी बगीचे में सुबह–सुबह
उन दिनों उनके पास थे बगीचे, थीं सुबहें।

अनकही इच्छा

काश! मेरे पास हो साहस
कि कह सकूँ यह अनकही बात
कि दुनिया को बता सकूँ
इस प्रेम के बारे में,
नहीं है मुझमें चाहत की कमी
नहीं है मुझमें इच्छा की कमी
कि तुम हो मेरी चाहत
मेरी सबसे बड़ी इच्छा,
काश! मैं चीख–चीखकर बता सकता
इस भले दीवानेपन के बारे में
तुम्हारी बाँहों में समा जाने
तुम्हारे चुंबनों में खो जाने की
इच्छाओं के उन्माद में
मैं सुनाना चाहता हूँ कविताएँ,
गाना चाहता हूँ चारों दिशाओं में
कि शब्द उमड़ते हैं
तुम्हारी प्रेरणा से
मैं बात करना चाहता हूँ सपनों के बारे में
बताना चाहता हूँ अपनी अप्रकट इच्छा के बारे में
कि छोड़ सकता हूँ सबकुछ
तुम्हारे साथ रहने के लिए
है यह मेरी अनकही इच्छा।

बचपन

मेरे पिता चले खेतों की ओर घोड़े पर सवार होकर
मेरी माँ बैठी कुरसी पर और करने लगी सिलाई
मेरा नन्हा भाई ले रहा है नींद
और मैं अकेले आम्र–वृक्षों तले
पढ़ रहा हूँ कहानी रॉबिंसन क्रुसो की
एक लंबी कहानी जो कभी समाप्त नहीं होती

दोपहर की श्वेत रोशनी में एक आवाज
बुलाती है हमें कॉफी पीने के लिए
वह आवाज जिसने गुलामी के दिनों में
झुग्गियों में सीखी थीं लोरियाँ
जिन्हें वह भूली नहीं कभी
कॉफी उस बूढ़ी–साँवली नौकरानी के रंग की
कड़क कॉफी, बढ़िया कॉफी।

मेरी माँ अभी भी बैठीं, सिलाई करतीं,
मेरी ओर देखकर कहतीं—
'श···श···बेबी को जगाना नहीं।'
तभी पालने पर बैठ जाता एक मच्छर
और वह गहरी···आह भरतीं।

दूर मेरे पिता कर रहे थे सवारी
खेतों के निस्सीम चारागाह में।

और मुझे पता न था कि मेरी कहानी
रॉबिंसन क्रूसो की कहानी से भी ज्यादा अच्छी है।

कविता शुद्धीकरण की

अनेक युद्धों के बाद
भले फरिश्ते ने मार गिराया दुष्ट फरिश्ते को
और उसका शव फेंक दिया नदी में

पानी लहू से हुआ लाल ऐसा
कि न पड़ा फीका
और मर गईं सारी मछलियाँ

किंतु एक दिन दुनिया को रौशन करने
चला आया प्रकाश,
कोई नहीं जानता आया कहाँ से,
और योद्धा फरिश्ते के घाव का
किया उपचार एक–दूसरे फरिश्ते ने।

११, सूर्या अपार्टमेंट रिंग रोड, राणाप्रताप नगर
नागपुर (महाराष्ट्र)–४४००२२
दूरभाष : ९४२२८११६७१

भँवरजी म्हाने खेलण द्यौ गणगौर

● स्नेहलता

होलिका दहन के दूसरे दिन से ही राजस्थान में गणगौर पूजन की गूँज होने लगती है। सूर्योदय से पूर्व ही किशोरावस्था की बालिकाएँ घर से निकलकर दूब लेने जाती हैं। समूह बनाकर दूब लेकर आती हैं। घर पर वे दूब से शंकर-पार्वती की प्रतीक प्रतिमा ईश्वर-गौरा का पूजन करती हैं। राजस्थान में गणगौर शंकर-पार्वती की आराधना का प्रमुख त्योहार है। सामान्यत: इसे गौरी पूजा कहते हैं। गणगौर 'गौरी' का ही पर्यायवाची है। गणगौर महिलाओं का प्रमुख त्योहार है। कोई भी महिला कुमारी हो अथवा विवाहित इसे हमेशा मनाती है। कुमारी कन्याएँ श्रेष्ठ वर की प्राप्ति की अभिलाषा पूर्ण होने के लिए इसका पूजन करती हैं। दूसरी तरफ विवाहित महिलाएँ अपना सुहाग अमर बनाए रखने के लिए इसे बड़े उत्साह और उमंग के साथ मनाती हैं। जोधपुर, बीकानेर, शेखावाटी तथा जयपुर में गणगौर त्योहार के उपलक्ष्य में लगनेवाले मेले देखने योग्य होते हैं, इस प्रकार गणगौर राजस्थान का एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक त्योहार है।

महत्त्वपूर्ण बात तो यह है कि राजस्थान की गणगौर तीज का मेला देखने विदेशी पर्यटक भारत आते हैं। जयपुर में त्रिपोलिया से शाही गणगौर तीज की प्रतिमाएँ बहुत ही धूमधाम से निकाली जाती हैं।

चाहें इसे गणगौर कहें अथवा गबर, गबजा। इन सब शब्दों का एक आशय और अर्थ होता है। इस त्योहार के दिन कुँवारी और विवाहित दोनों ही महिलाएँ व्रत रखकर इसका पूजन करती हैं, कथा-श्रवण करती हैं, गीत गाती हैं। जैसा कि उल्लेख है कि गणगौर पूजा चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से आरंभ होकर चैत्र शुक्ला चतुर्थी को समाप्त होती है। पूरे अठारह दिनों तक राजस्थान में चहल-पहल रहती है। होली दहन के दूसरे दिन ही प्रात: उसकी राख लेकर अंडाकार गोलियाँ बनाई जाती हैं। उन्हें गौरी का प्रतीक मानकर पूजा जाता है।

आठवें दिन शीतलाष्टमी को तालाब से चिकनी मिट्टी लाकर उससे ईसर (ईश्वर) व गौरी की प्रतिमाएँ निर्मित कर उसी में होली की राख की जो गोलियाँ बनाई गई थीं, उन्हें मिला दिया जाता है। प्रतिदिन उन्हें पूजा जाता है। एक छोटे गमले में मिट्टी डालकर जौ मिला दिए जाते हैं। तीन-चार दिनों के उपरांत उनमें अंकुर प्रस्फुटित होने लगते हैं। उनकी अनवरत बढ़त होती रहती है। पूजा की समाप्ति के दिन यही जुहारे महिला-पुरुष-बालक, सभी अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

सुपरिचित लेखिका। अब तक दो काव्य-संग्रह, चार कहानी-संग्रह एवं विगत दो दशकों से अनेक राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। आकाशवाणी जयपुर से कविताओं का अनवरत प्रसारण। संप्रति राजकीय सेवा में—व्याख्याता।

गणगौर पूजन के समय गीत भी गाए जाते हैं। पूजा का मुख्य दिन चैत्र शुक्ला तृतीया होता है। सभी घरों में इस दिन अपनी सामर्थ्यानुसार लापसी या सीरा बनाया जाता है, जो गणगौर प्रतिमा पर प्रसादस्वरूप चढ़ाया जाता है। उसके पश्चात् शुभ मुहूर्त देखकर प्रतिमाओं को जल में विसर्जित कर दिया जाता है।

चैत्र शुक्ला तृतीया व चतुर्थी को गबर की सवारी निकलती है, जो सामान्यत: 'गबर का मेला' कहलाता है। चतुर्थी को विभिन्न ठिकानों, सेठों आदि की मूर्तियों के साथ सवारी निकलती है। ये प्रतिमाएँ ईसर व गौरा राजस्थानी वेशभूषा में होती हैं। इसमें उस क्षेत्र के सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिलित होते हैं। अस्तु, अच्छा-खासा मेला लग जाता है। यह मेला वर्ष भर के मेलों में सबसे श्रेष्ठ होता है। महिलाएँ रंग-बिरंगे वस्त्रों व आभूषणों से लदी रहती हैं। वे सभी अपने-अपने गबरे सिरों पर लिये होती हैं। महिलाएँ गबरों को बिठाकर गाते समय घूम भी डालती हैं। मेले के अतिरिक्त कॉलोनियों व मोहल्लों में भी गबरे सजाए जाते हैं। महिलाएँ गाती-नाचती हैं और घूम डालती हैं।

सवारी देखने के लिए क्या हिंदू, क्या मुसलिम, सिक्ख और ईसाई—सभी वर्ग-संप्रदाय के व्यक्ति बड़े जोश-उमंग के साथ आते हैं, उसे सांप्रदायिक सद्भावना के स्नेह का संगम कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

गणगौर पूजन पर सभी समुदायों द्वारा गाए जानेवाले गीत भी बड़े मनभावन और रंगीन होते हैं। इसमें एक तो यह गीत जो प्रमुख रूप से गाया जाता है, उसकी प्रथम पंक्ति द्रष्टव्य है—

भँवरजी म्हाने पूजन द्यौ गणगौर।
भँवरजी म्हाने खेलण द्यौ गणगौर॥
ओ जी! म्हारा सैंया जोबे बाट

विलाला म्हाने खेलणद्यौ गणगौर।
ओ जी! म्हारे बिछिया रतन जडाए॥
भँवरजी म्हाने खेलण द्यौ गणगौर।
विलाला म्हाने खेलण द्यौ गणगौर।

दूसरा गीत इस प्रकार है—

म्हारे माथा ने महिमय लाव,
म्हारा हँजा मारू याहीं रेवोजी,
याहीं रहौ उगंता सूरज इंहा ही रेवोजी,
थाने कोटे-बूँदी में हौसी गणगौर
म्हारा हँजा मारू याहीं रेवोजी।

इसी तरह जब गणगौर पूरी जाती है तो महिलाएँ हाथ में दूब लेकर पानी से स्पर्श कर छींटे मारती हुई गाती हैं—

गबर गणगोर माता, खोल किंवाड़ी
बाहर ऊबी थारी पूजण वाड़ी
पूजा ए, पुजारयाँ बायाँ, असण कासण माँगा
जण, हरजामी बाबो माँगो, राता देओ माँएँ
कान्ह कवर सो वीरा माँगा राओ सी भौजाई,
साँवलियाँ बहनोओ माँगा,
सोदरा बहन माँगा,
हाँड़ा धोवण फूफो माँगा झाड़ू देवण भूवाँ॥

गुप्ता सदन, एस.बी.के. गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल के पास,
मंडी अटलबंद, भरतपुर-३२१००१ (राजस्थान)
दूरभाष : ०९८२८५३९५७५

गीत

साँसों ने कसमों से खेली होली

● **आर.सी. शुक्ल**

गीतों का घर छोड़ गए तुम
स्वर को बिना बताए,
जैसे धूप बिना बोले
आँगन से छत पर जाए।

चौराहे पर खड़ी उम्र को
पश्चात्ताप मिला है,
आत्मभाव के बदले मन को
चिर संताप मिला है।
आकृतियाँ निर्जीव हो गईं,
मुखर हो गए साए।

आत्मसमर्पण अनासक्त होकर
चुपचाप खड़ा है,
अंधकार का पहरा
मंदिर टूटा हुआ पड़ा है।
मंत्रों का उच्चारण करके
दीपक कौन जलाए?

परिवर्तन पहचान छीनकर
जाने कहाँ गया है,
बिंबों, प्रतिबिंबों का जीवन
बिल्कुल नया-नया है।
समय बाँटता है हम सबको,
अपने और पराए।

कंचन सी काया में
चाँदी सा मन,
महका है प्रणय प्राण
जैसे चंदन।

सतयुग-सा बीता कल
त्रेता सा आज,
रख लेना कल भी
तुम द्वापर की लाज।
वानप्रस्थ लेने को
तत्पर बंधन।

खोकर भी पाया है
सबकुछ ऐसे,
दर्पण में प्रतिबिंबित
अर्पण जैसे।
चरणों को याद
किया करता आँगन।

आओ सपनों को
हम मिलकर तोड़ें,
कोहरे की संध्या से
रिश्ता जोड़ें।
मकड़ी के जालों का
ले लें चुंबन।

जीता हूँ मैं
यद्यपि हारा विश्वास,
सीलन में डूब गई
पत्थर की आस।

बालू से पानी तक
फैली है आग,
रेशमीन कपड़ों पर
कीचड़ के दाग।
चादर में लिपटा है,
गूँगा इतिहास।

तुमने ही मोह दिया
तुमने यह ज्ञान,
अपने ही शब्दों से
छोटा इनसान।
आँखों से दूर
कभी साँसों के पास।

अवगुंठित अभिलाषा,
क्वारा ईमान,
हमदर्दी आई है,
बनकर मेहमान।
वर्षा में भीगी है,
बर्फ-सी कपास।

छोटा सा दिन था वह
छोटी सी रात,
देहरी से द्वारे तक
फैल गई बात।

साँसों ने कसमों से
खेली होली,
संज्ञा ने श्रद्धा की
भर दी झोली।
दर्पण को पत्थर से,
पहुँचा आघात।

पानी पर गीत लिखा
बालू पर नाम,
दीमक ने कागज पर
पाया विश्राम।
मिट्टी के सपनों पर
हँस दी बरसात।

करुणा का जन्म हुआ
पीड़ा का ब्याह,
रीते दो कलश देख
सहम गई चाह।
नीरवता साथ लिये
आई बारात।

एम.आई.जी. ३३, रामगंगा विहार
फेज-२, मुरादाबाद (उ.प्र.)
दूरभाष : ९४११६८२७७७

मनोहारी केरलम्

• रेणुका बड़थ्वाल

केरल, मालाबार तट पर स्थित तथा अरब सागर से तटरेखा बनाता यह दक्षिणी राज्य 'गॉड्स ऑन कंट्री' यानी ईश्वर का अपना देश कहा जाता है। यह 'वाक्य' पर्यटक लुभावन जुमला मात्र नहीं है, वरन् केरल के ईश्वर प्रदत्त अप्रतिम सौंदर्य व संस्कृति का प्रतीक है।

४ अक्तूबर, २०१७ को इंडिगो एयरलाइन के साथ सवेरे जयपुर से ९:०५ बजे यह सफर शुरू हुआ और बंगलुरु होते हुए लगभग १२:५५ बजे कोच्चि (कोचीन) पहुँच गई। कोचीन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा विश्व का पहला सौर ऊर्जा संचालित हवाई अड्डा है।

कोचीन भौगोलिक रूप से दो क्षेत्रों—एर्नाकुलम (मुख्य भूमि क्षेत्र) तथा प्रायद्वीपीय क्षेत्रों फोर्ट-कोच्चि व मत्तनचेरी में बँटा है। मैंने यात्रा हेतु सर्वप्रथम फोर्ट-कोच्चि को चुना। लगभग दोपहर तीन बजे मैं अपने 'अस्थायी ठिकाने' यानी होम स्टे पहुँच गई। होम स्टे हमेशा मुझे स्थानीय लोगों के बीच रहने, उनकी संस्कृति, रहन-सहन को प्रत्यक्षत: जानने का अवसर देता है। अपने कमरे में सामान व्यवस्थित करने व थोड़ा सुस्ताने के बाद मैंने अपने कदमों से ही फोर्ट कोच्चि की गलियों को मापने का मानस बनाया।

प्रिंसेस स्ट्रीट, बर्गर स्ट्रीट व लिलि स्ट्रीट कहीं चौड़ी, कहीं संकरी, ये गलियाँ, जो छोटी दुकानों, रेस्टोरेंट्स, होम स्टे से अँटी हैं। ये गलियाँ अंतर्जाल बनाती हुई मुख्य सड़कों के.बी. जेकब रोड, एलफिंस्टन रोड, रीवर रोड इत्यादि से जुड़ती हैं। फोर्ट कोच्चि के ये रास्ते शहरी खचाखच, भागमभाग व शोरगुल से बिल्कुल अलग सुकून व असीम शांति का एहसास करवाते हैं।

५ अक्तूबर की सुबह का आगाज मुरगे की बाँग, भोर की अजान, मलयालमी आरती और बॉलीवुड गानों के संगम से हुआ। नाश्ते में परोसे गए डोसा-आलू कढ़ी से तो आत्मा तृप्त हो गई।

पर्यटक के रूप में मेरा पहला गंतव्य स्थल था—मत्तनचेरी पैलेस। लगभग सुबह १० बजे मैं यहाँ पहुँची। 'डच पैलेस' के नाम से मशहूर यह पैलेस केरल के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक स्वरूप का विशाल भंडार है। यहाँ केरल के शाही परिवार की पीढ़ियाँ उनकी जीवन-शैली, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक पहलुओं को सुंदरता से सँजोकर रखा गया है। रामायण-महाभारत की गाथा कहते तथा विष्णु-शिव को साक्षात् उकेरते भित्ति चित्रों ने मन मोह लिया।

लगभग ११ बजे एंटीक म्यूजियम का सफर तय किया, जो आश्चर्य में डालनेवाला था। १२० वर्ष पूर्व के केरोसिन पंखा व फ्रिज, १५० वर्ष पुरानी कुरान और ५००० वर्ष पुरानी नियोलिथिक एक्स किसी को भी आश्चर्य में डाल सकती है। इसी म्यूजियम के सामने स्थित है—पर्यटन पुलिस म्यूजियम। केरल पर्यटन पुलिस की उत्तरोत्तर प्रगति, पुलिस वाहन एवं हथियारों का उद्विकास तथा यूनिफॉर्म व फिंगर प्रिंट्स को साक्षात् देखना अनूठा अनुभव था।

नवोदित रचनाकार। पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएँ प्रकाशित। वि.हि. सचिवालय की अंतरराष्ट्रीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार के साथ-साथ 'डॉ. सरला अग्रवाल कहानी पुरस्कार' तथा राजस्थान साहित्य अकादमी से कहानी पुरस्कृत। संप्रति राजस्थान विश्वविद्यालय में विधि संकाय में अध्ययनरत।

केरल भ्रमण हो और कथकली का आनंद न उठाया जाए, यह तो हो ही नहीं सकता। फोर्ट-कोच्चि के केरल कथकली केंद्र में हर शाम ६ से ७:३० बजे तक कथकली शो होता है, जिसकी ऑनलाइन टिकट मैं एडवांस में बुक करवा चुकी थी। कथकली में भाव-भंगिमा, नवरसों का संप्रेषण जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही चेहरे का मैकअप भी। शो शुरू होने से पहले कलाकार मंच पर लाइव मैकअप करते हैं। प्राकृतिक रंग, चावल की लुगदी व नारियल तेल इत्यादि का प्रयोग मुख सज्जा हेतु किया जाता है। सुमधुर संगीत, चेंदा की थाप और कलाकारों की मेहनत कथकली को मनमोहक बनाते हैं।

अगले दिन यानी ६ अक्तूबर को मेरी मंजिल थी—कुमली। सवेरे ही केरल स्टेट ट्रांसपोर्ट बस से मेरा सफर ६:१५ बजे शुरू हुआ। स्थानीय लोगों के बीच बस का सफर बड़ा ही रोचक था। कॉर्डेमम पहाड़ियों के घुमावदार रास्ते और सुपरफास्ट बस—कभी दाएँ, तो कभी बाएँ जाती, मेरा आनंद तो दुगुना हो उठा। बस में 'इजी मित्तायी (अदरक चॉकलेट) व उन्नी अप्पम्' (उत्तर भारतीय गुलगुले जैसा व्यंजन) का लुत्फ उठाने से मैं नहीं चूकी।

कुमली, थेकड्डी के पास (इडुक्की जिला) स्थित उपनगरीय पर्यटन स्थल है। एक 'सोलो बूमर ट्रेवलर' को देख ऑटो रिक्शा चालक या स्थानीय लोग आपकी परेशानी का सबब नहीं बनते, बल्कि सहर्ष व उत्साह से वे आपकी मदद के लिए आगे आते हैं। ऑटो रिक्सा चालक की मदद से मैं कुमली में अपने 'होम स्टे' तक पहुँच गई।

कुमली में शाम ६ बजे के लिए मैं पहले ही कलारीपयट्टू शो की टिकट बुक करवा चुकी थी। 'कलारीपयट्टू' केरल की प्राचीन मार्शल

आर्ट पद्धति है। शो का प्रारंभ पुत्तारा यानी सात परतों में दीप-प्रज्वलन के साथ हुआ। हवा में गुलाटी खाते, मुद्रा तथा कदम का तारतम्य बनाते कलाकारों की चपलता एवं शारीरिक लचीलेपन ने मन मोह लिया। आक्रांता की गति और शक्ति का अनुमान लगाते हुए आत्मरक्षा करने की कला ने सभी को अचंभित कर दिया। कुमली में ही केरला पराँठा, चेट्टीनाद डोसा और मेजबान द्वारा परोसी गई कडाला कढ़ी-चावल से जिह्वा आस्वादित हो उठी।

अगले सवेरे ७ अक्तूबर को लगभग ७:३० बजे कुमली स्थित केरल पर्यटन केंद्र पहुँची, जहाँ से बस द्वारा यात्रियों को पेरियार राष्ट्रीय पार्क ले जाया गया। यहाँ से लगभग सुबह सवा नौ बजे मैं बोट में सवार हो गई और शुरू हुआ पेरियार झील से गुजरते हुए प्रकृति की अकूत संपदा को आत्मसात् करने का सफर। नावों के लिए रास्ता बनाते, झील में डूबे हुए वृक्ष ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो पटकथाकार मनोहारी प्रकृति की गाथा को सूत्रों में पिरोने के लिए स्वयं मंचस्थ हो। सदाबहार, शुष्क एवं आर्द्र वनों की छटा, हरीतिम दिशाएँ तथा झील के पानी पर लहराती सूरज की किरणें एक जादुई एहसास करवाती हैं। एक बात और, हथिनी जयलक्ष्मी के साथ थेकड्डी के जंगलों का सफर तो मैं कभी नहीं भूल सकती।

अगली सुबह ८ अक्तूबर को चार घंटे का सफर तय कर मैं अलप्पी-वेनिस ऑफ द ईस्ट (अलापुझा, प्राचीन नाम) पहुँची। शाम के वक्त अलप्पी समुद्र तट पर कुछ वक्त बिताया। समुंदर की अथाह लहरें जब पैरों के तलवों को स्पर्श करती हैं तो लगता है, मानो संग चलने का बुलावा दे रही हों। इन लहरों की आवाज के सामने बाहरी-आत्यंतिक किस्म-किस्म का शोर भी शांत होने लगता है। इंडियन कॉफी हाउस की केरल स्पेशल ब्लेक कॉफी और केरल कोयर इंटरनेशनल फेस्टिवल के जुट उत्पादों ने यात्रा के आनंद को दुगुना कर दिया।

९ अक्तूबर को मैं अलप्पी से कोट्टयम के बीच बैकवाटर्स की यात्रा का लुत्फ उठाने को तैयार थी। सवेरे ९:३० बजे मैं केरल गवर्नमेंट बोट जेटी स्थल पर पहुँच गई और १० बजे अलप्पी से बोट रवाना हुई। बैकवाटर्स यानी झीलों व लैगून की लंबी शृंखला, जहाँ स्ट्रीम्स व कैनाल का संगम होता है। ढाई घंटे की इस यात्रा के दौरान केरल का ग्रामीण जीवन साकार हो उठा। मोटरबोट में लगी घंटी के टन-टन करते ही बोट रुकती-चलती, सवारियों को उतारती-चढ़ाती आगे बढ़ती है।

बैकवॉटर्स में हाउसबोट्स शिकारा में सवार यात्री और डोंगी या छोटी नाव खेते सैकड़ों माँझी देखे जा सकते हैं। आश्चर्य तो तब हुआ, जब मैंने डोंगी में आइसक्रीम की चलती-फिरती दुकान बैकवाटर्स से गुजरती देखी। जहाँ भी नजर दौड़ाओ, वहाँ कुररी के झुंड और उड़ान भरती किंगफिशर चिड़िया। चहुँओर पाम के पेड़ व केवड़े की झाड़ियाँ तथा पत्तेदार पौधे, तो वहीं धान के खेतों की धनक। इन मनोहारी दृश्यों को शब्दों में बाँध पाना सहज नहीं है।

केरल यात्रा के समापन का वक्त नजदीक आ गया था। ११ अक्तूबर को सवेरे जयपुर के लिए एयर इंडिया की फ्लाइट लेनी थी। १० अक्तूबर को ही अलप्पी से एर्नाकुलम आने का मानस बनाया, क्योंकि कोच्चि हवाई अड्डा यहाँ से महज ४५ मिनट की दूरी पर है। 'केरली' केरल राज्य हैंडीक्राफ्ट स्टोर से कसाओ (केरल), साड़ी कथकली मुखौटा तथा छोटे हाथी का आइकन यात्रा की स्मृति के रूप में जरूर खरीदा। ११ अक्तूबर को मैं केरल की मनोहारी स्मृतियों को लेकर इस उम्मीद के साथ जयपुर पहुँची कि २०१८ का आनेवाला ओणम पुन: केरल स्मृतियों को जीवंत कर देगा।

२०५, सुभाष नगर, वार्डन नं.-२३
सरदार शहर, जिला-चुरू-३३१४०३ (राजस्थान)
दूरभाष : ०९६८०२६८०९०

बाल-कविता

पिचकारियाँ

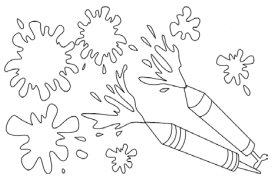

● फहीम अहमद

हँसी लुटाती खुशी लुटाती
लो आई पिचकारियाँ।

रंग अनोखे इसके अंदर
बड़ी रुपहली लगतीं सुंदर।

रंग-बिरंगी भाँति-भाँति की
मन भाई पिचकारियाँ।

छोटी, मोटी, लंबीवाली
पिचकारी लग रही निराली।

नन्हे-मुन्ने हर इक दिल पर
हैं छाई पिचकारियाँ।

हरी-गुलाबी नीली-पीली
पिचकारी है रंग-रंगीली।

सजा रहीं होली पर हर घर
अँगनाई पिचकारियाँ।

ढोल-मंजीरे बजते ढम-ढम
नाच रहे हैं सारे छम-छम।

बजा रही हैं रंग-बिरंगी
शहनाई पिचकारियाँ।

मकान नं. ४८५/३०१,जेलर्स बिल्डिंग,
बब्बूवाली गली, लकड़मंडी,
डालीगंज, लखनऊ-२२६०२०(उ.प्र.)
दूरभाष : ०८८९६३४०८२४

कहाँ गई चेतना?

● पवन चौहान

चेतना कुछ दिनों से स्कूल नहीं आ रही थी। कक्षा-अध्यापक ने सभी बच्चों से चेतना के बारे में पूछताछ की, लेकिन कोई भी उसके न आने के बारे में नहीं बता पाया। चेतना का घर गाँव से काफी दूर एक सुनसान जगह पर था। उस तरफ इन बच्चों का जाना ही नहीं होता था। चेतना अपने माँ-बाप की इकलौती संतान थी। उसके पिता दूसरे राज्य के नागरिक हैं और माँ इसी इलाके की निवासी। उसके पिता बहुत साल पहले इस गाँव में ईंटें डालने के लिए आए थे। चेतना की माँ और पिता ने यहीं शादी कर ली। लेकिन गाँववालों ने चेतना की माँ को ईंटें डालनेवाले के साथ शादी करने के कारण गाँव से निकाल दिया था। चेतना के पिता ने जोड़-तोड़ करके गाँव से बाहर इस सुनसान इलाके में मकान बनाने लायक थोड़ी सी जमीन ले ली थी। वे अब बढ़ई बन गए और माँ घर में ही अपने परिवार व गाय का खयाल रखती थी।

चेतना जहाँ पढ़ने-लिखने में अव्वल थी, वहीं स्कूल के अन्य कार्यक्रमों में भी आगे ही रहती। इसलिए सभी अध्यापक उसे खूब चाहते थे। लेकिन जब चेतना काफी दिनों से स्कूल नहीं आई तो अध्यापकों को उसकी फिक्र होने लगी। सब उसकी पढ़ाई के लिए चिंतित हो रहे थे, क्योंकि इस बार उसकी दसवीं की बोर्ड की परीक्षाएँ थीं। स्कूल के मुध्याध्यापक ने चेतना की गैरहाजिरी का कारण जानने के लिए गणित के अध्यापक और हिंदी की अध्यापिका को चेतना के घर भेज दिया।

चेतना के घर का पता पूछते-पूछते आखिरकार दोनों अध्यापक उसके घर तक पहुँच ही गए। उन्होंने देखा, घर के आँगन के एक पेड़ के नीचे बैठी चेतना किताब खोलकर कुछ पढ़ रही है। यह देखकर उन्हें बहुत अच्छा लगा।

जब दोनों अध्यापक चेतना के सामने पहुँचे तो उन्हें देखकर चेतना जहाँ हैरान सी रह गई, वहीं बहुत खुश भी हुई। अध्यापकों ने जब उससे स्कूल न आने का कारण पूछा तो वह उदास हो गई। उसने बताया कि कुछ दिन पहले उसके पिता का एक्सीडेंट हुआ, जिसमें उनकी टाँग में बहुत ज्यादा चोट आई है। डॉक्टरों ने उन्हें डेढ़ महीने के सख्त आराम की सलाह दी है। इसी दौरान माँ को भी टाइफाइड ने इतनी बुरी तरह से जकड़ा कि वे चलने-फिरने की हिम्मत भी नहीं जुटा पाती थीं। वे बहुत कमजोर हो गई थीं। डॉक्टर ने उन्हें भी पूरी तरह से आराम करने के लिए कहा है। माता-पिता के स्वस्थ होने तक अब घर का सारा काम, पशुओं की देखभाल सब मुझे ही करना है। बस सर, इसलिए मैं स्कूल नहीं आ पाई।

''परंतु चेतना, तुम्हारी पढ़ाई का क्या होगा? तुम्हें पता है न कि इस बार तुम्हारी बोर्ड की परीक्षाएँ हैं।'' अध्यापिका चेतना को समझाते हुए बोलीं।

''जी मैम, इसीलिए मैं खाली समय में घर पर ही सभी विषयों के अगले अध्याय स्वयं पढ़ने-समझने की कोशिश करती रहती हूँ। जो बात मुझे समझ नहीं आती, उसे मैं एक अलग कॉपी में लिख रही हूँ। उन्हें मैं स्कूल में अध्यापकों से पूछूँगी।'' चेतना का चेहरा आत्मविश्वास से लबालब था। वह आगे बोली, ''सर, मैंने गणित के कुछ प्रश्न नोट किए हैं। यदि आपके पास थोड़ा सा समय हो तो क्या आप मुझे इन्हें समझा सकते हैं?''

''अरे चेतना! यह भी कोई पूछने की बात है भला। लाओ, कॉपी इधर दो। मैं तुम्हें समझाता हूँ।'' गणित के अध्यापक खुशी-खुशी बोले।

चेतना के अपने आप इस तरह से पढ़ने की बात सुनकर दोनों शिक्षकों को बहुत प्रसन्नता हो रही थी। चेतना के लिए अब उनकी सारी चिंताओं का समाधान हो चुका था।

गणित के अध्यापक आत्मीयता के साथ चेतना को उसके पूछे प्रश्नों को समझाने के लिए बैठ गए। प्रश्नों को देखते हुए वे बोले, ''अरे चेतना, बेटा, तुम तो हमारे स्कूल में चल रहे सिलेबस से काफी आगे का पढ़ रही हो। शाबाश बेटा! तुमने तो हमारी सारी परेशानियों को दूर कर दिया।''

''अरे चेतना, भई सच में तुम तो कमाल हो! घर की इस तरह की

जाने-माने साहित्यकार। ख्याति-लब्ध पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कविता, कहानियाँ प्रकाशित एवं शिमला दूरदर्शन और आकाशवाणी से कहानी और कविता पाठ। हिम साहित्य परिषद् (मंडी, हि.प्र.) द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता में कहानी 'शारदा' को द्वितीय पुरस्कार, साहित्य मंडल (नाथद्वारा) का सम्मान। संप्रति स्कूल शिक्षक (टी.जी.टी., नॉन-मेडिकल)।

परेशानियों के बावजूद तुमने पढ़ाई नहीं छोड़ी। यह तो हम सब के लिए खुशी की बात है।'' हिंदी की अध्यापिका ने कहा।

''मैम, पढ़ाई को छोड़ने की बात तो मैं कभी नहीं सोच सकती। मुझे अपनी पढ़ाई पर ही तो भरोसा है। मैं खूब पढ़ना चाहती हूँ। पढ़-लिखकर अपने माता-पिता का खोया सम्मान उन्हें वापस दिलाना चाहती हूँ।'' चेतना की बातें उसकी दृढ इच्छाशक्ति का परिचय करवा रही थीं।

इतने में चेतना की माँ चाय लेकर आ गई। वह दोनों अध्यापकों से बोली, ''मैडमजी, हमने इसे इतना कहा कि हमारी फिक्र छोड़। हम अपना खयाल रख लेंगे। तुम सिर्फ अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो। लेकिन यह कहाँ मानी! बोलती है, तुम पढ़ाई की फिक्र छोड़ो। पढ़ाई मैं कर लूँगी। बस आप एक बार अच्छे हो जाओ, फिर मैं स्कूल भी चली जाऊँगी। अब इसे कौन समझाए? इसकी सेवा ही है, जो मैं आज अपने बिस्तर से उठ पाई हूँ। भगवान् ऐसी बेटी सबको दे।'' बात करते-करते माँ की आँखें भर आई थीं।

अध्यापिका ने चेतना की माँ के कंधों पर हाथ रखते हुए कहा, ''सच में ऐसी बेटी सबको मिले।''

कुछ ही समय बाद दोनों अध्यापक चेतना को जल्द ही स्कूल आने की बात कहकर और तनाव-मुक्त होकर लौट चुके थे।

गाँव व डाक-महादेव, तहसील-सुंदर नगर
जिला-मंडी-१७५०१८ (हि.प्र.)
दूरभाष : ०९८०५४०२२४२

वन-उपवन बौरा गए

दोहे

● राजनारायण चौधरी

साँस-साँस महुआ हुई, अंग-अंग कचनार।
फागुन ने आ प्रेम से रची रंगोली द्वार॥

सतरंगी चूनर उड़ी, धन्य हुआ आकाश।
देख-देखकर जल रहे टेसू और पलाश॥

बौर आम के बाँटते भीनी-भीनी गंध।
क्यारी-क्यारी बुन रही मुसकानों के छंद॥

छत-छप्पर घर-आँगना, सबकुछ लगें अनूप।
मौसम करे ठिठोलियाँ, गदराई है धूप॥

पोर-पोर में बाँसुरी लगा टेरने कौन?
मुखर हुई है आज फिर चितवन अपनी मौन॥

चढ़ता यौवन देखकर करें इशारा लोग।
नस-नस को दहका रहा, कैसा है यह रोग॥

झाड़ी-झुरमुट में छिपी पिकी छेड़ती तान।
कौन मारता दूर से ले फूलों के बाण॥

फसलों के घुँघरू बजे इतराए खलिहान।
आए सुख-समृद्धि ले फिर फागुन मेहमान॥

उग पलाशी स्वप्न फिर मत्त हुए हैं नैन।
शहद घोलते रात-दिन ऋतु के मीठे बैन॥

राग-रंग में हैं सभी भूले होश-हवाश।
बूढ़ा भी देवर लगे, कैसा है यह मास॥

आया फागुन मास फिर, खिली पलाशी धूप।
गली-गली में लिख दिए किसने छंद अनूप॥

वन-उपवन बौरा गए, पंछी करें कलोल।
भूल गए तरु-तृण सभी अब दु:ख का भूगोल॥

नव पल्लव-पत्ते उगे, लगी थिरकने डाल।
फूटी तरुणाई लगे, गोरी को जंजाल॥

रंगों में डूबी हुई लगे आज हर बात।
सुबह गुलाबी है, हुई संदली-संदली रात॥

रस-लोलुप भौंरे उड़े करते-से गुंजार।
तितली अठखेली करे अपने पंख पसार॥

हवा बावरी बाँटती गंधों की सौगात।
घर-आँगन-चौपाल है रंगों की बरसात॥

क्यारी-क्यारी हँस रही दे मीठा अनुराग।
फूलों-कलियों के जगे जैसे फिर से भाग॥

लिये गुलाल-अबीर फिर मौसम खेले फाग।
लगता लगी कनेर में है वासंती आग॥

प्रेम-प्रीत की चासनी, अनुपम नेह-दुलार।
होली के रस-रंग में भींग गया संसार॥

प्रोफेसर कॉलोनी,
हाजीपुर-८४४१०१ (बिहार)
दूरभाष : ०७३२४८३९४०९

पाठकों की प्रतिक्रियाएँ

‘साहित्य अमृत’ का जनवरी अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का अपना एक स्तर है, लेकिन ‘साहित्य अमृत’ का संपादकीय अद्‌भुत है। विद्वान् संपादक के अध्ययन-चिंतन की विविधता तथा अतीत और वर्तमान की घटनाओं की पूरी समझ संपादकीय में दिखाई देती है। आदरणीय चतुर्वेदीजी की अस्वस्थता के दौरान उनके संपादकीय के बगैर प्रकाशित पत्रिका सूनी-सूनी सी लगती रही। इस अंक का संपादकीय अंतरराष्ट्रीय राजनीति से आरंभ होकर आतंकवाद, रानी झाँसी रेजिमेंट, इंदिरा गांधी, फीरोज गांधी, रामानुजाचार्य की चर्चा समेटते हुए ‘वैचारिकी’ पत्रिका पर समाप्त हुआ। गागर में सागर जैसे ये संपादकीय हमारे ज्ञान और जानकारी में वृद्धि करते हैं। अधिक कुछ कहना छोटे मुँह बड़ी बात होगी।

—Çæ. ªþcææ çÙ»×, ·¤æÙÂéÚU (©.Â.)

‘साहित्य अमृत’ के जनवरी अंक में कवयित्री मालती शर्मा की कविता ‘ये कैसे प्रेम-प्रकरण’ मुझे बहुत अच्छी लगी। कवयित्री ने भारतीय नारियों/लड़की विद्यार्थियों तथा नवयुवतियों के साथ हो रहे दुर्व्यवहार को अच्छी तरह से चित्रित किया है तथा समस्या के समाधान के उचित उपाय भी बताए हैं। कवयित्री को मेरी ओर से साधुवाद है।

—ÜæÜæÚUæ× ¥æØ, ,ßæçÜØÚU (×.Â.)

‘साहित्य अमृत’ के जनवरी अंक में चार पृष्ठ की मालती शर्मा की कविता ‘ये कैसे प्रेम प्रकरण’ पढ़ी। इसे कविता के बजाय रेप-बलात्कार पर लिखा खंडकाव्य कहना ठीक होगा। समाज में फैली रुग्ण विकृत मानसिकता व उसके कारणों, विश्लेषण, स्थिति की भयावहता और छुटकारा पाने के उपायों व इलाज के जैसा सटीक विश्लेषण कविता में है। उस पर जितना कहा जाए, कम है। एक-एक पंक्ति मुहावरों के साथ ‘ताली एक हाथ से नहीं बजती’ पूरी स्थिति उभारती मन में चुभती चली जाती है। आज की जरूरत ऐसी रचना के लिए कवयित्री और ‘साहित्य अमृत’ दोनों को बधाइयाँ।

—×æÏÚUè çÌ€¹æ, ¥æ»ÚUæ (©.Â.)

‘साहित्य अमृत’ का फरवरी अंक प्राप्त हुआ। संपादकीय तो विशेष होता है। ‘प्रतिस्मृति’ में विनायक दामोदर सावरकर की पुण्यतिथि पर उनका लेख ‘अंदमान के बंदीगृह में’ पढ़ा। पता लगा कि वहाँ कैदियों-बंदियों का जीवन कैसा रहता था। वहाँ के वातावरण की जानकारी मिली। डॉ. राहुल का आलेख ‘प्रेम की अनन्य पुजारिन मीरा’ में मीराबाई के जीवन के बारे में नई जानकारियाँ दी गई हैं। जसबीर चावला की कहानी ‘सियाचिन का पेड़’ छोटी है, परंतु सियाचिन में रहनेवाले सैनिक की कहानी है। लता कादंबरी की तीन लघुकथाएँ ‘खनक’, ‘राम-राम सा’ और ‘उर्मिला क्यों मौन हो’ पढ़ीं, अच्छी लगीं। नताशा अरोड़ा का आलेख ‘उपनयन : एक सार्थक संस्कार’ पढ़ा, उसमें उपनयन का क्या महत्त्व है पढ़ने को मिला। हेमराज मीणा दिवाकर का आलेख ‘बसंत फिर आ गया’ बसंती बहार बिखेर गया। हर बार बसंत आता रहेगा। हरि जोशी का व्यंग्य ‘हे भगवान्, हर साल नोटबंदी होती रहे’ बहुत अच्छा लगा, बेटे को पिता ने सबक सिखा दिया लालच का। उषा निगम का आलेख ‘हिंदू पेट्रियट और अमृत बाजार पत्रिका’ में दोनों पत्रिकाओं का इतिहास पढ़ा। राकेश भ्रमर की कहानी ‘अंधी गुफा’ में कामनी प्रधान अध्यापिका ने भ्रष्टाचार के आगे समर्पण नहीं किया, अपनी इज्जत बचाई। ‘थैंक्यू पापा’ कहानी भी बहुत अच्छी लगी। ‘चक्रधारी हाथ’ शैलांचली बुड़ाकोटी की बहुत अच्छी कविता है, उन्हें बधाई।

—çßÙæÎ àæ·¤Ú »ŒÌ, çãâæÚU

‘साहित्य अमृत’ के जनवरी अंक में अपनी तीन लघुकथाएँ देखकर रोमांचित हो गई। नए वर्ष के प्रारंभ में ही माँ सरस्वती की कृपा से प्रकाशित रचनाओं के कारण साहित्य जगत् के प्रतिष्ठित लोगों के आशीर्वाद प्राप्त हुए, जो मेरी कल्पना से भी परे थे। मैं स्वयं भी किसी लेखक-लेखिका की रचना पसंद आने पर फोन द्वारा अपनी भावनाएँ अवश्य व्यक्त करती हूँ, किंतु स्वयं इस विषय में वंचित रही। लेकिन इस बार मुझे भी यह सौभाग्य प्राप्त हुआ। निश्चय ही पाठकों का श्रम लेखकों के मनोबल को बढ़ाने में मदद करता है। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने खुशी के ऐसे पल दिए। प्रेमपाल शर्मा का यात्रा संस्मरण ‘यह है अपना राजपूताना’ के विषय में काफी कुछ कहना चाहूँगी। आपको दिव्यांगों की असंख्य दुआएँ मिल रही हैं, जिनमें मैं भी शरीक हूँ। जिन्हें अकसर यह सुनना पड़ता है—‘क्या फायदा? देख तो सकते नहीं, चल तो सकते नहीं। फिर यात्राओं का लोभ कैसा?’ सच कहूँ, ऐसी टोका-टाकी के समय याद आता है पाठ्यपुस्तक में पढ़ा हुआ, जाकि कृपा पंगु गिरि लंघे, अंधे को दे सबकुछ दिखलाई। इन पंक्तियों में ‘जाकि कृपा’ में संकेत तो ईश्वर की ओर है, किंतु ‘साहित्य अमृत’ के माध्यम से आप जो यात्राएँ करते एवं करवाते हैं, वह आपकी कृपा है। दृष्टिहीनों की दृष्टि हैं आप। कोटि-कोटि नमन आपके असाध्य श्रम को, कलम को और उद्देश्य को। आपके सजीव यात्रा वर्णन के कारण आपके साथ-साथ असंख्य पाठकों की यात्रा नि:शुल्क हो जाती है। आपकी यात्रा का सजीव चित्रण पढ़कर वे अपनी यात्रा स्थगित कर देते होंगे या फिर स्वयं भी जाने की तैयारी करते होंगे। और भी कई कारण हैं, जिनकी वजह से यात्रा रोचक, अति-रोचक हो जाती है। जैसे चेतक के चुनाव का मनोविज्ञान। चेतक की स्वामिभक्ति देखकर महाराणा प्रताप के भाई शक्ति सिंह को शर्मिंदा होना पड़ा। उनकी वापसी हमारे लिए भी एक सबक है। इसके साथ ही मनोरंजक घटना को यात्रा के मध्य प्रस्तुत कर दिल को गुदगुदाया भी है। जैसे खुदरा न होने के कारण साठ रुपए की चपत का आनंद हमने घर बैठे लिया। लगता ही नहीं, हम उस स्थान से कोसों दूर हैं या वहीं आपके साथ-साथ। सुरेश भाई के टोकने के बावजूद आप हल्दीघाटी युद्ध की मिट्‍टी प्रसादस्वरूप अपने साथ लाए। आपकी देशभक्ति का अनूठा दृष्टांत है और यह ‘जज्बा’ आपके प्रयास से जन-जन में समाए, यही शुभेच्छा। आपकी अगली यात्रा का इंतजार रहेगा।

—·¤æ×Ü ßæÏ ßæÙè òÂÚU‡ææÓ, ©…ÁÙ (×.Â.)

वर्ग पहेली (१५०)

अगस्त २००५ अंक से हमने '**वर्ग पहेली**' प्रारंभ की, जिसे सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकों के लेखक **श्री विजय खंडूरी** तैयार कर रहे हैं। हमें विश्वास है, यह पाठकों को रुचिकर लगेगी; इससे उनका हिंदी ज्ञान बढ़ेगा और पूर्व की भाँति वे इसमें भाग लेकर अपना ज्ञान परखेंगे तथा पुरस्कार में रोचक पुस्तकें प्राप्त कर सकेंगे। भाग लेनेवालों को निम्नलिखित नियमों का पालन करना होगा—

१. प्रविष्टियाँ छपे कूपन पर ही स्वीकार्य होंगी।
२. कितनी भी प्रविष्टियाँ भेजी जा सकती हैं।
३. प्रविष्टियाँ ३१ मार्च, २०१८ तक हमें मिल जानी चाहिए।
४. पूर्णतया शुद्ध उत्तरवाले पत्रों में से ड्रॉ द्वारा दो विजेताओं का चयन करके उन्हें दो सौ रुपए मूल्य की पुस्तकें पुरस्कारस्वरूप भेजी जाएँगी।
५. पुरस्कार विजेताओं के नाम-पते मई २०१८ अंक में छापे जाएँगे।
६. निर्णायक मंडल का निर्णय अंतिम तथा सर्वमान्य होगा।
७. अपने उत्तर '**वर्ग पहेली', साहित्य अमृत, ४/१९, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२** के पते पर भेजें।

वर्ग पहेली (१४८) का शुद्ध हल

१ इ	श्त	२ हा	३ र	■	४ छा	५ न	बी	६ न
स्ते	■	७ स	जा	■	८ त्रा	स	■	सी
९ मा	१० स	■	११ मं	ग	ल	■	१२ चा	ह
१३ ल	ज्जा	१४ प्र	द	■	१५ य	१६ था	व	त
■	■	थ	■	■	■	म	■	■
१७ मा	१८ ता	म	१९ ह	■	२० ब	ना	२१ व	२२ ट
२३ द	ल	■	१४ थि	र	क	■	२५ ध	क
क	■	२६ मा	या	■	२७ वा	२८ स	■	सा
२९ ता	बे	दा	र	■	३० द	म	क	ल

★ पुरस्कार विजेता ★

१. **सुश्री रेणुका बड़थ्वाल**
२०५, वार्ड नं. २३, सुभाष नगर
सरदार शहर, जि.-चुरू-३३१४०३ (राज.)
दूरभाष : ९४६१२४९४७७

२. **सुश्री शशि शर्मा**
सी-५/८, भू-तल, आर डी सिटी
सेक्टर-५२, गुरुग्राम (हरि.)
दूरभाष : ८८४७२४२५६२

पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई।

वर्ग-पहेली १४८ के अन्य शुद्ध उत्तरदाता हैं—सर्वश्री फकीर चंद ढुल (कैथल), ब्रह्मानंद 'खिच्वी', विजयपाल सेहलंगिया (महेंद्रगढ़), प्रभात कुमार गुप्ता (मोहाली), रुक्मणी संगल (पटियाला), वाई.के. श्रीवास्तव (जबलपुर), मोहन जगदाले (उज्जैन), शिवशरण दुबे (कटनी), अपर्णा गर्ग (ग्वालियर), सौदामिनी त्रिवेदी, रजनीश कुमार त्रिवेदी (बरेली), खुशी चतुर्वेदी, ओंकार नाथ मिश्र (लखनऊ), शिवानंद सिंह 'सहयोगी' (मेरठ), संतोष शर्मा (गाजियाबाद), माणिक तुलसीराम गौड़ (बंगलुरु), नीरजा शर्मा (अहमदाबाद), रामेश्वर कुलमित्र (कबीरधाम), विपिन कुमार सिन्हा (रायपुर), सुनीता वर्मा (दुर्ग), गिरधारी लाल अग्रवाल (पुसद), मोहन उपाध्याय (अजमेर), रेणु मिश्र (जयपुर), अ. श्रीनिवासन (मदुरै), पुखराज वार्ष्णेय, बी.डी. बजाज, सुभाष शर्मा, दिनकर सहल, मुकेश जैन 'पारस', निर्मला गुजराती (दिल्ली)।

बाएँ से दाएँ—

१. आत्मीय, जिगरी (४)
४. एक काला, गाढ़ा पदार्थ, जिसे सड़कों पर बिछाया जाता है (४)
७. वह, जिसमें गद्य की अपेक्षा पद्य अधिक रहता है (५)
९. आकाश में उड़नेवाला यान (३)
११. वह स्नेह, जो माता का पुत्र के साथ होता है (३)
१३. कुत्ता (२)
१४. क्षण (३)
१६. विवाद के बाद सब पक्षों में आपसी निपटारा (४)
१७. हृदय को चुभनेवाला (४)
१९. अफगानिस्तान की राजधानी (३)
२१. चह, चिड़ियों की चहचहाट (२)
२२. पीतल की बड़ी बटलोही (३)
२४. झंडा (३)
२५. खुशी मनाना (५)
२८. कठोरता, असाध्यता (४)
२९. पानी एकत्र करने का छोटा हौज (४)

ऊपर से नीचे—

१. विवेकशून्य धारणा (५)
२. रँगा हुआ, विलासप्रिय (३)
३. चाल (२)
४. गरमी (२)
५. रुपया-पैसा (३)
६. छोटापन (३)
८. हाथ-मुँह पोंछने का चौकोर टुकड़ा (३)
१०. रूठने और मनाने की क्रिया, मन्नत (५)
१२. सुंदरता (५)
१४. ध्वज (३)
१५. कीचड़ में उगनेवाला एक फूल (३)
१८. दिल का स्वच्छ (२,१,२)
२०. ऊँचा (३)
२२. तमगा (३)
२३. किसी के ऊपर बहुत सी वस्तुएँ रखना (३)
२४. शरण (३)
२६. जो पुरानी न हो (२)
२७. अंगों की वह गति, जो हृदय की उमंग के कारण हो (२)

वर्ग पहेली (१४९) का हल अगले अंक में।

वर्ग पहेली (१५०)

१		२	३	■	४	५		६
	■	७		८			■	
९	१०		■		■	११	१२	
१३		■	१४		१५	■		■
१६				■	१७			१८
■		■	१९	२०		■	२१	
२२		२३	■		■	२४		
	■	२५	२६		२७		■	
२८				■	२९			

प्रेषक का नाम : .....

पता : .....

.....

.....

दूरभाष : .....

पुस्तक लोकार्पण, विचार एवं काव्य गोष्ठी संपन्न

७ जनवरी को दिल्ली में विधि भारती परिषद् द्वारा पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि की अध्यक्षता में श्रीमती संतोष खन्ना के सद्य:प्रकाशित काव्य-संग्रह 'समय का सच' का लोकार्पण किया गया, जिस पर सर्वश्री प्रवेश सक्सेना, उषा देव, मंजुला दास, अरविंद भारत ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में डॉ. रवि शर्मा की अध्यक्षता में काव्य-गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री अशोक खन्ना, मंजुला दास, उषा देव, सुधा शर्मा 'पुष्प', प्रवेश सक्सेना, सरिता गुप्ता, अनीता प्रभाकर, पूनम माटिया, ओम सपरा, सीमाब सुल्तानपुरी, रजनी छाबड़ा, रामलोचन, भारती अग्रवाल, अरविंद भारत, सुमन तनेजा, उमाकांत खुबालकर, निवेदिता झा, प्रदीप अग्रवाल, अर्चना अनुप्रिया, किरण कपूर एवं संतोष खन्ना ने काव्यपाठ किया। संचालन श्री सूर्यप्रकाश सेमवाल ने किया। □

'कश्मीर में आतंकवाद' कृति लोकार्पित

२० जनवरी को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में पूर्व सैन्य अधिकारी मेजर सरस त्रिपाठी की प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कश्मीर में आतंकवाद' प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह द्वारा लोकार्पित की गई। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. सुधांशु त्रिवेदी इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एवं पूर्व उप सेनाध्यक्ष लेफ्टिनेंट जनरल नरेंद्र सिंह मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। □

कृति लोकार्पित

२३ जनवरी को नई दिल्ली के स्पीकर हॉल, कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में प्रसिद्ध लेखक श्री दिनेश कानजी की सद्य:प्रकाशित पुस्तकों 'मानिक सरकार : दृश्यम और सत्यम' तथा 'Manik Sarkar : Real and the Virtual' का लोकार्पण भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव श्री राम माधव के करकमलों से संपन्न हुआ। मुख्य वक्ता भाजपा सांसद श्रीमती मीनाक्षी लेखी, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री संबित पात्रा, भाजपा त्रिपुरा के अध्यक्ष श्री बिप्लब कुमार देब एवं भाजपा त्रिपुरा के प्रभारी श्री सुनील देवधर रहे। □

कृति लोकार्पित

९ फरवरी को नई दिल्ली के कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री मान. डॉ. हर्षवर्धन की अध्यक्षता में जाने-माने यात्रा लेखक एवं ब्लॉगर श्री ऋषि राज की प्रभात प्रकाशन द्वारा सद्य:प्रकाशित पुस्तक 'Patriotic Pilgrimage of India' का लोकार्पण केंद्रीय संस्कृति राज्यमंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन राज्यमंत्री मान. डॉ. महेश शर्मा के करकमलों से संपन्न हुआ। इस अवसर पर परमवीर चक्र सम्मानित सूबेदार मेजर योगेंद्र सिंह यादव एवं प्रसिद्ध पर्वतारोही पद्मभूषण मेजर एच.पी.एस. अहलुवालिया विशिष्ट अतिथि थे। □

पाँचों सरसंघचालकों पर पुस्तकों का लोकार्पण

१३ फरवरी पटना के तारामंडल, सभागार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पाँच परम पूजनीय सरसंघचालकों के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर केंद्रित प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तकों 'हमारे डॉ. हेडगेवारजी', 'हमारे श्रीगुरुजी', 'हमारे बालासाहब देवरस', 'हमारे रज्जू भैया' तथा 'हमारे सुदर्शनजी' का लोकार्पण राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह-सरकार्यवाह मान. श्री दत्तात्रेय होसबाले के करकमलों से बिहार के उप-मुख्यमंत्री मान. श्री सुशील कुमार मोदी के मुख्य आतिथ्य एवं प्रसिद्ध लेखक एवं राष्ट्रीय विचारक डॉ. राकेश सिन्हा के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। □

'तेरे चरणों में' कृति लोकार्पित

विगत दिनों नई दिल्ली में दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी के सभागार में डॉ. नरेंद्र मोहन की अध्यक्षता में डॉ. सुधा शर्मा 'पुष्प' के तीसरे बाल एकांकी संग्रह 'तेरे चरणों में' का लोकार्पण किया गया, जिसमें सर्वश्री महेश चंद्र शर्मा, हरीश नवल, शकुंतला कालरा, अनिल शर्मा, रेखा व्यास ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री आशीष कंधवे ने किया तथा धन्यवाद आचार्य अनमोल ने दिया। □

लोकार्पण समारोह संपन्न

विगत दिनों अलीगढ़ में डॉ. मधुसूदन शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में पद्मभूषण डॉ. गोपाल दास नीरज द्वारा श्री योगेंद्र शर्मा के नवीन लघुकथा संग्रह 'कितने भस्मासुर?' का लोकार्पण किया गया, जिसमें सर्वश्री रामसिंह, वेदप्रकाश अमिताभ, यादराम शर्मा, मुरारी लाल शर्मा मयंक, द्विजेंद्र शर्मा, लव कुमार प्रणय, हरीश बेताब, भूपेंद्र शर्मा, सुनीला शर्मा, शैलेंद्र शर्मा, वेदांग शर्मा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. वेदप्रकाश अमिताभ ने किया। □

'हमारी बृहत्तर भारतीय यात्राएँ' कृति लोकार्पित

२९ दिसंबर को रायबरेली के होटल सूर्या में डॉ. कौशलेंद्र पांडेय की अध्यक्षता में डॉ. कृष्ण कुमार पांडेय द्वारा लिखित 'हमारी बृहत्तर भारतीय यात्राएँ' का लोकार्पण उत्तर प्रदेश के विधानसभा अध्यक्ष श्री हृदय नारायण दीक्षित के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. सुशील कुमार पांडेय के विशिष्ट आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर सर्वश्री महादेव सिंह व चंपा श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. पांडेय रामेंद्र ने किया। □

गजल विशेषांक विमोचित

विगत दिनों इलाहाबाद में सिविल लाइंस स्थित बाल भारती स्कूल में प्रो. अली अहमद फातमी की अध्यक्षता एवं श्री इकबाल आजर के मुख्य आतिथ्य में 'गुफ्तगू' के गजल विशेषांक का विमोचन किया गया, जिसमें सर्वश्री इम्तियाज अहमद गाजी, अशरफ अली बेग, भोलानाथ कुशवाहा ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री मनमोहन सिंह तन्हा ने किया। द्वितीय सत्र में पं. बुद्धिसेन शर्मा की अध्यक्षता में मुशायरे का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री प्रभाशंकर शर्मा, अनिल मानव, शैलेंद्र जय, शिवपूजन सिंह, शहाब अख्तर अंसारी, शिवशरण बंधु, अंजली

मालवीय 'मौसम', जमादार धीरज, सागर होशियारपुरी, अपर्णा सिंह, अजीत शर्मा आकाश, सुनील दानिश, शजली ग्यास खान, संपदा मिश्रा, ललिता पाठक नारायणी, संजू शब्दिता, अमित वागर्थ, योगेंद्र मिश्रा, प्रमोद चंद गुप्ता, विजय लक्ष्मी विभा, विपिन विक्रम सिंह, रमोला रूथ लाल, माहिर मजाल और अरशद ठाकुर ने रचनाएँ प्रस्तुत कीं। □

'उस पार तक' कृति विमोचित

विगत दिनों मुंबई में श्री लक्ष्मण दुबे की अध्यक्षता में श्रीमती माधवी कपूर की संयोग प्रकाशन द्वारा प्रकाशित गीत-कृति 'उस पार तक' का विमोचन प्रो. करुणाशंकर उपाध्याय एवं मुख्य अतिथि श्री लल्लन आर. तिवारी के करकमलों से संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. उमेशचंद्र शुक्ल एवं श्री मार्कंडेय त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। द्वितीय सत्र में काव्य संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक कवियों ने रचना पाठ किया। आभार श्री मुरलीधर पांडेय ने व्यक्त किया। □

सम्मान एवं लोकार्पण कार्यक्रम संपन्न

विगत दिनों भीलवाड़ा में सर्वश्री श्यामसुंदर 'सुमन', रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया', योगेंद्र शर्मा, श्याम प्रकाश देवपुरा, चेतना उपाध्याय व बंशीलाल 'पारस' द्वारा सामयिकी के ४८वें स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित सम्मान एवं लोकार्पण समारोह में सर्वश्री रामेश्वर शर्मा, फतह लाल गुर्जर 'अनोखा' को 'साहित्य शिरोमणि', नगेंद्र कुमार मेहता, नीता चौबीसा, कृष्णा माहेश्वरी को 'साहित्य गौरव', हेमलता 'बबली वशिष्ठ', राधेश्याम शर्मा दधीच को 'काव्य गौरव', कैलाश पारीक को 'शिक्षा गौरव', जय प्रकाश भाटिया 'सागर', योगेंद्र सक्सेना 'योगी', शशि ओझा को 'काव्य श्री सम्मान' की सम्मानोपाधि से सम्मानित किया गया। द्वितीय सत्र में डॉ. कमलाकांत शर्मा 'कमल' की अध्यक्षता में श्रीमती शकुंतला अग्रवाल 'शकुन' के काव्य-संग्रह 'दर्द की परछाइयाँ' का लोकार्पण श्री राकेश दीक्षित के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री उपेंद्र अणु, ऋषभ देव, मनोज अरोड़ा, कृष्णा माहेश्वरी के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया। संचालन श्रीमती रेखा लोढ़ा 'स्मित' ने किया तथा आभार श्री श्यामसुंदर 'सुमन' ने ज्ञापित किया। □

विमोचन समारोह संपन्न

विगत दिनों उदयपुर में युगधारा, नवकृति, कला शृंखला मंच, अदबी उड़ान, अदबी संगम, अंजमन तरक्की, प्रसंग संस्थान, नंद चतुर्वेदी फाउंडेशन, काव्यांगन, हमदर्द एवं अभिव्यक्ति संस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री सवाई सिंह शेखावत की अध्यक्षता एवं श्री इंदुशेखर तत्पुरुष के मुख्य आतिथ्य में श्रीमती प्रीता भार्गव की काव्य कृति 'यह फैसला मुझे खुद ही लिखना है' का विमोचन किया गया, जिसमें सर्वश्री रमाकांत शर्मा, राजाराम भादू, आईदान सिंह, सत्यनारायण, मीठेश निर्मोही, अंबिका दत्त, विनोद पदरज, के.के. शर्मा, भगवती लाल व्यास ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री इंद्रप्रकाश श्रीमाली ने किया। □

श्री गिरीश पंकज को 'व्यंग्यश्री सम्मान'

१३ फरवरी को नई दिल्ली के हिंदी भवन में हिंदीसेवी पं. गोपालप्रसाद व्यास की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में सर्वश्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, गोपाल चतुर्वेदी, शेरजंग गर्ग, प्रेम जनमेजय, हरीश नवल, गोविंद व्यास, हरीशंकर बर्मन, निधि गुप्ता द्वारा श्री गिरीश पंकज को 'व्यंग्यश्री सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें रजत श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र, शॉल, पुष्पहार, वाग्देवी की प्रतिमा, व्यास स्मृति चिह्न और एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपए की राशि भेंट की गई। संचालन श्री आलोक पुराणिक ने किया तथा धन्यवाद श्री सपन भट्टाचार्य ने ज्ञापित किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों कानपुर में साहित्य सृजन संस्था द्वारा आयोजित संगोष्ठी के प्रथम सत्र में संस्था अध्यक्ष श्री राजेंद्र राव ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस अवसर पर हिंदी भाषा व साहित्य की अंतर्महाविद्यालयी व अंतर्विद्यालयी लिखित परीक्षा के सफल प्रतिभागियों बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा सबरीन को पाँच हजार रुपए का प्रथम, उर्विता रजावत (कक्षा-९) व सुरभि त्रिपाठी (कक्षा-११) को इक्कीस-इक्कीस सौ रुपए के द्वितीय तथा एम.एस.सी. प्रथम वर्ष के छात्र वरिष्ठ शुक्ला, खुशी पटेल (कक्षा-८), सृष्टि तिवारी (कक्षा-९) व नीलिमा शुक्ला को ग्यारह-ग्यारह सौ रुपए के तृतीय पुरस्कार प्रदान किए गए। द्वितीय सत्र में 'निराला की आत्मकथा' व 'राजेंद्र राव की प्रतिनिधि कहानियाँ' पर विमर्श किया गया, जिसमें सर्वश्री जयराम सिंह गौर, राजेंद्र राव, दया दीक्षित, राकेश शुक्ल, सतीश गुप्त, सूर्यप्रसाद दीक्षित, अमरीक सिंह दीप, आनंद शुक्ला, यज्ञदत्त शुक्ल, नीलांबर कौशिक, आँचल दुबे ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर संयोजिका सुश्री दया दीक्षित व श्री राजेंद्र राव ने प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित को 'साहित्य सृजन सम्मान-२०१७' से सम्मानित किया। सम्मानस्वरूप उन्हें अंगवस्त्र, प्रशस्ति-पत्र व प्रतीक चिह्न प्रदान किए गए। संचालन डॉ. आरती त्रिपाठी ने किया तथा आभार डॉ. दया दीक्षित ने व्यक्त किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

२० जनवरी को मुंबई में श्री राजस्थानी सेवा संघ के सभागार में प्रख्यात लेखिका श्रीमती सूर्यबाला की अध्यक्षता में आयोजित सम्मान समारोह में सर्वश्री विजयकांत वर्मा, प्रमिला वर्मा, हरीश पाठक, हरि मृदुल, अशोक मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्रीमती सूर्यबाला द्वारा श्री अशोक मिश्र को 'विजय वर्मा कथा सम्मान' एवं श्री राकेश पाठक को 'हेमंत स्मृति कविता सम्मान' से सम्मानित किया गया। संचालन श्री देवमणि पांडेय ने किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

२८ दिसंबर को काशी में नागरी प्रचारिणी सभा के गोष्ठी कक्ष में मासिक पत्रिका 'सोच विचार' द्वारा प्रो. राममोहन पाठक की अध्यक्षता में आयोजित समारोह में प्रो. श्रद्धानंद एवं डॉ. अत्रि भारद्वाज को 'कलम का सिपाही सम्मान-२०१७' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री हरिराम द्विवेदी, ओम धीरज, चंद्रभाल सुकुमार, शिव सहाय

पांडेय, देवी प्रसाद कुँवर, अजय मिश्र, अशोक कुमार सिंह, धर्मेंद्र गुप्त 'साहिल', प्रकाश श्रीवास्तव, बृजेंद्र गर्ग, योगेश चतुर्वेदी, पवन कुमार शास्त्री, विनय कुल, राजेंद्र आहुति, नरोत्तम शिल्पी, केदारनाथ राय, प्रकाश त्रिपाठी, मनीष कुमार पांडेय, ब्रजेश पांडेय, गौतम अरोड़ा 'सरस', गणेश गंभीर, रामजी नयन, सिद्धनाथ शर्मा, जयशंकर यादव 'जय', मुन्ना ठाकुर, मोहित वर्मा ने डॉ. श्यामलाकांत वर्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सम्मानित रचनाकारों को बधाई दी। संचालन डॉ. जितेंद्र नाथ मिश्र ने किया तथा धन्यवाद श्री मनोज कुमार वर्मा ने किया। □

सम्मान समारोह संपन्न

विगत दिनों जयपुर में डॉ. वसुधा गाडगिल के निवास पर मकर संक्रांति के अवसर पर क्षितिज संस्था द्वारा श्री नंदकिशोर बर्वे की अध्यक्षता में रचना-पाठ संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें श्री संतोष सुपेकर को लघुकथा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सर्वश्री सतीष राठी, अखिलेश शर्मा, अशोक शर्मा द्वारा शॉल, श्रीफल एवं स्मृतिचिह्न भेंट कर क्षितिज संस्था के पहले 'क्षितिज लघुकथा समग्र सम्मान २०१८' से सम्मानित किया। इस अवसर पर सर्वश्री पुरुषोत्तम दुबे, ब्रजेश कानूनगो, पद्मा सिंह, सतीश राठी, अशोक शर्मा भारती, रश्मी वागले, वसुधा गाडगिल, विनीता शर्मा, अखिलेश शर्मा, जितेंद्र गुप्ता, बी.आर. रामटेके, आशा वडनेरे, वैजयंती दांते, रमेशचंद्र, राममूरत राही, आभा निवसरकर, अश्विनी कुमार दुबे ने रचना पाठ किया। संचालन डॉ. वसुधा गाडगिल ने किया तथा आभार श्री विष्णु गाडगिल ने किया। □

रवींद्र कालिया स्मृति पुरस्कार घोषित

विगत दिनों सर्वश्री अखिलेश, विजय राय, जितेंद्र श्रीवास्तव द्वारा चर्चित कहानी-संग्रह 'लालबहादुर का इंजन' के कथाकार श्री राकेश मिश्र को वर्ष २०१७ का 'रवींद्र कालिया स्मृति पुरस्कार' दिए जाने की घोषणा की गई। □

प्रो. पुष्पिता अवस्थी सम्मानित

विगत दिनों नई दिल्ली के इलाहाबाद बैंक मंडल में हिंदी संबंधी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों एवं हिंदी में सर्वाधिक कामकाज करनेवाले कर्मियों को नकद पुरस्कार के अंतर्गत डॉ. कमल किशोर गोयनका व श्री ए.के. महापात्र द्वारा प्रो. पुष्पिता अवस्थी को 'इला त्रिवेणी पुरस्कार २०१७-१८' से सम्मानित किया गया। □

संस्कृत कवि-गोष्ठी एवं सम्मान समारोह संपन्न

१४ फरवरी को वाराणसी में विद्याश्री न्यास एवं बौद्ध दर्शन विभाग, संपूर्णानंद संस्कृति विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में योग साधना केंद्र के सभागार में प्रो. यदुनाथ दुबे की अध्यक्षता में पंडित विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर प्रो. शिव उपाध्याय के मुख्य आतिथ्य एवं प्रो. राजा राम शुक्ल के विशिष्ट आतिथ्य में संस्कृत कवि-गोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री केशव पोखरेल, ध्रुव सापकोटा, पवन कुमार शास्त्री, कमला पांडेय, विवेक कुमार पांडेय, धर्मदत्त चतुर्वेदी, उपेंद्र पांडेय, राजेंद्र प्रसाद पांडेय, गायत्री प्रसाद पांडेय, प्रभुनाथ द्विवेदी व राजनाथ त्रिपाठी ने संस्कृत काव्यपाठ किया। इस अवसर पर आचार्य रेवा प्रसाद द्विवेदी को 'रामरुचि त्रिपाठी संस्कृत कवि सम्मान' से सम्मानित किया गया। सम्मानस्वरूप उन्हें अंगवस्त्र, नारिकेल, पुस्तक प्रतीक, प्रशस्ति-पत्र एवं सम्मान राशि से विभूषित किया गया। संचालन डॉ. गायत्री प्रसाद पांडेय ने किया तथा धन्यवाद डॉ. दयानिधि मिश्र ने किया। □

बाबू गुलाबराय की १३०वीं जयंती संपन्न

२८ जनवरी को नई दिल्ली के हिंदी भवन में मूर्धन्य साहित्यकार बाबू गुलाबराय की १३०वीं जयंती के उपलक्ष्य में बाबू गुलाबराय जयंती समारोह समिति एवं श्री पुरुषोत्तम हिंदी भवन न्यास समिति के तत्त्वावधान में एक साहित्यिक श्रद्धा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ द्वीप प्रज्वलन, बाबूजी के चित्र पर माल्यार्पण एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर 'साहित्य अमृत' पत्रिका के संपादक श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी को 'बाबू गुलाबराय स्मृति सम्मान' तथा 'विज्ञान आपके लिए' पत्रिका के संपादक डॉ. ओम प्रकाश शर्मा को 'बाबू प्यारे-लाल विज्ञान लेखन सम्मान' से विभूषित किया गया। इसके साथ ही तीन पुस्तकों 'निबंधकार बाबू गुलाबराय', 'जीवन की हास्य-व्यंग्य बातें' तथा 'श्रीमती सीता देवी गुप्ता' (संपादित) का लोकार्पण समारोह के अध्यक्ष डॉ. गंगा प्रसाद विमल के करकमलों से संपन्न हुआ। मुख्य वक्ताओं में सर्वश्री सुशील सिद्धार्थ, नारायण कुमार, राहुल ने बाबूजी के साहित्य लेखन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला। श्री चतुर्वेदी ने अपने उद्‌बोधन में बाबूजी के ५० वर्षीय साहित्यिक अवदान व साहित्य-संदेश में शुद्ध गद्य लेखन के महत्त्वपूर्ण काम से उन्हें हिंदी का गौरव-स्तंभ कहा। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री विमल ने कहा कि बाबूजी के विशद लेखन से पारंपरिक ज्ञान-विज्ञान, दर्शन-शास्त्र, निबंध-कौशल एवं रस संबंधित निरूपण से अद्यतन अध्ययन का नया प्रवेश द्वार खुला। हिंदी भवन के मंत्री डॉ. गोविंद व्यास, शारदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री प्रदीप कुमार गुप्ता, सर्वश्री अतुल कुमार, राहुल, ओम प्रकाश, नारायण कुमार तथा अन्य वक्ताओं ने अपने-अपने तरीके से बाबूजी के साहित्यिक अवदान को सराहा। कार्यक्रम का संचालन श्री लतांत प्रसून ने किया। आभार व्यक्त किया बाबूजी के सुपुत्र श्री विनोद शंकर गुप्त ने। इस सारस्वत समारोह में प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार एवं बाबूजी के पारिवारिक जन उपस्थित थे। □

सारस्वत आयोजन संपन्न

२२ जनवरी को मुरैना में बसंत पंचमी पर साहित्य परिषद् शाखा पर पं. दिनेश भारद्वाज की अध्यक्षता में सारस्वत समारोह आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रो. ओमपाल सिंह निडर एवं मुख्य वक्ता श्री जगदीश गुप्त थे। इस अवसर पर श्री अखिलेश 'अखिल' को उनकी साहित्य साधना के लिए 'लै.क. राजा पंचमसिंह साहित्य शिरोमणि सम्मान २०१८' से सम्मानित किया गया। द्वितीय सत्र में आयोजित कवि-सम्मेलन में सर्वश्री दिनेश भारद्वाज, ओमपाल सिंह निडर, जगदीश गुप्त, राजवीर

सिंह भारती, अरविंद पोटा, राजकिशोर 'राज', अखिलेश शर्मा 'अखिल', मुन्नालाल 'मृदुल', वासुदेव व्यग्र, संध्या सुरभि, अमरसिंह तोमर, महेश दुबे, पद्मनाभ पराशर, पूनम मुद्गल, रमेश प्रजापति ने काव्यपाठ किया। संचालन श्री प्रमोद प्रयासी ने किया। □

कवि-गोष्ठी संपन्न

१ फरवरी को हैदराबाद में श्री रामनिवास अग्रवाल के निवास स्थान पर श्री जगमोहन लाल श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आयोजित कवि-गोष्ठी में सर्वश्री सुषमा बैद, उमा देवी सोनी, कुंज बिहारी गुप्ता, जुगलबंद 'जुगल', दर्शन सिंह, खलीश हैदराबादी, गोविंद अक्षय, कुमुद बाला, सुरेश जैन, सूरज प्रसाद सोना, जगमोहन मल्होत्रा ने काव्यपाठ किया। संचालन श्री नेहपाल सिंह वर्मा ने किया तथा आभार श्रीमती रत्नकला मिश्र ने व्यक्त किया। □

मूल्यांकन गोष्ठी संपन्न

२ फरवरी को हैदराबाद में गीत चाँदनी के तत्त्वावधान में हिंदी प्रचार सभा के सभागृह में डॉ. प्रेमलता श्रीवास्तव की अध्यक्षता एवं डॉ. राजनारायण अवस्थी के विशिष्ट आतिथ्य में २५६वीं मूल्यांकन कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री कुमुद बाला, दयाकृष्ण गोयल, रत्नकला मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री गोविंद अक्षय ने किया। द्वितीय सत्र में कवि गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें सर्वश्री विकास महिपति, कुंज बिहारी गुप्ता, दिनेश अग्रवाल, प्रेमलता श्रीवास्तव, कुमुद बाला, गोविंद अक्षय, रत्नकला मिश्र, दयाकृष्ण गोयल, एल. रंजना ने काव्यपाठ किया। धन्यवाद श्रीमती रत्नकला मिश्र ने किया। □

कवि सम्मेलन संपन्न

२३ जनवरी को हैदराबाद में कोलसावाड़ी स्थित श्रीरामनाथ आश्रम में महंत श्री सेवाराम महाराज के सान्निध्य में गीत चाँदनी द्वारा वसंतोत्सव कवि सम्मेलन श्री नेहपाल सिंह वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित किया गया, जिसमें सर्वश्री राजनारायण अवस्थी, सीताराम माने, उमा देवी सोनी, कुंज बिहारी गुप्ता, रत्नकला मिश्र, शिवकुमार तिवारी कोहिरी, सुरेश गुगलिया, पुरुषोत्तम कड़ेल, दिनेश अग्रवाल, कुमुद बाला, सुरेश जैन, विकास महिपति, उमा देवी सोनी, सूरज प्रसाद सोना ने काव्यपाठ किया। संचालन श्री गोविंद अक्षय ने किया तथा धन्यवाद श्रीमती रत्नकला मिश्र ने किया। □

काव्य संध्या आयोजित

२२ जनवरी को रायपुर में नवरंग काव्य मंच द्वारा सिविल लाइंस स्थित स्थानीय वृंदावन हॉल में बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर स्व. जियाबाई लाहोटी की स्मृति में आयोजित काव्य संध्या 'नमन तुझे माँ' में श्री ओमप्रकाश अवसर एवं श्री गौरीशंकर कश्यप 'सिरफिरा' को 'नवरंग सरस्वती पुत्र सम्मान' से सम्मानित किया गया। साथ ही श्रीमती किरण साहू, श्रीमती हर्षा साहू एवं सुश्री डोमेश्वरी साहू का शॉल एवं श्रीफल द्वारा सम्मान किया गया। सर्वश्री सीमा श्रीवास्तव, रामकुमार बेहार, आशीष राज सिंघानिया, उर्मिला देवी उर्मि, अनिल श्रीवास्तव, शकुंतला तरार, किरण बिन्नानी, चंद्रकला त्रिपाठी, शिवानी मैत्रा, सुनीता शर्मा, क्रांति दीक्षित, छत्तर सिंह बच्छावत, अनिल गौतम, राज तिवारी, सफल अली सफदर ने रचनापाठ किया। संचालन श्री राजेश जैन राही ने किया। □

जन्म शताब्दी समारोह संपन्न

२८ जनवरी को भोपाल में हिंदी भवन के श्रीनरेश मेहता गोष्ठी कक्ष में प्रो. रमेशचंद्र शाह की अध्यक्षता में आयोजित महामति प्राणनाथ चतुर्थ जन्म शताब्दी समारोह में पं. ब्रजवासीलाल दुबे द्वारा लिखित कृति 'महामति प्राणनाथ : जीवन दर्शन और साहित्य' विषय पर विचार-विमर्श किया गया, जिसमें सर्वश्री मनोज श्रीवास्तव, कैलाशचद्र पंत, सुखदेवप्रसाद दुबे, अश्विनी कुमार दुबे ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर श्री ब्रजवासी दुबे को स्मृति चिह्न एवं शॉल-श्रीफल से सम्मानित किया गया। संचालन श्री चंद्रभान ने किया तथा आभार श्री मनीष गुप्ता ने व्यक्त किया। □

मासिक गोष्ठी संपन्न

११ फरवरी को सागर के साहित्य अकादमी म.प्र. संस्कृति परिषद् के उपक्रम में सागर पाठक मंच की ५३वीं मासिक गोष्ठी का आयोजन प्रो. सुरेश आचार्य की अध्यक्षता, श्री राजेश पंडित के मुख्य आतिथ्य एवं डॉ. कविता शुक्ला के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया, जिसमें सर्वश्री मनीष झा, सुजाता मिश्र, आशीष द्विवेदी, माधव चंद्रा, निर्मल चंद निर्मल, उमाकांत मिश्र ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. अमर कुमार जैन ने किया तथा आभार श्री नलिन जैन बिट्टी ने किया। □

पुण्यतिथि आयोजित

विगत दिनों कानपुर के कठेरूआ में अखिल भारतवर्षीय धर्मसंघ कानपुर शाखा के तत्त्वावधान में धर्मसम्राट् स्वामी करपात्रीजी महाराज की ३६वीं पुण्यतिथि आनंदेश्वर मंदिर परमट के महंत स्वामी रमेशपुरी की अध्यक्षता में आयोजित की गई, जिसमें डॉ. विजय प्रकाश त्रिपाठी ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री नंदकिशोर सिंह ने किया तथा आभार डॉ. देवेंद्र शंकर शुक्ल ने व्यक्त किया। □

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

विगत दिनों वर्धा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा गालिब सभागार में 'दृश्य और कथ्य : संदर्भ सिनेमा' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस पर प्रो. गिरीश्वर मिश्र की अध्यक्षता में सर्वश्री आनंद वर्धन शर्मा व राकेश मंजुल ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन श्री अभिषेक सिंह ने किया तथा धन्यवाद डॉ. सतीश पावड़े ने किया। द्वितीय दिवस पर सर्वश्री मनोज कुमार, नीरा जलक्षत्रि, विभावरी, अनुज अलंकार, अनिल कुमार राय ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. अविचल गौतम ने किया। द्वितीय सत्र में सर्वश्री अशोक शरण, असीम त्रिवेदी, दयाशंकर शुक्ल ने अपने विचार व्यक्त किए। संचालन डॉ. अशोक नाथ त्रिपाठी ने किया। अंतिम दिवस पर श्री प्रकाश दुबे की अध्यक्षता में प्रो. मनोज कुमार द्वारा फिल्म निर्देशक एवं पटकथा लेखक श्री मधुर भंडारकर का स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। साथ ही उनकी फिल्म 'मुंबई मिस्ट' दिखाई गई।

संचालन श्री राकेश मंजुल ने किया। □

साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों का सम्मेलन

२८ जनवरी को भोपाल में सामाजिक/साहित्यिक/आध्यात्मिक संस्था 'दृष्टि' द्वारा हिंदी भवन के महादेवी वर्मा कक्ष में डॉ. देवेंद्र दीपक की अध्यक्षता में साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकों का सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसके मुख्य अतिथि डॉ. रवींद्र शुक्ल, सारस्वत अतिथि श्री मनोज श्रीवास्तव एवं विशिष्ट अतिथि श्री कैलाशचंद्र पंत थे। इस अवसर पर सर्वश्री गौरीशंकर गौरीश, घनश्याम मैथिल, महेश सोनी, अशोक दुबे, तुमुल सिन्हा ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर चित्रकार श्री अशोक खांट की चित्र प्रदर्शनी विशेष आकर्षण का केंद्र रही, जिसके लिए श्री घनश्याम मैथिल द्वारा उनका शॉल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। संचालन श्री राजुरकर राज ने किया तथा आभार श्री अनिरुद्ध सिंह सेंगर ने व्यक्त किया। □

पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह संपन्न

७-८ फरवरी को साहित्य मंडल, श्रीनाथद्वारा और राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी जयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री सत्यनारायण आचार्य की अध्यक्षता, श्री जगदीश शर्मा के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री राधागोविंद पाठक, पारसमल दुग्गड़, गोपाल शर्मा 'प्रभाकर' व रामरतनप्रसाद सिंह के विशिष्ट आतिथ्य में दो दिवसीय पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह आयोजित किया गया। प्रथम दिवस पर पाँच संपादकों को 'संपादक शिरोमणि' की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। ब्रजभाषा उपनिषद् के अंतर्गत आठ साहित्यकारों ने भिन्न-भिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। अपराह्न सत्र में साहित्य मंडल विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा अष्टछाप के कवि कुंभनदासजी पर नृत्य नाटिका व 'कान्हा न माने' नृत्य प्रस्तुत किया गया। सम्मान-पुरस्कार कड़ी में सर्वश्री पारसमल दुग्गड़ को 'श्री गोपीलालजी-कंचन बाई दुग्गड़ स्मृति सम्मान', विज्ञान व्रत को 'राव महेंद्रमान सिंह स्मृति सम्मान', देवकीनंदन कुम्हेरिया को 'श्री रामशरण पीतलिया स्मृति सम्मान', बानो सरताज को 'श्री गोपेंद्र नाथ शर्मा स्मृति सम्मान', रविजी शतपथी व निर्मलाबाला मिश्र को 'श्री श्यामलाल शर्मा स्मृति सम्मान', कीर्ति किशोरी को 'श्री गयाप्रसाद शर्मा स्मृति सम्मान', लोकेश कुमार सोनी को 'श्रीमती शशिकला मेहता स्मृति सम्मान' से सम्मानित किया गया। दस विद्वानों को 'ब्रजभाषा विभूषण' की मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। अंतिम सत्र में श्रीनाथजी मंदिर के मोती महल प्रांगण में अखिल भारतीय ब्रजभाषा कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें गोस्वामी १०५ श्री विशाल बाबा के करकमलों से हरसिंगार के सद्य:प्रकाशित प्रकीर्णनांक वर्ष २० अंक १-२ का लोकार्पण किया गया।

द्वितीय दिवस का आयोजिन श्री रवि शतपथी की अध्यक्षता, श्री सुरेंद्र सार्थक के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री बलवंत सिंह यादव, वीरेंद्र लोढ़ा, उमादत्त भारद्वाज, भगवत सिंह मयंक, अरविंद कुमार देवपुरा के विशिष्ट आतिथ्य में किया गया। प्रथम सत्र 'सवैया सुहावने लागे' व 'चकोर जुं चंदकी' तथा कवित्त 'शोभा मनभामनी' व 'निसान है' पर समस्या पूर्ति कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें लगभग दो दर्जन कवियों ने अपने छंद प्रस्तुत किए। सम्मान के क्रम में लगभग डेढ़ दर्जन विद्यार्थियों को सर्वोच्च अंक प्राप्त करने हेतु 'विद्यार्थी रत्न' से सम्मानित किया गया। श्री बलबीर सिंह करुण की अध्यक्षता, डॉ. जगदीशनारायण विजय के मुख्य आतिथ्य एवं सर्वश्री देवनारायण, देवकीनंदन कुम्हेरिया व आचार्य रामदेव दीक्षित के विशिष्ट आतिथ्य में द्वितीय एवं समापन सत्र आयोजित किया गया, जिसमें ब्रजभाषा उपनिषद् के अंतर्गत चार साहित्यकारों ने भिन्न-भिन्न विषयों पर शोधपरक आलेख प्रस्तुत किए। सम्मान के क्रम में सर्वश्री बलवंत सिंह यादव को 'राष्ट्र सेवा रत्न', विवेक प्रकाश सक्सेना को 'संगीत रत्न', बलबीर सिंह करुण को 'श्री गणेशवल्लभ राठी स्मृति सम्मान' व 'साहित्य मार्तंड' एवं आठ साहित्यकारों को 'हिंदी साहित्य मनीषी' की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया। सभी सम्मानित विद्वानों को शॉल, उत्तरीय, कंठहार, मेवाड़ी पगड़ी, श्रीफल, श्रीनाथजी का प्रसाद, श्रीनाथजी की छवि और उपाधि पत्र भेंटस्वरूप प्रदान किए गए। संचालन श्री श्याम प्रकाश देवपुरा एवं विट्ठल पारीक ने किया तथा आभार श्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने व्यक्त किया। □

विचार गोष्ठी संपन्न

२८ जनवरी को भिवानी के हल्वासिया विद्या विहार के सभागार में साहित्य परिषद् की भिवानी शाखा ने डॉ. रामसजन पांडेय की अध्यक्षता में 'युगपुरुष स्वामी विवेकानंद' विषय पर दो भागीय बृहत् विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसके प्रथम भाग में विद्वानों ने विवेकानंद के जीवन-दर्शन और उनके कर्तृत्व पर विचार व्यक्त किए। द्वितीय भाग में सर्वश्री नंदलाल मेहता वागीश, रमाकांत शर्मा, शिवकांत शर्मा, मनोज भारत, रमेशचंद्र शर्मा, रमेश विकास व संतराम देशवाल ने काव्यपाठ किया। □

विश्व हिंदी दिवस आयोजित

विगत दिनों ओटावा में भारत के उच्चायुक्त एवं सुप्रसिद्ध उपन्यासकार श्री विकास स्वरूप के मुख्य आतिथ्य में विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें सर्वश्री जगमोहन हूमड़, वीरेंद्र भारती, शाइनी, देवगन, शैलजा सक्सेना, भुवनेश्वरी पांडे, लता पांडे, विद्याभूषण धर, संदीप त्यागी, अखिल भंडारी ने काव्यपाठ व महेंद्र जैन ने व्यंग्यपाठ किया। इस अवसर पर डॉ. हंसा दीप के कनाडाई पृष्ठभूमि पर लिखे हिंदी उपन्यास 'बंद मुट्ठी' का लोकार्पण श्री विकास स्वरूप द्वारा किया गया। संचालन डॉ. वीरेंद्र भारती ने किया। □

श्रद्धांजलि सभा आयोजित

११ फरवरी को पटना के डॉ. शंकर दयाल सिंह स्मृति पुस्तकालय में सुप्रसिद्ध साहित्यकार और पुलिस पदाधिकारी श्री रामानंद चानपुरी के निधन पर एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई, जिसमें सर्वश्री कुणाल कुमार, संजय कुमार, संजय राही, रूपेश दिग्विजय, कैप्टन राकेश नंदन, हरिशंकर सिंह, आलोक कुमार, दिलीप कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। धन्यवाद श्री वीरेंद्र कुमार सिंह ने ज्ञापित किया। □